विदेह

मैथिली कथा २००९-१०

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (http://www.videha.co.in/)

१५ जनबरी २०१० वर्ष:३ मास:२५ अंक ५०

विदेह: सदेह:४ (विदेह ई पत्रिकाक २६म सँ ५०म अंकक दस प्रतिशत चुनल रचनाक संग)

दाम: १०० टाका (व्यक्तिगत क्रय लेल) आ $40 (for institutions and library India and Abroad)

सम्पादक- गजेन्द्र ठाकुर

सहायक सम्पादक- श्रीमती रश्मि रेखा सिन्हा, श्री उमेश मंडल

भाषा सम्पादन- श्री विद्यानन्द झा आ श्री नागेन्द्र कुमार झा

ISBN: 978-93-80538-07-5

(c)२००८-१०.सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतय लेखकक नाम नहि अछि ततय संपादकाधीन। रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) ggajendra@videha.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका अछि आ एहिमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ संबंधित रचना प्रकाशित कएल जाइत अछि। एहि ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

(c) २००४-१० सर्वाधिकार सुरक्षित। विदेहमे प्रकाशित सभटा रचना आ आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। रचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशन किंवा आर्काइवक उपयोगक अधिकार किनबाक हेतु ggajendra@videha.com पर संपर्क करू।

© श्रुति प्रकाशन- विदेह:सदेह:४-प्रिंट वर्सन- DISTRIBUTORS: AJAY ARTS, 4393/4A, Ist Floor, Ansari Road, DARYA GANJ, New Delhi-110002 Ph. 011-23288341, 09968170107 Website: http://www.shruti-publication.com e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

http://www.videha.co.in/ एहि साइटकेँ प्रीति झा ठाकुर, मधूलिका चौधरी आ रश्मि प्रिया द्वारा पाक्षिक रूपेँ डिजाइन कएल जाइत अछि।

(कार्यालय प्रयोग लेल)

विदेह:सदेह:१ (तिरहुता/ देवनागरी)क अपार सफलताक बाद आगाँक अंक लेल वार्षिक/ द्विवार्षिक/ त्रिवार्षिक/ पंचवार्षिक/ आजीवन सद्स्यता अभियान।

ओहि बर्खमे प्रकाशित विदेह: सदेहक सभ अंक/ पुस्तिका पठाओल जाएत। नीचाँक फॉर्म भरू:-

विदेह:सदेहक देवनागरी/ वा तिरहुताक सदस्यता चाही: देवनागरी/तिरहुता सदस्यता चाही: ग्राहक बनू (कूरियर/रजिस्टर्ड डाक खर्च सहित):-

बर्ख	YEAR	INDIA	NEPAL	Abroad
एक	(२०१०ई.)	रु.२००/-	INR ६००/-	US$25
दू	(२०१०-११ ई.)	रु.३५०/-	INR १०५०/-	US$50
तीन	(२०१०-१२ ई.)	रु.५००/-	INR १५००/-	US$75
पाँच	(२०१०-१३ ई.)	रु.७५०/-	INR २२५०/-	US$125
आजीवन (२००९ आ ओहिसँ आगाँक अंक)		रु.५०००/-	INR १५०००/-	US$750

हमर नाम:

हमर पता:

हमर ई-मेल:

हमर फोन/मोबाइल नं.:

हम Cash/MO/DD/Cheque in favour of AJAY ARTS payable at DELHI दऽ रहल छी। वा हम राशि Account No. 21360200000457 Account holder (distributor)'s name: Ajay Arts, Delhi, Bank: Bank of Baroda, Badli branch, Delhi क खातामे पठा रहल छी।

अपन फॉर्म एहि पतापर पठाऊ:- shruti.publication@shruti-publication.com वा AJAY ARTS, 4393/4A, Ist Floor, Ansari Road, DARYAGANJ, Delhi-1100002 Ph. 011-23288341, 09968170107, Website: http://www.shruti-publication.com

(ग्राहकक हस्ताक्षर)

विदेह

मैथिली कथा २००९-१०

(विदेह:सदेह:४ विदेह ई-पत्रिकाक २६म सँ ५०म अंकसँ बीछल आ सम्पादित कएल)

प्रिय पाठकगण, विदेहक नव अंक ई प्रकाशित होइत अछि पाक्षिक रूपेँ- लॉग ऑन करू http://www.videha.co.in । ई प्रिंट वर्सन माने विदेह:सदेह:४ विदेह ई-पत्रिकाक २६म (१५.०१.२००९) सँ ५०म (१५.०१.२०१०) अंक धरिक चुनल रचना (मोटा-मोटी दस प्रतिशत)क संग प्रस्तुत अछि। मुदा विदेहमे ई-प्रकाशित पाखलो (मूल कोंकणी उपन्यास तुकाराम रामा शेट आ मैथिली अनुवाद डॉ. शम्भु कुमार सिंह), ज्योति झा चौधरीक कविता संग्रह अर्चिस् आ नताशा (मैथिली चित्र-शृंखला- देवांशु वत्स) अलगसँ पुस्तकाकार प्रकाशित कएल जा रहल अछि।

विदेह द्वारा प्रारम्भ भेल मैथिली (तिरहुता आ देवनागरी) साहित्य आन्दोलनमे २००सँ बेशी लेखक जुड़ि चुकल छथि, ५० टा अंक (देवनागरी, तिरहुता आ ब्रेल तीनूमे) ई-प्रकाशित भऽ गेल अछि आ पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल विदेह आर्काइवमे राखल गेल अछि। दू टा सदेह अंक (देवनागरी आ तिरहुतामे) सेहो प्रकाशित भऽ गेल अछि। विविध विषयपर ६००० पृष्ठक नूतन मैथिली साहित्य आ ५० लाख शब्दक मैथिली कॉर्पोरा अन्तर्जालपर विश्वक सम्मुख प्रस्तुत कएल गेल अछि। ११०० पृष्ठक भोजपत्र-तालपत्रक आ अन्यान्य पत्रक पाण्डुलिपिक मिथिलाक्षरमे अंकण आ मिथिलाक्षरसँ देवनागरी लिप्यंतरण कएल गेल अछि। विदेह आर्काइवमे मात्र शाब्दिक कॉर्पोरा नहि अछि वरन् १००सँ बेशी मैथिली ऑडियो फाइल, १०० घण्टासँ बेशीक मैथिली वीडियो फाइल जाहिमे कैकटा सम्पूर्ण मैथिली नाटक सेहो अछि, आधुनिक कला, चित्रकला, छायाचित्रक संग मिथिला चित्रकलाक फोटो आ पी.डी.एफ. रूपमे सएसँ बेशी मैथिली पोथी सेहो देखबा, पढ़बा आ डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि। संगमे बच्चा सभक साहित्य आ कार्टून सभ सेहो निर्मित आ प्रदर्शित कएल गेल अछि आ पढ़बा लेल आ

डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि। मैथिलीक पहिल ब्रेल पोथी उपन्यास-सहस्त्रबाढ़नि (हमर पोथी कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक मे संकलित हमर उपन्यास) सेहो प्रिंट रूपमे आबि गेल अछि। मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक मैथिलीमे संस्कार, विधि-व्यवहार आ श्रमगीत विदेह ऑडियो आ वीडियोमे राखल गेल अछि। मैथिलीक लेल भाषा सम्पादन पाठ्यक्रमकेँ अन्तर्जालक विदेहक ३००० सँ बेशी सदस्य द्वारा अन्तिम रूप सेहो प्रदान कएल गेल अछि। मिथिलाक्षरक यूनीकोड आवेदनमे विदेहक योगदानकेँ आवेदनकर्ता द्वारा आवेदनमे वर्णित कएल गेल अछि।संगहि विदेह आर्काइवक आधारपर यूनीकोडमे २००८ सँ पोथीक प्रकाशन शुरु भेल (नचिकेताक नो एण्ट्री:मा प्रविश पहिल यूनीकोड प्रिंट मैथिली पोथी छी) मुदा हिन्दीमे पहिल यूनीकोड प्रिंट पोथी फरबरी २०१० मे वाणी प्रकाशनसँ आएल। संगहि हमर लिखल सहस्त्रबाढ़नि जे मैथिलीक पहिल ब्रेल पुस्तक अछि (ISBN:978-93-80538-00-6) २००९ मे रिलीज भेल आ पुअर होम दरभंगा स्थित ब्लाइन्ड स्कूलकेँ पठाओल गेल अछि। मुदा ई तँ मात्र प्रारम्भ अछि।

एहि खण्डमे कुछु चुनल *मैथिली कथा (विदेह:सदेह:४ विदेह ई-पत्रिकाक २६म सँ ५०म अंकसँ बीछल आ सम्पादित कएल)* देल जा रहल अछि, आ एहिमे लघुकथा, नाटक, व्यंग्य आ उपन्यास अंश सेहो अछि कारण ई सभ विधा मोटा-मोटी एक्के अछि। आ एतए मैथिलीमे दोसर भाषासँ अनूदित कथा सेहो अछि।

सूचना: पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105, 164.100.8.3, 220.227.174.243 उर्फ....केँ डगलस केलनर आ अरुण कमलक रचनाक चोरिक पुष्टिक बाद (http://www.box.net/shared/75xgdy37dr) बैन कए विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनसँ निकालि देल गेल अछि।केलनरक संदेश नीचाँ अछि। विशेष जानकारी *मैथिली प्रबन्ध:निबन्ध:समालोचना २००९-१०* (विदेह : सदेह : २ (विदेह ई-पत्रिकाक २६म सँ ५०म अंकसँ बीछल) मे देल गेल अछि।

kellner@ucla.edu" <kellner@ucla.edu.Dear Gajendra
thanks for the detective work. was there a response?
best regards, Douglas Kellner, Philosophy of Education Chair, Social Sciences and Comparative Education, University of California-Los Angeles, Box 951521, 3022B Moore Hall, Los Angeles, CA 90095-1521, Fax 310 206 6293, Phone 310 825 0977

-गजेन्द्र ठाकुर

क्रम



कुमार मनोज कश्यप

जन्म-१९६९ ई मे मधुबनी जिलांतर्गत सलेमपुर गाममे। स्कूली शिक्षा गाममे आ उच्च शिक्षा मधुबनीमे। बाल्य कालेसँ लेखनमे अभिरुचि। कैक गोट रचना आकाशवाणीसँ प्रसारित आ विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित। सम्प्रति केंद्रीय सचिवालयमे अनुभाग अधिकारी पदपर पदस्थापित।- सम्पादक।

चौबटिया पर

'भैया ! हम कहैत छी आब अवस्था भेल, आबो तँ चैनक साँस लिय। कहिया धरि कोंढ़ तोरैत रहब? आब तँ बौआ वयस्क भऽ गेल छथि; आबो तँ किछु करथु कि सभ दिन पढ़ाईकेँ नामपर बापेकेँ कमाईपर फुटानी करैत रहताह। सभकेँ कोनो सरकारीये नोकरी भेटैत छैक? अपने गाम कि टोलेमे देखियौ ने जे हुनकासँ कतेक छोट सभ जकरा नाक पोछबाक लुरि नहि छलैक सेहो सभ दिल्ली-बम्बई जा कऽ हजारक-हजार रूपैया घर पठबैत अछि। साँच पुछि तँ मैथिलक पछुएबाक कारण सरकारी नोकरीकेँ पाछु भागब अछि। से जँ नहि भेटल तँ कतहुँ के नहि रहि गेलहुँ धोबिक गदहा बला परि। हम तँ कहैत छी कलियुगमे तपस्या केलासँ भगवान भने भेट जाथि; मुदा सरकारी नोकरी किन्नहुँ नहि एकरा तँ मरीचिका बुझ्‌ु एतेक भाए-भतीजावाद आ घुसखोरीक जुगमे ओना कतऽ नोकरी राखल छै ओ तँ जमाना रहई जे आहाँ सभकेँ सरकारी नोकरी भेट गेलआब ककरो नाम गनाउ गाममे?।' कक्का आरो बहुत किछु बजैत चलि गेलाह। मुदा दलानक कोनटामे ठाढ़ हमरामे आर बेसी सुनबाक सामर्थ्य नहि रहि गेल छल हम झमा कऽ खसल छलहुँ। मोश्किलसँ सम्हारि पओलहुँ अपनाकें। बाबूक प्रतिक्रिया हम बुझि नहि पओने छलहुँ ओ मुँहसँ साईत किछु बाजल नहि छलाह। बाजलो हेताह तँ सम्भव जे मनोद्वेगक कारणे हमहीं सुनि नहि पओने होईयैक।

कक्काक शब्द हमरा जमीनपर पटकि देने छल।मगर सिविल सेवाक बुनल सभटा सपना जेना एके चोटमे टुटि कऽ हमरे सोझाँमे खंड-खंड पसरि गेल आ हम ओहिपर ओंघरा कऽ अपन सर्वांग शरीर शोणिते-शोणित कऽ लेने छी ।

हमर बाबू परम शुद्धबेसी बाजऽ वला नहिं। ओहि दिन कक्काकेँ स्पष्ट जवाब नहि देबाक पाछु हुनका मोनक कोनो कोनमे नुकाएल कोनो अनजान भय

छलनि से हमरा ओहि दिन माएक बातसँ बुझाएल - 'सरकारी नोकरी नहि भेल तँ कतहु प्राईवेटोमे तँ देखतियैक। बाबूएपर कतेक भार देबैन पाँच-छौ महिनामे ओहो तँ रिटायरे कऽ रहल छथि। वेतनक समुचा पाईमे तँ घर चलिये नहि रहल छैक। पेंसनक अधोर पाईमे कोना पार लगतैक? मुनमुन तँ अखन बी०ए० मे गेबे केलैए, ओकर पढ़ाई तँ कहुना पूरा करबैए पड़तैक।' माएक स्वरमे जे एकटा चेतावनी छलैक से हम नहि बुझितियैक, एतबो अबोध हम नहि। हम ओहि राति कतेक कानल रहि से हमहीं जनैत छियैक। जाहि सपनाकँ हम एक-एक विंदुसँ उकेरने रही, जकर पाँखिपर बैसि कऽ हम कल्पना लोकमे निच्छंद विचरण करैत रहि, तकर जेना पाँखि कतरि कऽ भू-लुंठित कऽ देल गेल छलैक। हमरा अपन भविष्यक चिंतासँ बेसी दुख एहि बातक आछ जे कक्का अपन वुटिल सिद्धांत- 'दुभि, दालि आ देयाद जतेक गलय ततेक नीक' - हमरो परिवारपर अजमेबामे सफल भऽ गेल छलाह। नहि तँ जे बाबू एकटा सपना देखने रहथि अपन संतानकँ प्रशासनिक सेवा कए उच्चत्तर स्तरपर पहुँचेबाक सदा प्रोत्साहित कएने रहथि एहि लेल, जे गर्वसँ कहथि जे साधनक अभावमे हम स्वयं नहिं बनि सकलहुँ तँ की; अपन बेटाकँ आई०ए०एस० बना कऽ देखाएब से एकाएक यू-टर्न लऽ लेताह से हम सपनोमे नहि सोचने रही। पहिल चाँन्समे हम पी०टी० तँ निकालिये लेने रहीएहि बेर दोसर चाँन्स एपियर होयब। एतबेमे बाबू अगुता जेताह; ई हुनकर स्वभाव तँ किन्नहुँ नहि.....।

हम अपन पित्तकँ पीबि गेलहुँ। अपन सफाइमे किछु बाजब उचित नहि बुझना गेल। सुतली रातिमे अपन दु-चारिटा कपड़ा बैगमे राखि घरसँ चुपचाप निकलि गेलहुँ बिना ककरो जनेने। मोनमे रंग-विरंगक भवना आएल आत्म-हत्या तककँ। अंतमे मोन स्वीकारलक चंडीगढ़ चल जाइ दिनेश लग कतेक जीद्द करैत छल ओ चंडीगढ़ एबाक लेलक हैत छल। बड नीक शहर छै। ट्रेन एबामे एखन देरी छैक फरीछ सेहो भऽ रहल छैक हम दिनेशकँ फोन करैत छी - 'परसू हम चण्डीगढ़ पहुँच रहल छियौ भोर मे स्टेशनपर आबि कऽ अपना ओतऽ लऽ जैहैं।' आर किछु हम नहि कहि सकलियै ओ पुछिते रहि गेल फोन काटि देलियै।

स्टेशनपर ओ आएल छल हमरा आरयाति कऽ अपन घर लऽ जेबाक हेतु। दिनेश हमर लंगोटिया यार पढ़लक-लिखलक कम्मे जल्दिये कोनो प्राईवेटमे नोकरी पकड़ि लेलक। सुनैत छियैक नीक कमाईत आछि। भरि रस्ता ओ हमर अकस्मात एबाक प्रयोजन पुछैत रहल हम बातकँ घुमबैत रहलियै। बस एतबे कहलियै जे हमरा कोनो नोकरी धरा दे जे होई हम करै लेल तैयार छी। ओ हमरा अपना भरि बुझेबाक प्रयास करैत रहल यार! तोरामे प्रतिभा छौ तौँ आई०ए०एस कऽ सकैत छैँ तोरापर गाम समाजकँ आँखि लागल छैक तौँ प्राईवेट नोकरी-चाकरीकँ झंझट छोड़ तैयारी करैत रह माँ भगवतीकँ कृपासँ सफलता अवस्से भेटतौ। मुदा हमहुँ जिदियाएल रही। ओ हारि मानि लेलक हमरा एकटा केबल-ऑपरेटर ओहिठाम नोकरी रखा देलक तीन हजार रूपैया महिनापर।

गाम-घर, माए-बाप, भाए-बहिन सभकेँ बिसरि जेबाक प्रयास कऽ रहल छी हम। कतऽ कहाँसँ पता करैत-करैत एक दिन माएक फोन आएल बड़ कनैत छल। हमरो बकोर लागि गेल। हम किछु बाजि नहि सकल रहि फ़ोन काटि देलियै।

बितैत समएक संगे एक दिन नरेद्रजीसँ भेंट भेल नरेंद्रजी अपने ओम्हरके समवयस्के जकाँ। दोस्ती बढ़ल पता चलल हुनकर पिता बैंक-मैनेजर छथिन समस्तीपुरमे। बैंकसँ लोन लऽ कऽ स्वयंकेँ केबल शुरू करबाक विचार जागल। बात आगू बढ़ल क़ाज करबाक अनुभव आइ दू सालमे भइये गेल। योजनापर काज करए लगलहुँ एक-एक मुद्दापर गहन सोच-विचार प्रोजेक्ट-रिपोर्ट तैयार भेल कतएसँ मशीन सभ कीनब केहन आदमी सभकेँ काजपर राखब क़ोना प्रचार-प्रसार करब सभ किछुक योजना राति भरि जागि कऽ बना लेलहुँ। लोन भेटि गेल मशीन, आवश्यक वस्तु-जात सभ खरीद भऽ गेल। काल्हि धूम-धामसँ उद्घाटन करबाक दिन छल। सोचलहुँ बाबू-कक्का सहित गामक सभ लोक कऽ बजाएब उद्घाटन-समारोहमे। अचानकसँ एहन पैघ योजना देखि कऽ घरक लोक गर्वसँ गद्-गद भऽ उठत क़क्का कऽ जलन तँ हेबे करतैन। जे देयाद गलि नहि, उठि रहल आछ मुदा ताहिसँ हमरा कि? हुनकर मोने एहने छनि तँ दोसर की करतैन?। बुधना आबि कऽ समाद देलक - 'आहँ करैत रहू उद्घाटन, ओम्हर पायल-केबल सभकेँ मुपत्तमे केबल देखेबाक घोषणा कऽ देलकैए। जेहो एक-दू गोटे तैयार छल अपन केबल लेबाक लेल, सेहो पायले दिस चलि गेल। फ्री ककरा नहि रूचतै?' पायल केबल के मालिक भवेश तँ हमरा संगे गामक स्कूलमे पढ़ने अछि, ओकरा एना नहि करक चाहियैक। हम दौड़लहुँ भवेशक घर दिस। रस्तेमे भेटा गेल ओ। हम कहलियै- 'यार! तोरा एना नहि करक चाहियौ। तोँ तँ पुरान छैं; कमा चुकल छैं, कनेक दिन फ्रीयोमे केबल देखा सकैत छैं। मुदा हम बैंकसँ लोन लऽ कऽ शुरूये करए जा रहल छी। हमरा पेटपर तँ लात नहि मार।' भवेश चौआनियाँ मुस्कियाएल छल। ओकर एहि मुस्कीमे वुटिलता हमरा साफ बुझा रहल छल। 'देखही दोस! दोस्ती अपना जगहपर छैक आ बिजनेस अपना जगहपर। ने दोस्तीमे बिजनेस एबाक चाही; ने बिजनेसमे दोस्ती।'

से बिजनेसमे दोस्ती नहिये एलै। हमर सभ मशीन, सामान ओ आधया दाममे खरीद लेलक। हमर सपना एक बेर फेरसँ चकनाचूर भऽ कऽ हमरा आगाँ छिड़िया गेल आछ। हम अपन मोनकेँ बुझबैत छी---सपना टुटबे खातिर बुनल जाईत छैक आर कोनो बात नहि।

मैथिली रूपान्तरण



डॉ. शंभु कुमार सिंह

मूल अँग्रेजी कथा : अनदर संडे
कथाकार : गैस्पर अल्मीडा

एकटा आर रबि

ओ अपन पड़ोसक पाथरसँ भरल फर्श वला हातामे जएबाक लेल जहिना दरबज्जा खोललक, भोरक शीतल हवा ओकर स्वागत केलकैक। ओतए केवल पाँचेटा घर छलैक जाहिमे रहए वलाक अपन पुश्तैनी नाम छलैक, ओकर वार्ड केर पुश्तैनी नाम छलैक, अल्मीडा वाडो। दरबज्जाक बाहर पुरनका कल, जकरा बहुत पहिनहि नबका कलकेँ। कारणेँ छोड़ि देल गेल छलैक, ताहिसँ नमगर नोकगर बरफ लटकल रहैक। ओकरासँ सटले इनार देख-रेख केर अभावमे सूखि गेल छलैक। तेऔ एहिपर एखन धरि बालु नहि जमल छलैक।

रोल्डाओ ब्रेगेन्जा झुकल, आँगुरसँ ओकरा पकड़लक आ ओहि जमलका बरफकेँ एखनहि पूरब दिससँ आबि रहल सुरूजक किरण कऽ समक्ष उठौलक। ओहि बरफपर प्रकाश कऽ किरण पड़ितहि इन्द्रधनुषी रंग जगमगा उठलैक।

छोटगर-सन गेट, जाहिपर स्पष्ट रूपसँ ब्रेगेन्जा विला लिखल छलैक, अपन कब्जापर झुलल चर्र-चर्र केर आवाज भेलैक, ई आवाज हाता केर जानवरकेँ सचेत कऽ देलकैक। जे कि ओकर प्रतीक्षा कऽ रहल छल, बुझनामे आएल जे ओ सभ कहि रहल हो, ''चारा कऽ समय तँ कखनहि भऽ चुकल छैक?

रोल्डाओ पाथरक बाट छोड़ि भूसासँ झाँपल धरतीपर आएल आर पएरक नीचाँ नरम मौसममे बनल खुरसँ बनल उभर-खाभर बाट महसूस कएलक। पूबरिया देवालक इमारतकेँ पार कऽ कए जखन ओ दरबाजा खोललक तँ ओकर स्वागत बाछाक आवाज आर परिचित जानवर सभक महक कएलक।

उठलका कूड़ादानक मुँह खुजल आर देवालसँ लागि कऽ टनटनाएल, आर एकटा भुरा केश (फर) फहराएल, जेना जलखै कऽ रहल मूस उछलि पड़ल हो। ओकरा ठोरपर छोट-सन अपभाषा एलैक आ ओ चारा नापै वला बरतनसँ मूसकेँ

मारलक। आगूक एक घंटामे ओ बिना किछु बिसरने अपन दिनचर्या एक नियत गतिसँ पूर्ण कएलक। ओ अपन भोरक कएल गेल काजसँ आनन्द उठौलक आ परिचित दायित्व ओकरा आत्मसंतुष्टिक अनुभूति देलकैक।

रोल्डाओ बहुत बेसी प्रेम व्यक्त करए वला व्यक्ति नहि छल, मुदा चारा देबा काल बाछा ओकर हाथ चाटैत रहैक आ बिलाइ ओकरा पएरसँ अपन पीठ नहु-नहु रगड़ैत छल, एहिसँ ओ बेसी आह्लादित भऽ रहल छल, जाहि भावकेँ ओ प्रायः छिपौने रहैत छल, ताकि लोक भाँपि नहि सकए। ओकर सभ काज पूर्ण होइत-होइत सुरूज बगैचा आ आन गाछ-विरीछपर पड़ल ओसकेँ मेटाबैत-जराबैत अपन छाँही छत आर बगैचाक अधखुला स्थानपर पसारने जाइत छल। भानसघरमे घुसतहिँ ओकरा एकटा सुखद अनुभूति भेलैक किएत तँ मद्धिम आँचपर सूगरक माउस शनैः-शनैः सीझैत रहैक, जकर तेज महक ओकरा आह्लादित कएलक। अपना जेबीमे हाथ दए ओ सलाय निकाललक जकरा ओ प्रायः एकटा चामक बौगलीमे राखैत रहैक, आ एक दिन पहिलुका पाईपकेँ भरए आ सुनगाबाक लेल ओ बढ़ल। ओकर ई काज ओकर स्थिर आ मन्द गति वला नियामकक अनुरूप छलैक। जेना-जेना प्रकाश अपन पएर पसारलक, मद्धिम लील रंगक मेघसँ हवा भरि गेलैक। स्टोवक लौ जहिना एकटा भभकारक संग कम-बेसी होइक तहिना ओकर ध्यान प्रतिदिनक चीज-बीतपर चलि जाइक। जाड़मे बाहर अएलाक बाद ओकरा भानसघरक गरमी दिवास्वप्न जकाँ बुझाइक। क्यो ओकरा आइ याद केने हेतैक, ओ सोचलक, मुदा नास्तापर किछु बाजि नहि भेलैक.....कखनहुँ किछु बेसी नहि कहल गेलैक, कतेक समए बीत गेलैक एखन धरि? ओ साठिक अछि वा एकसठि कऽ? ओ स्मरण नहि कऽ सकल।

ठीक! ओ धीरेसँ बाजल, ''जँ हम नहि याद कऽ सकैत छी तँ क्यो आन किएक?'' ओ अपन पएर पसारलक आ ठाढ़ भऽ गेल। दरबज्जा लग खूँटीसँ टाँगल कोटकेँ पार करैत ओ अपन जैकैट पहिरलक ओ कोनमे राखल छड़ीकेँ हाथमे एना पकड़लक जेना ओ ओकर पुरान मीत होइक।

रोल्डाओ दरबज्जासँ बाहर निकलि सड़क पार कएलक, चारू दिस गामक अवलोकन कएलक। कोना एहन एहि छोट-सन गाम 'पारा' मे सभ चीज बदैल गेलैक। वर्षक अवधिमे सभ किछु उसराह भ' गेलैक, मुदा ओ जानैत छलैक जे धरतीक नीचाँ सूतल जीवन समएक जादूसँ फेर जागि उठतैक। ओ घुमल आ नापल-जोखल पएरे सड़कक नीचाँ दिस चलि पड़ल, एकटा छोटका बाटपर जतए एकटा करिया-झबड़ा कुकुर प्रतिदिन दौड़क प्रत्याशामे प्रतीक्षा करैत छल। कुकुर अपन उर्जाक पहिल स्फोटमे गाछ आ झुरमुट दिस दौड़ पड़ल, ओ विभिन्न प्रकारक गंधकेँ सूँघलक आ निरीक्षणक बाद नव आनन्दमे डूबि गेल।

कुकुर 'ब्लैकी' रूकल, अपन कानकेँ ठाढ़ कऽ बुझू जेना हवामे अपन परिचित जूताक चालिक ध्वनिकेँ पकड़ए चाहैत हो। उर्जाक दोसरहि स्फोटमे ओ सक्रिय भऽ गेल, अपन मालिकक चालिक अनुसरण करए लागल, सड़कक कात-कात रोचक चीज सभकेँ ओ जाँचए लागल। पएर उठाकए ओ अपन जागीरकेँ

कुकुरक मुद्रामे निश्चिन्तताक संग चिह्नित कएलक।

गलीक मोड़पर रोल्डाओ अपन छड़ीकेँ एकटा प्लास्टिक बैग, जाहिपर–दुबई ड्यूटी फ्री–फ्लाई दुबई–स्पष्ट रूपसँ लिखल रहैक आ जकरा जारमे कोनो लापरवाह फेक देने छलैक, ताहिमे खोधबाक लेल रूकल। ओ सावधानीसँ एहि वस्तुकेँ उठाकए कूड़ेदानी दिस लऽ गेल, ई सोचैत जे ओ एना करबलाक बगैचामे फेकि देत। मोनमानी जेहन चीज ओकरा भीतर क्रोध उत्पन्न कऽ दैत छलैक, ओ व्यवस्था ओ नियमक पक्षधर छल, सभ चीज-बीतक लेल एकटा नियत स्थान आ सभ स्थानक चीज-बीत अपन स्थानपर। कोनो चीज खराब नहि होइत छलैक, तागक टुकड़ी सभ जमा कएल जाइत छलैक आ प्लास्टिकक पन्नी धरि तह लगा कऽ राखल जाइत छलैक। जकरा ओ व्यर्थ पदार्थ बुझैत छल ओकरा अपन पियरगर लाल रंगक टाइलसँ बनल घरक पिछुआड़मे उचित मौसम आ हवाकेँ देखि कऽ ओकरा जरा दैत छलैक।

रोल्डाओ एक जागरूक व्यक्ति छल, भोरसँ लऽ कऽ साँझ धरि काज करबाक आदति ओ अपन उमेरक शुरूहे अवस्थामे धऽ नेने छल, माँटिसँ जीविका निकालबाक आ ओकरा संगहि अपन परिवारक जीवन-यापन चलएबाक लेल अपना-आपकेँ योग्य बनएबाक ओकरा गर्व छलैक। ओकरा अपना-आपपर गर्व हेबाक एकटा आर कारण छलैक ओ ई जे ओ ने तँ ककरहुँसँ किछु माँगैत छल आ ने ओकरापर ककरहुँ कोनो कर्ज छलैक। ओकरा भगवानसँ डर लागैत छलैक आ ओ ईश्वरीय तत्वकेर निर्भरतासँ अवगत छल, मुदा गामक चर्च-प्रशासन, संगहि पवित्र क्रॉस कऽ छोट पदाधिकृत छोट चैपल कऽ आलोचक सेहो छल। ओ ने केवल अपन विचार सभकेँ वा अपन कोनो जानएवलाकेँ सुनबैत छल, अपितु अपन भावनाकेँ अपन स्पष्ट मुख मुद्रासँ व्यक्त सेहो कऽ दैत छल अथवा गप्पक काल विषएक उत्तर चुप्पीसँ दऽ दैत छल।

नमहर तंग सड़कसँ खेत धरि ओकर यात्रा आर एक छोट नदी पतझड़ कऽ पातसँ भारी भऽ गेल छल आ ओकरा पएर तर दबा गेल छलैक, कखनहुँ-कखनहुँ डारिकेँ टुटबाक आवाजकेँ छोड़ि। कुकुर अपन नाँगरि आ मुँहक संग कखनहुँ-कखनहुँ कटनूर मूसक बिलक लग सूँघि लैत छल, जतए मूस भोरे-भोर अपन घरक विस्तार करबाक हेतु बहुत रास माटि बहार कएने छल, ओ ओकर ताजा गंध चिन्हैत छल।

जहिना ओ गाछसँ बाहर आएल, रूकि गेल। कुकुर ''ब्लैकी'' फव्वारासँ जे कि सालो भरि बलबलाइत रहैत छलैक, पानि पी कऽ खद्धासँ बाहर आएल, माथ हिलाकए पानि झाड़लक आ एकटा चिपकल गुरचाकेँ निकालबाक लेल ओ अपन कान हिलबैत नीचाँ बैसि गेल। अपन प्रेक्षण स्थानसँ रोल्डाओ गाड़ीक बाट देखए लागल, मानू गामपर कोनो चोटकेर निसान छैक, शोरगुल करैत गाड़ी धुइयाँ निकालैत एना बुझाइक जेना कंकरीटक फीतापर चुट्टी चलि रहल हो। गामक शांतिक भीतर आत्मघातक जल्दीबाजीमे ओ गाड़ी सभ चुपचाप देखए जइसँ अन्जान बढ़ल जाइत छल।

रोल्डाओ बनाओल जा रहल सड़ककेँ ध्यानसँ देखलक, अमोल जमीनसँ हाथ धो लेबाक कारणेँ ओकरा दुख छलैक, मुदा ओकरा बदलामे देल गेल हरजानासँ ओ खुश छल। ओ माँटि खोधए वला उपकरणसँ चकित छल, ओकर आकार आ काज करबाक क्षमतासँ ओ अभिभूत छल, अंततः परिणाम जे ओ आश्चर्यचकित छल किएकतँ जे किछु ओकरा देखा पड़ैत छल ओ ओकरा समझसँ दूर छलैक। अपना जवानीक दिनकेँ याद करैत ओ अपन साठि बरखक अवस्थासँ पाछू देखलक, जखन केवल खेत आ गाछ-बिरीछ, पड़ोसक गाम नगोआ, सेलिगाओ धरि देखल जा सकैत छल आर पहाड़क उपर मान्टे-डी-ग्यूरिम इसकूलक भवन..... जते धरि ओकर दृष्टि जा सकैत छल।

कैक तरहक परिवर्तन भेल छलैक मुदा रोल्डाओ स्पष्टतः एकरा स्वीकार नहि कऽ सकल जे, जे किछु भेलैक से नीकेक लेल भेलैक। भिनसरबाक काजक लेल आवाज दैत चर्च कऽ घंटा हवामे स्पष्ट सुनबामे आएल, समय देखबाक लेल ओ दहिना हाथसँ वास्कट वला जेबीसँ घड़ी निकाललक आ कैक बेर घुमा-फिरा कऽ देखलाक बाद ओकरा आपिस राखि देलक। फेर ओ पाइप भरबाक लेल अपना हाथपर तमाकुल रगड़लक, अपन अभ्यस्त हाथक आँगुरसँ विधिवत पाइप भरलक आ आगिक सुलगा सोंटलक। आगू बढ़बासँ पूर्व ओ कैक बेर सोंट मारि धुइयाँ निकालि अपनाकेँ आश्वस्त कएलक जे तमाकू बरोबरि जड़ैत रहए।

घरक बाहर लटकल धातुक बुरूशसँ ओ अपन जूत्तामे लागल माटि झारलक आ फेर बुरूशसँ गंदगी साफ कएलक। ओ भानसघरमे गेल जूता उतारलक आ दरबज्जा लग पुर्तगाली कुर्सीपर बैसि गेल, अपन पछिला जनमदिन पर भेटल पनही (चप्पल) अपन पएरमे पहिर लेलक।

दुपरहक भोजन (डिनर) बारह बजे मेजपर राखल जाइत छलैक। आन चीज जकाँ भोजन सेहो नियत समयपर खा लेल जाइत छलैक, लंच शब्दक प्रयोग नहि होइत छलैक। दूध दूहए आर चारा देलाक पश्चात् नाश्ता आठ बजे देल जाइत छलैक। बारह बजे डिनर, चारि बजे चाह आर दस बजे सपर (रातिक भोजन)। एहि तरहेँ सभ दिनक दिनचर्या नियत छलैक, ई क्रम तखनहि बदलैक जखन क्यो भेंट करए आबैक वा कोनो समाचार देबए आबैक।

मेजपर बैसैत ओहि रबिक भोजन करबाक हेतु ओ काँटा आ चक्कू उठौलक.....बदामी रंगक भाफ निकलैत सालनसँ झाँपल पुडिंग कऽ सुनहरा रंग पैघ टुकड़ा। एकर बाद ओकरा समक्षहि बीफ (सुगरक माउस) राखल रहैक, जकरा ओ अपन समक्ष राखल चक्कूकेँ स्टीलपर धार तेज करैत निकाललक। ककरहुँ आन प्रकारक भोजन पसिन्न हेबाक स्थितिमे ओहो सभ भोज्य पदार्थ ओतए राखल रहैक, सामान्यतः रबिक भोजन ककरहुँ लेल पर्याप्त होइत छल।

चाहक सएय चारि बजे भलैक। चाह पीलाक पश्चात् ओ खिड़कीसँ आबैत रोशनीक दिस पीठ कऽ कए बैसबाक लेल सामने वला घरमे गेल। अपन चश्मा

लगौलक आ शेष दुनियाँक समाचार जानबाक लेल ओ रबि दिनका समाचार-पत्र उठौलक। ओ शीघ्रहि अलसा गेल, जहिना ओकरापर निन्न सवार होमए लागलैक, ओ माथकेँ आरामसँ कुरसीक कुशनपर राखि देलक।

घरमे लोकक आवाजसँ रोल्डाओ जागि गेल–दौड़बाक कारणेँ पएरक खड़बड़ाहटि आ दूई बच्चा द्वारा एक दोसराकेँ धकेलैत दरबाजा खोलबाक आवाज, ओहि दुनूकेँ ओकरा लग पहुँचि पार्सल देबाक जल्दी। ओ कुरसीपर चढ़ल ओकरा चुमलकै आर जन्मदिन केर बधाई देलकैक, ओ बड़ कुशलतासँ एक दोसराकेँ अपन बाहुपाशमे जकड़लक।

पहिने ककर पार्सल खोलल जाए? एहि समस्याक समाधान 'लेडीज फर्स्ट' कहि कए समाधान कएल गेल। बालक बाजल, ''दादा नीक चीजकेँ बादक लेल राखैत छथि''। जहिना टकराव केर स्थिति उत्पन्न भेलैक, ओ ओहि दुनूकेँ कपड़ा बदलबाक आ बाहर जा कए खेलबाक लेल कहलकैक। जेना ओकरा दुनूकेँ मोनमे आनन्दक अनुभूति भेलैक, ओकरा कानमे हँसी केर आवाज आबि टकराएल।

भानसघरमे नओ बजबाक आवाज सुनबा धरि, दुपहरसँ साँझ धरि ओकर मीत, संबंधी लोकनिक बधाई ओ उपहार लऽ कए अएबाक क्रम चलितहि रहलैक। ओ रातिकेँ पहिरए जाएवला पयजामा पहिरलक, खूट्टीसँ स्कार्फ खींचलक गरदनिमे लपेटलक आ जाड़क अनुसारेँ ओकरा नीक जकाँ बान्हलक, सभ दिनक रात्रिकालीन नियमक अनुसार लकड़ीक नमगर 'अदाम्बो' सँ मुख्य द्वार धरि खिड़की ओ दरबज्जाक छिटकिनी जाँचलक। खिड़की लग राखल एक बहुत महत्त्वपूर्ण चीज–छओ सेलवला बड़का टार्च उठौलक, ओकर प्रकाशमे अपन सभ सामान कऽ निरीक्षण कएलक।

ओकरासँ कनेक आगू सदा ओकरा संग रहएवला ओकर कुकुर ब्लैकी ओकरा संगहि-संग घूमल। अकाशमे जगमग करैत तरेगण केर रातिमे जहिना ओ उपर देखलक, शीतल बसात ओकरा गालपर थपेड़ा मारलकैक, एकटा मद्धिम प्रकाशक संग चान फार्म कऽ घरकेँ आलोकित करैत रहैक।

आपस आबैत ओ सभ दरबाजाकेँ बंद कएलक आर ई सुनिश्चित कएलक जे सभ किछु सुरक्षित अछि कि नहि। तखन ओ उठिकए भानसघरमे राखल चमचम करैत कागदक टुकड़ा उठौलक। कागदक नीचाँ लिखल शब्द रहैक, ''जन्मदिन मुबारक.....दिन मंगलमय हो ''।

ओ लिखावटपर ध्यान देलक, शब्दकेँ धीरे-धीरे पढ़लक आर फेर मोनहि-मोन मुसकी देलक आ जोरसँ कहलक।

''भगवानक सौगन्ध, हँ........ई एकटा नीक रबि रहल।''



कुसुम ठाकुर

उपन्यास-
प्रत्यावर्तन - पहिल खेप

१

एक बेर हमरा एकटा पत्रिकामे किछु लिखए लेल कहल गेल छल, ई सन् १९९६ क गप्प थिक। हम बस एतबे लिखि सकलहुँ-

"हम की लिखी हमर तँ लेखनिये हेरा गेल"।

मुदा आइ बुझना जाइत अछि जे नञि, हमरा एकटा कर्तव्यक निर्वाहण करबाक अछि।

२

हम सदिखन अपनाकेँ हुनकर शिष्या सहचरी आ नहि जानि कि सभ बुझैत रही। हुनक कि एकोटा एहन रचना छलनि जकरा कि हम पूरा होमसँ पहिने कै-एक बेर नहि सुनइत रही। हम तँ हुनक एक-एक रचनाकेँ ततेक बेर सुनइत रही जे करीब करीब कंठस्त भऽ जाइत छल। एक-एक संवाद आइ धरि ओहिना हमर कानमे गूंजैत रहैत अछि। हम तँ हुनक सभसँ पैघ आलोचक, सभसँ पैघ प्रशंसक रही। अद्भुत कलाकार छलाह, एक कलाकारमे एक संग एतेक रास गुण भरिसक नहि होइत छैक। लेखक, निर्देशक, अभिनेता, गीतकार, संगीतकार, सभ गुण विद्यमान छलन्हि। हमरा कि बुझल रहए जे नीक लोकक संग बेसी दिनक नहि होइत छैक। भगवनोकेँ नीक लोकक ओतबे काज होइत छैन्ह जतबा कि मनुष्यकेँ। हम तँ भगवानसँ कहियो किछु नञि माँगलियनि, बस हुनक संग सदा भेटए- यैहटा कामना छल। मुदा एकटा बात निश्चित अछि जे जऔं भगवान छथि आ कहियो भेटलथि तँ अवश्य पुछ्बन्हि जे ओ हमरा कोन गलतीक सजा देलथि, हम तँ कहियो ककरो खराब नञि चाहलियैक।

एतेक कम दिनक संग, परंच ओ जे हमरापर विश्वास केलन्हि आ हमरा स्नेह देलन्हि, शायद हमरा सात जन्मोमे नहि भेट सकैत छल। एखनो जँ हम हुनक फोटोक सोझाँ ठाढ़ भऽ जाइत छी तँ बुझाइत अछि जे ओ कहि रहल छथि- हम सदिखन अहाँक संग छी।

जाहि दिन हम पन्द्रह बरखक भेलहुँ ओकर दोसरे दिन हमर विआह भऽ गेल। ओहि समए हम विआहक अर्थ की होइत छैक सेहो नञि बुझैत छलियैक। हम तँ मैट्रिकक परीक्षा दऽ अपन पितिऔत बहिन कऽ विआह देखए लेल गाम गेल रही। हमरा की बुझल छल जे हमरो विआह भऽ जाएत। ओहि समए हमर बाबूजी अरुणाचल (ओहि समय केर नेफा) मे पदासीन छलाह, हम रांचीमे अपन छोटका काका लग रहि कऽ पढ़ैत रही।

हमर पितिऔत बहिन कऽ विआह भेलाक तुरंत बाद हमर बाबूजी आ छोटका काका कत्तहु बाहर चलि गेलाह, कतय गेलाह से हम नञि बुझलियैक। हम सभ भाए-बहिन आ हमर छोटका काकाक बड़की बेटी, अर्थात हमर पितिऔत बहिन सेहो हमरा सभ संग गामपर रहि गेलि, कारण हमरा सबहक स्कूलमे गर्मी छुट्टी छलैक , हम सभ खूब आम खाइ आ खेलाइ। मुदा हम देखी जे हमर दादी हमरा किछु बेसी मानथि। अचानक एक दिन भोरमे जखनि हम उठलहुँ तँ देखैत छी जे सभ कियो व्यस्त छथि। हमर दादी सभ काज करनिहार सभकेँ डाँटि रहल छलीह, कहैत छलीह-

"आब समए नञि छैक, जल्दी जल्दी काज करए जो"।

हमरा किछु नञि फुराइत छल जे ई की भऽ रहल अछि। हमरा देखिते हमर दादी कहलथि-

"हे देखियौ, अखनि तक ई तँ फराके पहिर कऽ घूमि रहल छथि"।

हमरा किछु बूझयमे नञि आबि रहल छल जे ओ की बजैत छलीह। तखनि हमरा ध्यान आएल जे किंसाइत हमर जन्मदिन काल्हि छैक ताहि दुआरे दादी कहैत हेतीह-हमरा किचकिचाबए लेल। ओ सभ दिन कहैत छलीह जे अइ बेर जन्मदिनमे अहाँकेँ साड़ी पहिरए पड़त आ हम खौँझा जाइत छलहुँ। ई सभ सोचिते छलहुँ ताबत देखलियैक जे छोटका काका आँगन दिस आबि रहल छलाह। हुनका संग हमर बाबा सेहो छलाह। ओ दुनु गोटे दलानपर सँ आबि रहल छलाह, से बाबाकेँ देखलासँ बुझएमे आबि गेल। हुनका सभकेँ देखिते हमर माँ आ दादी दुनु गोटे आगू बढ़ि कऽ हुनकर स्वागत केलथि आ माँ केँ हम कहैत सुनलियैन्ह-

"आब कहू जल्दी सँ जे लड़का केहेन छथि"।

हमरा किछु नञि बुझना जाइत छल, तावत हमर काका हमरा दिस देखलथि आ देखिते देरी कहलथि-

''अरे तोहर बिआह ठीक कऽ कए आएल छियहु, मिठाइ खुआ''।

हम तँ एकदम अवाक रहि गेलहुँ। हम ओतएसँ भागि कऽ अपन कोठरीमे आबि बैसि कऽ सोचए लगलियैक, आब की होयत हम तँ अपन दोस्त सभकेँ

कहि कऽ आएल रही जे अपन दीदीक बिआहमे जा रहल छी, ओ सभ की सोचत। हमरा एतबो ज्ञान नहि छल जे हम बिआहक विषएमे सोचितहुँ।, हमरा चिंता छल जे दोस्त सभ चिढाएत। बेश, कनि कालक बादसँ हमर भाए-बहिन सभ खुशी-खुशी हमरा लग अबथि आ सभ गोटे खुशी-खुशी कहथि,

"हम सभ नबका कपड़ा पहिरब"।

ओ सभ तँ आर बहुत छोट-छोट छलथि, हमहीं सबसँ पैघ छी।

हमर काका जल्दी जल्दी स्नान ध्यानक बाद भोजन कऽ तुरंत चलि गेलाह, पता चलल जे ओ बरियाती आनए लेल गेलाह। ओहि दिन, दिनभरि सभ व्यस्त छलथि। हम अपन माएकेँ व्यस्त देखियन्हि, परंच खुश नञि लगलीह। भरि गामक लोकक एनाइ-गेनाइ लागल छलय। दोसर दिन भोरे हमर बाबूजी अयलाह। हुनका चाह देलाक बाद आ हुनकासँ गप्प केलाक बाद माएकेँ हम प्रसन्न देखलियन्हि। तावत धरि हमहूँ बूझि गेल छलियैक जे आब सत्ते हमर विआह भऽ रहल अछि आ हमरा दोस्त सभसँ बात सुनइये पड़त आ ओ सभ चिढायत तकरासँ हम नहि बचि सकैत छी। ओहि दिन हमर जन्मदिन सेहो छलय, साँझमे दादीकेँ मोन रहि गेलन्हि आ हमरा साड़ी पहिरय पड़ल।

४

खैर हमर विआह बड़ धूम धामसँ भेल आ हम तेहेन लोकक जीवन संगनी बनलहुँ जे हमर जीवन धन्य भऽ गेल।

गामक ओ समए हम कहियो नञि बिसरि सकैत छी। ई ओहि समएक गप्प थिक जखनि कि हमर बहिनक विआह भऽ गेल छलन्हि आ ओ सभ चलि गेल छलीह। हमर बाबूजी आ छोटका काका हमरा लेल वर ताकए लेल गेल छलथि। आइ-काल्हिक हिसाबसँ तँ हम ओहि समए एकदम बच्चा रही आ शहरमे रहलाक कारणेँ हम गाम घरक बहुत किछु नहि बुझैत छलहुँ। सभसँ बेसी विआह बैसाख, जेठ आ आषाढ़मे होइत छैक, अर्थात शुद्ध रहैत छैक। ओहि ज़मानामे अर्थात १९७२ ईस्वीमे गामक रौनक किछु आर रहैत छलय। प्रतिदिन कतो ने कतो विवाह होइत छलैक जाहिमे दादी हमरा लय जयबाक आग्रह अवश्य करैत छलीह। हमहूँ कहियो विवाह नइ देखने छलहुँ, पहिल विआह हम अपन दीदीक (पितिऔत) देखलियन्हि।

ओही समयमे बेसी विआह सभासँ ठीक भेलहा सभ रहैत छलैक जाहि कारणेँ हरबड़ी वाला विवाह हमरा देखय कऽ ओतेक इच्छा नञि होइत छल, मुदा दादीकेँ मोन रखबाक लेल हुनका संग कतहु-कतहु चलि जाइत छलहुँ। ओहि समए हम परीक्षा फलक प्रतीक्षामे रही आर कोनो काजो तँ हमरा नहि छल।

एक दिन हम, माए आ दादी आंगनमे बैसल छलियै कि एकटा खबासनी आएल आ दादीकेँ कहलकन्हि-

"मलिकैन कने एम्हर आएल जाओ"।

ई सुनतहि दादी ओकरा लग चलि गेलीह, पता नञि ओ हुनका कि

कहलकन्हि। कनि कालक बाद दादी हमरा कहलथि-

"चलऽ हम तोरा एकटा सोलकनि सबहक विआह देखाबैत छियौक"।

हमरा आश्चर्य भेल जे आइ दादीकेँ की भेल छन्हि जे ओ हमरा सोलकनिक विवाह देखए लेल कहैत छथि। हम आश्चर्यसँ पुछलियन्हि-

"अहाँ सोलकनिक विआह देखए लेल जाएब"?

दादी मुसकैत हमरा कहलथि-

"चलहि नए अहि ठाम, ब्रम्ह-स्थान लग बरियाती छैक, दूरेसँ खाली बरियाती देखि चलि आएब दूनू गोटे"।

हमारा मोन तँ नहि होइत छलए बरियाती देखबाक मुदा हम दादीकेँ संग जएबाक लेल तैयार भऽ गेलियन्हि। ब्रम्ह-स्थान लगे छलए, हम दुनु गोटे जखन ओतहि पहुँचलहुँ तँ देखलियए जे ओतहि बीचमे पालकी राखल आ ढोल पिपही बाजैत छल, जोँ आगु बढ़लहुँ तँ देखैत छी जे ओहि पालकीमे वर मुँहपर रूमाल देने बैसल छथि आ एकटा बच्चा हुनका आगूमे बैसल छलन्हि, बरियाती सभ सेहो बैसल छलैक। खैर हम सभ आगू बढिकए बरियाती लग पहुँचि गेलियैक। हमरा निक भलहि नञि लागैत छल मुदा पहिल बेर अहि तरहक बरियाती देखैत रही। हम आश्चर्यसँ बरियाती देखैत रही कि कनिये कालक बाद सभ बरियाती ठाढ़ भऽ गेलथि आ पिपही ढोल जोरसँ बाजए लगलइ। हम सभ कने पाछू भऽ गेलहुँ, जहिना पालकी उठलए कि हमरा माथपर कियो पानि ढारि देने छल। हम तँ हक्का बक्का भऽ कऽ एम्हर-ओम्हर ताकए लगलहुँ, तँ देखैत छी दादीक हाथमे गिलास छलन्हि। हम कानए लगलियए। ई देखि कऽ दादी हँसैत तुरंत हमरा कहलथि-

''गर्मी छलैक ताहि द्वारे ठंढा कऽ देलियौक।''

हमरा बड़ तामस भेल।

हम सभ जखनि घर पहुँचलहुँ, हम कानइत माएसँ कहलियए-

''हम कहियो दादी संग विआह देखैक लेल नञि जाएब''।

हमर एकटा पीसी ओहि ठाम बैसल रहथि, कहि उठलीह,

"नञि कानी, तोहरे निक लेल केलथुन"।

हमरा किछु नञि बुझएमे आएल आ बकलेल जकां हुनकर मुँह देखैत पुछलियन्हि- "कि नीक भेल, सभटा कपड़ा भीजि गेल"।

ई सुनि कऽ ओ कहलथि-

"गेए बरियातीक जेबा काल पानि माथपर देलासँ लोकक विआह जल्दी होइत छैक, ताहि लेल तोरा पानि देलथुन "।

हम आर जलि भुनि कऽ ओतएसँ चलि गेलहुँ। ओकर कनिये दिनक बाद हमर विआह भऽ गेल।

जहिया हमर विआह भेल ओहि समए हमर घरवाला श्री ललन प्रसाद ठाकुर इंजीनियरिगक अन्तिम बरखमे पढैत छलाह। हम मैट्रिकक परीक्षा देने रही आ परीक्षा फल सेहो निकलि गेल छल। हमर विआह आषाढ़ मासमे (दिनांक १३ जुलाईकें भेल छल। विआहक तुंरत बाद मधुश्रावणी छलैक ताहि द्वारे हम गामपर रही गेलहुँ आ हमर काका मधु-हमर पितिऔत बहिनक संग राँची चलि गेलाह। काका हमरा कहैत गेलाह जे ओ हमर परीक्षा फल आदि स्कूलसँ लऽ कॉलेजमे हमर नाम लिखवा देताह। तैं हम निश्चिन्त रही। हमर काका नाम लिखवेलाक बाद हमरा खबरि सेहो कऽ देलन्हि। हमर नाम "निर्मला कॉलेज रांची" मे लिखाएल छल।

दादीक आग्रहपर हमरा गामपर रहि मधुश्रावनी करवाक छल, बहिनक विआहसँ अपन विआह आ मधुश्रावनी धरि करिब दू माससँ बेसी रहए पड़ल छल। हम पहिल बेर अपना होशमे एतेक दिन गामपर एक संग रहल रही। ओना तँ हम सभ, सब साल गाम जाइत रही, मुदा एक संग एतेक दिन नञि रहैत रही। ओ पहिल आ अन्तिम बेर छल जे हम गामक मजा निक जकाँ लऽ सकलियैक।

चतुर्थी आ दहनहीक बाद सभ गोटे चलि गेलाह। हिनको कॉलेज खुजल छलन्हि, ईहो- हमर घर वाला- मुजफ्फरपुर, अपन कॉलेज चलि गेलाह। आनक गेलापर ओतेक सुन्न नञि लागल, मुदा जहिया ई गेलाह ओहि दिन बड़ सुन लागल। ई किएक होइत छैक नहि जानि, विवाह होइतेक संग एतेक प्रगाढ़ सम्बन्ध कोना भऽ जाइत छैक जे एक दोसरासँ अलग रहनाइ निक नञि लागैत छैक। दादी हिनकासँ करार करवा लेलथिन जे मधुश्रावणीमे अवश्य अओताह। दादीकें तँ हँ कहि देलथि मुदा हमरासँ कहलथि ओ नहि आबि सकताह। हमर मोन तँ छोट भऽ गेल मुदा फेर सोचलहुँ हमर तँ क्लास छूटिये रहल अछि हिनकर किएक छूटन्हि। हम कहलियन्हि किछु नञि, ओहि समएमे हम हिनकर बातक हँ वा नञिमे जवाब दैत रहियन्हि। ओनाहुँ हम कम बाजैत रही आ हिनकासँ तँ निक जकाँ बाजएमे हमरा एक साल लागि गेल।

गामपर बाबा दादीकँ छोड़िकए घरमे, हमर माँ बाबुजी आ हम छहु भाए बहिन रही। ओहि समएमे असगरो जे सभ गामपर रहैत छलाह वा छलीह, किनको ई नञि बुझाइन्ह जे असगर छथि। आ हमर घरमे तँ विआह भेल छल। रोज भोर साँझ गाम घरक लोकक अएनाइ-गेनाइ लागल रहैत छलैक। एक तँ अहुना जहिया-जहिया हम सभ गाम जाइ, लोक सबहक एनाइ-गेनाइ लागल रहैत छलैक आ अहि बेर तँ हमर विआह भेल छल। अहि बेर कनि बिशेष लोकक एनाइ-गेनाइ रहैत छल आ हमर कनि विशेष मान-दान सेहो होइत छल। कहियो कतहुँसँ खेनाइ आबए कतहुसँ खोइंछ भरए कऽ लेल कियो कहए लेल आबथि, सभ कियो एतबा अवश्य कहथि, ठाकुरजी बड़ जल्दी चलि गेलथि। दादी सभकँ

कहथि-'' फेर जल्दिये अओताह, पंचमीसँ मधुश्रावणी धरि रहताह''। हुनका सभकँ की बुझल जे ठाकुर जी नञि आबि रहल छथि, हम सुनि कऽ चुप रही, किनको किछु नञि कहियन्हि, माए तककँ नञि कहने रही, मुदा जखन हिनकर एनाइ-गेनाइक गप्प सुनि मोन उदास भऽ जाए।

हमर जहिया विआह भेल हम ओहि समए फ्राक या स्कर्ट ब्लाउज पहिरै रही। अचानक हमरा साड़ी पहिरय पड़ि गेल। जहाँ कियो आबथि, ख़ास कऽ मौगी महाल महक तँ हमरा बजाएल जाय। हमर बहिन सभ दौड़ कऽ हमरा लग अबथि कहए कऽ लेल, ओकर बाद हम जल्दीसँ ककरोसँ साड़ी ठीक करवाबी आ तखन्हि हम हुनका सभ लग जाइ। दियादि महक काकी-पीसी सभ गोटेमेसँ बराबरि कियो ने कियो रहैत छलीह, ओ सभ ठीक कऽ देथि, तइयो कैक बेर हमर पैर साड़ीमे फँसल हएत आ हम खसल होयब। जे कियो आबथि एतवा अवश्य कहथि,

"देखियौ कुसुम केहेन लागैत छथि"।

आ देखलाक बाद कहथि-

"बड़ सीरी चढ़ल छैक"।

कतेक निश्छल भावना आ कतेक अपनापन रहैत छलैक हुनका लोकनिमे।

हमर दु-तीनटा पीसी सेहो ओहि समएमे ओतहि रहैत छलीह, जिनकर सबहक विआह ओहि बरख भेल छलन्हि आ ओ सभ हमर संग तुरिया छलीह। भरि-दुपहरिया घर भरल रहैत छल, हुनका सभ संग ओहिना समए बीति गेल आ पंचमी आबि गेल। पंचमीसँ एक दिन पहिने भोरे भोर हमर सासुरसँ भार आएल, ओहिमे सभ किछु बिधक ओरिओनसँ आएल छल। भरि गामक लोककँ दादी हकार दियवा देलथिन, सभ भार देखैक लेल आबथि आ जे देखथि से कहथि, एतेक निक भार किनको ओतहुसँ नञि आएल छलैक, गामपर सभ गोटे भार देखि कऽ बड़ प्रशंसा करथि, हमरा ई सुनि बड़ निक लागए। जिनका हम कहियो देखने सुनने नइ- हुनकर प्रशंसा सुनि हम खुश होइ। हमर दादी सेहो खुशीसँ सभकँ कहथि-

''अरे महादेव झा ओतएसँ भार आएल अछि''।

हमरा ओहि समएमे किछु नञि बुझाए, हम सोची हमर ससुरक नाम तँ हीरानंद ठाकुर छन्हि, दादी बेर-बेर किएक कहैत छथि महादेव झा ओतएसँ आएल अछि। हम पुछऽ चाही किनकोसँ मुदा एम्हर ओम्हरमे बिसरि जाइ।

कॉलेजसँ हमरा ई प्रतिदिन एकटा चिट्ठी लिखथि, ओहिमे सभ दिन जवाब देवाक लेल लिखैत छलथि, मुदा हमरा जवाब देबएमे लाज होइत छल। एक दिन हमर भाए आ बाबुजी कोनो काजसँ मुजफ्फरपुर जाइत छलाह। ओहि दिन हम पहिल चिट्ठी लिखि कऽ भाएकँ देलियन्हि जे हुनका दऽ देबाक लेल।

पंचमीसँ एक दिन पहिनहि भोरमे भार आएल छल, साँझमे बाबुजी सभकँ सेहो अयबाक छलन्हि। हमरा अपन संगी आ पीसी सभ संगे फूल लोढ़य लेल

जयबाक छल। दादी सभ ट्रेनसँ हिनकर बाट ताकथि अंतमे हमर बहिन सभसँ कहि पुछओलथिन, हम बहिन सबकँ कहि देलियन्हि- हमरा किछु नञि लिखने छथि। दादी तकर बादसँ निश्चिंत भऽ गेलीह आ तखनसँ कहथि जे तोहर बाबुजी सभ संग अवश्य अओताह।

साँझमे सभ घाँउझ बान्हि कऽ हमरा ओतहि आएल देखए लए- सबहक हाथमे फूल डालि आ पथिया छलैक कियो-कियो अपन खबासिनीकँ सेहो संगमे लऽ लेने छलथि किछु कुमारि सभ सेहो संगमे छलथि। हमरो संग दादी एकटा खबासिनी लगा देलथि ओ हमर फूल डालि आ पथिया लऽ लेलथि। हमसभ पूरा टोलक सभ गोटे गीत गाबैत हँसी मजाक करैत अपन अपन फूल डालि पथिया लेने पहिने गाछी दिस गेलहुँ। दादी हमरा हिदाइत देने रहथि- जे बाँस वा अन्य पैघ गाछक पात कियो तोरय, जाहि जूही कऽ पात आ फूल सभ हम अपने तोड़ी। हमरा बड़ पोल्हा कऽ कहलथि-

"हे मधुश्रावणी लोककँ एकइ बेर होइत छैक जहिना कहैत छी कयने जाउ"। हमहुँ निक बच्चा जकाँ मुरी हिला कऽ हँ कहि देलियनि।

हम सभ, सभसँ पहिने बंसबट्टी दिस बिदा भेलहुँ। बाँसक पात तोड़लाक बाद हम सब जाहि जूही आ अन्य अन्य पात आ फुलक खोजिमे सबहक बाड़ी-बाड़ी जाइ आ सभ तरिसँ फूल सभ बटोरैत जाइ। हमरा तँ बुझलो नञि छल जे कोन-कोन फूल आ कोन-कोन पात चाही। जेना जेना सभ कियो तोड़थि हमहुँ तोरैत जाइ। दादीक हिदाइत हमरा मोन छल। हम पथियाटा नहि उठा पाबैत रही, सेहो हमर पितिऔत बहिन, देयादि महक छलीह - से उठा दैत छलीह। जखन्हि हमरा सभ गोटे कहलथि जे आब भऽ गेल, हमहुँ हुनका सभ संगे आपस हेबाक लेल चलि देलियन्हि। हमरा देखि कऽ ततेक आश्चर्य भेल, हमसभ एक-एक पथिया भरि कऽ पात जाही जूही लऽ लेने रहि।

आब ओ हमरा बसक नहि छलैक जे ओ हम उठा कऽ एको डेग आगू बढितहुँ। हमर पितिऔत बहिन ओकरा अपन माथपर लऽ कऽ चललीह। रास्ता भरि हँसी मजाक होइत छलैक, ओहीमे सँ बेसी मजाक हम नहि बुझैत रही। बिच-बिचमे बटगमनी सेहो हैत छलैक। इहो गप्प होइत छलैक जे किनकर सभहक वर आएल छथि आ किनकर सभहक बादमे अर्थात मधुश्रावणीसँ पहिने अओताह। हमारोसँ सभ पुछथि, हम किछु नञि, बाजी हमरा लाज होइत छल। नहि बजलापर सभ हमर आर मजाक उड़ाबथि, हम अहिना दुखी छलहुँ ताहिपर ई सभ मजाक करथि। कखनो मोन होइत छल बेकारे सभ संग अएलहुँ। हमरा होइत छल हम कहुना घर पहुँची, हम मजाकसँ तंग आबि कऽ अपन बहिनसँ जे पथिया लेने रहथि, कहलियन्हि, अपना सभ आगू चलू। हम सभ आगू जल्दी जल्दी बढि रहल छलियैक मुदा कथी लेल हमरा कियो जल्दी जाए देत पकड़ि कऽ बिचमे हमरा सभ गोटे कऽ लेलथि।

ओहिना करैत हम सभ मुखिया बाबाक घर लग पहुँचि गेलहुँ । हमर घर

ओकर बाद छलैक हम हाथमे फुलक डाली लेने सभ संग बिचमे चलैत रहि। घर लग पहुँचि सभ गोटे जोर जोरसँ हंसथि हमरा ई कहि आगू कऽ देलथि जे आब हमर दादी देख लितथि तँ हुनका सभकेँ डाँटि परतन्हि। हम आगु आबि जहिना बरामदा दिस बढलहुँ देखैत छी कुर्सीपर बाबा आर बाबुजीक संग ई बैसल छथि आ तीनू गोटे चाह पीबि रहल छथि। हम लाजसँ जल्दी-जल्दी आँगन दिस भागि गेलहुँ।

आँगन पहुँचि देखैत छी दादी आ माए व्यस्त छथि। एक तँ पाबनिक ओरियाओन होइत छलैक, दोसर जमाए विआहक बाद पहिल बेर आएल छलथि, तेसर समधियोनिसँ पाहुन भार लऽ कऽ से आएल छलथि। हमरा देखितहि दादी कहए छथि-

"यै अहाँ बिना माथ झपने अहिना बाबा आ बाबुजीक सोंझासँ आबि गेलहुँ"।

हम किछु नञि बजलियन्हि, हम आ हमर बहिन चुप-चाप कोहबर घर जाए कऽ फुल डालि आ पथिया राखि देलियैक। ओहि समएमे हमरा माथ झांपयमे बड़ लाज होइत छल। हम बाहरि आबि कऽ माएसँ पुछलियैक,

"बाबुजी मुजफ्फरपुर सँऽ कखन्हि एलथि"

जकर जवाब दादीसँ भेटल,

"अहांक बाबुजी कॉलेजसँ ठाकुर जीकेँ पकड़ि कऽ लऽ अनलथि "।

साँझमे किछु-किछु बिधक ओरिओन आ गीत भेलैक आ दादी कहलथि सभ गोटे जल्दी सुतए जो भोरे उठए परत। रातिमे सुतए काल पता नञि हमरा कोना मोन छल, हम हिनकासँ पुछलियन्हि-

"भार कतएसँ आएल छैक"?

हिनका किछु बुझएमे नञि अयलन्हिन्ह, हमरा कहलाह-

"मतलब.... कोन भार "?

फेर मुस्कुरैत हमरा कहलाह-

"अहाँकेँ हमरा देखि कऽ खुशी नञि भेल जे अहाँ हमारासँ भारक विषएमे पुछैत छी "।

हम मुड़ी हिला कऽ हाँ कहि देलियन्हि मुदा फेर आस्तेसँ कहलियन्हि-

"दादी सभसँ कहैत छथि महादेव झा ओतएसँ भार आएल छैक। ई सुनतहि जोरसँ ठट्ठा कऽ हँसैत हमरा कहलाह-

"ओ.., अच्छा..., ओ महादेव झा, ओ हमर सबहक पाँज़ि अछि ताहि लेल बाजैत होयतीह"।

तकर बाद हमरा पाँजिक विषएमे सेहो बता देलथि। हमरा अपनापर हँसी लागल-कहु तँ भोरसँ हम ई सोचि कऽ परेशान छलहुँ जे महादेव झा के छथि।

(अगिला अंकमे)



सुरेन्द्र किशोर झा

गाम कठरा-जिला दरभंगा

साथी दुखमे न कोइ

एक साधारण मध्यमवगीर्य कुलीना परिवारमेंजन्म (कलयुगमे कुलीन परिवारक परंपराके निमाएब बड़ कठिन, तकलीफ होएत परंतु मुँहसँ उफ आ आह तक नहि उच्चारित कऽ सकैत छी कारण काट वाकील मोकएवला और बेशी मजाक उड़ेताह, कहताह की भेल? आ कहिकहकहा लगओताहा)।

अस्तु, जन्म आ बालकपन लगभग सभ मध्यमवगीर्य व्यक्तिक परिवारमे थोड़बेक उनैस बीस ढ़गसँ व्यतीत छोरंत छैक। आ हिनकहु बीतकनि नीकहिं रूपमे। माए-बाप आ परिवारक नीक प्रतिष्ठा और आवश्यकतानुकूल पर्याप्त संपति तथा गामक चारिटा जेठ रैयतमे सँ एक हिनकहु पितामह हेबाक कारण हिनक बाल्यकाल बहुत नीक लाड़ प्यारमे बाल-कीड़ा करैत बितलनि।

पश्चात विद्यार्थी जीवन शुरु भेलनि । किछु हिन गाममे पचकौड़ी मास्टर साहबक ओहिठाम भट्ठा पकरलाक बाद लहेरियासराय (दरभंगा) एलाह । एतय पोख-रिया स्कूलमे प्राथमिक कक्षाक पढ़ाई कऽ पुन सरस्वती स्कूलसँ मैट्रिक कएल । प्राथमिक कक्षाक पढाईक समए , एक नेगरा मास्टर साहब सेहो गामसँ बलभद्पुर आएल रहथि । सौसे मुहल्लाक विद्यार्थी सभ भोहि समएमे हुनकेसँ ट्यूशन पढ़थि इहो हुनका लग जाए लगलाह । विद्यार्थीक बीच स्पर्धा और पढ़बाक प्रति अभिरूचि और ओहिसँ एक नीक विद्यार्थीक रूपमे इज्जत भेटब ओही ठामस शुरु भेलनि।

बाल्यकालवा विद्यार्थी अवस्थाक हर रोमांचकरी समए हुनका आइयो याद अबैत छनि तँ आंखिसँ नोर बहए लगैत छनि । एक ओकर याद आ दोसर जिंदगीक रथक दोसर पहियाक रूपमे भेटल

सुलक्षणा नारी (पत्नी) । आहा हार रे भाग्य हुनकसतत् मुस्कुराईत छेहरा आई एकटा हथिनीक लगमे मृगपुरुषसँ बेशी नहि रहि गेल छनि । अस्तु, उपरोक्त किछु बात भावावेशमे कालक्रमकँ व्यतीत हेबासँ पूर्व लिखा गेल आहि।

हुनक प्राथमिक शिक्षा बहुत नीक बितलनि । नेंगरा मास्टर साहब (श्री राजेन्द्र झा, सोंथा, बेनीपट्टी) ओहि समएमे कोना दोसर विद्यार्थीकेँ जँ विद्यार्थीक आदर्श बुझबैत रहथि तँ हिनकहिं नाम लए । हिनका अपन पाठ्यपुस्तकक अधिकांश विषए तँ बुझले रहनि जे दोसरो बच्चा वाविद्यार्थी सभक जोरसँ पढ़ल गेल विषए कंठाग्र भए जाइत रहनि। जाहिसँ विद्यार्थी मध्य एवं मुहल्लामे सभ नीक नजरिसँ एवं प्यारसँ देखन्हि ।

पश्चात् एम. एल. एकेडमी (सरस्वती स्कूल) लहेरियासरायसँ १९७४ ई०मे मैट्रिक (११ क्लास) पास कएलनि । ओहिवर्ष मैट्रिकमे गामक गाम रिजल्टक बाद सन्नाटा पसरल छल।

कारण कोनो गाममे १५ मे सँ २-३ तँ कतहु २० मे सँ २- विद्यार्थी मात्र पास भेल रहथि । हिनको पर माँ भगवातीक कृपा रहनि मैट्रिक पास केलथि।

पुन: मैट्रिकक बाद घरसँ लग हेबाक कारण आई.एस.सी (फिजिक्स, केमिस्ट्रीई एवं गणित विषय) १९७७ ई० मे पास कएल । तावत रिजल्ट सभ निकलबासँ पहिनहि एकटा आई.एस. सी. के विद्याथी मात्रके रूपमें गामसँ पश्चिम २ कोसक करीबक दूरीपर विआह भऽ गेलनि । कारण हिनकर पिताजी एकटा साधारण गृहस्थ रहथिन्ह जिनका मात्र खेती गृहस्थीक आमदनीपर हिनकासँ जेठ तीनटा बेटीक विआहक खर्चक भर परि चुकल रहनि संगहि ईआहिनक छोट भाएक पढ़ाई लिखाई आ पुन: एकट कुमारी बेटीक विवाह-दुरा-गमनक भविष्यं भावी खर्चक बोझ जेहन जीर्ण-शीर्ण बना देने होइन्हि एहि विषएकेँ केवल एकटा सत्पुरुष आ स्च्चरित्र नारी मात्र बूझि सकैत छथि । एहने एक महात्मा गृहस्थ ब्राहमनक छ: संतानमे सँ चारिम एवं प्रथम पुत्र इहो रहथि जे पित्ती-पितियाइनक ओहिठाम रहि बलभद्रपुरमे पढ़ाई लिखाई केलनि ।

एहि तरहक एकटा गृहस्थकेँ अपन तीनटा पुत्रीक विआह-दुरागमनक बाद पुत्रक विआह करबाक केहन अभिलाषा रहैत हेतैक अंदाज लगाएल जा सकैत अछि। एहने समएमे समयानुकूल बहुत लोक हिनकहु ओहिठाम कुटुमैतीक प्रसंगमे एलनि । एक-दू ठाम परिवार नीक पसंद परलनि तँ समगोत्री उहरि गेलनि। पश्चात् एकटा मास्टर साहेब (हेड मास्टर) सेहो आबि अपन प्रस्ताव (पुत्रीक, जेठपुत्रीक प्रति) रखलन्हि । हिनक गृहस्थ पिता बिना कोना विशेष मंथन आ मंत्रना के हेड मास्टर साहेबक प्रस्ताव स्वीकार कए लेलनि। हेडमास्टर साहेब कथाक प्रसंगमे इहो कहलखिन्ह जे हमरा परिवारमे तीन पीढ़ीक बाद बेटी जन्म लेलनि आछि आ ई हमर तीनटा बेटीमे प्रथम बेटी थिकीह, जिनकर विआह तीन पीढ़ीक बाद पायल बेटीक रूपमे हेतनि । बस हिनकर सोझ लोक पिताकेँ और की चाही मन गद्‌गद भऽ गोलनि एवं कथा स्वीकार कऽ लेलनि। पश्चात् हिनका (अपन जेठ बेटा) संकहल, बौआ आब खेतीसँ बहुत नीक आमदनी नहि भऽ रहल अछि। अहांक छोट भए सेहो बच्चे छथि आ पढ़ाई लिखाई बांकीये छनि। संगहि अहांक एकटा छोट बहिन सेहो कुमारि छथि। अहांक पित्ती खर्चक भय सँ परिवार भिन्न कय नेने छथि । एहेन हालतमे हेड-मास्टर साहवक बेटीसँ विवाह

बहुत नीक रहक चाही । अपने बहुत पढ़ल लिखल, विद्वान हेड-मास्टर साहब छथि तँ हेतु बेटीयो के जरूर नीक पढ़ेने लिखेने हेथिन्ह । एहिसँ अहांक आगांक पढ़ाई लिखाईमे नीक मदद भेटत । ई सभ सोचि हम हुनका कुटुमैतीक लेल हँ कहि देलिएनि ।

हिनका लेल माता-पिताक वचन भगवान रामक लेल माए-बापक वचनसँ किछु ओ कम महप्तक नहि छल। नीक सौख मनोरथसँ हिनको बिआह भेल। बड़ बढ़िया शुभारंभ भेला सुलक्षणा पत्नीक सुलक्षण व्यवहार क्रमवत प्रहर्शित होएत।

हिनक एवं हिनक पिताक मनोरथ दिनक दिनानुदिन हवामे पूरब शुरु भऽ गेल। कहब छैक भगवान सभक आश ओ अपन हिसाबसँ पुरबैत छथिन्ह आ हिनकहु मनोरथ आकाशक हवामे पूरब शुरु भेल। ओहि समएमे हवागाड़ी आ टीवी आदिक चलन नहि छल पर्तु जतेक ठीक-ठाकपरिवारक पढ़ए-लिखए पला लड़काक विआह भेल रहनि सभकें साईकिल, घड़ी आ एकटा रेडियो भेटब आमं बात रहनि। हिनको दुनू बापूतकँ बड़ शौक रहनि जे तीन पुश्तक बाद हेडमास्टर साहब बेटीक विआह केलनि अछि तँ एहि मासमे नहि तँ अगिला मासमे तँ साईकिल घड़ी आ रेडियो देबे करथिन्ह । ओहि समएमे प्राय: विआहसँ तेसर सालमे द्विरागमन होईत छलैक। तँ आश रहनि जे एहि महीनामे नहि तँ आगिला महिनामे, अगिला महिना नहि तँ अगिला पावनिक उपलक्ष्यमे। एहि तरहै आशक आ पूरब हवामे पूरब आश्वासन शुह भऽ गेलनि। परंतु अपनेक लोकनिकँ एहि कथाक आरंभहिमे कहल गेल अछि जे कलियुगमे कुलीन मैथिल ब्राहमणकँ कुलीन रीतिसँ जीवन बिताएब बड़ कटिन होईत छैक। हिनको लेल इएह भेलनि। कस्ट बहुत भेल हेतनि लेकिन मुँहसँ उक नहि कऽ सकैत छलाह। जीवन छिएक ''नाव कागज का गहरा है पानी , फिर भी हर हालमे (दु:ख, अपूरित आश आ सुलक्षणा पत्नी, पैघ बापक पैघ बेटी द्वारा हेए दृस्तिसँ देखब सदृश दु:ख तकलीक के सहैत) मुस्कुराकर दुनियादारी पडेगी निभानी। ''एहि कहावतकँ सत्य करैत जिनगी बिताबैत रहलनि । पती द्वारा कहियो सुलक्षणा पत्नीकँ सुझावक क्रममे ''आँखो का भूषण कज्जल है ये अनुचित ऐसा कहना है, ललना लोचन में लाज रहे लज्जा नारी का गहना है। पतिब्रता स्वयं तगड़ी होती फिर तगड़ी का क्या करना है, सबसे अच्छी पति सेवा ही भव से तारने की तरनी है। किन्तु आजकल है नही' इसमे कुछ विश्वास, पतिदासा स्थान पर किये स्वयं पति दास // ''सुनेबापर हिनक बहिन आ भाउज सभ द्वारा हर्ष पूर्वक सुनल गेल परंतु हिनका (सुलक्षणा) द्वारा उपहास सुनबा लेल भेटलनि । तथास्तु उपहास सुनियो भविष्यमे सुलक्षणा (जीवन रूपी रथक दोसर पहिया) के ब्यवहारमे सुधारक आश कऽ कोनहुना मनक दु:ख मनहिमे राखि (ये ऐसी आग है जिसमें धुआं नही होता, और मणुष्य जलकर समाप्त हो जाता है ।) आश कऽ स्वीकार कएलनि ।

अस्तु, समए बीत्तेत रहल। विआह भेलनि। आइ-एस-सी क परीक्षा देलनि। आई-एस-सी पासो केलनि।

तावत, आई-एस.सी.क परीक्षे देने रहथि, रिजल्ट नहिं आएल रहनि आ ओही बीच कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयमे बी.ए.एम.एस (एम्.बी.बी.एस के समतुल्य आयुर्वेद-शास्त्रक चिकित्सा पद्धतिक डॉक्टर) वला पढ़ाई शुरु भेल रहैक। एहिमे मैट्रिक सर्टिकिकेट वलाकेँ लेल सात वर्ष आ आई एस.सी.पास वलाक पांच वर्ष पढ़ए पड़ैत छलैक । गणितक विद्यार्थीकेँ डॉक्टरी पढ़बाक लेल ई बहुत्त नीक पढ़ाई रहैक । बहुत रास विद्यार्थी ओकर परीक्षामे बैसलाह । हिनकर मित्र प्रो-फेशर सोमदेवजीक बालक वर्त्तमानमे डॉक्टर अमित वर्धन हिनकहुँ ओहि परीक्षामे बैसए लेल सुझाव देलकन्हि इहो परीक्षा देलनि । कंपी-टीशनमे पास भेलथि । पुन: इंटरव्यू भेलनि ओहूमे ६०-६५ टा चुनल गेल विद्यार्थीमे सातम स्थानपर चुनल गेलाह । सेलेक्शनमे नाम एलापर अपना परिवारमे अपन ईष्ट मित्रमे एवं समाजमे तथा सासुर सभमे थोड़ेक खुशी तँ जरुर भेल हेतनि ।

पश्चात एडमिशनक समए नजदीक ऐलनि । पिताजीसँ एडमिशन लेल पुछलखिन । पिताजी कहलखिन '' बौआ! सात सालक पढ़ाई बहुत लंबा भऽ जाएत । आई.एस.सी क रिजल्टपर जौ कतहुँ नौकड़ी पकरि लितहुँ तँ बेशी नीक रहैत ।'' पिताजीक बात सिर-माथपर लेलनि । पुन: एक दिन सासुरो गेलाह । ओतहुँ एहिबातक चर्चा अपन हेड मास्टर ससुरजी लग सेहो केलनि । मुँह खोलिके किछु मांगब सेहो स्वीकार्य नहि रहनि । आ कतेको उत्सवपर जे नव जमाएकेँ किछु भेटैत छैक ताहू सभमे साड़ि सरहोजि सभ मजाक उड़ाबनि जे कलासँ मांगि यौन कलासँ कला वस्तु मागि लिय परंतु हिनका तँ सोमदेव जीक ओहि-ठाम पुस्तकमे पढ़ल रहनि जे राजा अकबरकेँ सेहो खुदासँ दुआ मंगैत देखि जे गड़ेड़िया ३ गाम मंगए आएल छल ओ किछु नहि मांगि '' बकड़ी ३ गांव खागइ के बदला, खुदा देंगे तो लूंगा '' के पाठ पढ़ए लगलाह । आ एहिबातक जानकारी राजा अकबरकेँ भेलापर ओ तीन गामक बदलामे ई गाम हुनका खयं बजाकेँ ससम्मान देने रहथिन्ह से कहावत चरितार्थ होमय लगैत छलनि। एहि तरहै परि स्थिति वशात् ओ बी.ए्.म. एसमे एडामिशन नहि होलथि। हुनकर संगी आमितवर्धन जी आई वएह कोर्स कऽ डॉक्टर छथि सम विद्याताक लिखल कपाड़क फेर - - भाग्य आ कर्मक लुकका छिप्पी खेल पाछां परिस्थितवश नौकडीक तलाश शुरु भेल । एहिक्रममे ईंप्लायमेंट एक्शचेंज लहेरियासरायमे नाम द्रर्ज करेलनि । क्रमश: एयर इंडियामे ट्रेनी टेकनिशियन, पुन: एयर फोर्सकेँ दफ्तर कदम कुआंमे एयर मैनलेल आ ब्रांच रिक्रूटिंग ऑफिस मुज्फ्फरपुरमे आर्मी वा नेवीकेँ भर्ती लेल पयास शुरु केलनि ।

दुबर-पातर शरीर लऽ जखन ई भोड़मे १००-२०० केँ भीड़मे ठाढ़ होथि आ सांझ तक ओहिमे सँ मात्र २०-३० विद्यार्थी सेलेक्शन लेल बाचथि आ इहो ओहिमे बंचल रहथि तँ ईश्वरक धन्य-वाद बापनकेँ अलावा हिनका मुँहपर और कोनो श्ब्द नहि बचनि । कहब छैक निर्बलकेँ बल राम ''। हिनकर स्थिति जखन कमजोर होमय लग्लनि, दु:खक स्थिति अपन आ आनके ज्ञान करा दैत

छैक । विद्यार्थीये जीवनमे विआह भऽ गेल रहनि । न अपन जेब खर्च लेल पाई रहनि न सुलक्षणा पत्नीकेँ श्रृंगारक वसु लेल किछु कऽ सकैत छलाह । बहुत विलक्षण स्थितिमे ईश्वर पहुचा हेने रहथिन्ह । परंतु शास्त कहैत छथि जे ईश्वर जँ दु:ख दैत छथिन्ह तँ सुखहु दैत छथिन्ह । आ मणुष्यक लेल जौं आधिकांश द्वारा बंद कऽ दैत छथिन्ह उन्नति हेतु, तँ तैयो ओ सभटा द्वार बंद नहि करैत छथिन्ह । आ हिनको संग दहिन भेलनि । हिनक मकरन्दा वाली बहिन हिनका आग्रहपर हिनका बहिनो के आग्रह केलखिन जे जेठ साढ़ थिकाह । हमर छोट भाए थिकाह । हिनका अहीं अपने संग लऽ जैतियन्हि । किछु अपनेक प्रयास। मददनैकड़ी लेल कऽ देवनि किछु अपने करताह।

भगवान कराथीन्ह कतहु अपना पैरपर ठाढ़ भऽ जेताह तँ नीक हेतनि। ओहि समए ओ सोनपुर जी आरपीमे जमादार (ए.एस. आई) रहथि । दु:खक ओहि घड़ीमे जग सँ परेशान डूबैत कऽ ईश्वरक कृपा सँ तिनकाक सहारा भेटलनि। बाबूजी थोड़ बहुत जेब खर्च हेतु कोनहुना इंतजाम कऽ दइये दैत छलखिन्ह। बस एतहिसँ एयर फोर्स लेल, पटना एक दूबेर गेलाह । ओतए पता लगलनि जे एअर फोर्सक बहालीमे एखन दू-तीन महीनाक देरी छैक। एहि कममे ओ एक दिन अपना बहिनोकेँ आग्रह केलखिन जे हुनका गाममे एक सज्जन जे बिहार होमगार्डमे नौकड़ी करैत रहथि कहने रहनि जे मुजफ्फरपुरमे चक्कर मैदानमे आर्मीक भर्ती होईत रहैत छैक से हमरा जेबाक अनुमति दितौह। हिनकर बहिनो बहुत प्रसन्न मनसँ आशीर्वाद दैत हिनका जेबाक इंतजाम केलनि। एकटा सिपाहीक संग (डयूटीवला सिपाही) मुजफ्फरपुर गेलाह। सिपाहीजी चककर मैदानक कोनापर हिनका पहुंचा देल जतएसँ ओ रिक्रूटिंग ऑफिस पहुंचलाह। ओतए बच्चा (विद्यार्थी) सभ लाईनमे लागि गेटकेँ अंदर जाईत रहथि। इहो लाईन (कतार) मे लगलाह। गेटपर पहुंचलापर हिनकासँ मौट्रिकक सर्टिफिकेट मंगल-कनि। ई पुरना समए बला हाथसँ लिखल अटेस्टेड कापी सर्टिफिके टक देखए देलखिन जाहिपर हिनका गेटसँ अंदर नहि जाए देलकनि जे ऑरिजिनल सर्टिफिकेट होने पर ही गेटके अंदर जाने दिया जाता है। अस्तु, ई आग्रह केलखिन्ह जे मेरे पास घरपर मूल सर्टिफिकेट भी है जिसे देखकर किसी ने यह अटेस्ट किया है अत: आपके अफसर-इन-चार्ज से मिलना चाहता हुँ। थोड़ेक कालकबाद अफसर इंचार्जसँ भेट करा ओल गेल। हुनकहु वएह बात कहल खिन्ह। ओ पूछलखिन्ह कहां तक पढे हैं। सर-आई एस.सी पुन: प्रतिशत आदि पूछि अगिला सप्ताह आबए कहलखिन्ह। ई आग्रह केलसिन्ह जे सर आज फिजिकल चेक अप हो जाने से एक सप्ताह का समय बच जाता । हुनकर कहब रहनि घबराने की । कोई बात नहीं है। अभी काफी समय है आपका सबकाम हो जायगा। क्रमश: फीजिकल आदि के छंटैया सभसँ ईश्वरक कृपासँ २००० मे सँ ३०० बंचल विद्यार्थीमे इहो रहलथि। पुन: लिखित परीक्षा भेलैक। मेरिटलिस्टमे एके.साही प्रथम रहथि आ हिनकर दोसर स्थान रहनि। भर्त्तीं भेलाह। नेवीए नौकड़ी भेलनि।

एहि दरभ्यान एकटा लक्ष्मी रूपी बालिकाक पिता सेहो बनलाह । विआहक तेसर वर्षमे नौकड़ीमे चलि गेलाक कारण द्विरागमन नहिं भेल रहनि ।

संगहिं कहियो विवाहक बाद सासुर-सुलभ कोनो सौख मनोरथ पुरलनि वा नहि तकर हेतु कहियो सुलक्षणा पत्नीकेँ किछु नहि ककलसिन्ह जे हुनका कोनो तर्हक तकलीफ नहि होईन्ह बस ईश्वरक लीला बूझि अपन कर्त्तब्य पथपर ईश्वरकेँ याद करैत आ मनमे धारणा खुदा देंगे तो लूगा "" क्या जानेगा अमीर फकीरी में मजा है वो कांटा भी है फूल जो मालिक ने दिया है । रखने कर्म पथक हर एक कांट भरल मार्गकेँ हँसैत पार करैत रहलाह । भगवानक कृपा होईत छनि तँ कांट भरल-मार्ग सेहो फूलसँ भरल भऽ जाईत छैक यथा "गोपद सिंधु अनल सितलाई, गरल सुधा रिपु करहि मिताई"। अथवा काँटक दर्द देबो करैत हेतनि तँ जिहवापर तैयो निकलैत रहनि "काँटा भीहै फूल जो मालिकने दिया है।"

समए बीत्तैत रोलनि । विआहक तेसर साल बितलनि । पतो नहि लगलनि आ चारिमो साल बीत गेलनि आ चारिममे द्विरागमन मिथिलामे नहि होईत छैक । पांचम वर्षक सेहो प्रारंभ भेल ।

अकस्मात हुनकर दु:खक समएके माए-बापक अलावा ओ एकमात्र सप्तुरुष सहारा भगवानक प्यारा भऽ गेलसिन्ह आ (हमरा मित्र) हुनका सभकेँ एहि मरा संसार (मृत्युलोक) मे छोड़ि विदा भऽ गेलसिन्ह । हुनका घरक लोक ई शोक संदेश समएपर नहि देलसिन्ह जे दु:खक संदेश अल्पवयसकेँ एकसरमे रहएबलाकेँ नहि देल जाए । परंतु सत्य कतहु नुकाएल रहलैक अछि । लगभग दू महीना पश्चात् हुनका सूचना भेटैत छनि जे अहांक प्रिय बहिनो आब नहि रह्लथि । हुनका काटूत खून नहि बला हालत भए गेलनि । शोकाकुल अवस्थामे तुरंत छुट्टी लथ अपन प्रिय बहिनकेँ सात्वना देमए एवं भेंट करए गेलाह । ओही समयमे पता लगलनि जे छुट्टी बढ़ेलापर द्विरागमन सेहो भऽ सकैत छनि । मात्र ढ़ाईपर्षक नौकड़ीमे रिस्क लऽ द्विरागमन हेतु छुट्टीक दरखास्त डाका तार द्वारा भेजि द्विरागमन करभोलनि । पुन: वापस ड्यूटी ज्वाईएन केलथि । वहुत रास परेशानी एहि सभक कारण उठाबय पड़लनि परंच हँसिकेँ सहैत रहलाह । क्रमेण समय बीतैत रहलनि । बहुत रास सुख दुख बोगलनि । समए बीतैत रहल ....

पुन: एकटा पुत्र रत्न सेहो प्राप्त भेलनि । समए बीतल

- - पुन: एकटा कोर्स करए हेतु गुजरात गेलाह । ईच्छा भेलनि जे आब दूटा बच्चा सेहो भऽ गेलनि तँ सपरिवार ट्रेनिंग करए गुजरात जाथि मए-बाबूजीसँ आदेश लेलनि । आदेश स्वीकृत भेलनि सहर्ष। स्स्सु-ससुरसँ शिष्टचारसँ पूछलसिन ओहो लोकनि आदेश देलखिन्ह । दिल्लीमे पत्नी, पुत्र एवं मित्रादिकेँ संग पर्यटन करैत गुजरात पहुचलाह । ओतए पहुंचि घर गृहस्थीक सामान सभ खरीदैत खरीदैत बहुत थाकि गेलाह आ ६ अगस्तकेँ ट्रेनिग आरंभक पहिले दिन जौडिसक शिकार भऽ अस्पताल एडमिट भेलाह । उपचार भेलनि ठीक भेलाह । सिक लीव भेटलनि । छुट्टीमे गाम तँ नहि गेलाह जे अपन पढ़ाई

करताह आ संगे अपन एकमात्र सार जे पढ़एमे नीक नहि रहथिन्ह जखन कि सर्टिकिकेट मैट्रिक फर्स्ट डिविजन रहनि आ हुनका जखन एक दिन गाम सभक सहज भाषामे गाड़ि पढ़ने रहथिनत आभास भऽ गेल रहनि जे हिनकामे बहुत आमूल सुधारक आवश्यकता छनि तैं श्वसुरजीक देल पछिला सुख-दुखकैं बिसर हुनका आग्रह केलखिन्ह जे जौ हुनका नेवीमे भेर्त्ती करेबाक ईच्छा होन्हि तैं भेजि दियौन्ह। हुनकर स्स्ढ़ एबो केलखिन्ह । पहुंचला उत्तर एक-दू दिन बाद ओ अपना सारकैं पहुंचनामा चिठ्ठी अपना बाबूजीकैं लिखि भेजबा लेल कहलखिन्ह । अंग्रेजीमे। अंग्रेजीमे ओ पत्र लिखबामे असमर्थ रहथि । पश्चात् हुनका पत्रक पता अंगरेजीमे लिखए कहलखिन्ह सेहो समर्थ रहथि । एहन आई-काल्हिक मैट्रिक फर्स्ट डिविजनक विद्यार्थी होईत छथिन्ह । अस्तु अपन पढ़ाई शुरु केलनि । दू-चारि दिनकैं, लेल विद्यालय सभक शिक्षक लग ट्रयूशन सेहो पढ़ए गेलाह । बादमे बहिनोकैं कहलखिन जे हमरा हुनका सभक लग भेजएसँ नीक अपनहि पढ़बितहुँ । अस्तु ...

ओ भोर सांझ हुनको पढ़ाबथि, अपनहुँ पढ़थि आ नव-नव परिवार लऽ गेल रहथिसे हुनको सभपर ध्यान देथि । कोनहुँ तरहे सभए बीतैत गेल । हुनकर सार जे अंग्रेजीमे बाबूजीक नाम पता नहि लिखि सकैत रहथि, अंग्रेजी मीडियमसँ नेवीक आरटी-किसर अप्रेंटिशकैं परीक्षा पास कएल । हुनकहुँ मिहनतकैं यश भेलनि । ट्रेनिंग सेंटरमे २ बैचमे रिजल्ट निक भेल रहैक जहि कारण हिनका खूब यश भेलनि । सासुरमे सारक मित्रवर्ग आ ग्रामीणकैं आश्चर्य होइन्ह जे ई अंग्रेजी मीडियमसँ कोनो परीक्षा पास केलथि ।

एम्हर सुलक्षणजीक सुलक्षण व्यवहार अपन सुप्तावस्थासँ जागृतावस्थाक तरफ प्रवेश कऽ रहल छथिन्ह जकर परिचए समयपर अपनेक लोकनिकैं भेटत।

कर्म और भाग्यक क्रम समएक संग चलैत रहैत छैक । हिनकहुँ संग चलैत रहलनि । छोट-आ पैघ बहुत रास सुखाअ दु:ख एलैन, झकझोड़लकनि आ बीति गेलैन । एही क्रममे हिनका श्वसुरजीकैं कुसियारक, रस, राव आ गुड़ आदिक बिजनेश लेल पैसाक आवश्यकता भेलनि जे ई कहिकैं लेलखिन जे एहि धंधामे पूजी फंसेलासँ नीक फायदा छैक आ हुनका सेहो किछु लाभ भेटतनि । अस्तु, मानव-मानवक मदद करथि (यदयपि कलियुगमे नीक लोककैं ई शुभ कार्य तकलीफो दैत छनि) तैं कोनो गलत नहि भेलैक । पैसा लेल सेहो बहुत समए बीतल । बीचमे हुनकर भगिनी (जे बहिनो हिनका पु:खक समएके एकमात्र सहारा रहथिन्ह हुनक दू पुत्री आ एक पुत्र महक प्रथम्, आ पुत्री) बढ़िकैं विआह योग्य भऽ गेल रहनि । आ ई ओहि विआहमे अपन भ्यागीदार बनाएबा लेल पूर्ण प्रयलशील रहथि संयोगवश हिनकर श्वसुरकैं सेहो अपन दोसर पुत्री लेल बर तकबाक आवश्यकता रहनि । संगहि हिनका छुट्टीक दरम्यान ओ चाहथिन्ह जे अधिकसँ अधिक लोकसँ संपर्क कएल जाए जाहिसँ ओ अपन जमाएक प्लस प्वाईटसँ फायदा उठा सकथि । खैर एहि बात सभ लऽ हिनका हुनका सभसँ कोनो शिकाइत नहि रहनि आ इहो तैं अपन भगिनी खातिर प्रयासमे लगले

रहथि। एहने एह प्रसंगमे हिनक श्वसुर भावी समधि जीकेँ बुझाबैत रहथिन्ह जे अपनेक बालककेँ हम नेवीमे नौकड़ी धरा देवनि । देखैत छिएक जे पहिले तँ हमर जमाए नेवीमे रहथि तँ ओ हमर बालककेँ एवं एकटा अपन ममियौतकेँ नौकड़ी धरेलखिन । आब तँ हमरा बेटा आ जमाए दूनू नेवीमे छथि तँ हमरा लेल नेवीमे नौकड़ी धराएब कोनो कठिन नहि अछि। आदि-आदि आश्वासन दऽ रहल छलखिन । बादमे इहो ओहि लड़का पिताकेँ सभक सोझेमे कहलखिन, श्रीमानजी वर्तमानमे हमरा एकटा भगिनी छथि आ हमरा दु:खक समएमे एकमात्र सहारा हुनकर पिताजी (स्वगीय) रहथि । तँ हेतु ओहि भागिनीसँ विआह करताह तनिका लेल पढ़ा लिखा के नेवी लेल तैयार करब हमर पहिल कर्त्तब्य थिक । हिनका लोकनिक बेटी-जमाए सभ लेल हम थोड़-बहुत मदद मात्र करबनि आ पूर्ण रूपेण हमर प्रयत्न अपन भगिनीक वरक लेल रहत एहि बातकेँ ध्यानमे राखि अपनेक लोकनि हमरा भगिनीक लेल सेहो वर दूंढ़बामे मदद करब तँ बड़ पैघ कृपा होएत । बस बरक गृहस्थ बापकेँ लेल '' प्रत्यक्षं किं प्रमाणं '' वला वाक्य सुनबामे आबि गेलनि आ ओ लोकनि हिनकर वाक्य आ शब्दकेँ ब्रह्मवाक्य सदृश बूझि हिनका परोक्षेमे हिनका भगिनीसँ विआह कऽ देल । थोड़ेक समए लेल बदनामीक दौड़ सेहो शुरु भेल हिनकापर थोड़ेक आरोप दबले जुबानसँ। हिनकर सासुरक लोक लगेलखिन्ह । जकर ई सोझ जवाब देलखिन्ह जे ई जतए-जतए हुनका (श्वसुर-जी) संग गेलखिन्ह सभठाम इएह कहलखिन्ह जे भगिनीक वर हेतु प्रयास हमर कर्तव्य थिक आ हुनकर पुत्रीक वरक प्रति प्रयास हुनका सभक काज छियनि जाहिमे हम सीमित मदद मात्र स्वेच्छासँ ईच्छा होयत तँ करबनि । ई वाक्य ओ सबठाम कहलखिन्ह आ ओकरे ओ परिणाम छल । परंतु हुनक सुलक्षणा पत्नी जे पुर्वहुँमे शास्त्रो वक्त सभ बात सुनि परिहास मात्र करैत छलखिन्ह आ पतिकेँ प्रताड़ित करबामे कोनहुँ दुश्मनसँ कम प्रयास नहि केलखिन्ह। बार-बार ओ अपन पत्नीकेँ उपरोक्त यथार्थ बातकेँ बुझबैत रहलखिन्ह लेकिन ओहि सुलक्षणा पत्नी पैघ बापक बेटी एवं पैघ पाईबला भाइयक बहिनकेँ अंधकार रूपी अहंकारी एवं नास्त्रिक बुद्धिपर कोनो सुधारात्मक प्रभाव नहि पड़लनि । क्रमशः समए तँ सुखसँ कटय वा दु:खसँ एहिना बीतैत रहैत छैक। हिनका अपन भगिन जमाए हेतु देल वचनकेँ पूरा करबामे जे तकलीक भेलनि विधाता ककरहु दोसरकेँ नहि देथिन्ह तँ नीक ।

समए अपन रफ्तारसँ बीत रहल छल । किनकहुँ जखन कनेक समए नीक बीतए लगलनि तँ इच्छा भेलनि जे गाममे कोनड मेन रोड सभक कातमे दू-चारि कट्ठा जमीन लितहुँ तँ नीक छल । ओ अपन मनक बात अपन पिताजीकेँ कहलखिन । पिताजी हुनकर बातकेँ मानि, जखन एकटा जमीन मेनरोडक कातमे पता लगलनि तँ हिनका सूचित केलखिन्ह । ई ओहि जमीनक बात पिताजीसँ कऽ, कीमतकेँ तैयारी केलनि आ श्वसुर जीकेँ जे पाई काफी समए पूर्व देने रहथिन्ह ताहिमे सँ एक तिहाई कमसँ कम एखन वापस करए कहलखिन । हिनक श्वसुर देवता हिनका वचनो दऽ देलखिन जे हँ अपनेक विशाखापटनमसँ

गाम आऊ हम पाई रखने छी । ई गाम गेलाह । बाबूजीसँ सभ तरहक बात केलनि । बाँकी पाई श्वसुरजीक आश्वासन वला पाई छोड़ि ई विशाखापट्टनमसँ लैइये गेल रहथि । केवल कनेक पाई जे श्वसुर जी हिनके पाईयक एक तिहाई वापस करबाक वचन देने रहथिन्ह । ओतय गेलापर नहि देलखिन । मनमे दु:ख तँ बड़ भेलनि, मुदा करताह की'' ये ऐसा आग है जिसमे धुआं नहीं होता । छुट्टी गेनाई-एनाई किराया आदि सभ ब्यर्थ गेलनि । सुलक्षणा पत्नीकँ कलियुगमे जाहि तरहक आनंद भेटय चाही वएह भेटलनि'' जे नीक भेल ''। कहि उत्तर देलखिन्ह कारण जे ओ रोड कातक जमीन तँ हुनकर पतिकँ कपारपर रहितैन ओहिसँ पत्नी आ बाल बच्चाकँ कोन सुख? कहबी छैक जे कोनहु बात वा वस्तु अपनेक कोन रूपमें ग्रहण करैत छिएक ताहिपर निर्भर आछि । आ हुनका श्वसुरकँ दोसरहि कऽ पाइ (जमाएयक पाइ) सँ घर लगमे कोनो घरारीक बात मात्र होइत रहैत ताहि लेल सुरक्षित रखबाक रहनि । जखन कि ओ घरारी ओहि समएमे बिकेबो नहि केलैक । हुनका अपन पाइसँ नहि आपितु जमाएकँ पाई लेल सेहो जमाएकँ धोखा देबामे कोनहुँ टा संकोच नहि भेलनि । आ पत्नी सुलक्षणा जी तैयो हुनके (अपना पतिकँ) प्रताड़ित करबामे कोनो कसर नहि बांकी रखलनि । अस्तु , समए बितत्ते जाईत छैक । परंतु हुनको घाइल हिरणी जकाँ दर्द तँ रहबे करनि । ओ अपन दर्द व्यक्त नहि करैत छथि लाजसँ, तँ दर्द नहि होईत छनि से बात तँ नहि । दर्द तँ बहुत बेशी होइते हेतन्हि । अस्तु ''लगा दे आग में पानी जवानी उसको कहते है मिटा दे बाप की दौलत फुटानी उसको कहते हैं।'' ओहो लोकक मुँहसँ सुनैत रहथि लेकिन ओ ईज्जदार ब्यक्तिकँ मुँहसँ उच्चरित नहि होईत रहनि तँ हिनकर उक्ति रहैन्ह '' लगा दो आग में पानी जवानी उसको कहते हैं, मिटा दो खुद अर्जित दौलत को फुटानी उसको कहते हैं ''। अनकर कमाईपर फुटानी सभ केयो कऽ सकैत छथि । लेकिन फुटानी लेल स्वयं द्वारा ओतेक धन बिना किनको आश्रयकँ अर्जित (माएक प्यार एक असीमीत स्नेह भरल ममता पत्नीक प्यार-बघबा दुलार, ताहूमे जौँ अज्ञान रूपी अंधकारमे डूबल पैघ बापक बेटी होथि)

कऽ सकी ई इज्जतक विषए थीक । तँ हेतु अपन परिश्रमसँ '' विद्या ददाति विनयं, विनयात् यात् पात्रतां, पात्रत्वां धन माप्नोति, धनात् धर्म: तत: सुखं ''एहि मार्गपर चलबाक पूर्ण प्रयास कहि कएलनि । बहुत रास विआह द्वारा गमनक बाद दोसर वर सभकें प्राप्त सुख सभ देखि हिनकहुँ आश- मनोरथ जे ओहि समए पूरा नहि भेल रहनि अपन परिश्रमक बले आ भगवतीक कृपासँ प्राप्त कएलनि । एकटा घड़ी, साइकिल आ रेडियो ओहि समएक साधारण मणुष्यक साधारण आवश्यकता, माए-बापक साधारण आवश्यकता सभकँ पूरा करैत, इहो अपन आश पुरौलनि। बादमे पत्नी जीकँ पैघ बापक पैघ बेटीकँ सेहो ईच्छा भेलनि जे आई काल्हि आ चवन्नी-अठन्नी सभक प्रचलन कम भऽ गेल छैक तँ एकटा चेन लितहुँ । हुनका लेल पत्नी जीक मनक बात शिरोधार्य भेलनि । दून गोटे बंबईमे बाजार गेलथि और अपन आर्थिक स्थितिकँ देखैत एकटा चेन लेलथि ।

बादमे पायल, कान आदि महकजे कोनो वस्तुक आश भेलनि से ई सामर्थ्यकँ हिसाबसँ खरीद कए पत्नीकँ आश-मनोरथ सेहो पुरेलखिन । कारण जे पैघ बापक बेटी मात्र हेबासँ आश-मनोरथ नहि पूरैत छैक आपितु पैघ बाप वा एकटा गरीब गृहसथ किसान अपन बेटीकँ हाथ उठाकऽ की दैत छथिन ताहिसँ आश मनोरथ पूरैत छैक । यथा घरमँ खीर बेनेबा काल खीरमे चीनी कतेक दैत छिएक, मिलबैत छिएक ताहि अनुकूल खीर मीठ होएत न कि घरमे दू पट्टा पीनी चीनी राखल अछि ताहिसँ खीर मीठ अपने आप भऽ जेतैक । आ एहि छोट बातकँ सेहो बुझबाक लेल थोरबहुत ज्ञान-चक्षु जरूर खूजल हेबाक चाही । पर अफसोस जे हुनकर आभिमानी अज्ञानी बंद आँखि एहि सभमे सँ कोनो वस्तु बातकँ नहि सूझए देलकनि न बूझए देलकनि । कारण जे हुनकर तँ एकमात्र उद्देश्य कलियुगक अपन जवानीपर हेबाक कारण ''पतिदासा स्थानपर किए स्वयं पति दिशि देखिकँ साबित करबाक रहनि । पतिकँ देहमे आगि लगा अपन हाथ सेकैत छथि । जलनसँ की दर्द होईत छैक ओ जलनाहर बूझैत छथिन न कि हाथ सेकनिहार । ताहूमे जखन कलियुग अपन पूर्ण शैष्ठवपर हो । यथा=६६ हे उधो बैरी नंद किशोर, प्रसव पीड़ा की बांझ परेखत, रवि की बूझत चकोर, हे उधो बैरी नंद किशोर ॥

आद-स्वाद की मरकह जानए, परहित जानए चोर । अबला (कमजोर) कँ दुख अबला जानए, अबला घरमे शोर, हे उधो तँ हेतु जलनाहरक दु:ख, जलनाहरेटा बूझि सकैत छथिन्ह आगि सेकनिहरि हुनकर __सुलक्षणा पत्नि नहि ।

तथापि समए तँ देवी-देवताक लेल सेहो जखन नहि रूकल तँ हिनका सन अबला ब्राहमण लेल सेहो जखन कलियुग अपन पूर्ण जवानी समए अपन गतिसँ बीतैत रहल ।

हिनका लेल तँ नियति बनि गेल रहनि जे '' नाव कागज का गहरा है पानी, फिर भी हर हालमे (सभ दु:खकँ सहितहु) मुस्कुराकर दुनियादारी पड़ेगी निभानी । ''

दुनियादारी कोनहुना हँसैत बिता रहल रलथि । ताहूमे जौं किनको दुश्मन किछु तकलीफ दैत छ्थिन्ह तँ ओ ओतेक अधिक कष्टदायी नहि होईत छैक जतेक अपनक देल कष्ट होईत छैक । कष्ट दैत छैक ।

कारण, करैला मणुष्यकँ जे तीत लगैत छैक तँ ओतेक तकलीफ नहि होईत छैक । परंतु जँ खीड़ वा रसगुल्ला करैला सदृश तीत लागत तँ शायद अपनेक लोकनि ग्रहण (स्वीकार) नहि करबैक । परंतु ओहो सहैत घर जे शाति बनल रहए ताहि लेल शाँत रहलाह । लेकिन हुनका पत्नीकँ भूत अपन अलगे दिशामे नेने जा रहल छनि । हिनका पत्नीकँ लेल हिनक पिता, माता, भाए आ बहिन बड़ पैघ बोझ छथिन्ह । हिनकर (पत्नीक) पिता, माए, भाए (अपन सहोदर वा पितियौत) या बहिन जे किछु कहनि से सही थिकैक । ओ झूठहू बाजथि, हिनका पतिकँ ठकि कऽ बेवफूफ बनाबथि, हिनका पतिकँ घोखा दऽ अपन ऊंगली सीधा करथि ओ हिनका लेल ईज्जतक बात थिक । कारण हिनक

पतिकेँ अपमान तँ हुनकर पति मात्रकेँ प्रभावित करैत छनि । हिनकर ईज्जतपर ओहिसँ कोनो फर्क नहि पड़ैत छनि ई हिनकर बुद्धिकेँ अज्ञान रूपी विशेषता छियनि । नैहरमे किनको विआह होनि, उपनयन हो, श्राद्ध हो, मुंडन हो, द्विरागमन हो भाँज पूरब हुनक पत्नीकेँ वड़ पैघ आवश्यक काज भऽ जाईत छनि । ओहि सभ विषएमे चर्चा लेल हुनका लाख बुझेलाक बावजूदहु सभसँ नीक समए जखन बच्चा दूनू सांझ या भोरमे पढ़ए लेल बैसल रहतनि, तखनहि पढ़ाई जाहिसँ बाधित हो, ताही समएमे हिनका घरमे अड्डा-बज्जर खसाएब सभसँ बेशी प्रिय छनि

परिणाम आई हुनकर दूनू बच्चामे सँ एकोटा ओतेक नीक परिणाम नहि पाबि सकलथि जकर संपूर्ण परिवार आ समाजकेँ आशा छल । हिनका लग आबि जाहि समयमेँ हिनकर उप्तात एतेक जवानीपर नहि छल हिनकर सहोदर भाए (पत्नीजीक भाए) एवं एकटा ममियौत भाए मात्र हुनकर निर्देशनमे पढ़ाई कऽ आशातीष सफलता पौने छथि । आ जखन हिनकर अपन बच्चाकेँ पढ़ि-लिखि नीक बनबाक समए एलनि तँ हिनकर उत्पातक जवानी ओहि लक्ष्यकेँ दूर खिसकबैत चल गेल । आई ओ अपन भाए-वा-बहिनकेँ ओहिठाम कोनो काजमे जेबामे कोन कथा जे ओकर चर्चा करबामे भय कऽ अनुभूति करैत छथि । जाहिमे मनसँ नहि बाल्कि नाम मात्र लेल गाम जेबाक आग्रह करैत छनि, जेबा लेल ब्याकुल भऽ जाईत छथि । बूझल छनि जे ओ पितियौत मुंडनक समएमे एक पेट भोजनक अलावा भोरमे चाह-जलपान सेहो नहि देथिन्ह । बच्चाक लेल सभटा कपड़ा बच्चाक भाए लेल सभटा कपड़ा आ बिधिगत सामान सभ भेजिये देने रहथिन आ तैयो बिध पूरए लेल गाम जेबाक लेल पतिकेँ एकटा दाससँ सेहो बेशी परेशान कऽ देने रहथिन ।

ओहिठाम जखन हुनकर माए हुनका संगमे रहथिन्ह तखन हुनका उपर आ हुनका माएकेँ उपर लांक्षणा उपराग और जुल्म कतेक केलखिन तकर वर्णण जतेक कएल जाए से कम हएत । आवेशमे आबि, जवानीक अज्ञानी शब्दमे एतेक तक जे “ रौ पापी , हमरा लग किएक सुतैत छैं, अपना माए लग सूत, आइसँ तोहर माए तोहर बहू छियौ, हमरा लेल तू मरि गेलैँ, हम सिंदूर धो लैत छी आ चूड़ी फोरि लैत छी, तोहर भाए सेहो किएक ने माएक खेबा-खर्चा जोड़तौक, एही रंडीकेँ हम भार नहि उठेबै आदि-आदि ततेक तांडव नृत्य ई भोर सांझ पसारब शुरु कऽ देलखिन जे अंतमे अपना नौकड़ीमे छुट्टी नहि भेटलापर हुनके एक पितियौत भायक संग, ई अपन माएकेँ अश्रुपूरित नेत्रसँ टिकट कटाए विदा केने रहथि । ओ दिन आईयो हिनका याद भेलपर आँखि भरि जाईत छनि । तैयो जिन्दगी छिएक । आखिर मौतहु तँ एतेक आसानीसँ किनको नहि भेटैत छनि । तँ खूनक घूट पीबि जीवैत रहलाह, सभ दुख सहैत रहलाह । एहिना समए बीतैत रहल । हिनका लेल घरमे चारि आदमीक आश्रम छनि जाहिमे मोटा-मोटी एक आदमीकेँ भोजन एक्स्ट्रा (अतिरिक्त) बनितहि छनि । ओकोनो अतिथि अभ्यागतकेँ एलापर भोग होईत छनि नहि तँ फेकल जाईत अछि । परंतु हिनक

माए ओहि भोजनकेँ एतय ग्रहण करितथिन्ह तँ ओहिमे हिस्सेदारीक प्रश्न आनि बज्रपात कऽ दैत छलखिन । हिनक पिता ओहिसँ किछु वर्ष पूर्वहि गत भऽ गेल रहथिन जे कथाक प्रसंगमे विषए याद नहि रहबाक क्रममे छूटि गेल अछि । जावत तक हिनकर पिता जीवैत रहथिन्ह, हिनकर माता-पिता एक ईज्जत दार गृहस्थक जिंदगी बितौलनि जे आईयो गाममे एक आदर्श मानल जाईत आछि । परंतु समए बड़ बलवान होईत छैक । यमराज बाबा एक भाद्र शुक्ल नवमी तिथि केहिनक पिताकेँ उठा लेलखिन । तकरा बादहिसँ तँ कलियुग अपन विकराल रूप हिनका आ हिनका माएकेँ देखाएब शुरु केलनि जरर उपरो तक परिणाम भोगलनि । एहिना जिंदगी कखनहुँ दुखक पहाड़क शीर्षपर तँ कखनहु मध्यमे तँ कखनहुँसँ योगवशात् किछु शांतियहुसँ बीतैत रहल । परंतु एहि क्रममे शांतिकेँ क्षण बहुत कम आएल जहि कारण किछु निश्चित दिशा तँ करब बड़ कठिन रहलनि । तथापि कालक गति चलैत रहल, समए बीतैत रहल । पुन: एक बेर गाममे सपरिवार छुट्टी गेलाह। आ पत्नीसँ आदेश प्राप्त भेलापर माएकेँ दिल्ली अनलनि । किछु दिन समए बड़ बढ़िया बीतल । परंतु शांतिक दिन रास्ताक पड़व सदृश कमहि दिन चलल आ जे जननी हिनका जन्म देने रहथिन्ह, ओहि अबला विधवा जे मड़लापर अपन पतिक छोड़ल जमीन कपाड़पर नहि लऽ जेतीह तनिका पुन: प्रताड़ना पहिले जकाँ शब्द सभसँ शुरु भऽ गेल । एक दिन भेल, दू दिन बीतल, रोज-रोज एहने आतंक होइंत गेल आ बढ़ैत गेल । अंतमे एक दिन हिनका मजबूर भय अपन माएकेँ अपन छोट भाए लग पहुंचाबए पड़लनि । एहि दुखकेँ एकटा माए, एकटा संतान आ एकटा इंसान मात्र समझि सकैत छथि । एकटा हैवान, सुलक्षाणा नहि, आ इएह भेल । हुनकर सुलक्षणा व्यवहार नहि सुधरलनि । हुनकर स्कूल कालेजक पढ़ाईक दरम्यान पढ़ल पंक्ति '' ऐ खुदा तू मौत दे पर बदनशीबी नहि दे '' एतय फेल भऽ गेलनि । ओ बदन-शीबक जिन्दगी जीबैत रहलाह आ आइयो जीब रहल छथि । बादमे हुनकर माताक वृद्ध शरीर, पति पहिनहि स्वगीर्य भऽ गेल छलखिन, बेटा-पुतोहुकेँ एहने ब्यवहार, एहि सभक कारण बहुत अधिक टूटि चुकल शरीर बहुत कमजोर भऽ गेलीह । दुखित रहए लगलीह, छोट बेटा पुतहुँ गाममे संगमे रहबाक कारण यथासाध्य सेवा शुश्रुषा केलखिन्ह । लेकिन हिनका तीन महीना तक छोट भाए समाद दैत रहि गेलनि । भैया अबियौक-भैया अबियौक , आब माए नहि बचतीह, मात्र किछु दिनक मेहमान रहि गेल छथि । भौजीकेँ एतहि रहए पड़नि, हिनका हरदम हरपल सेवा शुश्रुषाकेँ जरूरत छि । ई आबि अबैत छी, काल्हि अबैत छी, करैत रहलखिन । पत्नीजी कहियो जोर नहि देलखिन जे अहाँ जैयो माताजी थिकीह । हमहूँ (पत्नी जी लेल) जाएब आखिर ओ हमर सासूजी थिकीह । हम हुनकर सेवा करबनि । किछु एहि तरहक सुविचार कलियुगक प्रभाव नहि उत्पन्न होमए देलखिन । अंतमे हुनक माए- बेटा-बेटा करैत, ३ महीनातक असाध्य तकलीक सहैत छ: सतानमे सँ हिनका सन भाग्यशाली (कलियुगक अनुकूल) संतानक मुँह बिना देखने वा देखौने एहि नाश्वर शरीरकेँ त्यागि चलि गेलीह । हाय रे हिनकर

भाग्य ।...

बादमें ई हुनकर श्राद्ध कर्म हेतु अग्नि संस्कार सभक बाद गाम पहुंचलाह । जीवैतमे दूटा मधुर बोल वा दू बेर पैर जाँति हुनकर सेवा कऽ आशीर्वाद लितथि से नहि कऽ सकलाह । मुदा बादमे मायक श्राद्ध बड़ बढ़ियाँ जकाँ केलनि। सौंसे गाममे यश भेलनि, सुलक्षणा पत्नीजी सेहो एहिमे केनो विरोध नहि कऽ पूर्ण सहयोग केलखिन अ पूर्ण यश भेलनि । परंतु की एहि उक्तिक परिचय नहि देलखिन्ह कभी प्यासे को पानी पिलाया नहि । बाद (मृत्यु उपरांत) अमृत पिलाने से क्या फायदा ॥ ओ हिनक सासुजी रहथिन, विधवा रहथि, आबला रहथि, हिनकर पतिक माताजी रहथिन्ह । हुनका संग ई ब्यवहार की हिनका अपना बच्चापर नीक प्रभाव देतन्हि । की ई कुकुरक कथा जे हुनका सूखल हड्डी चिबाबए लेल देल जाईत छनि, हुनका हड्डीसँ नहि अपितु अपने मुँहसँ खूब खून निकलैत छनि आ मालिक, हड्डी देनहार कहैत छथिन, हँसी करैत अओर चुबाऊ देखियौक केहन ताजा माउस अछि । ली? की हुनका (सुलक्षणा जी) अपन समर्थ बेटा बेटीक अछैत एहि तरहक करबाक चाही? की हुनक पितियौत भायक बच्चाक मुंडनक उपलक्ष्यमे गाम जाएब, सासुजीकेँ दुखित अवस्थासँ बेशी जरूरी रहनि । परंतु के सोचत? ककरा फुर्सत छैक ? एहिना मूर्ख लोकनिक गति होइते रहतनि । आ अंतमे पश्चाताप-पश्चाताप-आ पश्चाताप मात्र हेतनि जखन स्वयं ज्ञान हेतनि आ बजतीह-“अब पछताये होत क्या चिड़िया चुग गई खेत “।

ई लिखल गेल अछि कलियुगक हर ओहि व्यक्तिक लेल जे आम खेबाक अभिलाषासँ नीमक गाछ रोपैत छथि|

डॉ.शंभु कुमार सिंह

जन्म : 18 अप्रील 1965 सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे। आरंभिक शिक्षा, गामहिसँ, आइ.ए., बी.ए. (मैथिली सम्मान) एम.ए. मैथिली (स्वर्णपदक प्राप्त) तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहारसँ। BET [बिहार पात्रता परीक्षा (NET क समतुल्य) व्याख्याता हेतु उत्तीर्ण, 1995] "मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्त्तन" विषएपर पी-एच.डी. वर्ष 2008, तिलका माँ. भा. विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहारसँ। मैथिलीक कतोक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे कविता, कथा, निबंध आदि समए-समएपर प्रकाशित। वर्तमानमे शैक्षिक सलाहकार (मैथिली) राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर-6 मे कार्यरत।

अवसरक निर्माण

(1)

धनमाक थुथूने देखि हम बुझि गेलहुँ, जे आई फेर ओकर कुहबा पाबनि भेल छैक।

प्रो. साहेबक ओहिठाम नोकरी करबाक ई धनमाक चरिम मास छलैक। ओकर बड़का भाय सेहो हिनकहि ओहिठाम दू बरखसँ नोकरी करैत रहैक, पछिले मास ओकर ट्राँसफर प्रो. साहेबक छोट भाए लग झरिया भऽ गेलैक। धनमाक भाइये तीन माससँ ओकरा ट्रेनिंग दैत छलैक बर्तन-बासनसँ लऽ कऽ रसोई बनाएब, बारहनि पोछा, कपड़ा-लत्ता साफ करब आदि-आदि। सभ लूरि तँ धनमा सीखि नेने रहए, खाली ओकरा तरकारीमे नून देबाक ठेकान नहि रहैक आ ताहि कारणेँ ओकरा कहियो-कहियो कुहबा पाबनि सहए पड़ैक।

बारह बरखक धनमा देखएमे एकदम गोर-नार। उज्जर दग-दग अँगाकेँ जखन ओ सिलेठिया रंगक हाफ-पेन्टक तर बिना बेल्टहिक डोराडोरि चढ़ा अंडरसेटिंग करैक तँ बुझाइक जे कोनो अंगरेजी स्कूलक चटिया हो। छौँड़ा चौथा किलास धरि पढ़लो रहैक, बाप कहलकै "गरीबक बेटा आब एहिसँ बेसी पढ़ि कऽ की करतैक? जो नोकरी कर गऽ घरमे दू पाइक मदति भऽ जाएत।"

ने जानि किएक हमरा धनमासँ सिनेह भऽ गेल छल। तँ जहिया-जहिया हम प्रो. साहेबक बासापर रातिकेँ ठहरी, भरिपोख धनमासँ गप्प-सप्प करी। नेना जाति, पहिल बेर घरसँ निकलल रहैक, से जखन-जखन ओकरा अपन माए-बापक यादि आबैक ओ कपसि-कपसि कऽ कानए लागए। ओकर कानब आ

मनोदशा देखि हमरा ओकरापर दया आबि जाइत छल। ओकरा प्रति दया हेबाक कारण हमरा आ धनमामे एकटा सामानता रहैक। धनमो अपन परिवारक लेल नोकरी करैत रहए आ हमहुँ अपन परिवारक खातिर नोकरी करैत छलहुँ। अंतर यैह छलैक जे धनमाक उमिर रहय 13बरख आ हम रही 25 बरखक। धनमा अपन सभटा दरमाहा अपन- माए-बापकेँ दऽ दैत छल आ हम दरमाहामे सँ किछु बचा कऽ पढ़ितो छलहुँ। एखन हम एम.ए. क छात्र रही।

ओना तँ धनमा सभ दिन ड्राइंग हॉलमे सूतैत छल मुदा ओहिदिन ओ हमरहि पलंगक नीचाँ अपन पटिया-दरी बिछा पड़ि रहल। जखन राति नि:शब्द भऽ गेलैक, प्रो. साहेब आब सूति गेल हेताह, ई जानि धनमा हमरा टोकलक। "अइँ यौ भाइजी, टाटाक नून आर नूनसँ बेसी नूनगर होइत छैक की?"

"नहि तऽ!"

नहि यौ भाइजी हम से नहि मानब, एहिसँ पहिने हमरा ओहिठाम 'कैप्टन कूक' नून अबैत रहैक, तरकारीमे दू चम्मच दियैक तखनो मालिक आ मलिकाइन किछु नहि बाजए। ई सार टाटाक नून जहियासँ आएल छैक हमरा एकर अंदाजे नहि रहैए। डेढ़ चम्मच दिऔक तखनो जहर आ एक चम्मच दऽ दिऔक तखनो जहर। अही नूनक खातिर हम एतेक मारि खाइत छी।

अच्छा एकटा बात कह धनमा, "तोरा ओहिठाम टाटाक नून कहियासँ अबैत छौक?"

"एक माससँ।"

"एहि एक मासमे तोरा कैक बेर मारि लागलौ?"

"अही बेर।"

"बस । एकर माने भेलैक जे गलती तोहर छौक नूनक नहि।"

आ हमरा मालिकक कोनो गलती नहि? ओ नहि बुझि सकैत छथि जे धिया-पुता छैक एक दिन गलतीए भऽ गेलैक तँ की हेतैक, एहन छोट-सन गलतीक लेल एहन मारि? हुनक बेटो तँ हमरे तुरिया छैक, ओकरा किएक नहि मारै छथिन? जानै छी भाइजी काल्हिए गणेश हमर 30 टा टका चोरा कऽ आइसक्रीम खा लेलक, मुदा चोरि-सन अपराधक बाबजुदो मालिक ओकरा किछु नहि कहलथिन।

"तोहर 30 टका चोरा लेलकौक! तोरा कतसँ टका एलौ?"

हुँ-हुँ भाइजी, हमरा 93 गो टका छैक। मालिकक ओहिठाम जे पर-पाहुन सभ अबैत छथिन से हुनका सभक अटैची आ बैग जे नीचाँ धरि लऽ जाइत छियैक तँ ओ सभ कहियो-कहियो हमरा पाँच-दस टका दऽ दैत छथि। हम ई टका अपना मालिकीनिकेँ दऽ दैत छियैक राखए लेल। ओहि घरमे टेबुलपर एसनो वला एकटा उजरा डिब्बा देखने छिऐक? ओहिमे हमर सभटा टका रहैत छैक। 100 सए टका पूरि जतैक तँ हम अपना छोटकी बहिन लऽ फराक कीनबै। काल्हि गणेश ओहिमेसँ टका चोरा नेने छलैक।

अच्छा कोनो बात नहि, प्रो. साहेब गणेशकेँ किछु नहि कहलथिन एकर

माने भेलैक जे आगू चलि कऽ ओकर संस्कार खराब भऽ जेतैक। तौँ चोरि नहि करैत छौँ एहि लेल तोहर संस्कार नीक भऽ जेतौक। एखन तो नेना छौँ ई सभ बात नहि बुझबैं।

हँ यौ भाइजी, हम सभ बात बुझै छियै। गणेश पढ़ै-लिखै छैक ओकर संस्कार कतबो खराब हेतैक तैयो ओ बाबूए कहौताह आ धनमा धनमे रहि जाएत।

एहन बात नहि छैक धनमा, गुलटोपीकेँ चिन्हैत छही? ओ कतेक पढ़ल-लिखल छैक से जानैत छही? नहि ने! ओ औंठा छाप छैक, औंठा छाप, आ केहन चमचम करैत गाड़ीपर चढ़ैत छैक? ओकर मुंसी बी.ए.पास छैक। गुलटोपी ठिकेदार छियै। लोकमे बस मेहनति, लगन आ इमानदारी हेबाक चाही ओ कहियो किछु कऽ सकैत अछि। ई सभ बात तौँ एखन नहि बुझि सकबैं कने आर चेठनगर भऽ जो तखन अपनहि बुधि भऽ जेतौक।

....

"अइँ यौ भाइजी! अहुँ गरीब छियै?"

"के कहलकौ?"

प्रो. साहेब बाजैत रहथिन जे "विवेक बड़ड गरीब छैक। कमा कऽ घरो देखै छैक आ पढ़बो करै छैक।"

"हँ, ठीके कहलथुन।"

तँ अहाँ मैथिली किएक पढ़ैत छी, साइंस किएक नहि पढ़ैत छी? साइंस पढ़िकए लोक डागदर, इंजीनियर बनैत छैक। प्रो. साहेब कहैत रहथिन "बेचारा साइंस कतएसँ पढ़तैक? ट्यूशनक टका कतएसँ आनतैक तैँ मैथिली पढ़ैत छैक।" अइं यौ भाइजी मैथिली बड़ खराप विषए होइत छैक?

नहि रौ बकलेल। भाषा कोनहुँ खराप नहि होइत छैक। भाषाक विषएमे सोचएबला खराप होइत छैक। अच्छा एकटा बात बता "तोरा जँ मैथिली बाजए नहि आबितौक तँ तू हमरासँ बात कऽ सकितेँ?"

नहि यौ भाइजी! प्रो. साहेब फूसि बाजैत रहथिन। मैथिली सन सरस आ नीक आन कोनो भाषा भइयें नहि सकैये। हुनका देखैत छियैन जे ओ प्रो. सभक संगे मैथिली बाजैत-बाजैत अंगरेजीमे किदन कहाँ गिटिर-पिटिर, गिटिर-पिटर बाजए लागैत छथिन।

अच्छा ई बताउ मैथिली पढ़ि कऽ अहाँ प्रो. बनि सकै छी?

हँ, किएक तहि!

तखन तँ अहाँ प्रो. अवश्ये बनब भाइजी।

धुर, पकलाहा नहितन।

भाइजी एकटा बात आर कहू, "गरीब लोक कहियो धनिक बनि सकैत अछि?"

"एकदम बनि सकैत अछि?"

धनमा कने काल चुप रहल, आ चुप्पे-चुप सुति रहल।

(2)

हम साल भरिसँ दिल्लीक एकटा प्राइवेट कम्पनीमे काज करैत छी। प्रेमनगरसँ लाजपतनगर धरि प्रायः बससँ आन-जान होइत अछि, कहियो काल लोकल ट्रेनसँ सेहो चलि जाइत छी। आइ कम्पनीमे कने बेसी काल रुकए पड़ल से भूखसँ छोहाटल रही, तँ पापड़-पापड़क शब्द सुनि पापड़वलाकँ बजेलिए "ऐ पापड़वाले! एक पापड़ देना।" पापड़ वला सोझाँ आएल, पापड़ देलक। पाइ देबए लागलिऐक की ओ पापड़ वला हमरा पएरपर खसि पड़ल आ बड़ दुखी स्वरेँ बाजल–"भाइजी हमरा नहि चिन्हलियै? हम धनमा।" धियानसँ देखलहुँ ओ धनमे छल। हमरा कने ग्लानिओ भेल। हम तत्क्षण उठि धनमाकँ हृदय लगा लेलिऐक दुनू गोटे भाव-विभोर भऽ गेलहुँ। हम धनमाकँ अपन कातमे बैसाबैत पूछलिऐक, "कह धनमा की हाल-चाल, एतए कोना?"

ओ बाजल भाइजी अपनेकँ स्मरण अछि हमर ओ मारि? ओ राति? हम ओतए मारि खाइत-2 तंग भऽ गेल रही। तरकारीमे नून बेसी भऽ गेल तँ मारि, नून कम भऽ गेल तँ मारि, कपड़ामे दाग रहि गेल तँ मारि......। भाइजी अंतिम रातिकँ जे हमरा अपनेसँ भेंट भेल छल तकर परातेक बात छियै, प्रो. साहेबक डेराक नीचाँ जे चाहक दोकान रहैक हलाल खानक, तकरहि बेटा दिल्लीमे दरजीक काज करैत रहैक, ओकरेसँ हमर भेंट भेल तँ ओ कहलक–"चल हमरा संगे दिल्ली, ओतए कपड़ामे काज-बुटाम लगबिहेँ बैसल-2, खेनाय-पिनाय आ पाँच सए टका महिना देबौ।" हमरा लग भाड़ा जोगड़ पाइ रहबे करए, ओहिदिन भागि गेलहुँ ओतएसँ। तीन मास धरि ओकरहि दोकानपर रहलहुँ। ओहि दोकानक बगलहिमे एकटा पापड़बला रहैक जकरा ओहिठामसँ नितदिन देखिऐक हमरे सभक तुरक बच्चा सभ थाकक-थाक सेदल पापड़ लऽ जाइक। एक दिन हम ओहि दोकानपर गेलिऐक तँ भाइसाहेब (पापड़वला) हमरा कहलक- "पापड़ बेचोगे? देखते हो ये लोग तुम्हारी ही उम्र के हैं 100 रुपया रोज कमाता है। पूंजी भी तुम्हारी नहीं लगेगी, बस यहाँ से सेंका हुआ पापड़ ले जाओ, दिन भर घूम-घूमकर बेचो और शाम को पैसा जमा कर दो। एक पापड़ का तुमको 50 पैसा देना होगा उस पापड़ को दो रुपये में बेचो। मतलब एक पापड़ पर तुमको 1.50 पैसा बचेगा, जितना बेचोगे उतना ही कमाओगे।" हमरा ई बिजनेस जँचि गेल। हम दोसरहि दिनसँ पापड़ बेचए लागलहुँ। पहिने किछु दिनतँ करोलेबाग धरि रहैत छलहुँ, मुदा आब तँ ततेक ने उडाँत भऽ गेल छी जे दिल्लीक साइते कोनो एहन कोन हेतैक जतए हम नहि गेल छी। एखन हमर दूटा बिजनेस चलैए भाइजी। भोर 8 बजेसँ 11 बजे धरि राम मनोहर लोहिया अस्पतालक गेटपर नारियर बेचैत छी, ओहुमे एक पीसपर सरपट आठ अनाक बचत छैक। दू सए पीस तँ निदान बिकिए जाइत छैक। सए टका रोज हमरा ओहिसँ अबैत अछि। साँझ चारि बजेसँ राति नओ बजे धरि बस, ट्रेन, पार्क सभमे पापड़ बेचैत छी तँ

ओतहुँ निदान 4-5 सए पीस पापड़ बेचिये लैत छी।

हम मोने-मोन हिसाब लगबए लागलहुँ, ''नारियरमे 100 सए टका आ पापड़मे 400 डयोढे 600 टका। एकर माने धनमाक कमाइ एखन 700 सँ 800 टका रोज छैक।''

धनमा आगू बाजल–भाइजी, हम तीन साल धरि ने घरमे कोनो चिट्ठी-पत्री देलिऐक आ ने ककरो जानए देलिऐक जे हम कतए छी। हमर माए-बाप आ गाम समाजक लोक बुझए जे ''धनमा मारि-हरि गेल।''

तीन सालक बाद गाम गेलहुँ। ओतए दू कोठलीक पक्का ढोकलहुँ। तीन बिगहा खेत किना, देलिऐक बाउकेँ। एक जोड़ बड़द आ एकटा पम्पिंगसेट सेहो कीनि देलिऐक। अगिला मास एकटा टेक्टर किनए चाहैत छी। हमर बड़का भाय आब गामहिमे रहिकए खेती-बारी करैए। ओकरो प्रो. साहेबक भायक ओहिठामसँ चाकरी छोड़ा देलिऐक। हमर बहिन मिल्लत स्कूल दरिभंगामे पढ़ैत अछि। ओ एखन दसमामे छैक। पढ़एमे बड़ चन्सगर, सभ साल अपन कक्षामे फस्टे करैत छैक। कहैत छैक ''हम डाकदर बनब''। हमरा विश्वास अछि भाइजी हम ओकरा डागदर बना देबैक। धनमा आगू बाजल–''अहाँ अप्पन कहू भाइजी अपने एतए कोना?''

हम एतए एक बरखसँ छी, एकटा प्राइवेट कम्पनीमे काज कऽ रहल छी। 5000 हजार टका दरमाहा अछि हमर।

''बस पाँच हजार! एहिमे कोना गुजर करै छी यौ भाइजी?''

रौ धनेसर तोरा बुझल छौक ने जे हम मैथिलीसँ एम.ए. केने रही। मैथिलीक सर्टिफिकेट लऽ कऽ सौंसे दिल्ली धांगि देलिऐक? एतए भाषा नहि टेक्निकल ज्ञान चाही।

धनमा कनेकाल चुप भऽ गेल..... ओ बाजल-- भाइजी अहाँ तँ तेहन ने बात हमरा कहि देलिऐक जे हमरा किछु फुरिते नहि अछि? आब आइ हम अहाँकेँ नहि छोड़ब, अहाँकेँ हमरा बासापर जाए पड़त।

धनमा हमरा विवश कऽ देलक, ओहि दिन हम करोले बाग टीसनपर उतरि गेलहुँ।

धनमाक बासा करोलबाग टीसनसँ लगीचे रहैक।

ओहि छोट-सन घरक एक हिसमे रसोई बनएबाक बरतन-बासन रहैक, दोसर दिसमे ओकर कपड़ा लत्ता, ओछाओन आदि आ शेष भागमे एकटा बड़काटा रैक रहैक जाहिमे किताब सभ ढाँसल। ओकरा ओछाओनपर सेहो कैकटा मैथिलीक पत्र-पत्रिका सभ छिड़िआइल रहैक, से देख हमरा कने अचरज भेल। धनमा हमर मनोदशाकेँ भाँपि लेलक। ओ बाजल–''भाइजी ई हमरे डेरा थिक निश्चिन्त रहू। हम अहाँकेँ एतय नहि अनितहुँ, अहाँ जतबे बाजि देलियैक जे मैथिलीसँ एम.ए.....। भाइजी हमरा अहाँक ओ उपदेश सभ एखन घरि स्मरण अछि। अही ने हमरा एकदिन कहने रही जे, प्रेमचंद गणितमे फेल भऽ गेल

छलाह, जयशंकर प्रसाद पचमे धरि पढ़ने छलाह, गुलटेन औंठा छाप अछि आ...., भाषा कोनो नहि खराप होइत छैक, मेहनति, लगन, इमानदारीसँ.......। भाइजी अहाँ मैथिलीक धनेसार कामतिकेँ जनैत छियैन?''

हँ, हुनकर किछु रचना सभ पढ़ने छी, चेहरासँ हम हुनका नहि चिन्हैत छियनि।

ओ बाजल तऽ लिअ आइ चेहरो देखिए लिअ हमही छी अहाँक धनेसर कामति। भाइजी हम अहीसँ प्रेरणा लऽ कऽ आइ स्वाध्यायक बलेँ मैथिली साहित्य मध्य धनेसर कामतिक नामे ख्यात् छी। यौ आइ हम प्रतिमास ओतेक टका कमा लैत छी जतेक प्रो. साहेबक दरमाहा छनि। भाइजी अहाँ पढ़ल-लिखल लोक छी, 5000 केँ 50000 मे कोना बदलल जाए? से अहाँ सोचि सकैत छी। माफ करब भाइजी! छोट मुँह पैघ बात। हमरा जनिते अहाँ अवसरक प्रतीक्षा कऽ रहल छी, किछु नहि भेटत, किछु नहि कऽ सकब, भाइजी अवसरक निर्माण करू, निर्माण.....।

हम मोने-मोन सोचए लेल बाध्य भऽ गेलहुँ जे 18 बरखक अनपढ़ (?) धनमा नीक आकि हमरा सन 30 वर्षीय मैथिलीक स्नातकोत्तर?

मूल कोंकणी कथाः खपच्ची, लेखकः	*हिन्दी अनुवादकः*	*मैथिली रूपान्तरण :*
		
श्री सेबी फर्नानडीस	**डॉ. चन्द्रलेखा डिसूजा**	**डॉ. शंभु कुमार सिंह**

सोंगर

13 सितम्बर, दिन मंगल। भोरे-भोर मोबाइल खनकल। हमरा ओछाओनक लगहिमे मोबाइलक प्रकाश एना झिलमिलाइत छल जेना भिनसरे कोनो अस्पतालक 'वैन' रोगीकेँ ल' क' निकलल हो। हम अपन आँखि मलैत मोबाइल उठौलहुँ...देखलहुँ तँ नम्बर चिर-परिचित छल। शैलीकेँ। शैली माने हमर मिता, जे हमरे ऑफिसमे काज करैत अछि। बहुत नीक आ जिम्मेवारीक पदपर ओकर नियुक्ति भेल छैक। ओना देखल जाय तँ अपन स्वभावसँ ओ एकदम सरल आ अपन काजसँ मतलब राखए वाली। नरम-नरम घोंघा-सन। जँ क्यो किछु कहि देलक तँ चुपचाप सुनि लइवाली। साँच पुछू तँ ओ हमरो बड़ नीक लागैत अछि। हमरा बुझने सभ कन्याकेँ शैलीए-सन हेबाक चाही। हम अपन मोनक बात कैक बेर ओकरा बतएनहुँ छी मुदा ओ ओकरा अनसुना करि दैत अछि। हम सभ एक दोसराकेँ लगधक सात बरखसँ जानैत छी। हमरा सभक दोस्ती विश्वविद्यालयमे पढ़बाकाल भेल छल। शैलीक हँसबाक अंदाज आ ओकर सरल स्वाभाव दुनू हमरा अतीव पसिन्न अछि। संभवतः यैह कारण रहल हेतैक जे हम ओकरा दिस झुकल चलि गेलहुँ। आइ तँ जेना ओ हमर मिता नहि अपितु हमर छाँह हो तहिना बुझाइत अछि। आइ ओ हमरा लेल हमर सभसँ करीबी बनि गेल अछि।

हेलो..... हम मोबाइल उठबैत कहलहुँ।

"शागू हम शैली बाजि रहल छी.... हम एखनहि अहाँसँ भेंट करए चाहै छी।"

शैलीक ई जबाब तँ जेना हमरा आँखिक निन्ने उड़ा देलक।

"मुदा बाद की थिक? से तँ साफ-साफ बताउ......."

''बताएब, सभ किछु बताएब। मुदा अहाँ भेंट तँ दिअ।''

ठीक छैक भेंट क' रहल छी... ऑफिसमे... 9:30 बजे।

''नहि, नहि एखनहि मिलबाक अछि।'' शैली बाजलि।

''मुदा एखन...''

''नहि, नहि हम किछु नहि सुनए चाहैत छी।'' कहितहि ओकर बोली जेना काँपए लागलैक।

''देखू शैली कानू नहि प्लीज.....''

''हम की करी शागू! हमरा समझमे किछु नहि आबि रहल अछि।'' ओ बाजलि।

हमरा शैलीपर दया आबि गेल।

''ठीक छैक, हम एखनहि अहाँक ओतए आबि रहल छी। साढ़े आठ बजे धरि हम आबि जाएब, अहाँ घबराउ जुनि।'' ओकर साहस बढ़बैत हम कहलिऐक।

''ठीक छैक, हम अहाँक बाट देखि रहल छी।'' कहैत शैली मोबाइल बन्न क' देलक।

हे भगवान ! की भेल हेतैक ? ई सोचैत-सोचैत हम हाँइ-हाँइ कऽ मुँह धोलहुँ, कल्हुके पहिरलाहा अंगा-पेंट पहिर निकलि गेलहुँ। घरसँ निकलतहि हमरा मोनमे कैक प्रकारक शंका-कुशंका केर चक्र चलए लागल। आखिर की भेल हेतैक शैलीकेँ? की ओकर मोन खराब भ' गेलैक? वा अचानक टकाक कोनो बेगरता पड़ि गेलैक? हम आर झटकि कए चलए लागलहुँ। पौने आठहिं बजे हम शैलीक घर पहुँच गेलहुँ।

पछिला बेर जे शैली अपन घर गेल छलीह तँ ओ ''वाल'' (एक प्रकारक तरकारी) क लत्ती आनने छलीह। आब ओ लत्ती नरम-मोलायम पातक संग सोंगरक सहारे उपर दिस बढ़ि रहल छल, संगहि ओ अपन जड़ि जमएबाक जतन क' रहल छल।

दरबज्जा खटखटएलासँ पूर्वहिं शैली दरबज्जा खोललक। ओ शाइत हमर पयरक आहटि सुनि नेने छल। जहिना हम घरमे प्रवेश कएलहुँ, शैली दरबज्जा बन्न क' हमरासँ लिपटि गेल। शैलीक ई व्यवहार हमरा लेल एकदम अप्रत्याशित छल। ''शैलीक व्यवहार एहन किएक भ' गेलैक?'' हम मोने-मोन सोचलहुँ। जरूर किछु विशेष भेल छैक, तखनहि तँ ओ हमरा अपन हितचिंतक बुझि एना क' रहल अछि? हम नहुँए-नहुँए ओकर पीठ सहलाबैत रहिलऐक।

''की भेल शैली? ऐना बताहि जकाँ किएक क' रहल छी? किछु बाजबो तँ करू?''

ओ शनैः-शनैः अपनाकेँ हमरासँ अलग कएलक आ हमरा मुँह दिस निहारए लागलीह।

हमरा बुझा रहल छल जे जरूर शैलीक संगे किछु अनिष्ट भेल छैक? ओकरा आँखिसँ नोर तेना बहैत रहैक जेना भदवारिक इनारसँ पानि बहराबैत

छैक। हमरा मोन पड़ल अपन गामक ''सेजांव'' उत्सव जाहिमे लोक इनारमे कूदि जाइत छैक आ छपाक होइतहि पानिक छींटा एमहर-ओमहर पसरि जाइत छैक। शैलीक आँखिक पानि फेर उफन' लागलैक। ओ फेर हमरासँ लिपटि गेल। एहिबेर ततेक नोर बहलैक जे हमर अँगा भीज गेल। ओकर शीतलता मानू हमरा हृदयकेँ सेहो भीजा देलक। हमहूँ बरफ जकाँ पिघलए लागलहुँ। हमरा जीवनमे सदैव एकटा दृढ़ गाछक सदृश ठाढ़ रहएवाली शैली आइ सिगरेटक पुत्ती जकाँ ढ़हि रहल छलीह।

''शैली आखिर किछु बताउ तँ ! आब तँ हम अहाँक समक्ष छी।''

ई सुनतहि शैली आर फफकि-फफकि कऽ कानए लागलीह।

''देखू शैली, एना कानने कलपनेसँ काज नहि चलत, जाधरि अहाँ किछु बताएब नहि हम कोना बुझू?''

''हम लूटि गेलहुँ शागू.... हम तबाह भ' गेलहुँ.....फँसि गेलहुँ....हमर इज्जति पानि भ' गेल.... हमरा लूटि लेल गेल.....।''

''अरे.....अरे.....शैली, ई अहाँ की बाजि रहल छी? बाजएसँ पहिने अपन शब्दकेँ नापि-जोखि लेल करू।''

हमरा लेल ओकर ई बात बहुत दुखदायी छल। आइ शैली एना बताहि जकाँ किएक क' रहल छलीह? एहिसँ पहिने तँ ओ हमरा संगे शब्दक एहन खेल नहि खेलने छलीह?

''बाजू शैली, की भेल...''

''हमर कपारेमे आगि लागि गेल अछि....। हमर महीनवारीक दिन बीत गेल अछि, आ....। काल्हि हम डॉक्टरसँ चेकअप करौलहुँ तँ...।''

ओ ई बात! तँ शैलीक परेशानीक ई कारण छैक। हम मोने-मोन सोचलहुँ।

''पछिला महीनवारीक कोन तारीख छल? हम पुछलिऐक।''

''दुइ अगस्त।'' ओ बाजलि।

हम मोनहि-मोन गिनती लगएलहुँ....कैक दिन निकलि चुकल छलैक। हमरा किछु बाजएसँ पूर्वहि शैली बाजल–सात दिन धरि हम बाट देखैत रहलहुँ काल्हिए डॉक्टरसँ देखएलहुँ, रिपोर्ट + + आएल छैक।

+ + केर माने भेलैक जे शैलीक कोखिमे नव 'जीव' अस्तित्वमे आबि गेल छैक। हमरा मिताकेँ बियाहसँ पहिनहि कल्याणक योग भ' गेलैक। हम ई की सुनि रहल छी? कोना भ' गेलैक ई सभ? हमरा माथ घूमए लागल... कैक प्रकारक सवालसँ हमर माथ फाटल जा रहल छल। ओमहर शैली अनवरत रूपेँ कानि रहल छलीह। हे भगवान! शैलीक घरक लोककेँ जखन एहि बातक आभास हेतैक तखन की हेतैक?

एखन शाइत शैलीकेँ सान्त्वनाक आवश्यकता छलैक। शैलीक कपारपर विपतिक पहाड़ टूटल रहैक आ हम पत्ता जकाँ काँपि रहल छलहुँ। जेना जाड़क दिनमे शीशीक तेल जमि जाइत छैक तहिना हमहुँ जड़वत भेल जा रहल छलहुँ।

के छी जे शैलीकेँ एहि दशामे आनि देलक? ई जानब हमरा लेल आवश्यक भ' गेल छल मुदा ताहिसँ पहिने ई जानब जे, जे किछु शैली कहि रहल छलीह से साँचे थिक वा...।

"शैली भ' सकैछ अहाँक अंदाज गलत भ' गेल हो..। भ' सकैछ डॉक्टरक रिपोर्ट गलत हो....। अहाँ घबराउ जुनि। हम हरदम अहाँक संग छी, दुखमे, सुखमे सभमे।"हमरा बातसँ शैलीक मोन कने हल्लुक भेलैक। आइ धरि जे बात हम शैलीकेँ नहि कहबाक साहस केने रही से आइ एतेक आसानीसँ कहा गेल। शैली एकर माने की निकालने हेतैक से भगवाने जानथि। ओना शैली एखन जाहि मानसिक स्थितिसँ गुजरि रहल छलीह एहनमे हुनकासँ एहन सभ बातपर उमेदो करब उचित नहि छलैक।

"शैली अहाँ जे कहि रहल छी से गलतो तँ भ' सकैछ? पहिने डॉक्टरसँ नीक जकाँ पूछि तँ लिअ।"

"आ जँ डॉक्टर फेर वैह बात कहलक तखन?" शैली बाजलि।

"ओ बादमे देखल जेतैक।" हम कहलिऐक।

"हम अपन जान द' देब। मरि जाएब। हम आब जीबए नहि चाहैत छी।"कानैत-कानैत ओ बाजलि।

"हमसभ आइए डॉक्टर लग जाएब।" हम कहलिऐक।

"कखन?" शैली तपाकसँ बाजलि।

"ऑफिसक बाद, छओ बजेक लगधक। आइ हमहुँ अपन ऑफिसक काज जल्दीए जल्दी निपटा लेब।" ई कहैत हम ओकरा सांत्वना देबाक प्रयास कएलहुँ। शैली हमरा मुँह दिस देखैत रहलीह। हम ऑफिससँ जल्दी निकलए वला नहि छी से शैली नीक जकाँ जानैत छलीह। ओ सोचि रहल हेतीह जे "शाइत हम हुनका समए द' कए मुकरि जाएब।"

"अरे हम अहाँसँ प्रॉमिस क' रहल छी हम अवश्य आएब। चाहे कतेको काज किएक नहि हो।"

शैली किछु पल केर लेल अपन आँखि बन्न क' लेलक। जेना ओ सोचि रहल हो जे जँ हम नहि आएब तखन की हैत?

"शैली अहाँ जल्दी-जल्दी तैयार भ' जाउ। हम बाहर अहाँक बाट जोहि रहल छी। कहैत हम ओकरा गालपर हाथ फेरलहुँ आ ओकर आँखिक नोर पोछलहुँ।"

"अहाँ डरब नहि चलू देखैत छी जे आइ साँझकेँ डॉक्टर की कहैत छथि"–कहैत हम ओकर देहरी पार कएलहुँ। शैली शीघ्रहि अपन कपड़ा बदललक आ हम दुनू बाहर निकलि गेलहुँ।

अहाँ नाश्ता कएलहुँ की नहि? ई पूछब हम उचित नहि बुझलहुँ, तथापि पुछलहुँ---

"ऑफिसेक कैंटीनमे क' लेब" ओ बाजलि।

ओहि दिन भरि रस्ता शैलीक पएर नहुँए-नहुँए आगू बढैत रहल। ओकर

मोन जे टूटि गेल रहैक! हम ओकर ओहि मोनक टुटलका तागकेँ जोड़बाक प्रयास क' रहल छलहुँ। हमरा मोनमे एक पलक लेल भेल जे हम शैलीक हाथ अपन हाथमे थामि ली, मुदा बाट चलति एहि तरहक व्यवहार हमरा शोभा नहि देत, ई जानि हम अपन विचार दमित क' देलहुँ।

गुमसुम शैली अपनहि विषएमे किछु सोचि रहल छलीह ई जानि हम ओकरा टोकलिऐक----

हाँ.....25। शैली उत्तर छल।

"की भेल?" हम पुछलिऐक।

शैली मौन रहलीह।

हम फेर पुछलहुँ।

शैली मौन।

हमरा मोनमे भेल जे शायत शैली सीढ़ी चढ़ैत काल अपन उमिरक संबंधमे सोचि रहल छलीह। हम पाछू मूड़ि क' सीढ़ीक गिनती कएलहुँ ओ ठीक पच्चीसे छल। पच्चीस सीढ़ी आ पच्चीस साल, मेल बड़ नीक छलैक। पच्चीस सीढ़ी चढ़लाक पश्चात् ऑफिसमे प्रवेश आ पच्चीस सालक पश्चात् माए बनब......कुमारि माए? शाइत एहि लेल ई क्षण ओकरा लेल सुखदायी नहि छलैक। कैंटीनमे हमरा दुनूक नास्ता-पानि भेल आ साँझमे मिलबाक बात क' हम दुनू अपन-अपन ऑफिस चलि गेलहुँ।

पूरा दिन काज करैत हम शैलीएक संबधमे सोचैत रहलहुँ। बीचहिमे हम एकबेर ओकरा इंटरकॉम नम्बरसँ फोन केलिऐक।

शैली, केनह छी अहाँ? देखू धैर्य राखब, हम अवश्य आएब....कहैत हम फोन राखि देलहुँ।

दूपहरमे एकबेर फेर हमसभ लंचक समएमे मिललहुँ। ओ भोजन करबासँ मना करैत छलीह। हमहुँ उपासे करब। ऐहने नाजुक समएमे तँ मितकेँ मितक आवश्यकता होइत छैक। हम ओकरा सहारा द' रहल छलिऐक ई सोचि हमरा खुशी भ' रहल छल।

एखन घड़ीमे पाँच बजैत रहैक। ठीक ओहि काल शैली हमरा मोबाइलपर 'मिसकॉल' द' क' समएक संबंधमे आगाह कएलक। साढ़े पाँच बजएसँ पूर्वहि हम ऑफिससँ बाहर आबि गेलहुँ। शैलीओकेँ झटकि क' आबैत देखलिऐक।

"चली?"

हमर प्रश्न सुनएसँ पहिनहि शैलीक पएर बढ़ि चुकल छलैक। हमसभ अस्पताल पहुँचलहुँ। हमरा आभासो नहि भ' सकल जे कखन शैली हमर हाथ कसि क' पकड़ि नेने छलीह। ओ डरि रहल छलीह। ओकर हाथ काँपैत छलैक।

"डॉक्टर छथि?" हम स्वागत कक्षमे पुछलिऐक।

"हँ, हँ छथि" कहैत ओ स्वागत अधिकारी हमरा बगल कुर्सीपर बैसबाक इशारा कएलथि।

हम दुनू जा क' कुर्सीपर बैसि गेलहुँ। हम डॉक्टरक कक्षमे हुलकी मारलहुँ, आ सामने नामपट्टपर सेहो, लिखल रहैक–डॉ. गीता। हम बुझि गेलहुँ जे यैह डॉ. थिकीह। देखएमे एकदम सुन्नरि, सौम्य। हम मोने मोन सोचलहुँ जे शायत डॉ. गीता कहतीह–''शैली अहाँ एकदम नार्मल छी'' आ हुनक ई वाक्य शाइद हमरा सभक मोनक भ्रम तोड़ि देत। एतबहिमे नर्स आवाज देलक–''अहाँ सभ अन्दर जाउ।''

डॉ. गीता एकदम मधुर आवाजमे पुछलथि– ''कहू की तकलीफ अछि।'' डॉक्टरक पश्न सुनि हमर रोइयाँ ठाढ़ भ' गेल। डॉ. केर प्रश्न एखन चलिए रहल छलैक। हम हुनका दिस देखलिएनि की ओ हमरा कहलथि– ''कनेक कालक लेल अहाँ बाहर जाउ'' हम ओतएसँ उठि बाहर ओहि कुर्सीपर जा बैसलहुँ जतए पहिने बैसल रही। नर्स दरबज्जा बन्न क' दैलकैक। हमरा मोनमे तखन कतेको प्रकारक प्रश्न सभ उठि रहल छल। थोड़बे कालक बाद डॉ. दरबज्जा खोललक। हमरा फेर बजाओल गेल। हमरा ओतए पहुँचएसँ पहिने शैली डॉ. कँ किछु बता रहल छलीह। डॉ. हमर नाम पुछलथि---

''शागू गांवकर।'' हम जवाब देलियनि। डॉ. हमर नाम पुरजापर लिख लेलथि। हम देखतहि रहि गेलहुँ। हमरा अपनहि आँखिपर विश्वास नहि भ' रहल छल। हम अपन आँखि आर कने बिदोड़ि क' देखलहुँ–हँ! ई शालीए रहैक। शैली, शाली कहिया भ' गेलैक?

''हँ तँ अहाँ सभकँ बच्चा एखन नहि चाही, यैह ने?'' डॉ. हमरा दुनूसँ पूछलक।

''जी नहि। हमरा सभक आर्थिक परिस्थिति एखन बच्चा जन्म देबाक इजाजत नहि द' रहल अछि।'' शैली उर्फ शाली चोट्टहि बाजलि। हम ओकरा दिस साश्चर्य देखतहि रहि गेलहुँ।

''तँ ई निर्णय अहाँ दुनूक छी ने?''

''जी हँ, डॉक्टर! हमरा दुनूक यैह सम्मति अछि।'' शैली बाजलि।

शैलीक जवाब मानू हमरा अंतर्मनकँ झकझोरि क' राखि देलक। बच्चा ककरहुँ हो मुदा ओकरा प्रति कने ममता तँ हेबाक चाही?

डॉ. ओहि पुरजापर आर किछु लिखलक आ हमरा दुनूसँ हस्ताक्षर करबा लेलक। शैली, शाली गांवकर नामसँ हस्ताक्षर केने छल जे पूर्ण रूपसँ जाली छलैक। अपन हस्ताक्षर केलाक पश्चात् ओ कलम हमरा हाथमे थमा देलक। हम की करी, की नहि एहि अंदर्द्वन्द्वमे रही। शैली एकबेर हमरा दिस देखलक---हम बात बुझि गेलिऐक, हमहुँ हस्ताक्षर क' देलिऐक। डॉ. अपन अलमारीसँ किछु दबाइक गोली आ एकटा करिया-सन शीशीमे दबाइ शैलीकँ थमा देलकैक। शैली अपना पर्ससँ आठ सए टका निकाललक आ तीन सए हमरासँ माँगलक। हम ततेक ने नर्वस भ' गेल रही जे शैलीए हमरा जेबीसँ ओ टका निकालि डॉ. कँ देलकैक।

शैलीक ई व्यवहार देख डॉ. कँ हँसी लागि गेलैक। ''साँचे अहाँ दुनूक

प्रेम बेजोड़ अछि।''

हमरा दुनूक बीच पति-पत्नीक संबंध अछि, ई विश्वास डॉ. कें दिएबाक लेल शैलीक ई नाटक एकदम 'परफेक्ट' साबित भेलैक।

''मि. शागू! अपन पत्नीक ध्यान राखब, हिनका एहि समए अहाँक सख्त आवश्यकता छैक।'' ई कहैत डॉ. गीता हमरा सभकें बिदा कएलथि। हम आ शैली बाहर एलहुँ। पेशेंट सभकें स्ट्रेचरपर ल' जएबाक जे पथ होइत अछि ओहि बाटे हम सभ अबैत रही हमरा बुझाएल जे जेना हमर अपन संतुलन बिगड़ि रहल अछि। हम शाइत अपनहिसँ उलझि गेल छलहुँ। किछु आगू चललाक पश्चात् शैली दबाइक दोकानपर पुरजा दैत किछु आर दबाइ किनलक। हमरा मोनमे एकटा जबरदस्त जद्दोजहद भ' रहल छल। ''हम पापी छी, हत्यारा छी, हमरहि कारणेँ आइ एकटा ओहन शिशुक हत्या भ' रहल छैक जे एखन धरि दुनियाँमे आएलो नहि छैक'' कोनहुँ बच्चाक लेल संसारक सभसँ सुरक्षित स्थान होइत अछि ओकर माइक कोखि, हम ओहि कोखिक लेल मृत्युक सौदागर बनि गेल रही। दबाइ सभ गर्भनाड़ीकें बन्न क' नेना भ्रूणकें समाप्त करबाक प्रक्रिया भ' रहल छलैक। हमरा लागल आइ हम एहन अपराध केने छी जकरा लेल भगवान हमरा कहियो माफ नहि करताह। मुदा जँ हम एहन नहि करितहुँ तँ शैलीओ तँ आत्महत्या क' लेतिऐक? यैह सभ सोचैत हम बहुत कालक लेल एकदम गुम्म भ' गेल रही।

जखन हम कॉलेजमे पढ़ैत रही आ परीक्षामे कम अंक आबए तखन मैडम पापाकें बजा क' आनए कहैत छलीह। तखन हम गलीक नुक्कड़पर जा क' ''साइकिल पायलट'' कें दस-बीस टका द' कए किछु कालक लेल भाड़ाक पप्पा बना कए ल' जाइत छलहुँ। परीक्षाक अपन गलती छुपएबाक लेल भाड़ाक पप्पासँ नाटक करबैत छलहुँ....। आइ हम अपनहि नाटक करैत रही। शैली कें बचएबाक नाटक। बातो तँ साँचे रहैक, घौर बला केलाक गाछमे जेना संतुलन बनएबाक लेल 'सोंगर' लगाओल जाइत अछि, तहिना आइ हम शैलीक संतुलन ठीक रखबाक लेल सोंगरक काज क' रहल छलहुँ।

''चलू चलैत छी।'' दबाइ ल' कए घूरि आएल शैली बाजलि आ हम अपन विचारसँ बाहर निकलबाक प्रयास कएलहुँ। ओहि दबाइमे ओहि छोटका ''जीब'' क लेल ''जहर'' छलैक।

हम शैलीकें ओकरा घर धरि पहुँचा देलिऐक। शैली हमरा बैसबाक लेल कहलक। शाइत ओ बुझैत छलीह जे आइ जे किछु भेल छैक तकर परिणामस्वरूप हमरा मोनमे की भ' रहल हैत। आइ भोरसँ जे किछु भ' रहल छैक तकर जड़िकें संबंधमे हम ओकरासँ पुछबैक। मुदा काल्हि भेंट करब, ई कहि हम ओकर मोन हल्लुक क' देलिऐक। ''गुड नाइट'' कहि हम चलि देलहुँ। राति शनैः-शनैः भीजल जाइत छलैक आ ओकरा संगहि हमर चिंतन सेहो गंभीर भेल जा रहल छल। हमर एकटा मोन हमरा लांछित करैत छल आ दोसर मोन मजगूत क' रहल छल।

एहि अनजान शहरमे हमरा सिवाय शैलीक क्यो नहि छलैक। जँ हम आइ ओकरा सहारा नहि देतिऐक तँ ओ अपन इहलीला समाप्त क' लेतिहैक। हे भगवान! हमरा माफ करब! जाहि भ्रूणकेँ अहाँ जनम देबए चाहैत छलहुँ हम ओकरहि विनाश करबाक लेल शैलीक संग देलहुँ। कतेक पैघ गद्दार छी हम!

दोसर दिन शैली ऑफिस नहि अएलीह। हमहुँ ओकरासँ मिलबाक साहस नहि जुटा पएलहुँ। एहिना कैक दिन बीति गेल। एक दिन अकस्मातहि हमरा शैलीसँ ऑफिसमे भेंट भ' गेल।

''शागू हम घर जा रहल छी।'' शैलीक बात सुनि हम छगुन्तामे पड़ि गेलहुँ।

''मुदा एना अचानक?''

''काल्हि भेंट करब'' ई कहैत ओ ऑफिस चलि गेलीह।

काल्हि शनि रहैक, से हम शैलीक घर जएबाक सोचलहुँ। आइ शुक्र दिन देर धरि ऑफिसक काज करैत रहलहुँ।

दोसर दिन हम शैलीक घर पहुँचलहुँ तँ देखैत छी जे ओकरा घरमे ताला लागल छल। तालाक भूरमे एकटा पर्ची खोंसल रहैक। ओ संभवतः हमरे लेल हैत से जानि हम ओकरा खोललहुँ। हमरे चिट्ठी छल।

प्रिय शागू,

हम घर जा रहल छी। घरक लोक सभ हमर बियाह तँइ क' देने छथि। अहाँक कएल गेल उपकारकेँ हम जिनगी भरि नहि बिसरब। हमरा जीवनक लेल अहाँ बहुत महत्वपूर्ण छी। हम बुझैत छी जे हमरा बिसरि जाएब अहाँक लेल एकदम असंभव हैत। मुदा हम आइसँ अहाँकेँ बिसरैत छी, संभव भ' सकए तँ अहूँ हमरा बिसरि जाउ।

शैली

चिट्ठी पढ़ि हमरा लागल जेना एकटा जोरगर समुद्रक लहरि आएल आ हमरा पयरक निचलका सभटा बालु बहा कए ल' गेल। हमरा आँखिसँ नोरक दूइटा बुन्न कखन ओहि चिट्ठीपर पड़ि पसरि गेल के हम नहि बुझि सकलहुँ। ''काल्हि भेंट करब'' कहएवाली शैलीकेँ काल्हि आ आजुक बीचक अंतर किएक नहि बुझिमे एलैक? शैली हमरा एहि तरहेँ किएक फँसौलक? शाइत ओ सोचने हेतीह जे हम ओकरा बियाह करबासँ मना क' देबैक। जखन हम ओकरा गर्भपात करबैत काल नहि रोकलिऐक तँ एखन किएक रोकि देतिऐक?

शैली आब पहिनुक शैली नहि रहल। ओ आब बहुत समझदार भ' गेल छलीह। आब समाजक सामना करबाक साहस ओकरामे भ' गेल छलैक।

शैली शुक्र दिनक रातिएमे रेलसँ चलि गेलीह आ छोड़ि गेलीह हमरा लेल कैकटा अनुत्तरित प्रश्न सभ।

ओहि दरबज्जाक आगू हमर ध्यान गेल जतए शैली कहियो ''वाल'' केर

लत्ती लगौने छलीह। ओ लत्ती आब खूब पैघ भ' गेल रहैक। ओकर जड़ि चतरि गेल छलैक आ ओहि लत्तीपर आब कैकटा फूल-फल लागि गेल छलैक। एहि ‘‘आल’’ केर फूल-फल आ ओकर पातक तरकारी खएबाक लेल शैली एतए नहि छलीह। शैली बियाहक लग्न मंडपमे छलीह। ई सभ सोचैत हम देबालक कोनसँ सटि गेलहुँ एकदम ‘‘सोंगर’’ जकाँ।

मूल कोंकणी कथा :	हिन्दी अनुवाद :	मैथिली अनुवाद :
नागपंचम	नागपंचमी	
लेखक :	*अनुवादक :*	
		
श्री वसंत भगवंत सावंत	**श्री सेबी फर्नानडीस**	**डॉ.शंभु कुमार सिंह**

नागपंचमी

अश्लेशा नक्षत्रहिसँ बरखा झमाझम होमए लागलैक। गत सात दिनसँ बरखा होइत छलैक। साओनमे तँ बरखा बन्न भ' जएबाक चाही, मुदा ओ तँ बन्न हेबाक नामहि नहि ल' रहल छलैक। बोलकर्णे केर द्वीप पानिसँ दहाबोह भ' गेलैक। गामक खेतक फाटक सहित दहोदिस पानिमे डूबि गेलैक। मल्लिकार्जून मंदिरक दू सीढ़ी धरि बरखाक पानि छूबि लेलकैक, मुदा ठेहपर रहए बलाक लेल कोनो असौकर्य नहि रहैक। मजूरी आ रोजीमे व्यवधान हेबाक कारणेँ लोक सभ हकोबको भ' गेल छल। साँच तँ ई थिक जे खेती-बारीक काज साओन धरि भ' गेलाक पश्चात् लोक गोबरछत्ताक धंधामे लागि जाइत छल। बहुतों जंगलक खाक छानलाक पश्चात् लोक गोबरछत्ता जमा क' लगीच वला साकोड़डें नामक गाममे बेचि दैत छल। ओहुना ओ सभ ककड़ी ओ गैता फोंडाक बजारमे बेचैत छल। जँ पैघ-सन माछ हाथ आबि गेलनि तँ ओकरा देसाई परिवारमे बेचि 10-20 टका कमा लैत छल। मुदा एहि बेर बरखा बेसी हेबाक कारणेँ भरि साल रोजगार बाधित भ' गेलैक। नाह चलाबए वला मलाह सभ तँ कखने अपन-अपन नाहकेँ उपर आनि राखि देने छल। ओकरा नीक जकाँ लकड़ीक गुटखासँ अटका देल गेल छलैक। ओकरा उपर नारियरक पातक छतरी सेहो बनाओल गेल छलैक जकर सुरक्षाक लेल ओकरा नारियरक गाछसँ बान्हि देल गेल छलैक।

हरि भगत अपन बरण्डामे एकटा सोंगरक सहारे अपन पीठ अटका कए बैसल छल, बेर-बेर नदीमे आएल बाढ़िकेँ देखैत छल। घनघोर बरखाक कारणेँ ओ नदीक दोसर दिसक गाम साकोर्डेकेँ सेहो नहि देख सकैत छल। ओहि क्षण ओ सपनहिमे अपन भविष्यक सोचकेँ मूर्त रूप देमए लागल। आड़िक बाटे जेबाक बजाए ओ बिसू भट्टजीक गाछी बाटे रस्तासँ निकलि गेल। वेगसँ बहैत नलीकेँ

पार क' कए पनशी पहुँच गेल आ गाड़ीक प्रतीक्षा करए लागल। बरखाक कारणेँ गाड़ीक आवाजाही बहुत कम भ' गेल छलैक। मोलेंसँ एकटा टेंपू आबैत रहैक। मोलें साकोर्डेंसँ लोक ससत दामपर गोबरछत्ता कीनए गेल छलैक आ आब ओकरा मडगांवक बजारमे बेचबाक लेल जाइत रहैक। हरि ओहि टेंपूसँ लिफ्ट ल' कए तिस्क्यार आबि गेल। डॉक्टरसँ मिलिकए बेमार नेनाक लेल औषधि लेलक आ दूधक सोसोइटीमे सभ दिन दूध लेबाक लेल आबय वला टेंपूपर बैसि ओ सांकोर्डे आबि गेल। नदीक कछेर आबितहि ओकर पएर काँपए लागलैक। नदी पानिसँ लबालब रहैक आ दुनू दिस बस पानिए पानि देखएमे आबि रहल छलैक। ओकर रूप वीरभद्र (रौद्र) जकाँ बुझाइत रहैक। ओहि काल ओकरा नजरिक समक्ष ओकर बेमार नेनाक सूरति आबि गेलैक। ने जानि ओकरा देहमे तखन कतएसँ उर्जा आबि गेलैक, ओ आव ने देखलक ताव झटसँ ओहि भयानक नदीमे कूदि गेल। ओकरा समक्ष केवल मृत्युये देखार दैत छलैक, मुदा ओ कोहुना हेलैत नदी पार क' गेल। ओकर सौंसे देह पानिमे भीज गेल रहैक। ओ अपन सौंसे देहकेँ टटोललक तँ देखलक जे ओकर सभटा पीबएवला औषधि आ गोटी भीज गेल छलैक।

* * *

खाइक लगा दी.....खाएब ने?

पत्नीक टोकलाक पश्चात् ओ होशमे आएल। सपनासँ जागल लोक जकाँ ओ एमहर-ओमहर देखलक। कन्हापर राखल गमछासँ ओ अपन मुँह पोछलक आ किछु कालक लेल आँखि मुनि एकटा नमहर साँस लेलक।

खाइक लगा दिऔक, हरि बाजल।

पत्नी खाइक लगा देलकैक।

स्नानघर जा कए ओ हाथ-पयर धोलक।

चिलका कखन सुतल?

एखनहि सुतल छैक.....पत्नी नहुएँ बाजलीह।

बोखार उतरलैक?

“........”

ओकरा गोटी खोआ देलियैक?

हँ जे बाँचल छलैक ओ द' देलिऐक।

आब कोन दबाइ दियैक किछु बुझनामे नहि आबि रहल अछि। बुझाइत अछि जेना ई अपन जन्महिसँ मुँहमे दबाइक चम्मच ल' कए आएल अछि।

देखियौक ने काल्हि नागपंचमी छियैक हम बूट फूलबा लेल द' देने छिऐक, भगवती करैथ चिलकाक बोखार कने कम भ' जाइक।

हँ, साँचे काल्हि तँ नागपंचमी छैक। ई तेसर खेप छियैक...... ओ एकटा गहिरगर साँस लेलक। बुझाइत अछि एहु साल हमरा सभक लेल अपशकुने अछि, ओ बहुत आर्त स्वरमे बाजल।

भगवतीक ईच्छा.......। ई कहि ओकर पत्नी ओकरा मुँहपर अपन हाथ

राखि देलकैक आ ओकरा आँखिसँ दहो-बहो नोर बहय लागलैक। तकर बाद दुनूक मूँहमे एक्कोटा दाना नहि गेलैक।

गामक सभटा नेना-बूढ़ राणू भगत (हरिक बाबूजी) केँ भ्रष्टाचारी भगत केर नामसँ चिढ़बैत छलैक। राणू भगत समूचा गाममे धार्मिक ओ आन अनुष्ठान करबैत छल। गामक गरीब लोककेँ भगवानक नामपर फँसएबामे ओ ततेक माहिर छल जे तकर कोनो सीमा नहि। खेती-बारी सहित आन सभटा जिम्मेदारी ओ हरिक कान्हपर लादि देने छल आ स्वयं आरामक बंसी बजबैत छल।

हरिकेँ अपन बाबूजी एक्कोटा आदति पसिन्न नहि छलैक, मुदा राणू भगत कहियो हरिक बात नहि बुझलकैक।

ओतहि राणू सदति हरि आ ओकर पत्नीकेँ अधलाहे बात कहैत रहैक।

हरिक बियाहक तीन मास भ' गेल रहैक आ ओहि काल एकदिन राणू नेनपन जकाँ मजाक करबाक लेल नारियरक गाछपर चढ़ि गेलैक आ ओतएसँ जे गिरलैक तँ अपन डाँड़ तोड़ि खाट पकड़ि लेलक। राणूक खाट पकड़ि लेलासँ हरिक जिम्मेदारी दुगूना भ' गलैक।

''एहि हराशंखिनीक कारणेँ हमरा घरक सभटा खुशी पानि भ' गेल अछि'' राणू सदैव हरिक पत्नीकेँ कहैत रहैक। एतेक सुनलाक पश्चातो हरिक पत्नी ओकर देखभालमे कोनो कसरि नहि छोड़ैक। दिनपर दिन बीतल गेलैक, राणू चढ़िते अखाढ़ परलोक सिधारि गेलाह आ एहि कारणेँ हरिक पत्नीकेँ तीन मासक लेल घर छोड़ए पड़लैक। बाबूजीक मृत्युक कारणेँ ओ ओहि बरख नागपंचमी नहि मना सकल। दोसरहि बरख हरिक पत्नी एकटा नेनाकेँ जन्म देलकैक आ सोइरी हेबाक कारणेँ ओ ओहू बरख नाग देवताक पूजा नहि क' सकल। एहि बेर एक बरखक चिलका बोखारसँ जूझैत रहैक.....। जेना-जेना समए बीतैत छलैक, चिलकाक हालति आर बिगड़ले जाइत छलैक। आयुर्वेदिक औषधिक सेहो कोनो असरि नहि भ' रहल छलैक। दोसर दिस नदीक पानि बढ़िते जाइत छलैक आ चिलकाकेँ ल' कए नदी पार करब संभव नहि छलैक।

हरि अपन गाछीक मोड़पर ठाढ़ छल। जँ हमर चिलका नीक भ' जाएत तँ हम एहि बेर भगवान, कुलदेवता, ग्रामदेवता आदिकेँ छागर बलि देबैक। ओकर मनौन सुनि कए ओकर पत्नी अबाके रहि गेलीह। जाधरि ओ ओकरा देखैत ताधरि ओ नदी पार क' कए हाथमे पूजाक समान ल' कए मंदिर पहुँचि गेल।

* * *

अहाँ हिम्मति नहि हारब बाउ! बोखार उतरि जेतैक, एकटा पड़ोसनी ओकरा सांत्वना देलकैक। तखनहि मंदिरक घंटा बाजि उठलैक आ दुनू गोटे हाथ जोड़ि लेलक। ई हम एकदम साँच कहि रहल छी, ई कहि ओ चिलकाक माथपर हाथ राखि देलक। देखियौक बोखार उतरि रहल छैक। पसेना चलि

रहल छैक।

हरि मंदिरसँ आनल भेभूत चिलकाक माथपर लगा देलकैक। ओकर पत्नी बड़ भक्ति-भावसँ ओ भेभूत चिलकाक सौंसे देहमे मलि देलकैक। चिलकाक बोखार उतरैत देखि ओ दुनू परानी बेस खुश भेल। हरिक पत्नी भीजल बूटकेँ देखबाक लेल गेलैक आ हरि जंगलसँ आनल माटिसँ देबालपर नागक आकृति बनबए लागलैक। ओहिपर कुंकुमसँ ओकर रेखांकन कएलक आ कोयलासँ ओकरापर ''ओउम'' बना देलकैक। हाथ धोलाक पश्चात् हरि फेर दरबज्जापर आबि ठाढ़ भ' गेलैक आ नदीक बहैत पानि दिस देखए लागल। खेतमे एकनहुँ पानि भरले रहैक, मुदा बीच-बीचमे छोट-छोट गाछ सभ लखा दैत छलैक।

हरि घुमबाक लेल नकलि गेल आ ताहि समए चिलकाक कानब-कुहरब सुरह भ' गेलैक। हरिक पत्नी ओकरा छातीसँ सटा दूध पियौलकैक। चिलका एक मिनटक लेल तँ चुप भेलैक मुदा चोट्टहिं जोर-जोरसँ कानए लागल। चिलका एकबेर ओछरलक आ सभटा दूध बाहर आबि गेलैक। चिलकाकेँ अचानक एकटा चक्कर लागलैक आ ओ काठ जकाँ कठोर भ' गेलैक। हरि केँ ई समाद कोनो आन नेनाक माध्यमे भेटलैक। हरिक हाथमे दूटा नारियर छलैक, ओ ओकरा ओत्तहि फेकलक आ हकासल घर दिस भागल। घरमे पड़ोसियाक भीड़ लागल रहैक। ओकर पत्नी जोर-जोरसँ कानैत रहैक आ ओकरा दूटा पड़ोसिया सभ सम्हारबाक प्रयासमे लागल रहैक।

चिलकाक आँखि बन्न क' रहल छलैक। एकटा पड़ोसिन किछु औषधिए पातक चूर्ण बना क' ओकरा नाक लग राखि देलकैक। चिलकाक केवल साँसेटा चलैत रहैक।हरिक लेल ओतए बिलमब मोसकिल भ' गेलैक, ओ बाहर आबि बरण्डापर अपन दुनू हाथेँ माथ पकड़ि बैसि रहल। करिया मेघमे छिपल सूरूज,पछिम दिस डूबहि बला छल। आब हरिक जिनगीमे एकटा आर आफत आबहि बला छल आ नागपंचमीक पाबनि ओहि आफतमे शरीक होमए बला रहैक। सभटा मनौती आ प्रार्थना बाढ़िक पानिमे भासि गेलैक। चिलका एखन धरि आँखि नहि खोलने छलैक।

लोहारक भट्ठी जकाँ हरिक छाती धड़कैत रहैक। चिलकाकेँ देखबाक लेल आएल लोक सभ अपन-अपन घर आपस जा रहल छल। पड़ोसी सभक शब्द हरिक हृदयमे तीर जकाँ लागैत रहैक ओ घवाह भ' रहल छल।

शाबा! चिलका आइ राति नहि काटि सकतैक, एकटा स्त्री बाजल।

हमरा तँ बेचारा हरिपर दया आबि रहल अछि, दोसर बाजल।

भगवाने जानथि ई कोन बेमारी चलल छैक, तेसर बाजल।

एक-एक करि कए बहुत भयानक बेमारी पसरि गेलैक अछि। किछु दिन पहिलुके बात थिक, मालूक पोता, जे मात्र डेढ़ बरखक रहैक, ओकरो एहने

चक्कर ऐलैक आ छओ घंटाक भीतरे मरि गेलैक। ई गाम ककरो लेल शुभ नहि अछि। चारू दिस पानिए पानि। एहनामे डॉक्टरो-बैदकेँ कि क्यो आसानीसँ बजा आनि सकैत अछि?

साँच पूछू तँ हम एकटा बात कही, हरिक भक्तिमे निश्चये कोनो-ने-कोनो खोट हेतैक यैह कारण छैक जे ओ आइ तेसर बेर नागपंचमी नहि मना सकत।

हँ सत्ते ..... काल्हि तँ नागपंचमी छैक? माटिकेँ तँ हाथो नहि लगा सकैत छी, आ एहनामे जँ चिलका मरि गेलैक तँ ओकरा गाड़तैक कोना?

हरिकेँ किछुओ नहि सुझैक। काल्हि नागपंचमी छैक आ माटिकेँ घवाह नहि करबाक चाही। जँ चिलका भोरहि मरि गेल तँ शव अंतिम संस्कारक बिना भरि दिन आर भरि राति घरहिमे पड़ल रहत.....आर......

ओ आर किछु नहि सोचि सकल...... उठल आ घरक कोनमे पड़ल कोदारि आ गैंता ल' क' घरक बाहर निकलि गेल अन्हारेमे।

ओ खाधि खुनब सुरह क' देलक.....

काल्हि मर' वला चिलकाकेँ गाड़बाक लेल.......!



अनमोल झा (१९७०-)-

गाम नरुआर, जिला मधुबनी। एक दर्जनसँ बेशी कथा, सएसँ बेशी लघुकथा, तीन दर्जनसँ बेशी कविता, किछु गीत, बाल गीत आ रिपोर्ताज आदि विभिन्न पत्रिका, स्मारिका आ विभिन्न संग्रह यथा- "कथा-दिशा"-महाविशेषांक, "श्वेतपत्र", आ "एक्कैसम शताब्दीक घोषणापत्र" (दुनू संग्रह कथागोष्ठीमे पठित कथाक संग्रह), "प्रभात"-अंक २ (विराटनगरसँ प्रकाशित कथा विशेषांक) आदिमे संग्रहित।— सम्पादक।

प्राथमिकता

-बौआक मूड़नमे कतेक खर्च भेल हेतउ बुच्ची।

-तोरा सऽ कोन लाथ माय, यैह बीस-पच्चीस हजारक आस-पास।

-की कहले! बीस-पच्चीस हजार।

-हँ, ओहिमे भोज-भात, कपड़ा-लत्ता, लेआओन-हकार सबटा ने भेलै।

-अएँ गइ, एते पाइ छलनि ओझाक हाथपर।

-नै सब पाइ तँ नै छलनि हाथपर, किछु एम्हर-ओम्हर, पैंच उधार सेहो भेलै।

-चल भगवतीक दयासँ काज नीक जकाँ पार लागि गेलउ, जस देलकउ समाज आर की चाही। अच्छा कह तँ बौआक सभ भेकसीन (सूइ) सभ पड़लै की नै।

-हँ गइ पड़लै। मात्र दू-तीनटा बेसी दामी बला पन्द्रह सै, दु-हजार बला सभ बाँकी छैक से दिया देबै बादमे।

-छिः छिः छिः। तोरा बेटाक भेकसीन बाँकी छउ देनाइ आ तू भोज केले हे। कोन मनुक्ख भेलैं तू...!!



मिथिलेश कुमार झा

परिचय-पात-पिता- श्री विश्वनाथ झा, जन्म- 12-01-1970 कें मनपौर (मातृक) मे पैतृक ग्राम-जगति, पो.-बेनीपट्टी, जिला-मधुबनी, मिथिला। शिक्षा : प्राथमिक धरि- गामहिक विद्यालयमे। मध्य विद्यालय धरि- मध्य विद्यालय, बेनीपट्टीसँ। माध्यमिक धरि- श्री लीलाधर उच्च विद्यालय, बेनीपट्टीसँ इतिहास-प्रतिष्ठाक संग स्नातक- कालिदास विद्यापति साइंस कॉलेज उच्चैठसँ, पत्रकारितामे डिप्लोमा-पत्रकारिता महाविद्यालय (पत्राचार माध्यम) दिल्लीसँ, कम्प्युटरमे डी.टी.पी ओ बेसिक ज्ञान। रचना: हिन्दी ओ मैथिलीमे कविता, गजल, बाल कविता, बाल कथा, साहित्यिक ओ गैर-साहित्यिक निबंध, ललित निबंध, साक्षात्कार, रिपोर्ताज, फीचर आदि। प्रकाशित पहिल रचना: हिन्दीमे मुखपृष्ठ अखबार का- जनसत्ता (कलकत्ता संस्करण) मे 19-10-94 कें (कविता) मैथिलीमे- विधवा (कविता) -प्रवासक भेंट (मैथिली मासिक कोलकाता)-रिकार्ड तिथि उपलब्ध नहि, आरक्षण सिर्फ सत्ताक हेतु- आलेख(प्रवासक भेंट-कोलकाता)- नवम्बर 1994 कें। प्रकाशित रचना: मैथिली:- प्रायः 15 गोट कविता, 17 गोट बाल कविता, 18 गोट लघुकथा, 3 गोट कथा, 1 टा बालकथा, 44 गोट आलेख आ 6 गोट अन्य विविध विषयक रचना प्रकाशित। प्रकाशित रचना:- हिन्दी:- प्रायः 10 गोट कविता/गजल, 18 गोट आलेख, 1 गोट कथा ओ 3 गोट विविध विषय प्रकाशित। सम्पादक।

एडभांस युग मे

____ की हाल-चाल यौ? भैयाक विआह भ' गेल की? केहन रहलै बरियातीक सत्कार?

_____ सब ठीके रहलै।--- स्वागत-सत्कारमे तँ बुझू जे कोनो कमी नहि।--- खूब एडभांस परिवार छै।

_____ वाह ! खूब नीक बात।

_____ आ नीक बात आरो, जे बरियातीमे स्त्रीगण- वर्ग सेहो छलीह।

_____ ऐं ! --- ठीके? --- के सभ रहथि?

_____ हँ यौ, सतबारावाली मौसी, सौराठवाली दीदी, मलंगियावाली मामी, कहरुयावाली भौजी सभ रहथि, खूब मोन लगलै।

_____ छिः नाक कटेलौ।

_____ एह, दुनियाँ कते एडभांस भ' गेलै आ अहाँ परंपराकँ पडनहि छी !

_____ ऐं यौ, कोन मूहसँ बजै छी ! --- यौ सात लाख काटर नै लेने रहितौ तखन ने एडभांस बुझितहुँ, धुर जी !!



पालन झा

गरीबक जिन्दगी

रामकुमार सभ बाले-बच्चे चित्कार काटि कऽ कानि रहल छल। कानए किएक नहि सभ संसार ओकर उजडि गेलैक। दू चारिटा बकरी छलैक से हो सभ अगिलग्गीमे झुलसि क' मरि गेलैक। लोकसभकेँ मुदा आब जुटनहि की।सभ चीज वस्तु तँ सुड्डाह भ' गेल छलैक। लोकसभके सांत्वा देबाक अतिरिक्त आओर कहाँ रहि गेल छलैक, हँ एकटाधरि भगवानक कृपा जे दुनू बाल-बच्चा समेत रामकुमार दुनू प्राणी बचि गेल। जतेक तरहक लोक ततेक तरहक गप। लोक सभ ढाढस बढबैत जे आब की करबा विधाताक घरमे इएह मंजूर भेल छल, हुनको लगमे गरीबक दुःख देबालेल रहैत छनि रजिस्टरमे लिखल, नीक कहाँसँ लिखथिन। कतेक दिन जोगार कएलाक बादे ओ खोपरी ठाढ भेल छलेक, कोनहुना सभ ओहीमे निवाह करैत छल।वर्षा-बुन्नीसँ तँ बचल रहैत छल। थाकल-मारल चैनसँ तँ सुतैत छल। आब कतए रहतैक, कतए ई दुनू बाल-बच्चा रहतैक। आब ई कोना फेर खोपडी ठाढ करतै, दुनू बाल-बच्चाकेँ पोसतै कि घर बनेतै। आब कनिए क' की हेतैक, जे वस्तु नष्ट भ' गेलैक से आब थोडेक घुरिकए अओतैक कतेक काल धरि कानैत रहितए रामकुमार, कनिते थोड़े साहस क' बजबाक प्रयास करैत कहैताछि ''आब हम कोना जीबै, हमर बाल-बच्चा कोना रहतै, कोनहुना भरिदिन काज कएके बोनि अनैत रही, ओहीमे सँ दोकान-दौडी, दबाइ-दारु करैत रही, टुटलो घर छलते रौद वसातसँ बचल रहैत छलहुँ, आबतँ ओहो खोता उजडि गेल'' एखनहु समाज निष्ठुर नहि भेल छैक, टोल-पडोसक लोक सभ किछु ने किछु मदति करए लगलैक। आगाँ फेर सभ नीके होएबाक बोल भरोस देबए लगलैक।रामकुमार फेर भोकारि पारि क' कनैत अछि आ,किछु साहस क' अपन दुःखनामा सुनबए लगैत अछि ''चारि दिन पहिने भुटकुन गिरहथ परती बला खेत ल' लेलनि। कहने रहथि जे ई दसो कट्ठा जमीनकेँ तोडिकए खेत बनाए ले आ हमरा ताँ एकर उपज तीन वर्ष धरि किछु नहि दिहे, तकर बाद तोरा जाबत धरि खेतकेँ अपन खून-पसेनासँ बनेलहुँ, बच्चाकेँ आरिपर

सुताकए ओहि चैतक रौदमे काज करैत रही। पहिल वरख तँ किछु नहि भेल, एहिबेर आलू रोपैक विचार कएनहि रही, की खेत ल' लेलथिन, एहिलेल हम सभ बैसार कएके जाइ छियनि कहैक लेल, जे हतैक से हतैक, फरिछा लेबनि, आ खेत धरि नहि जोतए देबनि'' कहि कऽ ओहिठामसँ बच्चा सभक लेल किछु खेनाइक इंतजाम करए चलि गेल। रामकुमार अपन टोल-पडोसक लोककेँ अपन दुःख दर्द सुनबितहि छल जे कोना हमर बुधिया बेती हमरा सभक संग-संग काज करैत छल, बडका-बडका ढेपकेँ फोडेत छल, घास-पात विछि-विछि क' आरिपर जमा करैत छल। कहिते छल कि मटकुनमा एक गैंट सोहारी, नोन-तेल-मरिचाइ सभ नेने ओहिठाम आबि गेल। रामकुमारक कनियाँ, अरहुलियाकेँ हाथमे सोहारीक गैंट दैत कहैत अछि- ''बच्चा सभकेँ ताबत खुआ-पिआकेँ शांत करु आ अहूँ सभ किछु खा-पी लिअ, आब जे वस्तु नष्ट भ' गेल से घुरिकए थोडेक आएत आगाँक चिंता आब करू, भगवानक इच्छा हेतनि तँ फेर सभ भ' जेतैक। हमहुँ सभएक-दू दिनमे भुटकुन गिरहथक अन्याक विरुद्ध बैसार करैत छी।''रामकुमार किछु साकाँक्ष होइत-''नहि, हम गिरहथ सभसँ झगडा नहि करब, हमरा संग जे अन्याय भेल अछि तकर निसाफ भगवान स्वयं करथिन, फेरतँ हमारा एही समाज मेरहब, ओने हमरा संग अन्याय कएलनि हमतँ नहि ने केलिअनि नीक उपजाक सभावना देखि करेज फाटए लगलनि आ खेत छीन लेलनि। कतेक मेहनत हम कएने छलहुँसे नहि देखने छलाह की कहाँ भेलनि जे दस टाका व दूसेर अन्नोक मदति कए दियैक'' बीचेमे लुटना कहि उठैत अछि ''अहा कतेक मेहनतिसँ घर बनओने छल, दू मासक बाद साओन-भादव आबि रहल छैक, कोना रहतैक! की करतै! दू-चारि दिनक बात रहैक तखन ने घरोतँ ने छैक बेशी ककरो, जे एहि छोट-छोट नेनाक आश्रय भऽ जइतैक।''

रामकुमार एकमात्र भगवानपर भरोस करैत,'' चलि जेबैक दिल्ली-पंजाब दिस। सुनैत छियैक कजे ओहिठाम खूब काज भेटैत छैक, अपन जतेकटा ईगाम छैक ततेक-ततेकटा जगहमे पच-पच महलक मकान सभ बनैत छैक, एकबेर काज लागि गेलापर पाँच-पाँच बरख धरि दोसर ठाम जाइक कोनो काज नहि। साल-दू-साल काज चलएबला मकानक'तँ कोनो कमिए नहि, ओतहि चलि जेबैक, केओ ने केओ काज धराइये देते, एहिठाम हमरा आब की अछि! अरहुलिया काज नहि करतै, धिया पुताकेँ तँ सोझाँमे रखतै, भानस-भातसँ करतै नै! ''एतेक कहैत देरी की ओमहरसँ कन्हैया टोक दैत जे-हँ, रौ रामकुमार मंगल'क बेटा भोलबा पंजाब मे रहैत छैक आ ओ, जे सहदेबाक बेटा राजकुमार छौक सेहो पढनाइ छोडि दिल्ली की हरियाणा चलि गेलेक आ खूब कमाइ-खटाइ जाइ छै। सहदेब'क बेटा राजकुमार तँ अपन सार सभके सेहो ल' गेलैक। चमर टोलियो'क कतेक छौडा सभके काज धरेलकैक। चमर टोलीक छौडा सभके देखैत छियैक खूब नीक-नीक कपडा-लता पहिरने, हाथमे घडी आ काँख तर रेडियो लटका क' घुमैत-रहैत अछि। आबतँ ओसभ खेतो भरना लेबए लागल अछि, पहिने ई सभ खाइ बेतरेक मरैत छल। माए-बाप, भाइ-बहिनि सभलेल् सेहो

नीक-नीक कपडा सभ अनैत अछि। ओकरे सभसँ गप कएकँ चलि जो दिल्ली-हरियाणा, तोरो दिन-दुनियाँ नीक भ' जेतौक चिंता नहि। ''दिल्ली-पंजाब'क चर्चा चलिते छलैक की मंगल सेहो आबि गेलैक। मंगल सभ चीजके निहारि रामकुमार लग आविकए बैसि गेल की तखनहि रामकुमार हबो-ढकार भ' कनैत अपन दुःख्रनामा सुनबैत-सुनबैत दिल्ली ल' जएबाक पैरवी करए लगलैक। राजकुमार कतहु हमरो दिल्ली सभमे काज धराए दिनए तँ बाल-बच्चा सभकँ पोसि लितहुँ, सुनैत छियेक जे ओतए बोनि बेशी दैत छैक, एतए तँ तीन सेर धान वा दू किलो गहूम भेटैत छैक, एतेकमे कोना निर्बाह करबै, ताहूमे कहि ओ बेराम भ' जेबैक तँ बाल-बच्चा सभकँ के देखतै? अरहुलिया सभ दिन बेरामे रहैत अछि। मंगल बोल-भरोस दैत जे हँ, किएक ने लए जेतैक, हमतँ कहबे करबे तोहुँ जाकँ भेंट क' अपनेसँ कहि दिहक। ओ आब आठसँ दस दिनक भीतरे पूर्णिमा सभक लगीचमे जेतैक। रामकुमार अन्हरगरे भोरमे उठि राजकुमारकँ भेंट क' अपन दुःख-दर्द सुनबैत दिल्ली ल' जएबाक आग्रह करैत अछि। राजकुमार काज धरएबाक आश्वासन दैत रेल-मासूलक इंतजाम क' लेबाक लेल कहैत अछि।रामकुमारक मुखमण्डलपर मुस्कानक संग चमक आबि गेलैक। आश्वस्त भ' रामकुमार घरमे पन-पिआइ क' बोनि करबाक लेल चलि गेल। सांझुक पहर अबैत काल बेसाहक किछु वस्तुजात लएकँ आएल। खाए-पीकँ सुतबाक प्रयास करैत अछि मुदा निन्दो होइक तखनने,कारण रेल मासूलक इंतजाम जे नहि भ' सकलैक।घरमे सम्पत्तिमे सम्पत्ति मात्र अरहुलियाक नैहरमे देलगेल'' हँसुलीटा छलैक मुदा ओकरा बेचला'सँ पैसे कतेक दितैक, तीन सए नहि साढ़े तीन सए टाका''।चारि गोटेक मासूल, बटखर्चा आ ताहिपर बेर वख्त लेल किछु हाथोमे रहैक चाही।जाइते देरी जँकाज नहि भेटि सकै दू-चारि दिन रुकए परैक तखन की हेतैक? चिंतासँ निन्न नहि भ' रहल छलैक।कोनहुना पसरखोलबाक बेरमे निन्न भेलैक, फेर भोरमे काजपर जएबाक छलैक। रामकुमार आइ एकेवेरियाँ काज क' सबेरे घर चलि आएल मासूलक इंतजाम करबाक लेल। मासूलक कोन-हुना इंतजाम क' दिल्ली जएबाक तैयारीमे लागि गेल। काल्हि अन्हरगरे दिल्ली जएबाक छैक। राजकुमारसँ भेंटकए पुर्ण आश्वस्त भ' आइ रातिएमे मोटरी-चोटरी पाथेय सभ बान्हि-छेक राखि देलक, भोरे आब मात्र प्रस्थानक काज।

रामकुमार सबेरे-सकाल उठि बाले-बच्चे तैयार भ' नियत समएपर विदा भ' गेल। ब्रह्मस्थानमे जाकए बैसल छल कि ताबत राजकुमार दस डेग पहिनेसँ चल-चल देरी भ' गेलैक, बस छुटतै तँ ट्रेनो छुटि जेतैक। समएपर नहि पहुँचबै तँ फेर ट्रेन काल्हिये भेटतै। सभ झटकि क' भगवती चौकपर पहुँचल कि ओमहरसँ बस हनहनाइत पहुँचि गेल। कोनहुना सभ बससँ दिल्ली टीशनधरि पहुँचल। गाडी अएबामे घंटा भरि बिलम्ब छलैक। ताबत राजकुमार पैसा ल' टिकट कटाए अनलक। किछु पनपिआइ सभ करैत गेल कि ट्रेनो आबि गेलैक। भीड तँ छलैहें तथापि कोनहुना सभ चढि क' दिल्ली स्टेशन आबि गेल।

दिल्लीमे बडका-बडका शाँपिंग माल सभ बनैत देखि अचंभित ओ मने-मने

काजक आशामे खुशियो भ' रहल छलैक। सएक-सए मजदूर काज क' रहल छल। रामकुमार सभ कहिओ महानगर देखने रहितए तखन ने, जिज्ञासार्थ राजकुमारसँ किछु-किछु पुछए लागल। राजकुमार आब गामक भाषाकेँ छोडि टूटल-फूटल हिन्दीमे ओकरा बुझबैत हिन्दीमे बजबाक निर्देश दैत कहए लगलैक, ''हे! ई बडका शहर थिकैक, एहिठाम गामक भाषा नहि बजिहे, नहितँ लोक देहाती बुझतौक, निछन्छ देहाती। अपना सभमे गप करबहतँ नहि कोनो, मुदा हाकिम हुकुमसँ हिन्दीएमे बात करिहह, ओना ओ सभ अपनामे अंग्रेजिएमे गप्प करैत छैक'' रामकुमार उत्तर दैत कहैत अछि'' अँए हौ राजकुमार! ओसभ जखन अंग्रेजीमे गप्पकरैत छैक तँ फ्रेर रिक्शा-टेम्पू-टेक्सी बला सभसँ कोना गप्प करैत हेतैक, ई सभतँ देखैत छियैक जे हिन्दीएमे बजैत छैक ओकरा अंग्रेजी बजैत कहाँ देखैत छियैक'' की राजकुमार कहैत अछि हँ, हौ एहि लोककतँ ओ सभ उपेक्षा दृष्टिएँ अवश्य देखैअ छैक, मुदा जाहिठाम मजदूर-रिक्शा आदिक काज पडैत छैक ताहिठाम ओकरो हिन्दीएमे बाजए पडैत छैक मुदा सभ छोटका हिन्दीएमे गप्प करैत छैक चाहे ओ चाय-पानबला हो ठेला-रिक्शाबला हो चाहे जन-मजदूर हो'' ,रामकुमार किछु आगाँ बढैत अछि की,पुनः राजकुमारसँ पुछिदैत चैक जे अँए हौ एहिठाम देखैत छियैक जे बुढिया-बुढिया सभ जिंस-पेंट पहिरने रहैत छैक, कतेककेँ देखैत छियैक जे भरि देह कपडो नहि पहिरने रहैत छैक, से किएक? गाँव-घर सभमे एना रहतै तँ लोक कतेक चौल करतै।'' राजकुमार डँटैत जे, ''हे, ई बडका शहर थिकै एहिठाम सभ सेठ-साहूकार सभ छैक एहिठाम एहिना रहैत छैक, ई सभ बात एहिठाम नहि बजिहेँ नहितँ पुलिसकेँ बजाए जेलमे द' देतौक'' रामकुमार सहमि गेल, मुदा भीतरसँ आओरो जिज्ञासा सभ उमरि रहल छलैक। गप-शप करैत सभ राजकुमारक डेरापर पहुँचि गेलैक। रास्ताक सभ झमारल छल। गामसँ जे किछु अनने छल सएह सभ खा-पी क' आराम करए लागल।

साँझुक पहर चारि बाजि गेलैक, काजक तलाशमे से हो जएबाक छलैक। राजकुमार अरहुलियाकेँ भानस भात करबाक सभ वस्तु देखाए रामकुमारक संग निकलि गेल। संयोगवश लगहिमे किछु दुरीपर एकटा नवपर मकान बनि रहल छलैक। धखाइत- धखाइत ओहिठाम पहुँचल । मालिक मनेजरक संग ठीकेदार सेहो छलैक। राजकुमार मालिककेँ रामकुमारक दिस इशारा लकरैत जे काजक तलाशमे गामसँ आएल छैक। रामकुमार से हो टुटल-फूटल हिन्दीमे अपन दुर्दैन्यक विषएमे कहए लगलैक। संयोगवश रामकुमारकेँ काज भेटि गेलैक। दोसरेदिन मालिककेँ एकटा एपार्टमेटक ने ओ लेबाक छलैक, सए-दूसए लेबरक काज छलैक। दोसरे दिन आठ बजे काजपर बजाओल गेलैक। राजकुमारक देह सेहो हल्लुक भऽ गेलैक आ रामकुमार सेहो प्रसन्न भऽ गेल ।

रामकुमार दोसर दिन समएपर पहुँचि काज प्रारम्भ क' देलक। मनसँ काज करए लागल, मेहनतिया तँ छलहे, मालिक काज देखि प्रसन्न भऽ गेलैक। दू-चारि दिन काज कएलाक उपरांत किछु अग्रिम आ किछु अपनो दिससँ रहबाक

लेल वस्तु जात खरीद आनएलेल कहीं देलकै। रहबाक लेल एकटा झोपडीनुमा घर दऽ देल गेलैक। सभ बाले-बच्चे रामकुमार रहए लागल। किछुए दिनमे सभ हिलि-मिलि गेल। धियो-पुतो सभ जगहसँ परिचित भऽ अपन खेलाए धुपाए लागल। बडका छौडा ललटुनमा काज करए कालमे बापक छोट-छीन टहल सेहो कऽ दैक। आबतँ ईसभक प्रिय पात्र बनिगेल। मालिक-मलिकाइन जखन अबैकतँ चाहो सभ पिआए दैक। मालिक आब गेटक चाभी सेहो एकरे हाथमे थम्हा देलकै। कखनहु ककरो बिषएमे नीक अधलाह जे किछु पुछबाक रहैत छलैकसे रामकुमारेसँ पुछैत छलैक। इहो सभटा बात सत्य-सत्य कहि दैत छलैक। किछु दिनमे घरक छत सभ ढला गेलैक, रामकुमारककेँ आब ओहीमे रहबाक लेल आज्ञा भेटि गेलैक। गेटक चाभी सेहो दऽ देल गेलैक। आवए-जाए बलापर नजरि रखबाक हेतु सेहो कहिदेल गेलैक। मालिक-मलिकाइनकेँ कोनो गुप्त बातक जानकारी लेबाक होइतँ रामकुमारेसँ पुछैत छलैक। दू-तीन वरख धरि एहिमे काज चलतै से सोचि खूब प्रसन्न भ' रहए लागल। समए बितैत गेल देखिते-देखिते आब तेसरो बरख बीतल जाए रहल छलैक एपार्टमेटक दोसरमहल घरिक सभ ढांचा तैयार भ' गेलैक, मुदा एखनो बहुत काज बाँकी छैल। आबतँ फिनिशिंगक काज चालू कएल जेतैक। मालिक धीरे-धीरे मजदूर सभक छँटनी करए लागल, झोपडी सभ सेहो हँटए लगलै। रामकुमारक चिंता सेहो बढए लगलैक जे आब हमरो ई स्थान छोडए पड़त। ठीकेदार,रामकुमारकेँ मकानक एकटा कातमे रहबाक स्थान सीमित कऽ देलकै। रामकुमार उदास भ' कए रहए लागल तथापि ओ छओ-मास घरि आओर ओहीमे खेप लेलक। पन्द्रह दिन ठीकेदार मालिककेँ एपार्टमैंटक चाभी सौप देतैक। रामकुमार पत्नी अरहुलियाक संग भविष्यक चिंता करैत अवसर पाबि काजक खोज सेहो करए लागल। ''दिल्ली सभ महानगरमे काज कतहु नहि भेटैक, ताहूमे मजदूरीक काज। एखनहुँ इंजिनियर, डाक्टर, शिक्षकक काज पडततँ एकक बदला अनेक उपस्थित भऽ जाएत मुदा मजदूरक दिक्कततँ सभ दिन रहतैक, कतबो मशीनी युग एलैक मजदूरकतँ काज पडबे करतै। मजदूर की आब मजदूरे रहलैक? ओहो सभ आब अपन स्वयंक काज करए लागल आ ओहिमे ओकरा खूब आमदनियो होइत छैक बाबू-भैया सभ गाममे जमीन बेचैत छथि आ ओसभ खरीद करैत अछि। ''मकानमे फिनिशिंगक काज सेहो लगचाए गेलैक। बाहरमे रंग विरंगक फूल सभ सेहो लागए लगलै।

रामकुमार केँ भगवान-भगवतीक कृपासँ दोसरो ठाम काज भेटि गेलैक मुदा ओहि काजमे एखन दस दिन समए आओर लगतै, एहने एकटा शॉपिंग मॉल बनतै, ओहूमे चारि-पाँच वर्ष धरि काज चलतै। रामकुमार दुनू प्राणी खूब खुश छल कि कुसंयोगसँ बडका बेटा ललटुनमा दुःखित पडिगेल। टाइ-फाइड भ' गेलैक की कालाज्वर एकसए तीन आ चारि डिग्री धरि बुखार रहए लगलैक। बुखार उतरए केनाम नहि। कखनहु-कखनहुँ आँखिसभ बन्न भ' जाइक तँ कखनहु देह पानि-पानि मुदा जिद्दी ज्व्रर जल्दी छुटबाक नामे नहि लैक। ठीकेदार एहनो स्थितिमे घर खाली करबाक हेतु अंतिम चेतावनी दऽ देलकै। घर तँ खाली कइये देने

रहैक, परिसरमे बनल एकटा गिलेबापर जोडल ईटक घरमे छलैक। मालिक से हो आबि कऽ कहि गेलैक, मालिक स्वयं ललटुनमाक मरनासन्न अवस्था देखलकै तथापि कोनो हालतमे परिसर खाली करबाक आदेश दैत चलि गेल।

आइ भोरे परिसर खाली करबाक छलैक मुदा ओ खाली करबासँ विवश छलैक, छौडा एक-दूदिन जितै की नहि से कहब कठिन छलैक। सांझुक पहर ठीकेदार, मालिक, मलिकाइन सभ एलै एकरासँ विनु किछु कहनहि सामान सभ बाहरमे कनैल फूलक गाछ दिस छहर दिबालीक कातमे फेकए लगलैक। रामकुमार-अरहुलिया दुनू प्राणी निहोरा-विनतीसँ जे,'' मालिक दू चारि-दिनमे हम खाली क' देब, एहि जड़कालामे रातिमे ई लएकँ कतए जेबैक। मालिक! मरिजेतैक ललटुनमा। इएह ललटुनमा छल जे अहुँ सभक टहल क' दैत रहए। कहिओ चाह आनए, कहिओ सिगरेट तँ कहिओ पानि। एही जरकालामे कहियै ललटुनमा ठँढ लागि जेतौक स्वेटर खरीद क' पहिरि लिहँ, पएरमे चप्पल लए लेआ पैसो दैत रहियै। मालिक! ओयेह ललटुनमा मरि रहल छैक कहाँ दूटा टको दैत छियेक जे एकटा गोटियो खेतै। मालिक दू चारि दिन रहए दिऔक हमारा खाली कए देब।'' मुदा ठीकेदार आ मालिकपर तकर कोनो प्रभाव नहि। ललटुनमा जाहि टूटल खाटपर पड़ल छल, ओहि खाट सहित ललटुनमाकेँ परिसरसँ बाहर गाछक तर राखि देलक। ओकरा सभकेँ संका जे कही मरि गेल तँ आओरो आफत होएत।

रामकुमार मालिकसँ प्रार्थना करैत कलजोरिकए जे'' मालिक! एकरा बड कठिनसँ पोसने छियैक, अहाँ सभ गरीबक दर्द ओ ममता नहि बुझैत छियैक। अहुँ सभकेँ बाल-बच्चा अछि मुदा अहाँ सभतँ बच्चाकेँ माएक दूधो नहि पिअए दैत छियैक किएक तँ माएक शरीर खराब भ' जेतैक नब नहि देखेमे अओतै।बच्चा सभकेँ दाइ सभक भरोसे छोडि जतए ततए रंगीन दुनियाँमे घूमए चलि जाइत छियैक। अपने सभखाली धनकघमौर करैत छियैक। बच्चाकेँ रंग-विरंगक कीमती कपड़ा-खिलौना गाडी जे चाहीसे दैत छियैक मुदा असली स्नेह तँ माइये-बापसँ होइत छैकसे स्नेह देवए अहाँ सभ नहि जनैत छियैक यदि से स्नेह रहितैक तँ ललतुनमाकेँ एना नहि बाहर क' दितियै, अहाँ सभकेँ कनेक बो दरेद नहि अछि मतलब ओतबे काल रहैत अछि जतेक काल अपने लोकनिकेँ काजक जरुरी रहैत अछि। '' मालिक! एकरा राति भरि रहए दिऔक। मुदा मालिक-मलिकाइन पर तकर कोनो प्रभाव नहि।

सगरो राति रामकुमार दुनू बच्चाकेँ नेने जगले रहिगेल। भगवान-भगवतीक स्मरण करैत जे'', हे भगवान! सभटा दुःख हमरे सन गरीबकेँ देलियै। गाममे तँ सरो समाज छल बोलो भरोस देलक एहिठाम तँ केओ नहि अपन होइत छैक सभ स्वार्थमे लागल रहैत अछि, गरीबक दिस ककरो ध्यान नहि। ओहो जे राजकुमार छल सेहो पंजाब चलि गेल, आब हम एखन कतए जाउ, हमर सभक रक्षा करु! रक्षा करु!''भोर होइतहि देरी ललटुनमाक आँखि खुलि गेलैक, साक्षात जेना सूर्य भगवान अपन प्रकाश पुञ्जसँ रोगकेँ हरण कए लेलथिन। ललटुनमा

पानि मंगलकै पीबाक लेल। अरहुलिया-रामकुमारक बात जेना दिनकर दीनानाथ सुनि लेलथिन। दुनू प्राणीकेँ होश आबि गेलैक। ललटुनमाकेँ गाएक दूध पीआए दवाइ द' देल गेलैक। किछु कालक बाद होश भेलापर ललटुनमा बजैत अछि- ''माए एतए किएक छियैक? मालिक सभ हमरा सभकेँ निकालि देलखिन? माए माथपर हाथ ध' सहला बैत अपन दुःख कहए लगलैक। बीच-बीचमे ललटुनमा आखिँ सेहो मुनि लिअए। किछु कालक बाद होश भेलापर ''माए! एतएसँ चल, एहि घरक सोझाँ हम नहि रहब, गाछेक तरमे रहबाक अछितँ बरक गाछ तर चल जो, मुदा एहिठाम आब नहिरह, एकोक्षण हमरा नहि राख एहिठाम। ओहि ज्वरसँ हमरा ई बेशी दुःख बुझाइत अछि, जल्दी चल'' रामकुमार सभ वस्तु-जातकेँ एकटा बोरियामे ल', ललटुनमाकेँ कान्हपर लटकाए धर्म-वृक्षक छयामे रहबाक लेल बाले-बच्चे रामकुमारक दुनू प्राणी एक-टक ओहि मकानकेँ निहारैत विदा भ' गेल। नहि जानि, कोन धर्म-वृक्षक छयामे ओ रुकल।



कामिनी कामायनी

लाल काकी

टक टक टक टक टुन टुन टुन टुन ....

घंटी बजबैत तांगा क' सोरसँ ओहि सूतल सूतल सुस्त सुस्त टोलमे हरकत आबि गेलए । कोनो अभ्यागत सएह आबैत छलाह ताँगापर किनको बेटा पूतौह किनको धी जमाए किनको समधी किनको सर कुटुम। आऽ टक टक टुन टुन क' ध्वनि जेना अहि खबरिकेँ समस्त घर धरि पहुँचा दैत किंयो आएल अछि पाहुन पड़क ।

दिनक करीब दस बाजल छल । मुदा गाममे तँ पराते सभ उठि पराती गबैत पूजा पाठ नेम टेम करैत अपन दिनचर्यामे व्यस्त भऽ जाइत छल ताहि लेल दस एगारह बजैत बजैत फुरसते फुरसत।

किछु अपन दरवज्जासँ निकलि किछु अपन दलानसँ बहिराति ताँगा धरि औला। आऽ खबरि पसरि गेल चारूकात जे लालकाकी पटना जा रहल छथि। हुनक बड़का पौत्र कन्हैयाजी आबि गेलखिन्ह लेबए लेल । लाल काकी अपन जमानाक परम सुन्नरि गोरवाहि स्त्री ततेक गोर जेना साक्षात चान बुलि रहल अछि धरतीपर। आऽ एकदम लाल बूँद जेना अंगरेज ।

खिस्सा छल हुनका पाछाँ जे बड़का घरक बेटीकेँ गौरव ढाह लेल सासुरमे हुनक पतिकेँ दोसर विवाह कराओल गेल ।ओहि समए समाजमे बहु विवाह पूर्णरूपेण प्रचलित छल । आऽ एकए गोट कतेक कतेक विवाह करैत छलाह । मुदा सौतिनियाँ डाह। सौतिन संगे रहनाय एकटा बड़का दुखदायी प्रसंग छलैक स्त्रीगण समाजक लेल ।

सौतिन एतैन्ह करेजपर राहड़ि दड़रतैन्ह तखन हिनक टहंकार मारैत गौरव ढहतैन्ह बड़ उत्तान भऽ कऽ चलैत छथि। घरवलाकेँ विवाह भऽ गेलन्हि मुदा नबकी कनिया सासुरक मुँहो नहि देख सकलीह। नैहरेमे भोजक पात उठब गेलीह तँ कोना नै कोना बिषहरा महाराज डँसि लेलखिन्ह ।जखन लाल काकीकेँ ई खबरि भेटलैन्ह तँ ठठ्ठा कऽ हँसैत बजलीह 'लैह हमर गौरव तँ भगवति सेहो नहि

ढाहि सकलीह ।'बाजए कालमे हुनक बुट्टी बुट्टी चमकैन्ह । आऽ दोसर खिस्सा हुनक जे प्रचलित छल 'विवाहक बड़ दिन धरि हुनका पूत नै होए छल खाली धी धी धी। तँ ओ भगवानसँ कबुला केलथि ' हे सत्तनारैन महाराज ज्यों हमरा पूतौह झोंट पकड़ि कऽ मरत तँ हम बाजा गाजासँ अहाँक पूजा करब ।'एहिपर बड़ हँसी ठठ्ठा भेलए मुदा भगवान जेना हुनकापर बड़ अनुग्रही छलखिन्ह । आऽ ओहो दिन एलैन्ह जखन घरमे पूतौह आबि गेलन्हि । मुदा ओ कबुला भगवानक पूजा कऽ। आब करल की जाए । कबुला कबुला छल।आखीरमे भगवानक पूजाक समए बीध जकाँ पूतौह हुनक एकटा लट पकड़लखिन्ह ओ ढोल पीपहीसँ पूजा सम्पन्न भेल छल ।

मुदा हम जे लाल काकीकेँ देखने रहियैन्ह पाकल पाकल छोछ-छोट केश वृद्वा कनि देहगर मुदा गेराई वएह बड़ स्नेहिल गप्पक सप्पक सिनेह ।

हम सभ जखन गाम जाई हमर पपा ढेर रास फलफूल नेने जाइथ ।आऽ शरीफा लाल काकीकेँ बड़ पसिन्न । 'गै बच्चा दूटा सरीफा ला'।तखन एकोटा नैकसँ पाकल शरीफा नै छलै हम कनि कनि पाकल शरीफाकेँ हाथसँ कैस कैस कऽ दाबि दाबि कऽ एकदम घुल्लल बना कऽ दऽ देलियैन्ह ।कनिए कालक बाद काकी हमरा तकने फिरैत छलीह 'कत्त छै बुचिया' । आऽ हमरा देखैत मातर बजली ' हे ले अपन सरीफा काँचे छौ।'

एक दिन हमर आंगनमे बनल मँड़वा भाई सबहक उपनैनकपर बैसि हमरा खिस्सा सुनबूत छलीह ' जार्ज पंचम इंगलैंडक गद्दी पर बैसलै तेकरा बाद जार्ज छठम जार्ज सप्ताम ।'आऽ ओहिक्रम जे ग्प्पर मोन पडैत अछि ओ बाजल छलीह 'उजरा जीर होइत छै ऊजरा मरीच हमर पीत्ती कलकत्तासँ आनैत छलाह।लोक चान पर पहुँच गेलए।'

हम अपन दायसँ पूछलियैन्ह। 'दूर हुनक गप्पठ सप्पल एहने रहैत छैन्ह उजरा मरीच आऽ चान परलोक ।चौरचनमे चान महाराजकेँ अरघ देल जाइत अछि ओ भगवान छथि हुन्कर कि ओ तँ कनिए दिनक बाद सूरूज महाराजपर सेहो लोकवेदकेँ पठा देती ।'

हुनक गप्पपर पीठ पाछाँ बड़ मखौल उड़ैए।जीभक बड़ पातरि नीक नूकूत खायब नीक पहिरब।

एक दिन दाइकेँ बड़का पोत जमाए एलखिन्ह तँ 'हुनक कनिए कालक बाद अपन दरवज्जासँ टहलैत टहलैत हमरा आंगनक मँड़वापर आबि बैसलिह 'बौआ दाए मैयाँ अपन छोट दियादिनीकेँ ओ अहि नामसँ बजबए छलीह 'कि सभ बनेलहुँ अछि जमाएक लेल' । आऽ दाइ जे परम ओरियानी बुधियारि मृदूभाषी मर्यादा वाली सुन्नरि स्त्री छलीह बड़ आदरसँ अपन पैघ दियादिनीसँ जमाएकेँ गेलाक बाद चाह पियाबैत बैस कऽ विन्याससँ गप्प करैथ ।

जीभ बसमे नहि छलैन्ह तँ पेट सेहो जवाब द' देने छलैन्ह । आऽ लालकाकी बीमार भऽ गेल छलीह ।छोटका बेटाकेँ पेलवार तँ लगमे छलैन्ह मुदा पटना वला बेटाकेँ मोनमे छरपट्टी लागि रहल छलै 'माएकेँ हम अपन लग राखि

कऽ बड़का डाक्टारसँ इलाज करैब।आँखिक सोझा रहत तँ हमरो मोनमे चैन रहत।'

आऽ ताहि लेल टमटम आएल छल । उम्हर काकी बड़काटा कऽ भांगटि ठाढ केनो 'मरि जाएब मुदा मगह नहि जाएब कॅह कासी कॅह उसर मगहर मगहमे जे मरै छै तेकरा पैठ नै होय छौ मगं दोषं दधाति इति मगध ' 'मगहीया डोमसँ बत्तर हम्र जीनगी भऽ जाएतँ 'किन्नो किन्नों हम मगह नै जाएब।'

छोटकी पूतौह दरवज्जापर बैस व्याख्यान दऽ रहल छलीह 'तीन दिनसँ अन्न पानि तियागने छथिन्ह भरि राइत जागल कुहरैत 'हम मगह नै जाएब।'

अपन नूआ आंगीवला झोराकँ छोटका टेबूलपर ठाढ भऽ क'' दहीक खाली मटकूड़ीमे राखि चारसँ लटकैत सींकपर टाँगि कऽ नूका देने रहथि कखनो ओकरा कोठी के दोगमे नूका दैथ मुदा ताकैत ताकैत लोक ताकिए लैक।कखनो अपना लगमे रहए वला पोता सभकँ बजा कऽ नहुँ-नहुँ निहौरा करैथ' 'हे बाऊ अपन हिस्साकँ जमीन हम तोरे सभकँ लिख देबऽ हमरा मगह नै जाए दऽ ।' मुदा हुनक प्राणक रच्छा करए लेल सभकँ लगै पटना जेनाए आवश्यक छल ओतए पैघ पैघ डाक्टर।

कन्हैया जी हुनक झोरा झपटा उठाबैन्ह ताँगापर राखए लेल गेल तँ ओ झपटि कऽ ओकर हाथसँ झीक कऽ अपन करेजसँ लगा कऽ घाना पसारि दैथ 'हम नहि जाएब ई गाम छोड़ि कऽ एतयसँ हमर अर्थीए उठत अहि आंगनमे हम मॅहफापर सँ उतरल छलहुँ। 'आऽ ओ भोकासी पाड़ि कऽ नीच्चामे औंघड़ा औघड़ा कानथि दरवज्जाक नीचा ठाढ सबहक आँखि झर झर बहैत छल विशेष कऽ पूरना लोक सभकँ जे हुनका बड़ दिनसँ कएक बरकसँ जनैत छल। ट्रेनक समए लगचिया गेल छल ।जेनाए परम आवश्यक ।आऽ बेर बेर अपन हाथक घड़ी देखैत एत्ते काल धरि किंकर्त्तव्य विमूढ ठाढ कन्हैयाजी काकीकँ भरि पॉज पकड़ि कोरामे उठा ताँगापर बैसा देलकैन्ह जा ओ अन्न पानिक पोटरा पोटरी बोरा झोरा राखए लेल मुड़ला असक्तद निर्बल काकि नै जानि कोन दैवीक शक्तिसँ उछैलकऽ ताँगासँ नीचा उतरि दुर्गास्थान दिस पड़ए लगलीह।जेना कसाई के देख कऽ गाए चिकरैत छै ओहिना ओ अपन प्रिय बड़का पौत्रकँ देख कऽ। चिकरय लगलीह । चिकरैत चिकरैत हुनक गरा बाझि गेलन्हि । कन्हैयाजी हुनका पाछाँ भगला आऽ लपकि कऽ फेर अपन कोरामे उठा ताँगा पर बैसा देलकैन्ह कियो लोटा मुँहमे लगा कऽ दू चारि घोँट पानि पीया देलकैन्ह।कन्हैयाजी अपनो छरपि कऽ बैस रहला आऽ काकिकँ पॅजिएने रहला। चीज वोस्त लोके सभ राखि देलकै आऽ तांगा वलाकँ इसारा करि देलकै ओ तड़रासँ भगबए लागल घोड़ा ओ हुनक कानब जेना कोने बच्ची दुरगमनिया कनियाकँ । ताँगाकँ पाछाँ पाछाँ भरि टोलक लोक अड़ियातए बोल भरोस दैत दियादिनी आऽ पुतौह सभ 'हे बौआ यौ गोड़ लगैत छी काकी के अवस्से पठा देबैन्ह ।'' ' इलाज करा कऽ चलि अबिहथि ' 'जुनि कानैथ्र हिनका हमर सप्पहत ।'

आऽ पोखरि धरि अड़ियैत कऽ जखन ओ सभ आपस हुनक दरवज्जापर

आबि बैसली तँ सबहक मूँह नाक आँखि लाल-लाल जेना रंग अबीर मलि देने होइ । झर झर नोर बहि रहल छलै एखनो धरि ।

आऽ ओहि दिन की रातियोमे धिया पुत्ताकेँ छोड़ि पैघ ककरो अन्न नै धसले मुँहमे। रहि रहि कऽ लाल काकीकेँ ओ करूण क्रंदन जेना सबहक कानमे घुरियाति रहल छल। पचासो वरखक अपन बास छोड़ि पहिल बेर ओ नैहर वा' सासूरक आगाँ कत्तो पएर राखने छलीह।



जगदीश प्रसाद मंडल

गाम-बेरमा, तमुरिया, जिला-मधुबनी। एम.ए.।कथाकार (गामक जिनगी-कथा संग्रह), नाटककार(मिथिलाक बेटी-नाटक), उपन्यासकार(मौलाइल गाछक फूल, जीवन संघर्ष, जीवन मरण, उत्थान-पतन, जिनगीक जीत- उपन्यास)। मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर कथामे गामक लोकक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।-सम्पादक

बहीन

‘आब अधिक दिन माए नहि खेपतीह। ओना उमेरो नब्बे बर्खक धत-पत हेबे करतनि। तहूँमे बर्ख पनरह-बीसेकसँ कहियो बोखार कऽ कहए जे उकासियो नहि भेलनि अछि। एक तँ ओहिना पाकल उमेर तहिपर सँ देहक रोगो पछुआएल, तँ भरिसक एहिबेरि उठि कऽ ठाढ़ हेबाक कम भरोस। किऐक तँ एक न एक उपद्रव बढ़िते जाइत छन्हि। अन्नो-पानि अरुचिये जेकाँ भेलि जाइ छनि।’’ - भखरल स्वरमे राधेश्याम पत्नीकँ कहलथिन।

पतिक बात सुनि, कने काल गुम्म रहि, रागिनी बाजलि- ‘‘ककरो औरुदा तँ कियो नहिये दऽ सकैत अछि। तहन तँ जाधरि जीवैत छथि ताधरि हम-अहाँ सेबे करबनि की ने?’’

‘हँ, से तँ सैह कऽ सकैत छियनि। मुदा जिनगीक कठिन परीक्षाक घड़ी आबि गेल अछि। एते दिन जे केलहुँ, ओकर ओते महत्व नहि जते आबक अछि। किएक तँ कखनो पानि मंगतीह वा किछु कहतीह, तहिमे जँ कनियो देरी हएत आ कियो सुनि लेत तँ अनेरे बाजत जे फल्लांक माए पानि दुआरे किकिहारि कटैत रहैत छथिन। मुदा बेटा-पुतोहू तेहन जे छै घुरि कऽ एको-बेरि तकितो नहि छन्हि। ककरो मुंहमे ताला लगेबै। देखिते छियै जे गाममे कोना लोक झुठ बाजि-बाजि झगड़ो लगबैत आ कलंको जोड़ैत अछि। तँ चैबीसो घंटा ककरो नहि ककरो लगमे रहए पड़त। जँ से नहि करब तँ अंतिम समएमे कलंकक मोटरी कपारपर लेब।’’

‘‘कहलहुँ तँ ठीके, मुदा बच्चा सबहक हिसाबे कोन, तहन तँ दू परानी

बचलहुँ। बेरा-बेरी दुनू गोटे रहब। अन्तुका काज अहूँ छोड़ि दिऔ। किएक तँ अंगनेक काज बढ़ि गेल। बहीनो सभकेँ जनतब दइये दिअनु।''

''अपनो मनमे सैह अछि। जँ तीनू बहीनि आबि जाएत तँ काजो बँटा कऽ हल्लुक भऽ जाएत। ओना अंगनासँ दुआरि धरि काजो बढ़बे करत। जखने सर-संबंधी, दोस्त-महिम बुझताह तँ जिज्ञासा करए अएबे करताह। जखन दरबज्जापर औताह तँ सुआगत बात करै पड़त''।

मूडी डोलबैत रागिनी बजलीह- ''हँ, से तँ हेबे करत।''

''एखन निचेन छी आ काजो करैऐक अछि। तँ अखने तीनू बहीनियो आ ममोकेँ जानकारी दइये दैत छिअनि।'' आन कुटुम्बकेँ एखन जानकारी देब जरुरी नहि छै। मोबाइलमे मामाक नम्बर लगौलक। रिंग भेलै।

''हेलो, मामा। हम राधेश्याम।''

''हँ, राधेश्याम। की हाल-चाल?''

''माए, बड़ जोर दुखित पड़ि गेलीह।''

''एखन हम एकटा जरुरी काजमे बँझल छी। साँझ धरि आबि रहल छी।'' मोबाइल बन्न कऽ राधेश्याम जेठ बहीनि गौरीक नम्बर लगौलक।

''हेलो, बहीनि। माए दुखित पड़ि गेलथुन।''

''एखन हम स्कूलेमे छी आ अपनहुँ (पति) कओलेजेमे छथि। छुट्टीक दरखास्त दइये दैत छिअए। साँझ धरि पहुँच जाएब।''

मोबाइल बन्न कऽ छोटकी बहीनिक नम्वर लगौलक।

''सुनीता। हम राधेश्याम।''

''भैया, माए नीके अछि की ने?''

''एखन की नीक आ कि अधलाह। तीनि दिनसँ ओछाइन धेने अछि। तँ किछु कहब कठिन।''

''हम अखने छुट्टीक दरखास्त दऽ आबि रहल छी।''

''बड़बढ़िया'' कहि मझिली बहीनि रीताक नम्बर लगौलक।

''हेलो, रीता। हम राधेश्याम। माए, बड़ जोर दुखित छथुन।''

'भैया, हम तँ अपने तते फिरीसान छी जे खाइक छुट्टी नहि भेटैत अछि। काल्हियेसँ दुनू बच्चाक प्रतियोगिता परीक्षा छियै'

बिना स्विच ऑफ केनहि राधेश्याम मोबाइल राखि अकास दिशि देखए लगल। ठोर पटपटबैत- 'बच्चाक परीक्षा......, मृत्यु सज्जापर माए....! केकरा प्राथमिकता देल जाए? एक दिशि, जे बच्चा एखन धरि जिनगीमे पैरो नहि

रखलक, सौंसे जिनगी पड़ल छैक। दोसर दिशि कष्टमय जिनगीमे पड़ल बृद्ध माए। खैर, सभकेँ अपन-अपन जिनगी होइ छैक आ अपना-अपना ढ़ंगसँ सभ जीबए चाहैत अछि। हम चारि भाँइ बहीनि छी तेँ ने दोसरपर ओंगठल छी। मुदा जे असकरे अछि, ओ कोना माए-बापक पार-घाट लगबैत अछि। किछु सोचितहि छल कि नव उत्साह मनमे जगल। नव उत्साह जगितहि नजरि पाछु मुँहे ससरल। चारु भाए-बहीनिमे माए सभसँ बेसी ओकरे (रीता) मानैत छलि आ ओकर सेबो केलक। कारणो छलैक जे बच्चेसँ ओ रोगा गेल छलि। मुदा आश्चर्यक बात तँ ई जे जेकरा माए सभसँ बेसी सेवा केलक वैह सभसँ पहिने बिसरि रहलि अछि।

गोसाँइ डूबैत-डूबैत मामो आ दुनू बहीनि-बहिनोइ पहुँच गेलखिन।

अबितहि डॉ. सुधीर (छोट बहिनोइ) आला लगा माए (सासु) केँ देखि कहलखिन- "भैया, माए बँचतीह नहि। मुदा मरबो दस दिनक बादे करतीह। तेँ एखन ओते घबड़ेबाक बात नहि अछि। अखन हम जाइ छी, मुदा बहीनि (डॉ. सुनिता) रहतीह। ओना हमहूँ दू-दिन तीन-दिनपर अबैत रहब।"

डॉ. सुधीरक बात सुनि सभकेँ क्षणिक संतोष भेलनि। मामा कहलखिन- "भागिन, ओना हम ककरो छींटा-कस्सी नहि करैत छिअनि मुदा अपन अनुभवक हिसाबे कहैत छिअह जे भरि दिन तँ स्त्रीगण सभ मुस्तैज रहथुन मुदा रातिमे नहि। ओना हमरो गाम बहुत दूर नहिये अछि। एखन तँ धड़फड़ाइले चलि एलहुँ। तेँ एखन जाइ छी। काल्हिसँ साँझू पहरकेँ एबह आ भोर कऽ चलि जेबह। भरि राति दुनू माम-भगिन गप-सप करैत ओगरि लेब।"

दुनू बहिनोइयो आ मामो चलि गेलखिन।

"आइ सातम दिन माएकेँ अन्न छोड़ब भऽ गेलनि। दू-चारि चम्मच पानि आ दू-चारि चम्मच दूध, मात्र अधार रहि गेल छनि।" -आंगनसँ दरवज्जापर आबि रागिनी पतिकेँ कहलथिन।

पत्नीक बात सुनि राधेश्याम मने-मन सोचए लगलाह। मनमे उठलनि चारु भाए-बहीनिक पारिवारिक जिनगी। कतेक आशासँ दुनू गोटे (माए-पिता) हमरा चारु भाए-बहीनिकेँ पोसि-पालि, पढ़ा-लिखा, विआह-दुरागमन करा परिवार ठाढ़ कऽ देलनि। जहिना गौरी (जेठ बहीनि) एम.ए. पास अछि। तहिना एम.ए. पास बहिनोइयो छथि। हाई स्कूलमे बहीन नोकरी करैत अछि तँ कौलेजमे बहिनोइ। परिवारक प्रतिष्ठा, समाजोमे बढ़वे केलनि जे कमलनि नहि। तहिना छोटकियो बहीनि अछि। बहीनो डॉक्टर आ बहिनोइयो डॉक्टर। तहिना तँ पिताजी मझिलियो बहीनिकेँ केलनि। दुनू परानी इंजीनियर। बम्बईमे दुनू गोटे नोकरी करैत अछि।

जहिना तीनू बहीनि पढ़ल-लिखल अछि तहिना बहिनोइयो छथि। अजीव नजरि पितोजीक छलनि। मनुष्यक पारखी। तेँ ने बहीनिक विआह समतुल्य बहिनोइक संग केलनि। एक माए-बापक तीनू बेटी, पढ़ल-लिखल, एक परिवारमे पालल-पोसल गेलि, मुदा तीनूक विचारमे एते अंतर कोना अबि गेलै। एहि प्रश्नक जबाव राधेश्यामकेँ बुझैमे अयबै नहि करनि। मन घोर-घोर होइत। एक दिशि

माइक अंतिम अवस्थापर नजरि तँ दोसर दिशि मझिली बहीनिक व्यवहारपर।

विचारक दुनियाँमे राधेश्याम औनाए लगलाह। प्रश्नक जबाब भेटिबे ने करनि। अपन परिवारपर सँ नजरि हटा बहीनि सभक परिवार दिशि नजरि दौड़ौलनि।

गौरीक ससुर उमाकान्त हाई स्कूलक शिक्षक रहथिन। अपने बी.ए. पास मुदा पत्नी साफे पढ़ल-लिखल नहि। नाओ-गाँव लिखल नहि अबनि। ओना पिता पंडित रहथिन। मुदा बेटी कऽ परिवार चलबैक लूरिकेँ बेसी महत्व देथिन। जाहिसँ कुशल गृहिणी तँ बनि जाएत, मुदा ने चिट्ठी-पुरजी पढ़ल होइछै आ ने लिखल। ओना जरुरतो नहि रहै। किऐक तँ ने पति-पत्नीक बीच चिट्ठी-पुरजीक जरुरत आ ने कुटुम्ब-परिवारक संग। मुदा दुनू परानी उमाकान्त आ सरिताक बीच असीम स्नेह। मास्टर सैहबकेँ अपन बाल-बच्चासँ लऽ कऽ विद्यालयक बच्चा सभकेँ पढ़बै-लिखबैक मात्र चिन्ता। जहि पाछू भरि दिन लगलो रहथि। जखन कि पत्नी सरिता परिवारक सभ काज सम्हारैत। एखनुका जेकाँ लोकक जिनगियो फल्लर नहि, समतल रहए। गौरीक परिवारपर सँ नजरि हटा राधेश्याम छोटकी बहीनि डॉ. सुनिताक परिवारपर देलनि। जहिना बहीनि डॉक्टरी पढ़ने तहिना बहिनोइयो। जोड़ो बढ़ियाँ। सुनिताक ससुर बैद्य रहथिन। जड़ी-बुट्टीक नीक जानकार। जहिना जड़ी-बुट्टीक जानकार तहिना रोगो चिन्हैक। जहिसँ समाजमे प्रतिष्ठो नीक आ जिनगियो नीक जेकाँ चलनि। तँ अपन चिकित्साक वंशकेँ जीवित रखैक दुआरे बेटाकेँ डॉक्टरी पढ़ौलनि। पत्नियो तेहने। अंगनाक काज सम्हारि, बाध-बोनसँ जड़िओ-बुट्टी अनैत आ खरलमे कुटबो करैत रहथि। दवाइ बैद्यजी अपने बनाबथि किऐक तँ मात्राक बोध गृहिणीकेँ नहि रहनि। छोटकी बहीनिक परिवारपर सँ नजरि हटा मझिली बहीनिक परिवारपर देलनि। रीताक ससुर मलेटरिक इंजीनियरिंग विभागमे हेल्परक नोकरी करैत। अपनहि विचारसँ मलेटरिऐक बेटीसँ विआहो -लभ-मैरिज- केने। मलेटरिक नोकरी, तँ पाइयो आ रुआबो। हाथमे सदिखन हथियार तँ मनो सनकल। मुदा बेटा-बेटीकेँ नीक जेकाँ पढ़ौलनि। जहिना रीता इंजीनियरिंग पढ़ने तहिना घरोबला। दुनू बम्वईक कारखानामे नोकरी करैत। कमाइयो नीक खरचो नीक, तहिना मनक उड़ानो नीक। एकाएक राधेश्यामक मनमे उठल जे आब तँ माइयक अंतिमे समए छी तँ एक बेरि रीताकेँ फेरि फोन कऽ कऽ जानकारी दऽ दिअए। मोवाइल उठा रीताक नम्वर लगौलनि। रिंग भेल बाजलि- ''हेलो, हम राधेश्याम।''

''हेलो, भैया। अखन हम स्टाफ सबहक संग काजमे व्यस्त छी।''

रीताक जबाव सुनि राधेश्याम सन्न रहि गेलाह। रातिक दस बजैत। इजोरियाक सप्तमी अन्हार-इजोतक बीच घमासान लड़ाइ छिड़ल। किछु पहिने जहि चन्द्रमाक ज्योति अन्हारपर शासन करैत, वैह चन्द्रमा पछड़ि रहल अछि। तेज गतिसँ अन्हार आगू बढ़ि रहल अछि। तहि बीच छोटकी बहीन डॉ. सुनीता आंगनसँ आबि भाय राधेश्यामकेँ कहलक- ''भैया, हम तँ भगवान नहि छी, मुदा माइयक दशा जहि तेजीसँ बिगड़ि रहल छनि, तहिसँ अनुमान करैत छी जे काल्हि

साँझ धरि परान छुटि जेतनि।''

एक दिशि माइक अंतिम दशा आ दोसर दिशि रीताक बिचारक बीच राधेश्यामक धैर्यक सीमा डगमग करए लगलनि। विचित्र स्थिति। जिनगीक तीनिबट्टीपर वौआए लगलाह। तीनिबट्टीक तीनू रस्ता तीनि दिस जाइत। एक रास्ता देवमंदिर दिशि जाइत तँ दोसर दानवक काल-कोठरी दिशि। बीचक रास्ता पर राधेश्याम ठाढ़। एकाएक निर्णय करैत राधेश्याम बहीनि सुनिताकेँ कहलखिन- ''कने गौरियो कऽ बजाबह।''

आंगन जा सुनिता गौरीकेँ बजौने आएलि। दुनू बहीनिक बीच राधेश्याम बजलाह- ''बहीनि, जहिना हमर बहीन रीता तहिना तँ तोड़ो सबहक छिअह। तँ, तोहूँ सभ एक बेरि फोन लगा माइक जानकारी दऽ दहक। हम निर्णय कऽ लेलहुँ जे जहिना एहि दशामे माइक रहनहुँ, ओकरा अपन धिया-पूतासँ अधिक नहि सुझैत छैक तहिना हमहूँ ओकरा भरोसे नहि जीबैत छी। तँ जँ माए के जीवितमे नहि आओत तँ मुइलाक बाद नहो-केश कटबैक जानकारी नहि देबइ। हमरा-ओकरा बीच ओतबे काल धरि संबंध अछि जते काल माइक प्राण बँचल छैक। कहलो गेल छैक 'भाए-बहीनि महीसिक सींग, जखने जनमल तखने भिन्न।' मन तँ होइत अछि जे भने ओ एखन स्टाफ सभक बीच अछि, तँ एखने सभ बात कहि दियै। मुदा कहनहुँ तँ किछु भेटत नहि, तँ छोड़ि दैत छियै।''

जहिना अकासमे उड़ैत चिड़ैकेँ बंश रहितहुँ परिवार नहि होइ छै तहिना जँ मनुक्खोक होइ तँ अनेरे भगवान किऐक बुद्धि-विवेक दइ छथिन। किऐक नहि मनुक्खोकेँ चिड़ैइये-चुनमुनी आ कि चरिटंगा जानवरेक जिनगी जीबए देलखिन।' बजैत-बजैत राधेश्यामोक आ दुनू बहीनियोक करेज फाटए लगलनि। आँखिसँ नोर टघरए लगलनि। भाए-बहीनिक टूटैत संबंधसँ सभ अचंभित हुअए लगलथि। सबहक हृदयमे रीता नचए लगलनि। बच्चासँ विआह धरिक रीताक जिनगी सबहक आँखिमे सटि गेलनि। एक दिशि रीता बम्बईक घोड़दौड़ जिनगीक प्रतियोगितामे आगू बढ़ए चाहैत छलि तँ दोसर दिशि देवालमे टांगल फोटो जँका सबहक हृदयमे चुहुट कऽ पकड़ने। जहिना बाँसक झोंझसँ बाँस काटि निकालैमे कड़चीक ओझरी लगैत तहिना धिया-पूताक ओझरीमे रीता।

'तीनू ननदि-भौजाइ (गौरि, सुनिता आ रागिनी) माए लग बैसि मने-मन सोचए लगलीह। कियो-ककरो टोकैत नहि। तीनू गुमसुम। सिर्फ आँखि नाचि-नाचि एक-दोसरपर जाइत। मुदा मन श्वेतबान रामेश्वरम् जँका। एक दिशि जिनगी रुपी भूमि (स्थल) जँका विशाल भूभाग देखैत तँ दोसर दिशि मृत्यु रुपी अथाह समुद्र। यैह थिक जिनगी आ जिनगीक खेल। जहि पाछु पड़ि लोक आत्माकेँ बलि चढ़वैत। तहि बीच माए बाजलि- 'रीता.....।' रीताक नाम सुनि तीनूक हृदयमे ऐहेन धक्का लगलनि जहिसँ तीनू तिलमिला गेलीह।

रातिक एगारह बजैत। गामक सभ सुति रहल। इजोरियो डुबैपर। झल-अन्हार। दलानक आगूमे, कुरसीपर बैसि राधेश्याम आँखि मूनि अपन वंशक संबंधमे सोचैत रहथि। मनमे अएलनि जे आइ सप्तमीक चान डुबि रहल अछि,

अन्हार पसरि रहल अछि, मुदा कि कल्हुका चान आइसँ कम ज्योतिक होएत? की अगिला ज्योति पैछला अन्हारक अनुभव नहि करत? सभ दिनसँ अन्हार-इजोतक बीच संघर्ष होइत आएल अछि आ होइत रहत। फेरि मनमे उठलनि जे आजुक राति हमरा लेल ओहन राति अछि जे भरिसक माइक जिनगीक अंतिम राति हएत। जनिका संग हजारो राति बीतल ओहिपर विराम लगि रहल अछि। विचारक दुनियाँमे उगैत-डूबैत राधेश्याम। तहिकाल शबाना पोतीक संग पहुँचलीह। दलान-आंगनक बीच रास्तापर दुनू गोटे चुपचाप ठाढ़ि। दुनू डेराएल। राधेश्याम आँखि मुनने तेँ नहि देखैत। परोपट्टामे हिन्दु-मुसलमानक बीच तना-तनी। जहि डरसँ शबाना दिनकेँ नहि आबि अन्हारमे आएलि। किऐक तँ सरोजनीक स्नेह खींचि कऽ लऽ अनलकै। रेहना शबानाकेँ कहलक- "दादी, अइठीन किअए ठाढ़ छीही, अंगना चल ने?"

रेहनाक अवाज सुनितहि राधेश्याम आँखि तकलनि तँ दुनू गोटेकेँ ठाढ़ देखलनि। पुछलथि- "के?"

शबाना बाजलि- "बेटा, राधे।"

"मौसी।"

"हँ"

"एत्ती राति कऽ किऐक अलेहेँ?"

"बौआ, से तू नै बुझै छहक जे गाम-गाममे केहेन आगि लागि रहल छैक। पाँचम दिन सुनलौं जे बहीनि बड़ जोड़ अस्सक छथि। जखने सुनलहुँ तखने मन भेल जे जाइ। मुदा की करितौं? मन छटपटाइ छलए। बेटाकेँ पुछलियै तँ कहलक जे से तू नै देखै छीही रस्ता-बाटमे इज्जत-आवरुक लुटि भऽ रहल अछि। मार-काट भऽ रहल अछि। ऐहन स्थितिमे कोना जेमए। मुदा मन नै मानलक। जिनगी भरि दुनू बहीनि संगे रहलौं, आइ बेचारी मरि रहल अछि तँ मुँहो नै देखब? जी-जाँति पोतीकेँ संग केने एलौं।"

कुरसीपर सँ उठि राधेश्याम शबानाक बाँहि पकड़ि आंगन दिशि बढ़ैत बहीनिकेँ कहलखिन- "मौसी एलखुन। पाएर धोइले पानि दहुन।"

राधेश्यामक बात सुनि दुनू बहीनियो (गौरी आ सुनिता) आ रागिनियो घरसँ निकलि आंगन आइलि। गौरी बजलीह- "मौसी, शबाना मौसी!"

शबाना बजलीह- "हँ।"

दुनू गोटे (शबानो आ रेहनो) पाएर धोए सोझे बहीनि (सरोजनी) लग पहुँच दुनू पाएर पकड़ि कनए लगलीह। कनैत देखि सरोजनी पुछलखिन- "कनै किअए छेँ। हम कि कोनो आइये मरब? एत्ती रातिकेँ किअए एलैहेँ?"

शबाना बाजलि- "बहीनि, रस्ता-पेरा बन्न अछि। दू बर्खसँ भौरियो-बट्टा (घुमि-घुमि बेचनाइ) बन्न भऽ गेल। जखैनसँ अहाँ दऽ सुनलौं, तखैनसँ मनमे उड़ी-बीड़ी लगि गेल तेँ दिन-देखार नै आबि चोरा कऽ अखैन ऐलौंहेँ।"

सरोजनी बहुत कठीनसँ बाजलि- "धिया-पूता नीके छौ कीने?"

शबाना कहलकनि- "शरीरसँ तँ सब नीके अछि, मुदा कारबार बन्न भऽ

गेल अछि।''

''गामो (नैहर) दिशि गेल छलैं?''

''नै। कन्ना जाएब....। तेसर सालक बाढ़िमे अहूँक गाम कटि कऽ कमला पेटमे चलि गेल आ हमरो गाम कोसीमे। आब सुने छी जे हमरो गाम भरनापर बसल हैं आ अहूँक गाम कमलाक पछबरिया छहरक पछबरिया बाधमे। घनश्यामपुर तक तँ रस्ता छइहो मुदा ओइसँ आगू रस्ते सबपर मोइन फोड़ि देने अछि। पौरुका जे जाइत रही तँ लगमा लगमे डूबै लगलौं।'

सरोजनी गौरीकेँ इशारासँ कहलक- ''दाइ, बड़ राति भेलइ। मौसीकेँ खाइले दहक।''

शबाना बाजलि- ''बहीनि, पहिने हम कना खाएब? पहिने बौआ (राधेश्याम) के खुआ दिऔ। खा कऽ सुति रहत। हम भरि राति बहीनसँ गप-सप करब। बहुत दिनक गप पछुआइल अछि।''

शबानाक बात सुनि राधेश्याम मने-मन सोचए लगल जे दुनियाँमे बहीनिक कमी नहि अछि। लोक अनेरे अप्पन आ बीरान बुझैत अछि। ई सभ मनक खेल छिअए। हँसी-खुशीसँ जीवन बितबैमे जे संग रहए, ओइह अप्पन। शवानाकेँ कहलक- ''मौसी, माए तँ ने सिर्फ हमरे माए छी आ ने अहींक बहीनि। सबहक अप्पन-अप्पन छिअए, तँ कियो अप्पन करत की ने?''

पूबरिये घरक ओसारपर राधेश्याम सुतल। बाकी सभ पूबरिया घरमे बैसि गप्प-सप करए लगलीह। गौरी

पुछलनि- ''मौसी, अहाँ दुनू बहीनि तँ दू गामक छिअए। दुनू गोरेमे चीन्हा-परिचए कहिया भेलि?''

शबाना बाजनि- 'जइहेसँ ज्ञान-परान भेलि, तेहियेसँ अछि। हमरा बाप आ तोरा नाना (कका) कऽ दोसतिआरै रहनि। कोस भरि पूब हमर गाम (झगडुआ) अछि आ कोस भरि पछिम बहीनिक। अखन तँ दुनू गाम उपटि कऽ दोसर ठीन बसल अछि। मुदा पहिने बड़ सुन्दर दुनू गाम छलै।

गौरी बाजलि- ''मौसी, हम तँ बच्चेमे, बहुत दिन पहिने गेल रही। तइ दिनमे तँ बड़ सुन्दर गाम रहए।''

शवाना बजलीह- ''हँ, से तँ रहबे करए। मुदा आब देखवहक तँ बिसबासे ने हेतह जे अइह गाम छिअए। हँ,

तँ कहै छेलिहह, काकाकेँ (गौरीक नाना) बहुत खेत-पथार रहनि। चारि जोड़ा बड़द खुट्टापर, चारि-पाँचटा महीसियो रहनि। मुदा हमरा बापकेँ खेत-पथार नै रहए। गाममे खादी-भंडार रहए। सौँसे गामक लोक चरखो चलबै आ कपड़ो बीनए। सभसँ नीक कारीगर रहए हमर बाप। घरक सभ कियो सुतो काटी आ कपड़ो बनबी। सलगा, चद्देरि, गमछी आ धोती बीनएमे हमरा बापक हाथ पकड़िनिहार कियो नहि। बहीनिक गामक सभ हमरे बापसँ कपड़ा कीनए। सौँसे गामसँ अपेछा रहए। पाँचे-सात वर्खक रही तहियेसँ बहीनिक (ऐठाम) अइठीन जेबो करियै आ खेबो करियै।''

शबानाक बात सुनि गौरीकेँ अचरज लगलै। मने-मन सोचए लगली जे एक तँ गरीब तहूमे मुसलमान। तहि बीच दोस्ती। मुस्की दैत रागिनी बाजलि- ''कोन पुरना खिस्सा मौसी जोति देलखिन। ई कहथु जे दुनू बहीनिक बिआह एक्के दिन भेलनि?''

शबाना बाजलि- 'धूर्र कनियाँ! अहाँ की बजै छी। हमरासँ बहीनि दू-तीन बरख जेठ छथि। बहीनिक विआहसँ

दू वर्ख पाछु कऽ हमर विआह भेल। कक्का हमरा बापकेँ कहलखिन जे पूबरिया आ दछिनवरिया इलाका कोशिकन्हा भऽ गेल तँ आब कथा-कुटुमैती उत्तरेभर करब नीक हएत।'

कन्ने गुम रहि, शबाना बाजलि- ''बेटी, कपारक दोख भेल। आब अपनो बुझै छी जे नैहरक काजक जे महौत छेलै से अइ काजक (भौरीक) नै अछि। मुदा की करितियै?

अइठीम (सासुर) उ काज अछिये नहि। ने खादी-भंडार छै आ ने कारोवार अछि।''

मुस्की दइत रागिनी बाजलि- ''मौसी, अपना विआहमे तँ हम कनियेटा रही। सभ गप मनो ने अछि। हिनका तँ मन हेतनि, विआहमे झगड़ा किअए भेल रहए?''

कने काल गुम रहि शबाना ठाहाका मारि हँसि, बजए लगलीह- ''अहाँक बावू बड़ मखौलिया रहथि। हँसी-चैलमे ककरो नइ जीतए देथिन। घरदेखीमे अयलथि। हम दुनू बहीनि खूब छकौलिएनि। पीढ़ी तरमे खपटा, झुटका आ रुइयाँ तरि कऽ सेहो देलिएनि। खा कऽ जहाँ उठलाह कि एक डोल करिक्का रंग कपारपर उझलि देलिएनि। मुदा हुनका लिए धनि सन। तहिना बरिआतीमे ओहो छकौलकनि। सबहक धोतीमे चारि-पाँच दिनक सड़लाहा खैर लगा देलकनि। पहिने तँ बरिआती सभ अपनमे रक्का-टोकी केलक। मुदा जखन भाँज लगलै जे घरवारी सभकेँ सड़लाहा खइर लगा देलक। तखन बरिआतियो सभ टूटल। मुदा कहे-कही भऽ कऽ रहि गेलइ। मारि-पीटि नहि भैल।'' कहि हँसै लागलि। सभ हँसल।

राधेश्याम ओसारपर सुतल रहथि। मुदा एक्को बेरि आँखि बन्न नहि भेलनि। किऐक तँ मनमे शंका होइत जे अनचोकेमे ने माए मरि जाए। खिस्से-पिहानीमे राति कटि गेल।

भोर होइतहि शबाना राधेश्यामकेँ कहलक- ''बौआ, अपन मन अछि जे आब बहीनिकेँ एक काठी (लकड़ी) चढ़ाइये कऽ जाएब। मुदा गामे-गाम जे आगि लगल देखै छिअए तइसँ डर होइए।''

राधेश्याम- ''मौसी, एहिठाम कियो किछु नहि बिगाड़ि सकैत छओ। जहिया तक तोरा रहैक मन होउ, निर्भीकसँ रह।''

शवाना बाजलि- “बौआ, मन होइए जे बहीनिक सभ नुआ-बिस्तर हम खीचि दिअए। फेरि ई दिन कहिया भेटत”

राधेश्याम- “दुनू बहीनिक बीच हम की कहबौ। जे मन फुड़ौ से कर।”

इम्हर आब राधेश्यामक माए सरोजनीक टनगर

बोलो मद्धिम भेल जा रहल छलनि।



साकेतानन्द

वरिष्ठ कथाकार, गणनायक (कथा-संग्रह) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: मैथिली कथा साहित्यमे 1962 स' सक्रिय । गोडेक चालिस_पचास टा कथा, रिपोर्ताज. संस्मरण, यात्रा_विवरण मैथिलीमे प्रकाशित अधिकांश पत्र_पत्रिकामे छपल । पहिल मैथिली कथा ''ग्लेसियर'' 1962मे 'मिथिलामिहिर'मे प्रकाशित । हिन्दियोमे दू दर्जन कथा आदि प्रकाशित । सन 99मे छपल पहिल कथा_संग्रह ''गणनायक' के ओही वर्ष 'साहित्य अकादमी पुरस्कार। पैघ बान्ध' स' अबैबला विपत्तिके रेखांकित करैत, पर्यावरण के कथा वस्तु बना क' राजकमल प्रकाशन स' प्रकाशित एवं अत्यंत चर्चित उपन्यास ('डौकूमेंट्री फिक्शन') ''सर्वस्वांत'' ।आकाशवाणीक राष्ट्रीय कार्यक्रममे प्रसारित दू टा उल्लेखनीय वृत्त रूपक_ 'महानन्दा अभयारण्य' पर आधारित ''जंगल बोलता है'' एवं झारखंड के ग्रामीण क्षेत्रक ज्वलंत डाइनक समस्या पर आधारित वृत्तरूपक '' नैना जोगन'' चर्चित एवं प्रसिद्ध ।- सम्पादक।

कृतं न् मन्ये

''नँइ बाबू साहेब, तलाशी तँ एक-एक वस्तुक हएत, पुलिस पार्टी आबि रहल अछि...एस.पीए साहेबकँ और्डर छै, साहेब अपनहि आबि रहल छै... झट द' जनी-जातिकँ ल' एक कात भ' जैयौ...!'' सभ साल परबी ल' जाइबला हुनकर गाम चांवरडीहक चौकीदार अजोधी ; नमोनारायण सिंहकँ कहि रहल छलनि। कहै कहां छलनि महराज ! धिरा रहल छलनि, धमका रहल छलनि; बाप-दादाक बनाएल घरकँ तुरंते खाली करैक फरमान सुना रहल छलनि।

चांवरडीह गाम धरि छैक बेस झमठगर । बारहो बरन बसै छल अछि अहि दू धारक बीच, लमछुरका जमीनपर बसल ई गाममे। बीच गाम देने सडक; जे आब तँ धारपर पुल भ' जेबाक कारणे सीधे जिला मुख्यालय तक जाइ छैक, मुदा तहिया कतए पाबी ? तहिया एक पेडिया कि सुर्खी बला सडकक चलनसार छलै। साफ-साफ कहीं तँ अंग्रेजक अमलदारी छलै। बाबू साहेबक गाम, ताहूमे नमोनारायणक स्वर्गीय पिता जीकँ तहसीलदारसँ घुड्डी सोहार, तैं अमला-फैला, कर-कचहरी सभ ठां बाबू जयनारायण सिंहक जयजयकार होति रहै ताहि दिन

चांवरडीहमे। भरि चौमासा तँ एतए आएब असंभवे छलै जे नीको समए सालमे तहिया, गाम आएब बड दुरूह रहै। तखन भरि बरसात नावक सवारी रहै। गरीबो लोकके एकटा घसकट्टीयो, नाव जरूर होइ छल।

मुदा सभ एक्के बेर दमदमाकेँ पहुंचि गेलै....दू जीपमे भरि क' सिपाही रहै। ओकर संग हवलदार आ एकटा डी.एस.पी.। सभ हथियार बन्द , जेना कोनो पैघ डकैतकेँ पकडैले आएल हुए। नमोनारायण अवाक् भेल आंगनक मोखा लग जे ठाढ भेलासँ किम्हर पड़ेता कि की करता से किछु फुरेबे नहि करनि। ताबे एकटा सिपाही पाछांसँ हिनकर गंजी पकड़ि क' अपना दिस टनैत पुछलकनि- '' तोरे नाम नमोनारायण छियह...? चलए एस.पी. साहेब बजबै छथुन।''

नमोनारायण सर्द पडि गेला, नमोनारायणक मुँह कारी भ' गेलनि, नमोनारायण मुँहमे धान दैथ तँ लाबा होनि । जहिना गंजी धोतीमे छला तहिना सिपाहीक पाछां-पाछां विदा भेला बड़ए गाछतर, जाहिठाम काल्हियेसँ ज़िलाक एस.पी. कैम्प केने छै । वैह चतरलका बडक गाछ तँ एखनहु छैहे गवाही सभ कथुक। अही गाछ लगसँ सवर्ण आ महादलित टोला अलग-अलग होइ छै । अही बड़क गाछक चलते लोक चांवरडीहक दलित बस्तीके 'बडतर टोल' कहैत रहै। नमोनारयणक स्वर्गीय पिता, जे अहि कुकांडक नायक छला, से तँ गेला सुरपुर धाम। बांचल छथिन हुनकर एकमात्र सुपुत्र, जे बलिदानी छागर जेकाँ बढि रहल छथिन ओत्र जतए नहि जानि कैक युगक तामस, घृणा आ बदलाक भावनासँ भरल एस.पी. प्रतीक्षा क' रहल छनि। पहिने तँ चांवरडीहक आम ग्रामीणे जेकाँ हिनको पता नहि रहनि जे ई सभ कियैक भ' रहल छनि, पुलिस एकाएक हिनकर घर-आंगनक एना तलाशी कियैक ल' रहल अछि?

मुदा एस.पी.क नाम आ ई जनिते जे एस.पी. वैह घनश्यामक जमाए भास्कर छियै; सभ बात बिजली जकां दिमागमे छिटकि उठलनि...आइसँ पच्चीस बरख पहिलुका घटना एना लागए लगलनि जेना काल्हुक घटना हो ! ओ सभ बात हिनका आ हिनकर किछु बूढ़ दियादेटा के ने बूझल छनि? गामक लोक ई सभ कतएसँ जनलकै? खाएर, आब तँ जाइये रहला अछि । आखिर कोन कारणसँ पुलिस घरक ओ दशा क' रहल छनि आ हिनकर चोर-डकैत जकाँ पेशी भ' रहल छनि, सेहो तँ लोककेँ बुझए जोगर होइतै? मुदा जेना भ' क' पुलिस घर ढुकलनि आ जेना भ' क' सर्च क' रहल छनि....राम-राम ! से कि ई कोनो अपराधी छला अछि ? होथि कि नहि होथि; पुलिस तँ एखन तेहने व्यवहार क' रहल छनि; जेना चोर-डकैतक घरक तलाशी लेल जाइ छैक, तहिना एक-एकटा वस्तु-जात खोलि-खालि क', एत्ते तक जे कोठीक चाउर तक निकालि क' तलाशी ल' रहल रहनि। ओ बड गाछ दिस जाइयो रहल छथि आ सोचि रहल छथि जे घनश्यमवाक ओ जमाए भास्कर एस.पी. बनत, आ बनबो करत तँ अही जिलामे आओत, ई तँ कहियो सपनोमे ने सोचने रहथिन। ...एह बातो आझुक छियै ? जोडबै तँ कैक युग बीत जेतै!

कोसिक झमारल चांवरडीह गाम, बारहो मास तीसो दिन अबै-जाइमे बड़

तकलीफ होइ लोककेँ। भूलियेे-भटकि क' कोनो सर-कुटुम्ब अबए। आजुक हाल देखि क' तँ अहांकेँ परतीते ने हएत जे वैह चांवरडीह छियै! रोग-बेरामी, पर-परसौत जँ गडबडायल तँ जाबे अहां चर्राइन कि सहरसा पहुंचब गे, रोगी भगवान लग दाखिल भेल रहत। ताहि दिनुका बात भेलै जखन कोसी, जंगल आ अंग्रेज सन जालियाक शासन रहै...मुँँह देखि क' मुंगबा परसैबला ! तहिया पुलिस थाना, कोर्ट कचहरी जे रहथि से जयनारायण सिंह छला। हुनकर फैसला पहिल आ अंतिम होइ छलै तहिया अहि गाममे !

अही गाममे ओ वर बनि क' आएल रहै...यैह बडक गाछ तर ओ कुर्सीपर...आँखिमे काजर, गलामे बेली फूलक मौलाएल जाइत माला पहिरने बैसल रहै...बगलक खाटपर ओकर पिता आ पित्ती बैसल रहथिन । घनश्याम, ओकर होइबला ससूर पीयर धोती आ गोलगला पहिरने अपन फूल सनक बेटी फुलमतियाक होइबला वरकेँ देख क' मोन हुलसि आएल छलनि चांवरडीह गामक अधवयसू आ अपन समाजक प्रतिष्ठित सदस्य; घनश्यामके । ओ हलसल-फुलसल अपन आंगन दिस जा रहल छला जे अपन मोनक आह्लाद अपन लोक, जनी-जातिकेँ कहथि आ वर-वरियाती लए पान-सुपारी-बीडी-सिगरेट आदि आनथि।

मोन गदगदायमान छलनिहें जे बडतर; जतए वर-बरियातीक डेरा माने जनवासा रहए, ओत्तएसँ उठलै हल्ला...मचए लगलै गर्द आ गूंजए लगलै आर्तनाद निरपराधक ।

"मार सारकेँ ! घेर क' मार सभकेँ..क्यो बचौ नहि, देखिहें नमोनारायण ! एह, खटियापर मटोमाट केहन अछि ? सुनरा! ला फरसा आ छफाटि ले सबहक कुल्हा !!" जयनारायण सिंह अपन चानीक मूठि लागल डंटाकेँ चलाइयो रहल छला आ गरजियो रहल छला। ठीक कोनो राक्षस सन लागि रहल छला। जखन ओ एकरा लग, माने भास्कर लग पहुंचल रहथि तँ माला पहिरने, थरथर कंपैत भास्कर धधकैत जयनारायणक आँखि दिस बड कातर भावे देखने रहनि आ कल जोडि क' ठाढ होइते रहै जे चानीक मूठ बला लाठीक समधानल वार पीठपर भेलै आ तकर बाद की भेलै...कोना ओ पडा क' ककरो घरमे शरण लेलक...कोना ओकर बिआह भेलै...टूटल हाथ-पैर लेने ओ आ ओकर बाप-पित्ती कोना अहल भोरिये कनिया संग ल' क' नावपर पड़एला... सभ ओकरा सपना सन लगैत अएलै अछि एखन धरि ।

पढिते रहय तँ एक बेर फेर एतए आएल तँ पता चलल रहै जे जे कनियाँसँ एकर बिआह भेलै, ओकरापर नमोनारायणक नज़रि बहुत दिनसँ गडल रहनि, तँ ओना तांडव मचौने छला ओकर बिआहक राति। कहां दन तीन दिन तक अहि टोलक लोक थर-थर कंपैत घरमे सुटकल रहल। ओ तँ सुकुर भेलै जे वर-वरिआती संगे ओ राता-राती निकलि गेल...ने तँ जान बांचब मोस्किल रहै ओइ राति । ओही दिन ओ संकल्प केने रह जे ओ पढत, खूब पढत आ पुलिसक नौकरी करत।...साल दू सालपर ओ चांवरडीह आबै...छुट्टा सांढ जकां सभ कथूपर मुँँह मारैत पहिने जयनारायणकेँ देखैत रहै आ तकर बाद ओकर बेटा

नमोनारायणकेँ, जे एखन सुटुकपिल्ली सन सिपाहीक पाछां-पाछां बलिदानी छागर सन बढल जा रहला अछि, जिम्हर अहि पलक प्रतीक्षा कैक युगसँ करैत अबैबला एस.पी. भास्कर ,सन्नद्ध बैसल अछि।

मुदा ई घटना कोनो आजुक छियै ? पच्चीस वर्ष पहिने भेल अपराधक सजाए, ओकरा आइ देल जेतै ? ओकरो अइ घटनाक पश्चाताप भेल रहै। समए बदलल रहै, युग बदललै, नमोनारायणकेँ विचारो बदलल रहनि। ई तँ सपनोमे नै सोचने रहथिन जे घटना चक्र अहि तरहें घुमतै। बाबुओकेँ मुइना तँ आब पंद्रह वर्ष भेल हेतनि।...पता नहि, पुलिसकेँ आंगनमे घुसिते ओकर माए आ कनियाँ कतए गेलै ! की पता ? ओहू राति ककरो कहाँ पता चललै जे वर-वरियाती कि कनियाँ कतए गेलै? कुम्हर पडेलै? भरि गाम तँ जयनारायण सिंहक सिंहगर्जना सुनैत रहलै-- ''...मैट्रिक पास जमाय छै तँ की ? आगि मूतत ? एत्तेटा साधंस जे हमरा सबहक सामने खाट-कुर्सीपर बैसत...एत्ते धू-धू-पू-पूसँ बेटीक बिआह करत? से की हम सभ मोसम्मात ? कि ई सभ बाबू साहेब बनि गेल ..? खच्चर नहितन...।''

संग सिपाहीक जाइत ओ फिर क' अपन द्वार, आंगन आ बरंडा दिस तकलनि...घरक सभ सामान ओइपर रिद्द-छिद्द भेल छलै...बक्सा...अलमीरा... पलंग...ओकर कनियांबला ड्रेसिंग टेबुल...ओकर, माइक आ बाबूक पुरना पेटी, ओकर भी.आइ.पी. सभ मुँह बेने...ओकरा देखल नहि गेलै ! आखिर ओकरा कोन अपराधक सजाए भेट रहल छै...जे आइसँ पच्चीस वर्ष पहिने भेल छलै ? ओ आगां-आगां जाइत सिपाहीक पीठ दिस ताक' लागल कि तखनहि माइक आवाज़ सुनाइ पडलै--''बौआ, हमहूं अबै छिय' !''

नमोनारायण पाछां पलटि क' घरक सभ वस्तु-जातकेँ देखैक बदला उज्जर साडीमे डोलैत मायक काया देखै मोनमे होइ छनि जे 'ई कथी लए संग लागि गेली ?' फेर भेलनि जे कहीं-कदाच माएकेँ देखि क' जँ एस.पीके दया आबि जाइ, भास्करक मोन पघिल जाइ...!

भरि गामक लोक अपन-अपन दरवाजापर सँ अपन-अपन डांडपर हाथ धेने अइ घटना क्रमके, अपन-अपन ढंगसँ देखि रहल छल, अर्थ लगा रहल छल। खाली बूढ-बुढानुस, दर-देयादकेँ पछिला सभ बात फटसँ मोन पडि एलै...जयनारायण सिंहक चानीक मूठ बला लाठी मोन पडि एलै....

नमोनारायणक सांढ जेकां सभ हक खेतमे मुँह मारैक लुतुक मोन पडलै...ओकर बापक कारस्तानी सभ मोन पडलै। जखन बापे गुंडइ सिखाबे तँ बेटाकेँ की कहल जाए ? मुदा ई जरूर जे ई सभ भेना बहुत दिन, पचीसो साल भेलै...आब गडल मुर्दा उखाडल जेतै ? नमोनारायण दुनू बाप-पुते तहिया जे केने रहै, तकर सजाए आब देतै भास्कर एस. पी. ?

नै देबाक चाही ? जहिना खूनक घोंट पुश्त-दरपुश्त पिबैत आएल, तहिना पिबैत रहए ? कि ओइ राति ई दुनू बापं-पूत पशुतोक सब सीमाक उल्लंघन नहि केने रहथि जखन कि वर बनि क' ई गाम आएल भास्करकेँ दुनू बाप-पूत मिल

क' बरियातीक संगे अइ लेल मारि पीट क'बेइज्जत-बेइज्जत केलखिन जे ओ लोकनि खाटपर आ वर कुर्सीपर कियैक बैसल अछि? ई चांवरडीह छियै, बाबू साहेबक बस्ती...ताहि ठाम ई मजाल? लगलै जे हिनके दुनू गोटेक ज़मिन्दारीमे बसल हो सभ क्यो !

तैँ गामक लोक डांडपर हाथ देने, आगां-आगां सिपाही, तकर पाछां ओ, आ सभसँ पाछां हुनकर विधवा माएकँ दलित-टोला जाइत देखैत रहल। मुदा, ने क्यो सबदल आ ने क्यो संग देलकनि !

बुझले अछि जे नमोनारायणकँ देखितंहि एस.पी. कँ की भेल हेतै । पचीस वर्ष बीतल होइ कि

पचास...ई सभ बिसरैबला बात छै ? तैँ नमोनारायणकँ सरि भ' क' एस.पी.क हाथो जोड़ल नहि भेल रहनि

जे अशोक-चक्रक मूठि लागल एस.पी.क हंटर सटाक पीठपर लागल रहनि...जाबे ई किछु सोचथि कि दोसरो

हंटर बजरलनि, जे हुनकर पीठपर गुणाक चिह्न बना देने छलनि आ जे हुनका मार्मिक चोट पहुंचबैए

पर्याप्त छलनि। हुनकर चित्कारसँ ओहि ठाम उपस्थित हुनकर सभ गौंआक मोन दहलि गेलै तँ कोन आश्चर्य ! मुदा कठोरसँ कठोर अपराधीकँ मनोबल तोडबाक, तोडि क' सत्य बोकरेबाके ट्रेनिंग भेटल छैक ओकरा; तैं ओकर कडकदार आवाज़ गूंजैत अछि--"हवलदार ! अइ डारिसँ उल्टा लटका एकरा !"

भूमिपर भास्कर एस.पी.क पैर गरेछने माइक काया थरथरा उठैत छनि, संभवतः दांती लागि जाइ छनि कत्तौसँ एकटा महिला सिपाही प्रगट होइत अछि आ माइक परिचर्यामे लागि जाइत अछि।मुदा नमोनारायणक डांडमे रस्सा बन्हा गेल अछि...बस आब हिनका लटकैले जाइबला अछि।हिनकर मुंहमे गर्दा उडि रहल छनि...

...चेहरा कारी भ' आएल छलनि...बुद्धि काज नहि क' रहल छलनि...सिट्टी-पिट्टी गुम। पीठ परहक चोटक संग अबैबला कष्टक कल्पने करैत चौन्ह अबैत रहनि।

"कियै, हमरो अहिना चोट लागल रहै रे नमोनारायण...एखन तँ किछु भेबे ने केलौए...तोहर लाठीक मारिसँ तँ हमर पित्ती दुइयो मासने बचला...हमर बापक माथक दर्द कहियोने छुटलनि...तोरा तँ साले...!"

ताबे चांवरडीह गामक एक्का-दुक्का ग्रामीण बडतर एकट्ठा हुअ' लागल छलै...हिनकर मसियौत दौडि क' गेल आ निहोरा-मिनती क' क' घंश्यामकँ खिंचने आएल। ओहो सामनेक दृष्य देखि भीडमे अवाक् भेल ठाढ...।पहिने सत्तो

निकलला तकर बाद धीरे-धीरे सभ हाथ जोडने कातर भावसँ देखैत।

''मर, तँ अहांकँ एत्तए कँ बजेलक ? गैरलाइसेंसी हथियार एकर घरसँ बरामद भेलैए, एकरा जेल हेतै !''

एस.पी. तत्ते जोरसँ बजला जाहिसँ गामक लोक ठीकसँ सुनि लियै। उत्तरमे क्यो किछु नहि बाजल। बजै जोग किछु शेषो नहि रहै। सब बस गुम भ' क' भास्कर एस.पी.के देखि रहल छल। ओ पहिने अपन ससुर घनश्यामक नत दृष्टि आ बादमे अपन सासुरक सभ गोटाक क्षमाक मूक गोहारि अनुभव केलक...आगांमे पडलि नमोनारायणक माइक उज्जर साडीमे लपेटल काया छलैक।ओ चारूकात नजरि घुमा क' देखलक...अइ ठाम अत्यंत कातर भावसँ ओकर प्रत्येक क्रिया-कलापकँ देखैत आन क्यो नहि, ओकरसासुरक लोक अछि ,जकरा ओ बच्चेसँ देखैत आबि रहल अछि । अनकट्ठल चुप्पी कि निगूढ शांतिकँ भंग करैत भास्कर एस.पी.क स्वर बडतर फेर गूंजल--''हवलदार ! खोलि दहिंक...आब एकरा ककरो अपमान करबाक साधंस नहि हेतै ।''

***

(ई कथा ''कृतं न् मन्ये'' श्री आर.बी. राम सेवा निवृत्त आइ.जी. के सस्नेह एवं सादर ! लेखक।)



सुजीत कुमार झा

प्रियंका

गामसँ छुट्टी बितओलाक बाद काठमाण्डूम जा रहल छलौं । बसमे चढ़िते एक युवतीके देखलियै तत्त क्षण मन रोमांचित भऽ उठल मुदा अपनाके सम्हा। रैत सिटपर बसि गेलौं ।

युवती हमरे पाछुमे बैसल छली । बेर–बेर हमर मोन ओहि युवती दिश आकृष्टत होइत छल ओकरासँ बात करबाक हेतु । तथापि हम अपन मनके नियन्त्रि तँ कऽ ढल्केसवर, पथलैया, हेटौडा, नारायणगढ़, मुगलिंग पार करैत कतेको स्टौशन गनैत काठमाण्डू पहुँचलौं ।

काठमाडू बस पड़ावमे पहुँचैत–पहुँचैत प्रायः सभ यात्री उतरि गेल छल । मात्र ओ युवती आ हम बाँचि गेल छलौं ।

हम अपन बैंग सम्हौरि उतरि गेलौं । हमरे पाछा–पाछा ओ युवती सेहो उतरि गेली । हमर हृदय जोर जोरसँ धड़कऽ लागल कि आब ओ अपन घर चलि जएती । हम हुनकासँ गप्पह करबाक लेल ब्याकुल छलौं ।

बस पड़ावमे उतैरते पानि टिप टिपाए लागल । हम बैंगमेसँ छत्ता निकालि लेलौं । समिपमे ओ युवती चुपचाप ठाढ छलीह । कखनो ओ बाट दिस तकैत तँ कखनो घड़ी दिस । किछु देरकबाद हम हिम्मोति कऽ हुनका सँ पुछलियैनि अहाँके कतऽ जाइकँ अछि ?

बिनू बजने ओ हमरा दिस तकली आ फेर अनुहार झूका लेली ।

हम हिचकिचाइत हुनकासँ पुनः पुछलियै, अहाँ कतऽ जेबै ?

ओ हमरा दिस देख कऽ कहलि 'कतौ नहि ।'

हमरा चटकन जेकाँ लागल आ हम मुक रहि गेलौं ।

किछु देरक बाद पानि सेहो जोड़सँ बरिसए लागल छलैं हम छाता निकालि डेरा दिस बिदा भऽ गेलौं ।

तखने पाछुसँ आवाज आएल 'सुनु तँ ।'

हम पलटि कऽ देखलौं ओ स्वोर ओहि युवतीके छल । हम हिम्माति कऽ

हुनकासँ कहलियैन 'कहू ?'

'अहाँ कतऽ जेबै ? ' किछु सकुचाइत लड खडाएल स्वतरमे पुछली ।

कुपण्डो लऽ, ओना अहाँके कतऽ जएबाक अछि ? हम पुछलियैक ।

'जी हमरा...कतौ नहि ।'

हम तमसाइते कहिलयौ ' बहुत भारी बात अछि । एखने अहाँ बजओने छलौं आ पुछि रहल छी तँ बताबए नहि चाहैत छी । ठिक छै 'ई कहि हम पुनः जायकँ लेल विदा भेलौं । किछु डेग चलल छलौं कि हमरा कानधरि ओ युवतीके सिसकए कऽ अबाज आएल ।

हम पलटि कऽ देखलौं । ओ ओढ़नीमे मुँह नुकाँ कानए लगली ।

हम फेर रुकि गेलौं । आब हमरामे गप्पन करबाक हिम्मलति तँ आबिये गेल छल । अतः हम समिपमे जा कऽ पुछलियैए 'अहाँ कानि किए रहल छी?''

हमरा पुछलाकबाद ओ आओर जोरसँ कानऽ लगली । हम घवरा गेलौं कि यदि कियो ई सभ देखत तँ पिटाइ अवश्यँ हएत । अतः हुनकासँ कहिलयनि 'कृपया अहाँ कानव बन्द करु आ बताउ जे अहाँके कतऽ जएबाक अछि । हम एक नोकरीहारा सभ्यह व्यक्ति छी हमरापर विश्वास करु ।

एहिपर ओ वजली, हमरा कोनो घर नहि अछि, हमरा लेल ई शहर अनजान अछि तें.. ।

हम आश्चर्यमे पड़ि गेलौं एक अति सुन्दार, जुआन असगरे युवती आखिर एहि पहाड़क शहर काठमाण्डूजमे की कऽ रहल छैक ? अनेक प्रश्नल मानसपटलपर घुमल । हम कहलियै ' ओना अहाँ जाए कतऽ चाहैत छी ? '

एतऽ समिप कोनो होटलमे जा कऽ असगरे कोना विताओलजाऽ सकैत छैक ?

आई अहाँके घरमे रहि सकैत छी... ? यदि अहाँ कही तँ ? ई बात सहजहि कहि सिसकए लगली ।

हनुकर गप्प सुनिकए मनमे गुदगुदी सेहो भेल आ डर सेहो लागि रहल छल हम हुनकर बैंग उठा विदा भेलौं । टैक्सीमे बैसि कुपण्डोलल एलौं । पुरा बाट हम चुप रहलौं ।

घरमे आएलाक बाद ओ चारु दिस देखऽ लगली हम हुनका बैसऽ कहि स्वयं फ्रेस होबऽ बाथरुममे चलि गेलौं ।

किछु देरक बाद घूमिकए एलौं तँ ओ अनचिन्हार युवती पुरा घरकँ ठिकठाक कऽ देने छल हम मुस्किया कऽ हुनका दिस तकलौं एहिपर ओहो मुस्क्िुया देली ।

हम पुछलियै– किछ खाएब ?

ओ चुप्पि रहली तँ हम कहलियनि आब चुप्पओ रहलासँ काम नहि चलत। एकरबाद हम स्टोपभपर चाह चढ़ा देलियै आ गामसँ माए बटखर्चाके लेल बगिया देने छल तेकरा दूटा प्लेहटमे धऽ हुनको देलियै आ हमहु लेलौं ।

ओ चुप–चाप खाए लगली । एकरा बाद हमरा गप्पस करबाक उत्सुकता

भेल, तँ पुछलियै आब अहाँ सत्यच गप कहुँ अहाँ के छी ?

'हमर नाम प्रियंका अछि आ हम धनुषा जिल्लाँके रहएवाली छी । हमरा घरमे माए बाबुजीक अतिरिक्तह दूटा छोट भाए आ एक बहिन अछि हम जीवनमे किछु करए चाहैत छी, किछ बनए चाहैत छी परंच हमर गामे ई सम्भइव नहि अछि । बाबुजी हमर विआह गामक लगमे परवाहा गाम छैक ओत्तै करा रहल छलाह । तें हम भागि एलौं ।

हम एस.एल.सी. पास कएने केने छी । हम नाम कायम चाहैत छी, जीवनमे संघर्ष करऽ चाहैत छी । तँ हेतु एहि राजधानीमे एलौं अछि ... आब तँ किछु कएलाबकाद घूरिकऽ जाएब ।

बसमे एकदम शान्तह सौम्यम बैसलि ओ युवतीक वाक पटुताके देख हम आश्यर्चमे छलौं ।

हम कहलियनि– ई अहाँ ठिक नहि कएलौं घरक लोक कतेक चिन्तुित हएत ।

होमए दियै । यदि विआह भऽ जाइत तँ हम कतेक चिन्तिकत रहितौं?'

विआहसँ केहन चिन्ताद? अहाँकेँ अपन घर परिवार रहैत ....''

जी नहि, हम असगरे स्वतन्त्रँ रुपसँ किछु करए चाहैत छी ।

की ?

अहाँ चिन्तिनत नहि होउ । हम भोरे चलि जाएब ।

कतए ?

'कतौ... नोकरी ताकए ।'

नइ अहाँ असगरे नहि जाएब हम अहाँके सँगे चलब । आ केटलीमे सँ चाह छानि दुनू गोटे लऽ लेलौं आ भात चढ़ाए देलियैक । चाह पिलाक बाद राति भऽ गेल छलै तँ बजारसँ तरकारी लाबए लेल हम विदा भेलौं ।

भोजनक बाद हम हुनका घरमे छोड़ि अपने वरण्डापर ओछाइन कऽ सूति रहलौं ।

ओछायनपर सुतिकऽ सोचए लगलौं 'मन पसंद युवती सेहो विआह करए लेल नहि भेट रहल छल से भगवान प्रियंकाकेँ हमरा लेल पठा देलैथ । सुडौल, पढ़ललिखल, सुन्दभर कनियाँ हो तँ आओर की चाही हम मनेमन योजनामे उलझि गेलौं आ लागल जेना हम हुनकासँ प्रेम करऽ लागल होइ ।

परात भेने प्रियँका तैयार भऽ कए जाए लगली तँ हम कहलियनि, ' चलु हम अपन एक परिचितसँ भेंट करबै छी सम्भवतः नोकरी भेटि जाएत ।

हमर योजना छल कि हम हुनका एतै रोकि ली आ हुनका विआह करबाक लेल मना ली । हम प्रियंकाकेँ अपन परिचित मानबहादुरसँ भेट करओलियैन। ओ हिनका देख बड़ खुशी भेल । आ प्रियंका सेहो मानबहादुरक बैभवकेँ देखि अकचका लगली । हमर निवेदनपर मानबहादुर अपन कार्यालयमे नोकरी दऽ देलकैन । आब सभ दिन भोरे हमरे सँग निकलैत छली आ राति हमरे घरमे

वितबैत छली । हमरा दुनू गोटेमे एखनो तक दूरी यथावत छल ।

किछु दिन वितलाक बाद हम हुनकासँ हिलमील गेलौं तँ हिम्मीत कऽ हुनका सम्मुलख विआहक प्रस्ताकव रखलियै । ई सुनि ओ अकचका गेली आ किछु नहि बजली ।

सांझखन हम मानवहादुरकेँ कार्यालयमे गेलौं तँ ओ बजली कुपण्डोकल एतसँ दूर पड़ैत छैक तँ हमरा मानबहादुरजी एतै एकटा घर उपलब्ध करा देलनि अछि ।

यदि एकरा अन्यरथा नहि मानी तँ आइसँ हम एतै रहब ।

हम हृदयक शीशा प्रियंकाक कठोर शब्द रुपी पाथरसँ चकनाचुर भऽ गेल। हम बुझि गेल छलौं की मान बहादुरकेँ बैभव आ प्रियंकाक सुन्दरता बीच एक सम्झौरता भऽ गेल छैक । हम घर एलौं बहुत दुःखित छलौं ओहि राति खेवो नहि कएलौं आ भरि राति सोचैत रहलौं जे आब कहियो नहि जाएब हुनका लग करीब एक हप्ता तक हम गेबो नहि कएलौं ।

आठम दिन मोन नहि मानलक तँ हम प्रियंकासँ भेटवाक लेल हुनकर कार्यलय गेलौं । प्रियंका तँ पुरा बदलि गेल छली । जीन्सं आ भेष्टमे ओ एकदम आधुनिक लागि रहल छलि । हुनक अनुहार ताजगी आ आँखिमे सफलताक चमक स्पष्टे देखाइत दैत छल ।

ओ कहली काल्हिक ओ एकटा फिल्म आ निर्मातासँ भेट करए जेती ।

किए ? हम अकचका कऽ पुछलियनि ।

ओ मानबहादुरजीक परिचित फिल्मा निर्माता छथि । ओ हमरा भेटबाक लेल काल्हि समए देने छथि । आब देखब हम किछुए दिनमे सुपरस्टार अभिनेत्री बनि जाएब ।

हम हुनका सम्झाहएबाक प्रयन्त करैत कहलिएनि नहि जाउ बादमे बहुत पछताएब परन्च नहि मानलैथ । हुनकापर तँ सिनेमाक भूत सवार छलनि ।

हम ओतसँ चलि एलौं । समए वितैत गेलैक हमहुँ अपन काममे व्यस्त भऽ गेलौं ।

अचानक करिब २, ३ वर्षक बाद प्रियंका हमरा राजविराजमे भेटली । हम हुनकर मेकअप आ ड्रेस देखि दंग रहि गेलौं । हम अधिकारसँ पुछलियनि, की छै हालचाल? की अहाँ जे चाहैत छलौं से भेट गेल .... ?

अहिपर ओ नितराइत बजली ' भेटीयो गेल आ सम्भावतः नहियो...'

'से कोना ? हम ः पुछलियैन ।

हमरा लग ओ सभ तँ अछि, जे नहि होएबाक चाही । तखन ओ नहि अछि जे होएबाक चाही ।

'हम बुझलौं नहि ? '– हम पुछलियै ।

'अहाँक बात शुरुहेमे मानि लेने रहितौं तँ आइ... आत्मह ग्लाानी भरल स्वरमे कहैत रहैथ की तखने समिप एक मारुती आबि रुकल । ओइमेसँ एक युवक उतरि प्रियंकाके समिप आबिकऽ बाजल– हाय लभली बहुत प्रतीक्षा करैलौं

आइ काल्हिय तँ अहाँ बड़ अनमोल चिज भऽ गेल छी ... तँ हातक हात विका रहल छी ।

प्रियंका एक नजरि हमरा दिश देखैत ओकरा सँग मारुतीमे बैसि गेली आ हम देखैत रहि गलौं.. ओहि चिजकेँ... ओहि लभलीके.... ।



आशीष चमन

मूल नाम- आशीष कुमार मिश्र, पिता-श्री सच्चिदान्द मिश्र अधिवक्ता। जन्मतिथि-7 जनवरी 1973 टीचर्स क्वाटर, जिला गर्ल्स हाइ स्कूल सहर्षा। योग्यता- बी.ए. (प्रतिष्ठा) राजनैतिक कार्य कलाप- प्रारम्भ मे S.F.I के संयुक्त सचिव, पुन: अ.भा.वि.प. के कार्यालय एवं बौद्धिक प्रमुख, विहिपकेँ नगर मन्त्री, पश्चात् राजनीतिसँ मोहभंग। सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधि- सांस्कृतिक चेतना समितिक संस्थापक सचिव आ एहि बैनरसँ प्रायः- दुइ दशक बाद सुपौलमे विद्यापति पर्व समारोहक संचालन, प्रलेस के जिला सचिव, विप्लव फांउडेशन के सचिव आ एहि बैनर के तत्वावधानमे नागार्जुन जयंती, सगर राति दीप जरयकेँ आयोजन। वृति:– कौलिक दबाइ व्यवसायक सफल संचालन किन्तु आपसी कलह के कारण निष्कासन, पुन: जीविका हेतु अनेक जगह छिछियाएब आ पूर्णत: द्ररिद्र बनलाक बाद लघु उद्यमसँ पारिवारिक पोषण। लेखन: 1984 सँ सक्रिय आरंभमे कविता बादमे हिन्दी कहानी लेखन आ परती पलार संवदिया आदिमे प्रकाशित पुन: मैथिलीमे लेखन आ भारती मंडल मिथिला चेतना, घर बाहर, कर्णामृत प्रवासी मैथिल, अंतिका आदि अनेक पत्रिका सभमे प्रकाशित।

पछता रोटी

'की रौ भीम! मोटरसाइकिल सभक बहुत भीड़ देखैत छियैक....''
गजीन्दर बाबूक ओहिठाम करमान लागल लोक सभकेँ देखैत ओ पुछलकैक ....ओहिकाल भोरूक लगभग छओ बजैत छलैक....।
'गजीन्दर बाबू मरि गेलथिन....'। ओँघाएल स्वरेँ भीमा उतारा देलकैक।
ओकर बढ़ैत डेग अकस्तात् रूकि गेलैक आ अनायास मुँहसँ निकललैक-'अँय कखनि....आ की भेल छलनि हुनका?

'की भेलैक? किछुओ नहि, रातिमे केहन बढिया छलथिन, किन्तु अकस्मात्। भीमा पूर्ववते जेकाँ बाजल।

ई कने काल लेल गुम्म पड़ि गेलैक। ओम्हर भीमाकेँ ओहिठामसँ जल्दी हटबाक हलतलबी छलैक मुखाकृतिपर एकरा उद्वेग तकरा ओ दबने छल-, किन्तु ओ पहिने कोना हरितए चमन भैया ठाढ़ छथि अपनासँ दस पनरह बरखक जेठ।

ओकर आतुरताकेँ पारेख करैत ई ओतए ससरि कऽ चलि गेलैक जतए दुइ जन अपनामे बात करैत सिकरेट धुकैत छलैक, ओतए ई सहारेकेँ देखलैक, भीमा मनोयोग पूर्वक भरि रातुक संचित लग्धीकेँ बहार कऽ रहल छलैक, एकरा निवृत्तिक भावकेँ अपन चेहरापर पसारने ।

'ओ स्वाइत!' ओ मोनहि-मोन बाजल आ आगाँ चौबटिया दिशि बढि गेल।

चौबटिया, लग आबल जा रहल छलैक- ओकरा अजय चौधरीक ओहिठाम जयबाक छलैक। अजय चौधरी पानमसाला, सिकरेट सभक फेरिया छल जे साइकिलपर माल लादि गामे-गाम आ हाट-बाजार सभमे बौआइत रहेक, किन्तु किछु लक्ष्मी कृपा आ किछु जन्मजात वाणिक बुद्धि एहि दुनुक संयोगसँ ओ दुइये-तीन बरखमे कमा कऽ टाल लगा देने छलैक....। ओ ओकरे लग जा रहल छल उपेक्षा आ बेकारी भरल जिनगीसँ त्राणण्यबा लेल, किछु राय विचारक हेतु अपन पुरान जान-चिन्हक संचित निधि लऽ कऽ। ओ भरि रातुक संकल्प लऽ कऽ भोरे चलल छल जे प्रात-काले ओकरासँ भेंट भऽ सकैत अछि, भरि दिन तँ ओ पतनुकात धयने रहैत अछि।

ओकर मोनमे विभिन्न प्रकारक विचार उठि-बैसि रहल छलैक। 'गजीन्दर बाबूक मृत्यु....,तीनटा लड़का दुइटा तँ बड़ड कमबैत छैक मुदा जेठका कने गड़बड़ा गेलैक- तकरा सम्हारक लेल ओ दोकान खोलि देलथिन-ओना दोकान पहिनो दुइ-दुइ बेर खोलल गेल छलैक मुदा तकरा ओ खा पका नेने छलैक.... तँ एहिबेर ओ-स्वयं बेसीकाल बैसथि....एकटा आशा तीन फूके चानीक-ओवर बेटा माने अपन पोताकेँ ओ मोट डोनेशन दऽ कऽ राँचीक इस्कूलमे भर्ती करौलनि-बेटा नहि तँ की भेलैक पोते सुतरि जाइक-एकरा मृग-मरीचिका....।

ओ आब चौबतिया लग आबि गेल छलैक भोरूका पहरमे चाहक दोकानपर भीड़ कने बेशीये रहैत छैक ओ सोझे आगाँ बढि गेलैक आ थोड़े दूरक बाद एकरा गली होइत अजय चौघरीक घर लग आबि गेलैक....।

'की यौ चाचा जी! अजय बाबू उठलाह....?' अपन स्वरमे चीनीक चाशनी सन घोरैत ओकर शिक्षक पितासँ पुछलकैक....।

'अबह आबह! अजय लैट्रिनमे छैक....। ई कहि गृहपति ओहिठाम पहिनेसँ बैसल आन लोक सभसँ गप्प करए लगलाह....।

एकरा पेटमे खलबली छलैक- 'गजीन्दर बाबूक'

घरसँ ई घर आधा माइलपर छैक आ एतेक भोरमे ई घटना एकरा सभकेँ तँ नहियेटा बूझल होयतैक....। ओ चर्चा करए चाहैत छल गजीन्दर बाबूक असामयिक निधन करि। हुनक शिक्षक संघक विषएमे, हुनक व्यक्ति व ओ कृतित्वक चर्चा कऽ ओ स्वयं ओहि दरबज्जापर बैसल समस्त लोकक केन्द्र-बिन्दु बनऽ चाहैत छल....लोक सभकेँ चौकाएब अचंभित करए चाहैत छल- 'अँय कखनि मुइलाह गजीन्दर बाबू? आ हा-हा-केहन स्वस्थ लोक रहथि ....भगवानक लीला अपरम्पारक कहू चमनजी अहाँ कखनि बुझलहु आदि आदि....।

ओ, बाजब शुरू कयनहि छल कि दीर्घ-श्वास छोड़ैत गृहपति बाजि

उठलाह-' की करबहक ओहिना होइत छैक....बड़ड नीक लोक छलाह....शिक्षक समुदायक बड़ड पैघ हितैषी....,हुनक देहावसानसँ हम सभ लोक बड़ड मर्माहत छी....।

'के मुइलाह? 'उपस्थित लोक-सभमे सँ एक गोटे पुछलथि।

'अरे वैह मास्टरसाहेब ने रातिए....।' दोसर गोटे यन्त्रवतद्य सन बाजल....।

अच्छा तँ वैह ने....।'

'अच्छा तँ ई बात एकरा सभसँ हमरा पहिने बुझल छलैक आ एकटा नव गप्प ई जे गजीन्दर बाबू भोरमे नहि अपितु रातिए मुइलाह....ई खबरि एकरा सभक लेल आब बासी भऽ गेलैक अछि....।''ओ सोचए लागल....। ता धरि अजय आबि गेल छलैक....।

ओतएसँ घुमलाक बाद ओ पुन-चौबटिया लग ठाढ़ भऽ गेलैक....। चाहक दोकान लग आब भीड़ बेसी भऽ गेल छलैक। एकरा नेता सन लोक-चाहक मफाएल गिलास धऽ कऽ भाषण झाड़ि रहल छलैक मुदा महगीक छैक आ केन्द्र सरकारक पतनकेँ भविष्यवाणी सेहो-आगाँ, के सरकार बनाओल तकरापर विचार-विमर्श चलि रहल छल।

मोहल्लाक एकरा पैघ व्यक्तिक मृत्युपर कोनो चर्चा नहि भऽ रहल छलैक ओ कनेकाल ठाढ़ रहल आ फेर घुमिते चाहैत छल की लतीफ भेटलाह- 'की यौं पंडीजी! अहाँक पीसा छथि, की गाम गेलाह'?

लतीफ एहि ग्ामक पुरान काश्तकार अछि आ पीसासँ मोकदमाबाजी सेहो करैत अछि....। उत्तर देलाक बाद ओ जहाँ गजीन्दर बाबूक चर्चा शुरू कयलक तँ लतीफ बाजि उठल-'अल्ला हो अल्ला'! जखनि सुनलियेक तखनिसँ भरि राति नीन्दे नहि भेलैक....।

ई सुनितहि ओ आगाँ बढ़ि गेल ओ अपन विचारक कड़ीकेँ सोझराबए चाहिते छल कि 'बड़े' भेट गेलैक। बड़े माने अनिल झाक माझिल बेटा-ब्रेन पारालैसिसक पुरान शिकार, आब कने सुधारक संकेत देखैत छियैक ओकरामे....।

अनिल भैया ओकरा लेल चौराहापर ''सोना जेनरल स्टोर'' खोलि देने छथि आ बेटाक बदलामे स्वयं बेसीकाल गद्दीपर बैसैत छथि....। ओ मजाकमे बेसीखन बजैत रहैत अछि-'की यौ भाय साहेब! खोललहँ बड़ेकेँ लेल आ बैसेत छी अपने....।

अनिल बाबू बिझुँसैत उत्तर दैत रहैत छथि- 'की करबैक ओहिना होइत छैक चिल्हकाक लाथे चिल्हकौर सेहो....।'

बड़े राति कऽ दोकानेमे सुतैत अछि। ओ बड़ेकेँ सभ दिन जेकाँ एखनुहुँ सैल्युर ठोकैत अछि....। ओ ओकर स्वाभाविक मित्र अछि भातिज नहि समान धर्मा....।

ओ कहि उठैत 'अछि- 'चचा! गजीन्दर बाबू, आ आँगुरकेँ आडर केर मुद्रामे

उठा दैत अछि।

ओफ्फ! तँ ईहो बूझि गेल अछि?' ओ पुन: घर दिशि विदा भऽ जाइत अछि।

गजीन्दर बाबूक घरसँ एकर घर कने बेसी दूरपर छैक बीचमे जनशून्यता छैक आ बसबिटारि तथा कलमबाग सेहो छैक....।

'निश्चित रूपसँ हुनक मृत्युक खबरि घरपर नहि गेल होयताह' ओ झटकि कऽ विदा होइत अछि कत्तहु नहि रूकबाक संकल्प लऽ कऽ मुदा ओकर मोनपर विचार पुन-हावी भऽ रहल छैक-'बड़े पारालौसिसक शिकार अबोध रहि गेल मस्तिष्कबला एकरा जवान मानव देह धारी, गजीन्दर बाबूक जेठ नशेरी बालक, दुनूक पिता करि अपन-अपन ओहि अक्षम सन्तान लेल भगीरथ श्रम....।

ओकरा लगलैक जे गजीन्दर बाबूक नशेरी बालक आ बड़े चलि रहल अछि आ जाइत लटपटा कऽ खसि पड़ैत अछि दुनू बूढ़ पिता अपन-अपन धोती सम्हारैत दौगैत छथि आ भीजल स्वरसँ पूछि रहल छथि- 'बाज' चोट तँ नहि लगलौ?'

ओ आँखि मुनने कने बिलमि जाइत अछि। फेर ओ देखैत अछि- जे 'पुन' ओ दुनू जा रहल अछि आब दुनूक घरपर एक-दोसराक मूडी लागि गेलैक अछि फेर ओहि घरपर सँ मूडी फिर भऽ गेलैक अछि।' सभटा असंगत लेतरल चित्र सभ, चलचित्र जेकाँ एकर मानस पटलपर आबऽ जाऽ लगलैक....।

एक दिशि गजीन्दर बाबू अनिल भैया आ दुनूक संतान, एकटा ई आ एकटा एकर बाप....? सर्वत्र, स्वरचित, कपोल कल्पित एकर अक्षमताक ढ़ोलहा पीटैत....।

ओकर मोन तिवूत भऽ गेलैक, भेलैक जे 'वैह कियैक ने अनिल झा आ गजीन्दर बाबूक बेटा भऽ कऽ जनमलैक....बस अक्षमे सही....।

ओ एक बेर मूड़ी झमकारलक आ पुनः घर दिशि बिदा भऽ गेल-विचार पुन: अपन तारतम्य बैसाबए लगलैक- 'ओ गजीन्दर बाबूक मृत्युक खबरि सभसँ पहिने बाँटि, लोककेँ अचांभित करैत पहिने पत्नीकेँ कहतैक....घरबाली एकरासँ सोझ मुँहे कहियो नहि बजैत छैक...,जेना झुरापित्ती सन उठल रहैत छैक....।

पत्नीकेँ संमाद देतैक ओ अपन प्रकृतिक अनुरूपेँ लहोछिकेँ पुछतैक- 'के गजीन्दर बाबू'?

तकरा अनसून करैत ओ बाजत- 'अरे! वैह राजाक दादा! वैह राजा जे अपन सनिक संग पढ़ैत छलैक आ आब राँचीमे एडमीशन करौलक अछि....।'

पत्नी आँखि गोल करैत कहतीह- 'अच्छा तँ ओ....? । ओ तकर बाद बुढिया माए अर्थात् दादी लग जाएत, बूढ़ी एकरा आइ-काल्हि मछी दैत छथि....। अरे कियैक नहि, जखनि घरक मुखिया सभ नहि छलथिन तँ वएह ने ओहि राति बुढ़िकेँ दर्द भेलापर अड़ोस-पड़ोस एक करनैत दवाइ विरोक व्यवस्था कएने छलैक....। बूढ़ी सिनेह देखबैत बजने छलथिन- 'तँ हौ बच्चा! तोँ नहि रहितह तँ हमर प्राण नहि बचितह....।

पहिल बेर ओकरा अपन व्यक्ति व सम्पूर्ण रूपेँ सार्थक बुझना गेलैक....। जे-सें ओ बूढ़ी लग जाइत आ एहि आकस्मिक मृत्युक ओकरा हाल-चाल कहत....। तखनि दुइ-चारि आँगनमे हल्ला मचि जयतैक- 'कखनि मुइलाह आ हा-हा....ओ....हो....तो कोना बुझलहक हौ चमन....।

तखनि ओ फ़डिछा फ़डिछा कऽ आद्योपान्त सभ गप्प कहत आ लोक सभ ओकरा दिशि मुँह बाबि ताकत...सर्वत्त चमन, क्षणभंगुरे सही मुदा सर्वव्यापी चमन....।

ई सोचैत ओ आँगन दिशि विदा भेल। ड़योढ़ी लग पत्नी छिटटा छाउर काढ़ने जाइत छलीह, ओ डुर्लास कऽ बाजल- 'अइ सुनैत छी।'

पत्नी छाउरक छिट्टा उनटबैत लहोछि कऽ बजलीह-'इह कमैनी ने धमैनी आ टहंकार केहन....एकोटा जारनि काठी ने....छओड़ाकए इस्कूलक भऽ रहल छैक ऊपरसँ छओँड़ीक नंगो-चंगो....आइ ओकरा हम खून कऽ देबैक। 'ई कहि ओ द्रुतगति आँगन गेलि आ बेटीकेँ ओध-बाध उठाबऽ लागलि.... छओँड़ी चीत्कार कऽ उठलि....।

एकर भीतरमे आक्रोश बिरंड़ो तांडव करए लगलैक तकरा दबौने ओ दादी गेलैक, आ बाजल 'बुढिया माँ गइ। गजीन्दर बाबू....।'

बूढ़ी बातकेँ बिच्चन्हसँ कटैत बजलीह-'हम तँ रातिये बूझि गेल हूँ....आह केहन भद्र लोक....एकूटा हम छी....हमर बही जमराज लगसँ हरा गेल अछि, आं आगाँक जनमल लोक सभ उठल जा रहल अछि।'

'अच्छा तँ ईओ बुढिया बुझि छल....तखनि हमही देरीसँ बुझलहुँ....सत्ते हम पिछड़ल छी-पत्नी ठीके कहैत अछि जे अहाँ पछता रोटी खएने छी....।'

ओ स्वयंकेँ धिक्कारऽ लागल ओकर समस्त उत्साह आब तिरोहित भऽ गेलैक ओ अपरतीब भऽ गेलैक। तथापि बातकेँ बढ़बैत बाजल-मर्र, ओ की कोनो कम उमेर के छलथिन सत्तरिसँ कदापि कम्म नहि।

बूढ़ी हाथ नचबैत बजलीहँ दुर बतहा नहितन । सत्तरि के तँ इन्जीरा आ मंदाग्नि सेहो नहि अछि।

ओ अपन समस्त कुण्ठा आ हतबुद्धिकेँ बूढ़ीपर कुतारैत मुँह दुसलक- 'हुँह! इन्जीरार आ मन्दाग्नि कईक बेर कहल हूँ ले इन्दिरा आ मंदाकिनी बाजू....।

बूदी प्रत्योक्रमण करैत बजलीह-'रौ बाउ! हम नहियों पढ़लहुँ तथापि ओहि कोशीक विकराल सभटा मे छओ गोंट बच्चा सभकेँ पढ़ा-लिखा मनुक्ख बनेलहुँ जगह-जमीन आ मकान बनेलहुँ केओ धिया-पुता मुँह नहि दुसैत अछि आ एकटा काबिल तोँ छँ बड़ड बुधियार छँ तँ ने ई हालाति छैक जे बापोसँ नहि पटैत छैक अछि आदि कहैत बूढि घर-चलि गेलीह।

ओ हतबुद्धि भेल जड़वत ठाढ़ छल ओकर समस्त उत्साह कखनि ने बिला गेल छलैक आ आँखि नोरा गेलैक....।

कनेक्शन कालक बाद पत्नी आचलि आ गौरसँ मुँह देखैत बाजलि- ‘अरे आठ बजैत अछि- किछु जलखै खा लितहुँ फेर तँ भरि दिन अहाँकँ की करबैक काजक जोगाड़ आ टाका-पैसा कोनो अपना हाथमे छैक की.... जहिया जे हेबाक हैतैक से तँ हेबे ने करतैक....।

ओ अपन हाथक घड़ी देखलक आ बाजल- ‘सते आइयो फेर बहु अबेर भऽ गेलैक....।



आशीष कुमार चौधरी

पिताक नाम: श्री नवल किशोर चौधरी, पता: गाम चरैया, जिला अररिया, बिहार।

लघु कथा

जीत गयो मोर कान्हा

बड़ड पुरान एकटा सच कथा अछि। एकटा मंगलवार गामक लड़का छलै जकर नाम विद्यानंद छलै। ओकर बिआह नहि होअए छल। किऐक तँ उ आंखिसँ आन्हर छलै। बड़ड दिनक बाद एकटा धीमा गामक लड़कीसँ बिआह तँइ भेल आ बड़ड पैसा लऽ कए ओकर बिआह धीमा गाममे तँइ भेल। किएक तँ उ लड़का हाई स्कूलमे मास्टर सेहो छलै। अइ द्वारे ओकरा बड़ड रास पैसा दऽ कए लड़कीक बाप बिआह तँइ केलक। बड़ड रास बरियाती लऽ कए लड़काक बाप पहुंचल लड़की बलाक ओतए। ओतए विधि विधानसँ ओकर दुनूक बिआह भेल रातिमे सभ बरियातीगण खेनाइ खऽ कए सभ सुतेले चलि गेल। भोरमे बिग्जी कऽ कए सभक इच्छा भेल लड़की देखैक। किऐक तँ ब्राह्मण सभक नियम छलै लड़कीक सुहाग देबेक तखन जाकै सभ लड़कीक देखैत छलै तखन ओकरा बड़ड रास समान आ पैसा देल जाए छलै। लड़काक बाप रातिमे बिआहक बाद लड़कीक देखैत कहलक रहै **"जीत गयौ मोर कान्हा"** तखन जा कए लड़कीक बाप कहलक **"भोर भयो तब जानो"** किऐक तँ लड़की जे छलै उ एकटा पैरसँ लाचार छलै। तँ जा कए लड़कीक बाप ढ़ेर रास टका पैसा दऽ कए अपन लड़कीक बिआह मास्टर लड़कासँ बिआह करबाक बड़ड खुश छलै। ते उ कहलक जे भोर भयो तब जानो। भोर होबेपर जखन लड़काक बाप कहलक कनेकटा लड़कीक खड़ा करू हम लड़कीक लम्बाई देखब तँ लड़की जब खड़ा भेल तँ लड़काक बापकेँ लागल जे हम हारि गेलो आ सभ बरियाती गण वापस अपन गाम मगंलवार चलि गेल। लेकिन ई एकटा कहानी बनि गेल। उ दुनू लड़का आ लड़की बड़ड खुश रहै लागल किऐक तँ उ मास्टर सेहाब छलै। अखन उ सुमरित हाई स्कूलमे हिन्दीक मास्टर छलै। आ बड़ड नीक मास्टर अछि। किएक तँ हमहुं उ मास्टरसँ पढ़ने छलौं।



दुर्गानन्द मंडल

सहायक शिक्षक, उ. वि. झिटकी-बनगावाँ, मधुबनी (बिहार)।

कथा: बकलेल

गर्मीक समए, जेठक दुपहरिया, प्रचण्ड रौद, बिजली लापत्ता। ऐहन बुझना जाइत छल, जेना दाता-दीनानाथ आइ मनुखक परीक्षा लेमए चाहैत छथि। कतौसँ वसातक कोनो आश नहि। नेना-भुटका सभ एमहर भैंए तँ ओम्हर भैंह, एम्हर कँ तँ ओम्हर कों करैत छल। बुझना जाइत छल जेना मखना तेलीक पहरा होअए। माल-जाल गर्मीसँ परेशान भऽ एकहक हाथ जीभ बवैत छल। लेडू आ परडुक तँ तेरहो करम भऽ गेल छल। कोनो तरहें चंडलवा रौद आ दुपहरिया झुकल, मन कनेक थिर भेल मुदा राति खन उएह हाल, जतवे गर्मीसँ परेशानी ततवेक मच्छड़ आ उड़ीसक उपद्रव। ओकरा सभमे एकता ततेक जँ हाँ-हाँ नहि करियोक तँ सोझे उठालेत आ नेने-नेने सकरी चीनी मील लग रखि आओत। कतहुँ चैन नहि...।

भोजनोपरांत देह-हाथ सोझ करवाक लेल विछाउनपर गेलौं, मुदा चैन नहि। कछमछ-कछमछ कऽ रहल छलौं। कती राति गुजारलाक वाद कने जाकि आँखि लागल, आकि ध्यान किछु आर-आर विषए दिस चल गेल। आँखि यधपि बन्न मुदा चेतनामे अनेकानेक तरहक बात धुमए लगैत अछि। पड़ल छी विछौनपर मुदा मन जीनगीक चैबट्टीपर ठाढ़ वर्तमानक अधरपर भूतसँ भविष्यक, भविष्यकँ विषएमे सोचए लगैत अछि।

सरकारी सेवामे रहवाक करणें कमे-काल गाम जेवाक मौका लगैत अछि। पावनियो तिहार जतए छी ततए करए पड़ैत अछि। तखनो अस्सी बर्खक बुढ़ि माए आ करीब सए वर्खक बुढ़ बावूजीकँ देखए लेल गाम जरुरे चल जाइ छी। टोला-पड़ोसाक लोक सभकँ भेंट कऽ सबहक कुशल छेम जानि अपना कऽ धन्य बुझैत छी।

एहि प्रकारे विभिन्न प्रकारक लोकक चारित्रिक विश्लेषण करबाक सेहो मौका लागि जाइत अछि। संभवतः ऐहने स्थितिमे मोन पड़ैत छथि एकटा सज्जन सरोज बावू। ओ ऐहेन व्यक्ति जे कोनो सुरतमे अपना कऽ किनकोसँ कम मानए

लेल तैयार नहि होइत छथि।

माए-बापक एक मात्र बेटा नान्हिएटा सँ पढ़ै-लिखैमे तेजगर मुदा ततवेक थेथरलोजीमे सेहो निपुण। विषए कोनो किएक नहि हो मुदा एक चैखड़ि थेथरलोजी जरुर करताह। जेना की ओ सर्वज्ञ होथि। तँ हुनकर किछु संगी-साथी हुनका "मिस्टर नो ऑल" सेहो कहैत छनि। आर किछु लोक सभ बकलेल सेहो कहथिन्ह।

परुकेँ साल अगहन मासमे हुनकर विआह झंझारपुरक बगलहि महरैल गाममे सम्पनन भेल।

विआहक मादे एकोटा सर-कुटुम नहि छुटथि एहि लेल ओ एकटा बही अलगसँ बना आ क्रमवद्ध कऽ सभकेँ नत-लिऔन आ हकार पठाएव नहि विसरलाह। विआहोत्सवमे सभ उपस्थित भऽ बरियाती गेलाह। जाहिसँ एक बात स्पष्ट भऽ गेल जे लड़का कोनो नीके समाजसँ जुड़ल छथि। गौँवा-धरुआ आति प्रसन्न भऽ बढ़ि-चढ़ि कऽ बरियातीक स्वागत-बात कएलैन्हि। ममिऔत-पिसिऔत सभ एहिसँ प्रसन्न जे बर आ कनियाँ दुनूक जोड़ी सीता-रामक जोड़ी लगैत अछि। भगवानक असीम कृपासँ अनुगृहित भऽ नीके कथा सम्पन्न भेल।

असली कथा आव एहि ठामसँ शुरु होइत अछि। विआहोपरांत कनियाँ विदागरी भऽ सासुर ऐलीह। दाइ-माइ लोकनि अरछि-परछि कनियाँ घर केलैन्हि। आ अइहव-सुहव होथू अशीरवाद दैत अपन-अपन घर चल गेलीह।

कनियाँ तँ कनिए दिनमे अपन सासु-ननदिक दिल जीत लेलैन्हि। बर-कनियाँ समर्थ रहवाक कारणें विदागरी चैठारी दिन नहि भऽ साओन-भादोमे भेल। पहिल साओन-भादो नवकी कनियाँ नैहरमे मनवैत छथि, एहि तरहक मिथिलाक आ मैथिलक एकटा मान्यता छैक।

नीक दिन तका कनियाँ विदागरी भऽ सासुरसँ नैहर चल गेलीह। आव तँ भेल पहपटि। सरोज बावू जे एते दिन सदिखन घरेमे धुसल रहथि आ सदिखन कनियाँए कऽ निंधारैत आ गवैत छलाह ई गीत "मन होइए अहाँकेँ हम देखते रही, किछु बाजी अहाँ हम सुनिते रही, मन होइए अहाँकेँ........।

आठ मास कोना वितल से नहि बुझि सकलाह आ कनियाँ आठे मासक फला-फलक रुपमे नौ मासक सनेश लऽ नैहर चल गलीह। से तँ, एको दिन, एको पहर, वितव सरोज बावूक लेल पहाड़ सन बुझना जाइत छलैन्हि। कोनो वातक सुधए-बुधिए नहि रहैन्हि। सदिखन एकदम बकलेल जैँका करथि। एहन सन वुझना जाइत छलैन्हि जे शरीर गाममे होइन्हि आ आत्मा सासुरमे। भोजनक प्रति अरुची जागए लगलैन्हि। समएसँ स्नान-भोजन करब सेहो सुधि-बुधि नहि। लोक सभ अपनेमे बाजथि जे सरोज बावू ऐना किएक करैत छथि- एकदम बकलेल जेकाँ।

जहिना अपना गाम बेरमामे सरोज बावू तहिना अपना नैहर महरैलमे सरोजनी दुनू व्यक्ति एक दोसराक विरहाग्निमे जरैत। दिनो-दिन मुरझाइल जाइत छलाह। स्वाभाविकेँ थिक। किएक तँ बड़-कनियाँ समर्थ रहवाक कारणे जीवनक

अपूर्व आनन्द जे उठौने रहथि, एकटा पूर्ण पति-पत्नीक रुपमे।

एक-एक दिन पहाड़ भेल चल जाइत छलैन्हि। नहि तँ ऐम्हरे आँखिमे निन्न आ ने ओम्हरे एको मिन्टक चैन। माए-बापक डरे नहि तँ कनियाँ करैन्हि आ ने बावूजीक डरे सरोज सासुर जेवाक साहस कऽ पबथि। किएक तँ एखनो कतउ-कतउ ऐहन प्रथा छे जे विना दिन-दूरागमनक बर-सासूर नहि जाइत छथि। तँ सरोज बावूक डेग सासुर जेवाक लेल नहि उठैन्हि।

समए बीतेत देरी नहि लगैत छैक देखैत-देखैत चैठ-चन्द्र पावनि आएल....... चल गेल। जीतीआ बीतल आवि गेल आषीण मास.... सगरो दुर्गापूजाक तैयारी शुरु भऽ गेल। ओम्हर सरोजनीक नैहरमे जोड़ा करिआ छागर बलि-प्रदानक लेल राखल छल। जकरा ओ लोकनि खुब जतनसँ दाना-पानि खुआवथि-पिआवैथि। देखते-देखते दुनू छागर, सवाइयासँ डोढ़ा भऽ गेल। जँ जँ दूर्गापूजा लग आएल जाइत, सरोज बावू आ सरोजनीक हृदयक धड़कन हृदयागंम हेवाक लेल मचलए लगलनि। देखते-देखते कलश स्थापन भेल। पहिल पूजा बीतल दोसर बीतल आवि गेल पंचमी। मुदा एखन धरि सासुरसँ सरोज बावूक लेल कोनो खोज-खवरि नहि कएल गेल!

एकदिन माए पुछलथिन्ह- ''बौआ, कनिआक खोज खवरि नहि केलहक? कोनो फोनो-तौनो नहि अवै छह? बेचारे की बजताह अपन हारल आ वहूक मारल क्यो की बजै छै? हारि-थाकि पंचमीराति फोन लगौलन्हि। घंटी भेल, फोन उठौलथिन्ह हुनकर शारि-कमलनी, ओम्हरसँ अवाज अवैत अछि- ''हेलो.... हम महरैलसँ वजै छी?

''हम छी सरोज बेरमासँ। कनी...... दीदी.......कैँ फोन .....।

कमलनी माँ दिस तकैत बाजि उठैत अछि- ''माए गे माए जीजा जीकैँ फौन छिए। एम्हरसँ हेलौ-हेलौ होइत रहैत अछि। कमलनी फोन लऽ कऽ दैत छैक अपन दीदी सरोजनीकैँ।

सरोजनी फोन लइत- ''परनाम करै छी। अहाँ नीके छी की नै? माँ बावूजी कोना छथि? अपना शरीरपर ध्यान दैत छी की नै? मन लगैए की ने? मेला देखए कहिआ ऐवै? कमलनी आ अजय, विजय अहाँक विषएमे पुछैत रहैए। दीदी गै दीदी, जीजा जी कहिया ऐतौ?''

सरोज बावूक जवाव छल एको रत्ती मन नहि लगैत अछि। संभवतः दूर्गापूजामे नहि आवि सकब। धिया-पूताकैँ मेला देखक लेल दस-दसटा टाका दऽ देवई। तामसे टीक ठाढ़ केने फोन काटि दैत छथि।

सरोज बावूक लेल असमंजसक स्थिति रहनि, जे जकरा घरमे जोड़ा छागर बलि प्रदान हेतै, से एखन धरि एको बेर अएवाक लेल नहि कहलैन्हि। ऐहेन कोन सासुर कोन सासु? आ ससुर, केहेन सारि आ शरहोजि। तामसे मन अधोड़ आ टीक ठाढ़। की करी आ की नहि करी? ई द्वन्द्वात्मक स्थिति बनल रहैन्हि। किछु नहि फुरैन्हि। मुदा अष्टमी अवैत-अवैत- ये दिल है कि मानता नहीं

ये वेकरारी क्यों हो रही है,

ये जानता नहीं....। अपना कऽ नहि रोकि सकलाह। आ चलि गेला अपन सासुर महरैल। भगवती दर्शन कऽ जहाँ की पानक दोकानपर जाए छथि, पान खेवाक लेल, आकि मेला देखक लेल आएल सारि-शरहोजिक नजरि हुनकापर पड़ैत अछि आ ओ सभ पकड़ि लैत अछि हिनकर गट्टा। जीजा जी, जीजा जी अहाँकेँ गामपर चलए पड़त। दीदीयो कहने छलि, सप्पत दऽ कऽ। मुदा सासु ससुरक आग्रह नहि तेँ एखनो धरि हिनक टीक ठाढ़े।

अन्ततः थाकि-हारि एक किलो मधुर लऽ सारि-शरहोजिक संग चललाह सरोज बावू सासुर। पहिल-पहिल बेर सासुर गेल छलाह तेँ स्वागत बातमे कोनो कमी नहि रहल। चाह-पान बढ़ियासँ भेल। मुदा खेवा काल ओ पसारलैन्हि बड़का नाटक, जे हम नहि खाएब। हम खाऽ आएल छी, भुख नहि अछि। सासु आग्रह केलथिन कोनो असर नहि, ससुर हाथ पकड़लथिन्ह, कोनो फरक नहि, बड़का सार सेहो खुशामद् केलथिन्ह मुदा कोनो असर नहि। एकहि ठाम जे हम खा कऽ आएल छी, भूख नहि अछि। आ ओ भोजन नहिए केलैन्हि।

ओम्हर दुनू छागर जे बनल ओकर सुगन्धसँ टोला-पड़ोसा गम-गम करैत। टोलाक निमंत्रित सज्जन सभ आबि माउस-भात अर्थात छागर रुपी प्रसाद पावथि आ ओकर स्वादक सविस्तार चर्चा करथि। ऐह छागर जे जुआएल छल, चर्वी केहेन तरहथ्थी सन छलै आ प्रसाद बनल कतेक सुन्दर अछि! वाह मन तँ भीतरसँ प्रसन्न भऽ गेल, चर्चा करैत बाँका सीक्कीसँ खैरका करैत कुकुर कऽ पान खा ओ लोकनि तृप्तिक ढेकार लैत चल जाइ गेला।

एम्हर सरोज बावूक पेटमे बिलाड़ि कुदए लगल। ओत भुखे लहालोट। राति खसल जाए, बहरवैआक बाद घरवैयो सभ खा कऽ सुतए गेलाह। मुदा किछु लिऔनवाली सभ एखनो जगले, ओ लोकनि पाँछा काल कऽ भोजन करथि, फैलसँ पलथा मारि माउस आ भात, खाथि आ ओहि छागरक माउसक चर्चा करथि। आग्रह अलग जे दीदी कलेजी दू पीस लिअ। हे यै देवहीटोल वाली हे ई चुस्ता लिअ। हे यै दाइ, हे, ई हड्डीबला दूटा पीस लिअ। आग्रहपर आग्रह। आ ओ लोकनि बड़ी काल धरि गप्प-सप्प करति, भोजन करए गेली।

एम्हर सरोज बावू जठराग्नि आओर तेज भेल चल जा रहल छल। आव होएत छलैन्हि जे क्यो आवि आग्रह करितथि तँ भरि पेट माउस-भात खइतौं। मुदा से तँ आव सभ क्यो सुतए लेल चल गेल छल। धियो-पूता माउस-भात खा फोफ कटैत छल। आव तँ हिनका किदुन- "जे अपने करनी गै मुसहरनीक परि भऽ गेल छल। थाकि हारि किछु कालक वाद हरलैन्हि ने फूरलैन्हि सरोज विदाह भेलाह भनसा घर दिस। आ अपनहिसँ मउस-भात भरि थारी निकालि आ चुपे-चाप भोकसए लगलाह। किनको एहि बातक पत्तो नहि। जागल जे सभ रहथि से सभ हिनका खोजए लागल जे पाहुन कतए, पाहून कतए। आ पाहून तँ भनसा घरकेँ केवाड़ तर नुका कऽ गुप-गुप माउस-भात दऽ रहल छथिन्ह। तात गणेश जीक वाहन एहि कोठीसँ ओहि कोठी जा कि छरपल आ कि कोठीपर राखल

खापड़ि पाहूनक कपारपर खसल। अवाज सुनतहि लोक सभ ओहि घर दिस दोगल। देखलक जे पाहून तँ केवाड़क दोगमे नुका कऽ माउस-भात भोकसि रहल छथि। परल बड़का पिहकारी, शारि-शरहोजि मारलक ताली खुब जोरसँ शोर-गुल सुनि सुतलहो लोक सभ जागि गेल। ताली आ पिहकारी पड़ि रहल अछि। पाहून तँ लाजे कठौत भऽ गेलाह।

रति जखन सुतए घर गेलाह तँ कनियाँक कटू व्यंग वाणक वर्षा होमए लागल। पाहूनक तँ मने शांत। किछु नहि फूरैन। सोचलाह जे अन्हरोखे गाम चल जाएव। विदाहो भैलाह, मुदा अन्हार वेशी रहवाक कारणे कुकुर सभ झाॅउ-झाॅउ करए लगल। लोक सभ जागि गेल देखलक जे आँगा-आँगा पाहून आ पाछाँ-पाछाँ कुकुर हिनका खिहारने जाइत अछि। लोक सभ दोड़र महरैलिक हाटपर आवि हिनका पकड़लक। धुरि जएवाक आग्रह कएलक। मुदा हिनकर मन तँ तामसे अधोड़ छल। किनको वातक मोजर नहि दऽ, हाक दैत-दैत धोती पकड़लक से हुनकर ढेका खुजि गेल, धरफरा खसलाह, मुदा ओ तइयो नहि रुकि लटपटाइत धोती खोलि फेकेत गारि दैत परात होइत-होइत अपन घर पहुँचलाह।

कहू तँ ऐतेक पढ़ल-लिखल लोकक ई काज कोनो वकलेले जेकाँ ने भेलैन्हि। सरिपों जँ अधलाह नहि लागए तँ हुनका बकलेले ने कहवैन्हि।



कपिलेश्वर राउत

गाम-बेरमा, वाया-तमुरिया, जिला-मधुबनी, बिहार।

छूआ-छूत

दूर्गापूजाक समए रहए। सभ अपन-अपन उमंगमे मस्त। सभ कियो नव-नव परिधानमे सजल। कियो पूजामे मस्त तँ क्यो नाच देखएमे मस्त, कियो दारु पीवैमे मस्त। स्टेजक आगाँमे लग्धी-विरती कऽ देखएमे मस्त, कियो कुमारि भोजन करएवामे व्यस्त। क्यो ब्राह्मण भोजनमे मस्त। एक-एकटा कुमारि आ ब्राह्मण पचँ-पँच गोटेकेँ नोत खाइले तैयार छल। तखनहि शंभू मंडल लड्डू लऽ कऽ भगवतीकेँ चढ़ैवाक लेल गेल। ओकरा मंदिरक भीतर जेवासँ पंडितजी रोकैत बजलाह- ''तु सोलकन सभ भगवतीकेँ अपने हाथे ने लड्डु चढ़ा सकै छै ने प्रणाम कऽ सकै छै। एहि बातपर थोड़े काल हल्ला-गुल्ला सेहो भेल। अंतमे फैसला भेल जे पूजेगरी आ पुरोहित छोरि कऽ क्यो भीतर नहि जा सकैत अछि। चाहे ओ कोनो जातिक रहए।

जखन चौकपर एलौं तँ एकटा दोसरे नाटक पसरल छल। एकटा डोम चाहक दोकानपर बेंचपर वैसि कऽ चाह पीवाक लेल तैयार छल दोकानदार रोकि रहल छल। अन्तमे बलजोरी ओ बेंचपर बैसि गेल। आ ओ डोम दोकानदारसँ सवाल पूछलक। पहिल सवाल छल- ''हम हिन्दु छी कि नै छी। दोसर सवाल छल जे जहन सभ जाइतक अहाँ आंइठ धोइत छी तँ हमर आंइठ किऐक नहि धोअव। तेसर सवाल छल जे एक तँ अहाँ बावाजी छी कंठी बन्हनै छी तहन अहाँ सबहक आंइठ धोइत छी से धोनाइ छोरि दिऔ आ से नहि तँ बावाजी जी बाला आडम्बर छोरि दिऔ, प्रश्न विचारनीय छल हम सोचमे परि गेलौं।



राजदेव मंडल

ग्राम-मुसहरनियाँ, पो.- रतनसारा (निर्मली), जिला- मधुबनी (बिहार)। शिक्षा- एम.ए.द्वय, एल एल बी.,पता- ग्राम-मषहूरनियाँ, रतनसारा(निर्मली)। प्रकाशित कृति- हिन्दी ,नाम-राजदेव प्रियंकर,उपन्यास- जिन्दगी और नाव,पिजरें के पंछी,दरका हुआ दरपन। अम्बरा (मैथिली पद्य संग्रह)- शीघ्र प्रकाश्य।

रखबार

धानसँ भरल खेतमे गाछ सुतल अछि। पछिला साल तेहेन भयंकर बिहाड़ि आएल जे एकहि थप्परमे गाछकेँ सुता देलक। तहियासँ ई सुतलो अछि आ जागलो। एकर पाँचटा डारि पहरुदार जेँका ठाढ़ अछि आर टकटकी लागौने सौंसे बाधक पसरल गम्हरैल आ पाकल धान दिस ताकि रहल अछि।

"खबरिदार, कियो भरल चासमे हाथ लगेबेँ तँ भारी डण्ड जरिमाना लगतउ।"

ई शब्द सुनमसान बाधमे हवापर हेल रहल अछि। आ एहि शबदकेँ सभ नहि सुनैत अछि। सुनैत अछि चोइर कर्ममे संलग्न बेकती। ओकरा तँ अन्हारमे ठाढ़ गाछ लोक सन आ भुक-भुकाइत भकजोगनी हथबत्तीक इजोत सन बुझि पड़ैत अछि। चंचल मन आ भितरिया डर....। चोर कहुँ इजोत सहै।

ओना लोक कहैत अछि- "जे ई गाछ संगहि ई बाध देवगनाह अछि। आ गाछक खाली जगहमे ई पाँचोटा मोंटका डारि कतेक दिनसँ ठाढ़ आछि। ओ मुईल वा जीअत रखवार थोड़े भऽ सकत।

एहि भरल दुपहरियामे असल रखबार तँ भेटत गामपर। चैबटिया गाछतर।

सरुपा, गणेशी, भोली आओर चोरेबाल ताशक पत्ता फेकबामे अपस्याँत। बुइधक कैंची चलबैत पूरा तागदकेँ साथ। जे हारि जएताह ओकरा साँझमे मूढ़ीकेँ जलखई आ चाह पियाबए पड़तैक। तैं सभ अपन दाव-पेंच लगेबाक लेल सतर्क।

ओना चिन्ताकेँ कोनो गप्प नहि। किछु गिरहतक धान पाकि गेल अछि। दू-चारि दिनमे कटि जएतैक। कटतैक किएक नहि। ओ सभ बुइधगर आ चंखार गिरहत अछि। धानक बीया शहर-बजार आ बाहरसँ मंगाकेँ समएसँ पूर्व लगौने

अछि। मास दिन पहिले काटियो लेत। नवका धान, बलौकिया बीज। बूढ़ सभ ओहिना चिचिआइत रहत-जे एहि अँगरेजिया धानमे ताकत नहि होएत अछि। ई पुरनका राग अलापलासँ देस-दुनियाँ ठाढ़ थोड़े रहतैक। ई तँ आगू बढ़ैत रहल अछि आ बढ़ैत रहत। नव अविसकारकेँ रोकि सकैत अछि।

किन्तु एहि नवका धानक चोर बड़ड-बेसी चिड़ई-चुनमुनी आ जीव-जन्तुसँ लऽ कऽ लोक-वेद धरि।

चोराक धान छोपताह रखवार। मूरही लेताह आ चाह पिबताह आ नाम लगतैन्ह चोरकेँ।

चोरेबालकेँ गामक लोक कहबामे सुभीताक लेल चोरबा कहैत अछि। चोरबा नाम रहितो ओ इमनदार अछि। किछु खेतीसँ आ किछु रखवारिक धान बचाकेँ हरेक साल जमीन किनैत अछि।

एहिना ढोलाय मड़र परिश्रम करैत आर ईमानकेँ साथ रखवारि करैत छल। आई ओ सम्पन्न गिरहत बनि गेलाह। तहिना चोरबो बनि जाएत। किएक नहि बनत?"

ओ अपन इमान बचैने अछि लगन लगा कऽ काज करैत अछि।

असल चोर आ लुच्चा तँ अछि मुसबा रखबार। केकर जजैत आ फसिल कखन काटि छोपि लेत वा कटवा दैत से ककरो पता नहि। गामक कतेक लोक विरोध कएलक- "जे मुसबाकेँ अगिला बरिस रखवारसँ हटा देबैक। किन्तु अगिला बरिस पुनः रखवारिक लेल एक नंबरपर मुसबाकेँ नाम। एकर सबसँ पैघ कारण रामशरण सिंह। सिंह जी गामक सभसँ पैध गिरहत। सब दृष्टिकोणसँ। कुनक खेत-पथारकेँ देखवा-सुनबा आओर रखवारिक पूर्ण जिमेवारी मुसबेपर रहैत अछि। बारहो मासक लेल। मुसबाकेँ नामो बदलि गेल अछि। सभ गोटे ओकरा रखबारे कहैत छैक।

मुसबाकेँ रखवार रहलासँ सिंह जीकेँ दुई फैदा। रखवार सौंसे गामक किन्तु सिंहजीक खेती केँ विशेष देखभाल। दोसर ई जे बारह मासक मजदूरी मुसबाक भेटबाक चाही। किन्तु सिंह जी तीन मासक मजदूरी कम दैत छल। आ ई कहि संतोख दैत छल- "जे तीन मासक लेल तँ तू गामक रखवार रहैत छी। तोरा गाम दिशसँ रखबारिमे अनाज भेटतहि छौ। तँ तीन महीनाक काटि कऽ भेटतौक।"

सभ गप्प बुझितो मुसबा अपना समांग जेँका सिंहजीक खेती-पथारीकेँ देखैत छल। आर अपनाकेँ धन्य बुझैत छल। ओ सोचैत छल- जे सिंहजीक किरपा रहत तँ हमरा कियो रखबारिसँ हटा नहि सकैत अछि। सँगहि समाजमे जे नीक-अधलाह करैत छी वा बजै छी तेकर बादो हमरापर किछु नहि होइत अछि। सिंह जीक परभावसँ बचल रहैत छी।

आब रखबारो चुनैत काल गाममे बड़ड राजनैति होइत अछि। के बेकती कोन पैघ गिरहतसँ मिलल अछि आ केकर गप्पक परमुखता समाज देतैक। केकरा रखवार राखि लैत आ केकरा हटा देतैक से कहब मोसकिल।

पहिले ई सामाजिक व्यवस्था छल जे गामक पंचायतमे सभसँ बेसी जमीन-बाला मालिक जेकरा सभकँ चुनि दैत छल ओ सभ रखवार भऽ जाइत छल। किन्तु बादमे एहि गप्पक विरोध भेलैक। धन आ शिक्षा बढलासँ सभ जाति अपन-अपन सिर उठौलक। तँ आब सभ जातिसँ एक-एकटा रखवार राखल जाइत अछि। जेकर संख्या कम अछि तँ दू जाति मिलि एकटाकँ राखल जाइत अछि। ऐनामे के रखवार रहताह के हटताह से कहब मोसकिल। कोन गिरहकतसँ केकरा बेसी परेम भाव अछि। जे ओकरा लेल पंचायतमे लड़त। आ ओकर गप्प रहिये जाएत, कहब कठिन।

ओना रखवार बनैक लेल बहुत गोटे तैयार रहैत अछि। एहिसँ दूटा लाभ। अपना खेतीकँ रखबारि नीक जेंका तँ होएतहि अछि। संगहि रखवारिसँ प्राप्त विशेष आमदनियो। तँ एहि कारजक लेल बहुत गोटे तैयार। किन्तु बनताह तँ भाग्यवाला। तईयो किछु एहनो तेज आ गुणी बेकती अछि जे सभ साल रखवार बनबे करताह।

ओहने बेकती अछि-मुसबा। पाँचो रखवार मिलि रखबारि वाला धान मुसबा एहिठाम जमा रखता। ओहिठाम दौनी करा कऽ पाँचटा कुड़ी लागत आ सभसँ बड़का कुड़ी मुसबे उठा कऽ लए जएताह।

मुसबाक परिबारोमे कोनो बेसी काज नहि। रखवारकि लेल एकदम ठीक बेकती। राति-बिरैत न चोर-डकैतक डर आ नहि साँप-कीड़ाकँ। चाकर-चैरठ, भुटगर कारी देह। पैंतालीस बरख उमेर भेला बादो जुआन सन लगैत अछि। अकेल खड़ खाईवाला। गाममे मारा-पीटी कएलाक कारणे दूई बेर जहलसँ खिचड़ी खा कऽ आपस आएल अछि।

पत्नी दमा रोगक कारणे दिन-राति खोंखिआइत पड़ल रहैत अछि।

चारि बरस पूर्व एक राति पुतोहसँ थप्पर-मुक्का करैत छल। जुआन बेटा किमहरोसँ आएल। पत्नीकँ बेसी मारि लगैत देखि ओहो मुसबाककँ मारए लागल। मुसबा करोधमे आबि मोटका डेढ़हथ्थीसँ बेटाक कपार फोड़ि देलक। ओहि दिनसँ बेटा-पुतोह भिन्न भऽ गेल। बेटा दिल्लीमे कमाइत अछि। आ जाईत काल ओ अपना पत्नीकँ भाला-बरछी देने गेल अछि। आर कहि गेल अछि- ''जँ हमर बाप तोरासँ झगड़तौ तँ सीधे भाला भोंकि दिहैक। ओ तोहर ससुर नहि काल छिओ।''

एहि गप्पक पूरा पत्ता मुसबाकँ छै। तैं ओकरा कतउ डर नहि किन्तु आँगनमे डैरा जाइत अछि। हेओ अपनो गाछी बड़ड भुताह।

भरि दिन मुसबा बाधक ओगरबाहि करैत अछि आ साँझखिनकँ चैकपर सँ ताड़ी पीबि आबैत अछि। आर निशाँमे मातल अधरतियोमे अल्हा-रुदलक गीत गाबै लगैत अछि।

चोर-चहार धसबाहिनी बाध जाइते ओकरा डरे थर-थर कँपैत। कहीं मुसबा आबि गेल तँ कि होएत पता नहि।

बेसी काल मुसबा ओहि सुतलाहा गाछक झोंझिमे बैसल रहैत अछि।

किन्तु एखन तँ ओहिठाम अछि-सुमनी।

सिहारबाली अर्थात सुमनी।

जोखनकेँ पुतौह। कद-काठी बेस नमगर, छरगर गोर पतरिया चमड़ी।

ओकर पति फेकुआ चारि मास बाहर खटैत अछि तँ दू मास गामपर रहैत अछि। अगहन आ अखाढ़क समएमे गिरहतक काज करैत अछि।

सुमनीकेँ तीन बरख पहिले एकटा संतान भेल रहैक। तेकरो छठिहारक राति पछुआ दाबि देलकै। तकर बादसँ कोखि नहि भरल।

किन्तु सुमनी एहि बातसँ निराश नहि अछि। ओ बुझैत अछि जे आइ नहि काल्हि बाल-बच्चा हेबे करत। आब तँ शहरमे बड़का-बड़का डागदर बैसैत अछि।

ओकरा बाल-बच्चासँ अधिक चिन्ता खेती-पथारी बढेबाक अछि। आओर ओ उन्नैत माल-जालसँ उन्नैत करबाक लेल परेशान रहैत अछि। तँ दुपहरियाक टह-टह करैत रौदमे सुमनी धास छिलबाक लेल निकलल अछि।

की करत बेचारी। घर-आँगनाक काज ओकरहि करए पड़ैत अछि। बूढिया सौस हरदम बेमारे रहेत अछि। ससुर कखनहुँ-काल खेत-पथार देखि आबैत अछि। से बात ठीक। किन्तु दुआरपर आबितहि बूढबाकेँ अस्सी मन दुख सवार भऽ जाइत छैन्हि। आ अनका दरबज्जापर खूब गप्प हाँकैत रहैत अछि। सभकेँ फरियाक कहैत रहैत अछि- ''बेटाक बाहर चलि गेलासँ बेसी काजक भार हमरहिपर पड़ि गेल। एको पलक पलखति नहि।''

किन्तु सभटा फूसि। सभसँ अधिक खटनी सुमनीकेँ। तइयो सुमनी अपना सौस-ससुरकेँ निदादर नहि करै चाहैत अछि। कारण ई अछि जे बियाहमे सुमनीक बापसँ एकोटा रुपया दहेजक नामपर नहि लेलक। बादोमे एहि बातक लेल उलहन-उपराग नहि देलक। संगहि सुमनी जँ बेमार पड़ैत अछि तँ ओकरा ससुर दबाई-विरो करबामे एको रती कोताही नहि करैत अछि, सौस दिन-राति सुमनीक सेवा-टहलमे लगल रहैत अछि। सुमनीक सभ दिनसँ कनेक झनकाहि आ बाजै-भुकएमे टेटियाह। किन्तु सौस-ससुर ओकर बातकेँ सहज भावसँ स्वीकार करैत अछि तँ सौस-ससुर आ पुतौहमे खूब गाढ़ परेम...।

जहिना माइक दुलारि तहिना सौसक दुलारी। कोनो बातमे अड़ि जाएव। अपना मोनक अनुकूल। ई लक्षण ओकरा बेदरहिसँ अछि।

मात्र दूई दिन दियारीकेँ रहि गेल अछि। जाहिसँ काज आरो बढ़ि गेल अछि। जिनकर घर टाट-बाँसक अछि। दिनभरि घर-आँगनमे गोबर-माटिसँ घरबा-दुअरबा खेलैत रहू। कतबो नीपब-पोतब तइयो एकटा कोनचार टूटले रहत। तइयो सभ अपना पड़ोसियासँ प्रतिस्पद्र्धा करैत काजमे व्यस्त।

गाछक छाँहमे बैसल सुमनी सोचि रहल अछि। सोचबाक नहि चाही। चोइरसँ पूर्व जँ कियो सोचए लागत तँ चोइर हेबै नहि करतैक। फेरि पुलिस-दरोगा, कामकेँ। कोर्ट-कचहरी कोन कमा कऽ। किन्तु चोरोकेँ कखनहुँ-काल सोचए पड़ैत अछि। खास कऽ नवका चोरकेँ। चोरो तँ बहुत प्रकारक होइत छैक। ताहूमे ई तँ चोर नहि चोरनी छल। तँ बेसी सोचैत छलीह।

"लार-पुआरक अभाव भऽ गेलासँ गाए-मालकेँ सभसँ बेसी दिक्कत। आब जँ टगली बेरमे घास छिलब तँ साँझतक घास छिलैत रहि जाएब। बगलमे खसलाहा धान अछि। छाँहमे धान तँ हेतैक नाहि। ओहो गाछतर दबल अछि। ऐतेक बड़का गिरहतक अछि। दस मुट्ठी छोपि लेलासँ एकर की बिगड़तै। किन्तु हमर तँ बिगड़त। दुधगर गाएकेँ खाइक तिरोटी भेलासँ दूध सूखि जएतैक। दोसर बहनजोग बाछीकेँ भरि पोख धास नहि भेटलासँ ओ कमजोर भऽ जएतैक। एखन तँ बेबस आ लाचार छी, नचारकेँ आगू बिचार की। एकरा कुकरम नहि कहल जा सकैत छैक।

एहि बेरसँ हम अपना पतिकेँ बाहर कमाए लेल नहि जाए देबैक गेल छैक। रुपया कमा कऽ आनबे करता। एकटा औरो खरीद लेब। तीनू गायकेँ पालब-पोसब आ दूध चैकपर उठौना लगा देबैक। तेना कऽ रास्ता लगेबै जे एकटा बिआएल रहत तँ दोसर गाभिन। आब एकरहि पाईल बढ़ेबाक छै। सम्हार नहि हैत तँ एक आधकेँ बेचि खेतो कीनि लेब। चारा कऽ दिक्कत छै तँ पछुआरक बाड़ीमे धासक बीया बुनि देबैक।"

ओ कलेजाकेँ मजगुत कएलक। रखवारसँ कन्नी कटिकेँ आएले रहए। हाँय-हाँय धान छोपए लागल। पहिलेसँ काटल घासक पथियाक लगमे गेल। गम्हरैल छोपल धान छीटामे रखलक, उपरसँ धास फुलकैक राखि देलक जाहिसँ धान देखबामे नहि आबि सकए। तरका धान उपरका घाससँ झँपा गेल। तब जेना भीतरका थरथरी कम होअए लागल।

सुमनीकेँ बुझएलै जेना पाछूमे कियो ठाढ़ भेल हो। आ ओकर सभटा अधलाह काज देखैत हो। फेरि सोचलक-जे एतेक टह-टह करैत दुपहरियाकेँ रौदमे के एताह। ई सोचेत संतोख भेल।

खर-खर जेना पाछूमे किछु खड़खड़ाएल हो। ओकरा डर पैसि गेल। साइत भूत-प्रेत न हो। घुमिकेँ पाछू दिस देखलक आ देखतहि रहि गेल। मुँहक बोली बन्न। छातीक धुक-धुकी तेज भऽ गेल। हाथ-पाइर जेना कठुआ गेल हो। किन्तु एहेन स्थिति बेसी काल तक नहि रहल।

तत्क्षण आएल परिस्थितिसँ लड़बाक क्षमता मनुक्खमे आबि जाइत छैक। ई क्षमता किनकोमे किछु कम किनको किछु बेसी होइत अछि।

अपना देह आ मनकेँ समान्य करबाक चेष्टा करैत सुमनी धासक पथिया उठेबाक चेष्टा कएलक।

मुसबाक कड़कैत स्वर निकलल- "ऐ, धासक पथिया उठा नहि सकैत छेँ। आइ धरा गेलँह। दस दिन चोरकेँ तँ एकदिन साउधकेँ। ओहि दिन गामक लगीचमे रहि तँ गारि दैत गामपर चलि गेलँह। अखन चिचिएबो करबहि तँ एतेक दूरसँ कियो सुनतौं।"

याइद पड़ल सुमनीकेँ ओहि दिन मुसबा सुमनीकेँ देखैत ऐँठिकेँ बाजल रहै- "बाधमे धान रहे चाहे घसबाहिनी सबहक मालिक मुसबा। जे मन हेतै से करबै।"

इएह सुनिकँ सुमनी गारि दैत चलि गेल रहैक।

सुमनीकेँ चुप देखि मुसबा फेर बाजल- "आब तँ तोरा जरिमाना लगबे करतउ। कियो नहि बचा सकैत छौ।"

सुमनीकेँ स्मरण भऽ उठल-ससुरक लाठीक हूर। सौसक खोरनीक मारि। भरल पंचायतमे छौंड़ा सभक पिहकारी। जरिमाना जे लगत से अलगे।

तइयो ओ हिम्मत बान्हलक- "हम देसराकेँ खेतमे हाथ नहि देलिए। हमरा पथियामे कहाँ किछु अछि। लोग घासो नहि कटतैक। माल-जालकेँ एतेक दिक्कत छैक। हमरा बेर भेल जाइत अछि। हम जा रहल छी। हमरा कियो नहि रोकि सकैत अछि।"

पथिया उठा कऽ चलल। करोधमे आबि मुसबा घासक पथिया ठेल कऽ गिरा देलक। आ घास उझलिकेँ झिड़ियाबैत बाजल- "ई की छिओ? आब कोना बँचबे?"

सुमनी लाजे कठुआ गेली किन्तु कोनो बहाना तँ करए पड़त सुमानीकेँ बाजलि- "ई धान हम अपना खेतमे काटलहुँ। माल-जालकेँ बचेबाक लेल तँ कोनो उपाय करऽ पड़त।"

मुसबा ओकरा देहकेँ गहींकी नजरिसँ देखैत मुड़ी हिलाबैत बाजल- "हँ, अपना मालक जान बचा आ दोसरकेँ गरदनि काट। गे कहै छियौ-आबो लत हो। हमर बात सुन। साँपो मरि जाएत लाठियो नहि टूटत।"

सुमनी सोचलक- कहीं कोनो नीके गप्प कहैत हुए। डुबैत काल तिनका भेट जाए। पूछलक- "अच्छा की कहै चाहैत छहक।"

मुँहक सुपारीकेँ चपर-चपर करैत। आँखि-मुँह चमकाबैत मुसबा बाजल- "कहबौ की। कतेक दिनसँ आस लगौने छी। कतेक बेर तोरा इशारासँ कहबो केलियौ। एक बेर हमरा मनक आस पूरा कऽ देखि, तोरा कोनहु गप्पक दुख-तकलीफ नहि होए देबौक। की मौगियाह फेकुआकेँ पाला पड़ल छेँ। सुन्नर जुआनीकेँ गारथ कऽ देतौक।"

सुमनी थर-थर कँपैत, ललिआएल आँखि मुसबा दिस तकलक। आओर सोचलक-उमेर देखहक आ पपियाहाक गप्प सुनहक। जँ इज्जत नहि रहत तँ जीवि कऽ की करब। किन्तु लगैत अछि जे आइ देवी, महरानी बचैत तबे बाँचव। अपना शक्तिकेँ संग्रह करैत। कड़किकेँ बजली- "रे तोरा बाजैकेँ ठेकान छौ कि नहि। सभ धन बाइसे पसेरी बुझै छी। बड़ड खेत खेने छी। आई सभटा बोकरा देबौक।"

कठहँसी हँसैत मुसबा एकरा मौगीक मलार बुझि लपकि सुमनीकेँ बाँहि पकड़लक। एहि बातमे मुसबा पहिलहुँसँ अभ्यस्त छल। कतेकोकेँ साथे कुकरम कएने छल, किन्तु आसक वीपरीत मुसबाकेँ सुमनी एक ऐँड़ मारलक। मुसबा फेर उठि सुमनी दिश बढ़ल। ओकरा बुझेलए घोड़ापर सवारी करबाक लेल एक दू चैताड़ तँ सहए पड़तैक। धाक छुटल नहि छैक। कने बलजोरी कऽ लेबै तँ कि कऽ सकैत अछि एहि सुन-मसान बाधमे। बात बढ़तैक तँ सिंहजी गिरहत

अछिये।

ओकर किरदानी देखि सुमनीक सौंसे देह आगि नेश देलक। आँखि लाले-लाल थर-थर कँपैत शरीर। बाजलि- "सोझहासँ भागि जो नहि तँ...। किन्तु मुसवा नहि रुकल। आगू बढ़ल हँसुआ नेने सुमनी हुड़कल। चर-चर-चराक हँसुआक प्रहार कुरताक सँगे मुसबाक कनेक छातीयो चिरा गेल।

आँखि उठा कऽ देखलक तँ बुझि पड़ल। ओ सोझामे सुमनी नहि कियो आन ठाढ़ अछि। साइत गाछक झोंझिसँ कोनहु देवी ओकरापर सवारी भऽ गेल।

हाथमे खूनसँ भीजल हँसुआ। साड़ीकेँ ढठा बन्हने करोधसँ करिआएल मुख, लाल-लाल आँखि, थर-थर काँपैत मुसबा दिश बढ़ल आबि रहल अछि।

गरजैत बजली- "आइ सभटा खून बोकरा देबोक। सभटा पाप पेट फाड़िकेँ निकालि देबोक। ठाढ़ रह ओहिठाम।"

मुसबाकेँ बुझेलै जे आब प्राण बँचाएब मोसिकिल। ओ खिखिर जैंका पाछू घुरि पड़ेलाह। धाँहि-धाँहि खसैत पड़ा रहल अछि। ओकरा बुझि पड़ैत अछि जे पाछूसँ खूनमे भीजल आँखि आ हँसुआ दौड़ल आबि रहल अछि। आबि रहल अछि। निश्चय मनुक्ख नहि देवी चढ़ल अछि ओकरा देहपर। ओ चिचिया उठल- "हौ मालिक, हौ गिरहत, दौड़केँ आबह हौ।"

किन्तु कतउ कियो नहि आबैत अछि। ओ अपस्याँत भऽ गेल अछि। हलफ सूखि रहल अछि। आँखिक आगू अन्हार सन बूझि पड़ैत अछि। फेर मोन पड़ितहिं जोर-जोरसँ पाठ करै लागल- "जय हनुमान ज्ञान गुण सागर

जय कपीश निहुँ लोक उजागर।



शरदिन्दु चौधरी

सम्पादक, समय-साल।

समय संकेत

बलराज घरमे बैसल अपन आतीत दिस झाँकि रहल छल। एहन अवसर कहियो नहि भेटल छलैक ओकरा जे ओ अपन इतिहासकेँ स्वयं अपन नजरिसँ आंकि सकए। ईहो अवसर ओकरा एहि कारणे भेटि गेलैक जे कि ओकर पत्नी सेहो बेटा संग मुबंइ चलि गेल छलैक आ ओ घरमे नितांत असगर रहि गेल छल।

वयस्कक अंतिम पड़ावपर आइ ओ अपनाकेँ एकदम असगर पाबि रहल छल। ओ सोचए लागल जे किएक आइ ओ असगर भऽ गेल अछि? किएक एक एकटा कऽ सभ ओकरासँ अलग भऽ गेलैक? पहिने दुनू बेटी अपन अपन सासुर चलि गेलैक। फेर दुनू बेटाक समए अएलै। पहिने शोभराज पढ़बाक हेतु दिल्ली गेलैक आ पढ़ाइ समाप्त कएलाक बाद ओतहि एकटा कम्पनीमे काज करए लागल। फेर ओकर विआह भेलैक। किछु दिन ओकर पत्नी पटनामे ओकरा सभ लग रहलैक आ फेर ओ अपन पति लग दिल्ली गेलि आ ओतहि रचि-बसि गेल।

एहि तरहे केशव सेहो नोकरीक खोजमे मुंबइ गेल आ ओहीठाम स्थायी रूपेँ रहबाक निर्णय लऽ लेलक। माइक कोरपच्छु रहबाक कारणे आब माएकेँ सेहो अपना संग रखबाक हेतु किछु दिन लेल लऽ गेल अछि। मालती सेहो किछुए दिनमे बेटा ओतए रमि गेल अछि। ओना ओ जाइत काल कहि गेलि छलि जे जल्दीये आपस आबि जाएत।

बलराज सोचैत चल जा रहल छल जे आखिर किए एक दोसरासँ अपन लोक अलग भेल चल जाइत अछि जखन कि परिवारिक सभ सदस्य रक्त सम्बन्धसँ जुड़ल एकटा माला सदृश होइछ।

ओ ई सभ सोचिये रहल छल कि ओकरा बुझएलैक जे ओकर दांतमे एकटा छोट छिन केश फंसि गेल छैक जे बेर-बेर दांतसँ फराक करबाक हेतु ओकरा अपना दिस आकृष्ट कऽ रहल छैक। ओ सोचलक जे पहिने एहि केशकेँ दांतसँ बाहर कऽ देल जाए तकर बाद ओ निश्चिंतसँ बैसि कऽ अपन चिंतन

प्रक्रियाकेँ आगाँ बढ़ाओत।

ई सोचि ओ मुँहसँ नकली दांत बाहर निकालि ओहिमे फंसल केशकेँ ताकए लागल। मुदा ई की ओकरा ध्यान अएलैक जे ओ चश्मा तँ लगौनहि नहि अछि तँ दांतमे फंसल केश ओकरा कोना सुझतैक? ओकरा स्मरण अयलैक जे चश्मा बगलबला कोठरीमे टेबुलपर राखल छैक। ओ चश्मा अनबा लेल ठाढ़ भेल। बगलबला कोठरीमे जएबा लेल डेग बढ़एबापर छल कि ध्यान अएलैक जे छड़ी तँ हाथमे लेबे ने कएलक तँ कोना ओहि कोठरीमे जा सकत? मुदा तुरंते ओकरा देवालसँ सटल छड़ी ओहीठाम भेटि गेलैक।

हठात् ओकरा अनुभूति भेलैक जे जहि प्रश्नक उत्तर ओ ताकि रहल छलसे तँ छड़ीक संगे भेटि गेलैक। ओ हँसए लागल आ स्वयंसँ कहए लागल हमर दाँतजे हमर अपन छलसँ नहि अछि। हमर आँखि जे ज्योति प्रदान करैत छल, सेहो अपना भरोसे नहि रहल, हमर पैर जाहि भरोसे एतेक यात्रा कएलहुँ सेहो आब अपनापर निर्भर नहि अछि आ एहि सभक अछैत हम कृत्रिम अंगक सहयोगसँ जीवि रहल छी।

फेर ओकर चिंतन प्रक्रियाक आगाँ बढ़लैक ई सम्बन्धो सभ तँ कृत्रिमे छैक तखन एकरा जनबा लेल एतेक व्याकुल किए छी। की हम अपन सर-सम्बन्धीक संगे धरतीपर आएल छी। किए हमर ई अंग सभ अपन रहितो काज करब बंद कऽ देलक?

आब ओकर चिंतन प्रक्रिया विराम लेबाक संदेश दऽ रहल छलैक। ओकरा ओ ई कहि देलकै जे समऐ ओ तंत्र छैक जे मनुष्यकेँ सभ साधन उपलब्ध करबैत छैक आ समएपर पुनः ओकरासँ आपस लऽ लैत छैक। ओ तँ एकटा माध्यम मात्र अछि जे समए संकेतक पालन करैत अछि।



विजय हरीश

मूलनाम- बिजय कुमार मिश्र, पिता-स्व. श्री हरिश्चन्द्र मिश्र, जन्म तिथि- 11/01/1970, शैक्षणिक योग्यता- स्नातक प्रतिष्ठा (राजनीति विज्ञान), राँची विश्वविद्यालय, राँची। जीवनवृत- कृषि एवं नीजि पठन पाठन। ग्राम.पो. परसरमा, भाया सुखपुर, जिला सुपौल।

किछु लघु कथा:

छींट बला गमछा

हम हुनका दिस दैखलियै तँ ओ बैसले-बैसल मुस्किया देलखिन। कने आर लग जे गैलियै तँ ओ खिलखिला कऽ हँसि देलखिन। हम अति उत्साहित भऽ हुनक आरो लग जे गैलियै तँ ओ कने सइटि कऽ कानमे कहलखिन ''भाइयौ हमहुँ अहींक जाति बिरादरी छी''। आ अपन माथ परक छींटबला गमछा हटा देलखिन।

किकिऔनी

दुइ गोट लेखक मित्र छलाह। एकटा नव तँ दोसर पुरान। पुरान किछु हद धरि एक मोकामपर पहुँचि गेल छलाह। तँ नवका हुनका लग बेर बेर दौड़थि। पुरनका बेचारे आजिज भऽ गेल छलाह अपन नव मित्रसँ। मुदा बाजताह की? कहबाके लेल, मुदा छलथि तँ मित्र। एक दिन ओ कविताक माध्यमे अपन पीड़ा व्यक्त केलखिन आ कविताक शीर्षक देलथिन किकिऔनी।

नोट- ''सगर राति दीप जरय'' सरसठिम कथा गोष्ठी, मानाराय टोल, नरहन (समस्तीपुर) मे पठित

भावी रणनीति

हम बच्चा सभकेँ ट्यूशन पढ़बैत छलहुँ। एक ठाम नव ट्यूशन शुरू करबाक छल। हम ओतए पहुँचलहुँ। मौसम कने गर्म छल। कुर्सीपर बैसते गमछासँ हाथ मुँह पोछए लगलहुँ।

तखने कुसंयोगे हमरा दहिना आँखिमे किछु पड़ि गेल। आँखि लिबिर‌‌‌‌‌‌‌ लिबिर करए लागल। बगलेमे बच्चा सभक दादी बैसल छलि। ओ हमरा दिस कने नजरि कड़ा करैत बाजि उठलीह ''हो मास्टर! आइ तोहर पहिले दिन छिअ आ हमरा तोहर छिच्छा नीक नञि बुझबै छअ''।

हुनकर ई गप्प हमरा टिकासन धरि लेसि देलक। मुदा हम पितमरू भेल हुनका कहलियनि ''नञि माताराम कोनो तेहेन गप्प नञि छै। हम तँ अपनेक आँखिक रोशनी टेस्ट करैत छलहुँ। किएक तँ ओहि हिसाबे ने हम अपन भावी रणनीति तँ करब''।

तृष्णा

हमरा टोलामे 'एकगोट' छल। नमरी कोढ़िया। पुरखाक अर्जल संपैत बेचि बेचिक जीवन भरि अपन आत्मिक आ शारीरिक सुख मौज केलथि। जीह तँ बहसले रहनि अय्याशो तेहने। हुनक गप्प सुनिक तँ नवका छौड़ा सभ आँगुरमे दाँत काटे लागैत छलै। अपन छुतहरपनीक लेल ओ प्रसिद्ध छलाह आ एहि आगाँ ओ धियो पुताक भविष्यक लेल कहियो नञि सोचलनि।

तँ समए एलनि तँ बेटा पूतोह खूब ऐराठेन, खूब दुर्गज्जन करनि। ई रोज रोजक फजीहत देखि अड़ोस पड़ोस बलाक अनसहज लागि जानि मुदा हुनका लेल कोनो हरख विषए नञि। एहि क्रममे एक दिन एकटा हुनके मेरिया आजिज भऽ बाजि उठलाह एह! हिनका जगहपर जौ दोसर कियो रहिते तँ निस्तुके बिख खा लित मुदा एहि चार्वाक प्रवृति इंसान लेल कोनो बात नञि। सभ किछुकए कुर्त्तामे पड़ल गदी जकाँ झाड़ि दैत रहथिन लागै जेना निर्लज्जताक सभ घाटक पानि ओ पीने रहथि। छिः छिः ऐना बेटा पूतोहूक खोरनाठबसँ मरि जाएब बेसतर एहेन जीनगी कतो मनुक्खल जीते।

संयोगे एक राति हुनके घर लग बाटे हम जाइत छलहुँ कि एकटा आवाज हमरा कानमे सुनाई पड़ल 'राम जानकी, राम जानकी' हम अकनाबे लगलौं कि फेर वैह आवाज 'राम जानकी, राम जानकी' रक्षा करहुँ प्राण की ओ अपन मचानपर पड़ल रटेत छलाह। कने मुसकीयाबेत हम आगाँ बढ़ि गेलौं।



सुनीता ठाकुर

गाम भवानीपुर, जिला मधुबनी।

अपहरणक सच

वर्ष २००३ सितम्बरक घटना अछि। हमर पितियौत भाय श्री राजीव कुमार इंटरमीडिएटकेँ छात्र छलथि संगहि मेडिकलकेँ तैयारी सेहो करैत रहैथ। ओ पटनाक बोरिंग रोडमे एकटा भाड़ाक मकानमे संगीक संग रहैत छलाह। १५ सितम्बरक दिन हुनका एकटा संगी आशीष हुनके संगे रहैत रहए हुनका ठगि कऽ लऽ गेल जे चलु गया घुमि आबए लेल। राजीब संगीपर विश्वास कऽ हुनका संगे गया लेल बिदा भेलाह। दुनु गोटे रिक्शा पकड़ि पटना स्टेशन पहुँचलाह। ट्रेनमे बैसलापर किछु दूर गेला कि बगलमे एकटा लड़का आबि कऽ बैसि गेल। राजीब छलथि सीधा लड़का ओ किछु बुझि नहि सकलाह। किछु दूर गेलापर दूटा लड़का आ ओर बगलमे आबि कऽ बैसि गेलनि। आशीष कहलखिन जे ई सभ हमरे संगी छथि। राजीब सोचलनि जे ठीक छैक सभ गोटे संगे गया जाएब तँ मोन लागत। मुदा ओ कि बुझताह जे ई सभ हिनकर जीवन बर्बाद करबाक तैयारीमे छथि। ट्रेनमे सभ खूब बातचीत करैत जाइत गेलाह। बहुत दूर गेलाक बाद राजीब पुछलखिन जे एखन धरि गया नहि आएल तँ आशीष कहलनि जे “देखियो ने राजीव हमर भैया सीवानमे रहैत छथि, हुनका हमरासँ कोनो जरूरी गप करबाक छनि फोन केलथि जे पहिने सीवान आऊ ताहि द्वारे पहिने चलु भैयासँ भेंट कऽ लैत छियैन, तकर बाद गया चलब। राजीबसँ बुझि सीवान पहुँचलाह मुदा ओ सभ गोटे एकटा होटलमे नास्ता कएलनि। नास्ताक समए मिठाईमे बेहोशीक दवाई मिला कऽ राजीवकेँ खुआ देल गेल। मिठाई खाइत देरी ओ बेहोश भऽ गेलाह। तकर बादक घटना ओ किछु नहि बुझि सकलाह। संगी सभ मिल कऽ हुनका देवरिया (यू.पी.)मे अपहरणकर्ताकेँ गिरोहमे दऽ देलनि। राजीवक पिता कटिहारमे कोनो साधारण नौकरी करैत छलाह। राजीवक फोन नहि लगलनि तँ ओ चिंतित भेला आ पुनः अपन पैघ भाय जे कि पटनामे रहैत छथिन हुनका लग एलथि। पूरा परिवार चिंतामे डुबल छ्लाह मुदा राजीवक कोनो खबरि नहि लगलनि। सभ बहुत घबरा गेलाह। पुलिस स्टेशन जा कऽ रिपोर्ट

लिखैलनि। बहुत ठाम पता लगैलथिन मुदा किछु पता नहि चलल।

चारि दिनक बाद सांझ कऽ अपहरणकर्त्ता फोन कएलक आ राजीवक पापाक कहलनि जे "अहाँक बेटा हमरा लग अछि अहाँ २५ लाख टाका लऽ कऽ आऊ, तखन अहाँक बेटाकेँ छोड़ब"। ई सुनि राजीवक पापा कहलथिन जे "हम साधारण आदमी छी, एतेक टाका कतयसँ आनब"। आ बहुत चिंतित भऽ गेलाह। ओहि बेचाराक दुटा बेटीक बिआह करबाक रहनि, कतयसँ ओतेक टाका ओ अनतथि बहुत परेशान भऽ गेलाह। माए, भाए, बहीन, चाचा सभ केओ सोचए लगलनि जे आब की होएत। कतएसँ ओतेक टाका इंतजाम होएत आ राजीवकेँ छोड़ा कऽ आनब। हमहुँ गेल छलहुँ चाचासँ भेट करबाक लेल। हमहुँ बहुत चिंतित भेलहुँ, आ चाचाकेँ समझेलियनि जे चिंता नहि करू सए ठीक भऽ जाइत।

बीस दिन धरि बहुत घमर्थन भेल। अंतमे अपहरणकर्त्ता चारि लाख टाकाक इंतजाम कयलनि आ दुनू भाँइ अपहरणकर्त्ताक गपपर टाका इंतजाम कएलनि आ दुनू भाँइ अपहरणकर्त्ताक गपपर टाका लऽ कऽ छपरा गेलाह। ओतए गेलापर हुनका सभकेँ भरोस नहि होइत छल जे राजीव भेटत। बहुत परेशान कएलनि अपहरणकर्त्ता सभ कखनो फोन कऽ कऽ कहैन जे होटल आऊ तऽ कखनो फोन कहैत जे स्टेशनपर आऊ। बहुत परेशानी भेलनि मुदा अंतमे राजीव भेंट गेलनि। राजीवकेँ देखलथि आँखिपर पट्टी बान्हल, पूरा कारी भेल, पूरा पातर सेहो भऽ गेल छलैक। एकटा चेन पहिरने रहैथ सेहो छीन लेने छल, मोबाइल, घड़ी, सेहो लऽ लेने रहए। पापा एवं चाचाकेँ देखि कऽ राजीव बहुत कानए लागल। ओ सभ समझा बुझा कऽ हुनका पटना डेरापर अनलथिन। राजीवकेँ देखि पूरा परिवार बहुत खुश भेला आ सभ केओ पकड़ि कऽ कनलनि। राजीव सेहो कनलनि, तखन ओ सबकेँ जनौलनि जे एहन संगी भगवान दुश्मनोकेँ नहि देथि। आ पूरा जनौलनि जे केना कऽ ओ बीस दिन अपहरणकर्ताक संग बितौलनि। जंगल रहैथ पूरा आ ओतय एकटा घरमे बंद कऽ कऽ राखनि। खेनाइ पिनाइमे दिक्कत नहि होइत मुदा ओ खेता कि ओ तँ पूरा घबराएल रहथि आ हरदम कनैत रहथि। जेना तेना कऽ दिन कटलनि।

बादमे पता चलल जे आशीष मधुबनी जिलाकेँ छल, हुनके सभटा हाथ रहैथ राजीवक अपहरणमे। हुनका गलत फहमी भऽ गेल रहनि जे राजीव बहुत बड़का बापक बेटा छथि। पुलिसकेँ जखन आशीषक नाम बताओल गेल तँ ओ सभ छान बीन कऽ ओकरा थाना अनलक। बहुत दिन धरि मामिला चलल। ताहि बीचमे आशीषक पापा राजीवक पापाकेँ कहलनि जे चारि लाख टाका हम दैत छी हमरा बेटाकेँ नाम कटवा दियौ, मुदा ओ सभ तैयार नहि भेलाह। आ एखनो धरि आशीष जेलमे अछि। राजीव दिल्लीमे एम.बी.ए.क तैयारी कऽ रहल अछि। ई छल अपहरणक सच।

राकेश कुमार रोशन

लालापहि-६, सप्तैरी हाल, पो.ब. न: ५४३२ काठमाँण्डूर

पञ्चैति (कथा)

थप!....थप!....थप!....खैनि तरह थिपर रगड़लाकेँ बाद चपड़ि ठोकि धूल उड़बैत बाजल सिफैत ''आजुक पञ्चैतिमे बड़ मोन लागल....नहि रौ?....चन्नाड़। ''खैनि खाइल जीसँ लेर चुबबैत बाजि उठल चन्ना ''तँ!....आइ खुब मजा एतै....बड़ मोनसँ दुलारसँ आइ.ए., बि.ए. आ आओर किदन बिग्दनन पढ़ेलक जिवछ। माटर....अपन दूनु बेटा आ बेटियोकेँ। कहै छल जे....बलु हमरा धन जोडबाक नहि अछि....बेटा बेटी सभक पढा लिखा देव तँ कमाइयोकेँ खेतै आ....निक लोकसेहो बनि जएतै''। ''तह!....आइए माटरबाकेँ बुझा जाएत जे दुकट्ठा जमीन जोड़नेसँ फाएदा होइतै की बेटा पढ़ेनेसँ फाएदा भेलैय''। खैनिकेँ मोनसँ घुस्सादैत बाजल सिफैत तखने सिफैतक गोहालिमे साँझुका खानपिन खा' क' हाथ सुखबैत पहुँच गेल दिलिफ आ चट् दऽ बाजि उठल ''कथिकेँ बातचित चलैत छै....सिफैत का....महरो एक जुम खैनि दियह''।''धुर....खैनि खेता! ....बड़ सौख छौ तँ लगाकेँ खेबहि तँ नहि हेतौ?....अच्छाह ले कनेक्शन खा हमहुँ तँ बेर-बेर माँगिक खाइत छी आ फटसँ दू जुम खैनिकेँ तिन भागल गाबैत आ बातक अगाड़ि बढ़बैत फेर बाजल सिफैत ''तोँ आइ भरि दिन गाममे नहि छी से....नहि किछु बुझलि एखनी धरी''। बातकेँ जोंक नाहित नमराबैत देखि बिचेमे बाजि उठल चन्नाछ ''रे!....जिवछा माटर द्या गफहोइत छलै....तोहर बाप तँ तोरा बेसि नहि पढेलकौ तँ बुढवा 14 कट्ठा खेतो तँ किनकेँ राखलक ने एकटा जे ई माटर हँ....देखैत नहि छि 4 कट्ठा खेत छै ओ कनी दूटा घर।....कमाक नै एक्कोब कट्ठा खेत किनलकै आ....नै दसो हजार रुपैया जम्माक कऽ सकलै....। प्रिन्सिपलक नामपर भेटल पैसा बुढिया बेटिकेँ बियाहोमे नहि जुमले तँ राखी की सकत। आब आइ ओकर पुतहु सभमे झगड़ा भऽ गेलै तँ बेटा सभ पञ्चैति बैठेने छै....भिन है ले....आब देखैत रहि सार बुढवाकेँ पुछै छै''। बुढिया बोछि एहि सन्दीर्भमे कहने छल जे मास्टदर अपन बेटीकेँ स्नाआनत्तक धरि पढा देलकै बाद विआह कएने छल २१ वर्षक उमेरमे। दिलिफ सभ वात बुक्तसतो अन्ठिया लऽ नाहित बाजल ए आइ पँञ्चैति छियै ने तब देखिलियै बुढवाकेँ द्वारपर दूटा विरिञ्च लागल छलै आ-आ हमरो घर गेल छलै ओकर पोता एकटा विरिञ्च लाबे''।....तह....देखह बुढबाकेँ आब गञ्जन भऽ जेतै.....एखन चलै बुलैत छै तँ कहुनाक दिन कटिए जेतै....आ जखन लोथ भए जेतै तँकेँ....केँ देखतै....देहमे पिलुबा फडि जेतै....''। आगिमे घी ढारैत बात बढौलक चन्नान'' तँ देखैत जाहिने....पाँच कट्ठा खेतमे दूओ कट्ठा माटरकेँ पञ्च सभ द' देत तैयो कोइ नहि

राखैले तैयार होतै।....छोटका तँ ओर हरामी छै,....कहते वलु मरि जाउ बुढवा....हमरा कोनो मतलब नहि छै।....आ बढका।....कनि स्थिर गरे छैत की भेल....दूकट्ठा खेतसँ कि होइतै बुढवाकेँ सो ओहो राखत।....आइसँ तँ जिबछा माटर अबस्से. भिख मँग्गा भऽ जेते। एम्हखर ठोर तरक खैनिमे सँ पच्चो दऽ थुक फेकैत बाजल दिलिफ''....तह! आब बुढवा माटरकेँ देखह ने दमाक दवाइकेँ किनक लाइवदैत छै बजारसँ आ कोन पुतहु....भोर साझ एक लोटो पानि देतै ब्लडप्रेसरक गोटि खहिले''।''....ओना आब पँचैति शुरु भऽ गेल होत।....चलै चलहने ओते बुझवो तँ करवै केना केना करैत छै पञ्चसभ आ....आ बुढबाकेँ हालो तँ देख लेबै'' बाजल सिफैत आ एहि वाले तीनु सहमति होइन डेग बढेल एक उत्सुगक नजर लऽ कऽ जिबछक द्वार दिस।

जिबछ एक आधुनिक सोंचक थिक। जिनकर शिक्षा प्रति विशेष झूकाव छल। ओना अपना तँ गामेक प्राथमिक स्कूकलक शिक्षक छल आ मात्र मैट्रिक पास। मुदा अपन दुनु बेटा जेठका गनपैत आ छोटक धनपैतकेँ पढेमे कोनो कसैर बाकि नहि रखने छल। तैं गनपैत एम.ए. पास केन छल आ धनपैतो बी.ए. पुरा केने छल गनपैत गामक लगेमे रहल एकटा छोट बजार कञ्चनपुरमे एकटा बोर्डिग स्कुकलमे पढ़बैत छल ओही नोकरी ओकरा बड मुस्किलसँ भेटल छल आ एतेक ने कमाइ होइत छल जे खापीक बेटाबेटि पढबैत पढबैत एक्कोर टाका नहि बचैत छल। बेरोजगारीकेँ समस्यासँ ग्रस्त एहि समाजमे धनपैतकेँ एहन एक्कोत गोट नोकरी नहि भेटल छल ताहि लक ओ गामेमे भोर साझ टिसन पढावैत छल आ कहुना कहुनाक ओहो अपन गुजाराकर लैत छल। बुढबा एखन एतके उमरगर भऽ गेल छलथिसे ओ नोकरीसँ रिटाएर्ड भऽ गेल छल आ पेन्सलनक नामपर हुनका जे टाका भेटैत छलथि जे बल्डकप्रेसर आ दमाक नियमित दवाइयोमे मुश्किलसँ जुमि जाइत छल ।

आइ बुढवा जिवछा माटरकेँ भरल छै। मडर मनेजर, राम्फयल, भिक्खतना सँगहि सिफैत, चना, दिलिफ लगाएत बहुटो लोग सभ गोल बृद्ध भए बैसल छल। द्वारक तिनुकातक घरक कोन्टाल सभ भरल छल छौंडी आ जनिजाइत सभ सँ आ सभक उत्सुलकता पूर्ण आँखि केन्द्री तँ छल पञ्चसभ दिस। साँझुक करिब साढें आठ बजयत होयत। गनपैत तस्तकरीमे 'सुपाडि, विडि, मोहलिसोंफ आ पान लैत आँगनसँ दुवारपर आएल आ सुभक वाट' लागल। एम्हयर मडर मौनताक भंग करैत बोलल'' शुरु कर ने....की भैलेए....खातिर ई पञ्चैति बैसाओल गेल?'' ओना सभ बुझैत छल जे बास्तैविकताकी थिक? ई तँ बाट शुरु करैके औपचारीक घोषणा मात्र छल धनपैत बाजल ''हम दुनू भाँइ भिन होव चाहैत छी से बलु हमरा सभक'....सभ किछु बाँटिदिय। बडि सोक्त आ स्पष्टु भाषामे कहि गेल छोटका एम्हार राम्फतल कनेक्शन गम्भिर होइत बाजल कहल जाइत अछि जे जतेक माथ ततेकबात तँ बातक सुब मोथलक, चौहु तर्फ नजर दौडबैत- ''की हौ पञ्चसभ बढवाकेँ कतेक खेत जीवका देनेसँ निक होयत। एम्हरसँ मनेजर बाजल ''पाँच कट्ठा खेतमे की देवह बेटा बेटी सभक....ओना नहि देवह

तैमो तँ नहि हो तै ने....से नहि....तीन कट्ठा आ ई छौडा सभी जेकर बाल बच्चा. छै ओ सभक एक्के कट्ठाक....''। सभलोक अपन अपन हिसाबे आ बात ओझराइते गेल तावतमे मड़र पुछि उठल'' क हौ!.... जिबछ मास्टकर छे....सभ बरबैरक बाँटि दह दुनकेँ। बैसल सभ एक बेर जेना चौंक गेल कहल जाइत अछि जे जटेक माथ टटेकबा ते बातक खुब मोथलक, वातावरण कनेक गम्भिर बनि गेल आ ओइ गम्भिरक कारण छल बुढबाक ई गप। किएक तँ सभी सोचने छल जे ओ बाजत पाँच कट्ठा खेत आ छटा कोन्टाक की बाँटब कह....कहक बरु कमाकेँ खाएत आ ई सभ हमरा छाँटि देव। मुदा....ओकर विपरीत बुढबा आइ अपना हिस्सा. सेहो नहि माँगलएक।....कहलक जे हुनके बरोबरी बाँटि दहक बुढबाकेँ ई बात सुनि नहि रहल गेल मनेजरक आ ओ जेना विलाड़ पठरुक झपैट लेना छौ आ बुढ़िया बकँरी भऽ देखैत रहैत हो। तहिने गम्भिर बाताबरणकेँ चिरैत बाजि उठल''। तुँ! तुँ कत जेबह।....कें तोराकेँ राखत....भिख माँगब काल्हिसँ भिख....भिन भेलाक बाद ई बेटा सभ एकटा फूटलहो बाटि नहि देत भिखो माँगो बास्तेत....''। बात पूरी नहि भेलछल ता गनपैत बाजि उठल''....अपन बाउकेँ हमहि राखब....हमहि राखब अपन बाउकेँ।....जिविका लेल आ नहि....मुदा हम अपन बाउकेँ बुड़हारिमे सेवा करब। एम्हहर सभ आश्चर्य चकित भऽ गेल। एखन तक एहन पञ्चैति नहि भेल छल। आन पँचैति सभमे जिविको होइत जबरजस्ति लादहल जाइत छल बुढवा बुढियाके....ओकरे कोनो धियापुतापर आ....आ लाधनहार रहैत छल पञ्चसभ....ओहे पञ्चसभ एम्हँर बुढवाकेँ आँखि नोरा गेल छल। ओम्हहर....एक कातमे ठाढ़ धनपैतो तुरुन्ते. बाजि उठल''नहि....हम राखब अपन बाउ कें।....हम अपन बाउके बीन जी नजि सकैत छी....''। आब बुढबाकेँ याद परि गेल ओ दिन जखन बुढबा कतेक मेहनतसँ पालने छल ई दू बेटा। एक बेटिकेँ....। ओकरा सभक माय ते कनिएटामे छोडि चैल बैसल छलिथि एहि सँसारमे मुदा....मुदा बुढबा मास्टरर माए आ बाप दुनुके भुमिका पुरा केने छल ओहि सभक लेल। से आब....आब अपन जीवनकेँ सफलताकेँ खुसिक नोर नहि रोकि सकल आ पानिक धार नाहित बनल बुढवाकेँ सिकुड़ल गालक चमडीकेँ बिचोबिचा वह लागल नोर एक सफलताक नोर।



हेमचन्द्र झा

दूटा कथा

बाट

रामाक बी.ए. (आनर्स)क परीक्षा खतम भऽ गेल रहैक। बिनु समए गमौने ओ तुरंत आगूक प्रतियोगिताक परीक्षा समएक तैयारीमे जूटि जाई चाहैत छल। ऑनर्समे नाम लिखबितहि प्रतियोगिता परीक्षा सभक तैयारीमे लागि गेल रहता ओ। एक दूबेर बैंकक आ कर्मचारी चयन आयोगक लिपिक श्रेणी परीक्षामे बैसियो चुकल छल। आ तैं प्रश्नक पत्र सभक हाँज भाँज छलैक। संगहि पहिनेसँ विभिन्नी पत्र-पत्रिका पढ़बाक कारणे हिम्मरत कने खूजि गेल छलैक। हिम्मपत केने छल जे यदि ढंगसँ एक-डेढ़ साल प्रतियोगिता परीक्षा सभक तैयारी कयल जाय, तँ कोनो ने कोनो लिपिकीय परीक्षामे उत्तीर्ण भेल जा सकैत अछि। तैं अपन पहिल लक्ष्य जँ लिपिकीय परीक्षा रखने छल आ बादमे किछु आर।

तथापि शुरूआत कतऽ कयल जाए तेकर बाट नै देखाई छलैक। गामपरसँ परीक्षाक तैयारी असंभव छलैक, कारण एहिठाम एक तँ पत्र-पत्रिका भेटब मोशकिल छलैक, दोसर परीक्षा सभक फाँमौ भेटब दुर्लभ छलैक। आ तैं कतौ बाहर रहब आनिवार्य छलैक। ओकर दोस्तो -महीम सभ सही प्रकरममे लागल छलैक। तथापि ओकर सभक लक्ष्या 'पटनामे रहि तैयारी करक छलैक, परन्तुर दोस्तै महीमसँ रामाक स्थिति किछु भिन्न छलैक।

रामाक बाबूजी महेश बाबू पकिया गृहस्थ। बाप-पुरुषाक देल ९-१० बीघा जमीनक बलपर ओ महेश बाबू अपन तीनू बेटाकेँ बी.ए. करौने छलाह। दुनू जेठ बेटा बाहर छलनि आ अपन पाएरपर ठाढ़ हेबाक उपक्रममे लागल छलनि। सभसँ छोट छलनि रामा। ओहो बी.ए. ऑनर्स कऽ चुकल छल। एहिबीच दूटा कनेदानो केने छलाह। एहि सभ द्वारे महेश बाबूक आर्थिक दशा नीक नहि छलैन। रामा एकरा अनुभव करैत छल आ तैं बाबूसँ आगूक पढ़ाइक वास्तेआ पाई मंगबाक ओ हिम्मलत नहि कऽ पाबि रहल छल।

ऑनर्स परीक्षाक तुरंत बाद प्रतियोगिताक क्षेत्रमे भीड़बाक लक्ष्य् पहिनेसँ बनने छल। दुर्गापूजामे बड़का भैया लग एहि संबंधमे प्रस्ताव रखलक, परंतु

आश्वाहसनक बात तँ दूर ओ कहलनि जे एहि प्रतियोगिता परीक्षासँ किछु ने होएत, कतौ नोकरीक जोगार करू। संभवतः- बड़का भैयाक अपन व्यतक्तिगत अनुभव रहनि। कारण ओहो एहि तैयारी सभमे दु तीन साल गमौने छलाह आ कतहु नहि चयन हेबाक स्थितिमे अंततः प्राईवेट कंपनीमे कलकत्तामे नोकरी पकड़ने छलाह। मझिला भैया बी.कॉम. केलाक बाद 5 6 महीना पहिने पूर्णत: स्थिरो ने भेल छलाह।

एहन स्थितिमे बड़का भैयासँ मददिक आशा केनाई व्यतर्थ छल। आब एक्केटा रास्ताँ छल जे कोनो शहरमे रहि ट्यूशन करए आ अपना बलबूतापर प्रतियोगिता सभक तैयारी करए। एहि लेल रामा तैयारो छल, परंतु शुरूआत कतऽ करए से नहि फुराईत छलैक। इंतजार छलैक फगुआक, जाहिमे ओकर मसिऔत भाए आबएबला छलथिन। ओकर मसिऔत पटने रहैत छलाह आ संजोगसँ ट्यूशन आछि सेहो करैत छलाह। फगुआमे मसिऔत भाय रमणजी गाम एलखिन। फगुआ प्राते रामा हुनका लग पहुँचल आ अपन सभटा समस्या रखलक। रमण जी पूर्ण सहायताक आश्वाासन देलखिन आ कहलखिन जे हम पुन: मईमे गाम अबैत छी तँ हमरा संग पटना चलब। तथापि ओ कहथिन्हि ''पटनामे रहनाई। खेनाईक खर्चेटा बेसी छैक तँ ओतए बेसी ट्यूशन करए पड़त। लिपिकीय परीक्षाक तैयारीक लेल पटना रहब आवश्य।क नहि छैक। एकर तैयारी मधुबनीमे रहिकँ सेहो कएल जा सकैत छैक। तथापि अहाँ फेरसँ सोचि लिअ आ मईमे हमरा संग चलू''।

मसिऔतक उक्तू सुझाव रामाकँ ठीक लगलैक। मधुबनी रहि गामोक संपर्कमे रहि सकैत छल आ जरूरत पड़लापर गामो आबि सकैत छल आ पटनासँ गाम अवैमे पर्याप्त समए आ पाई लगैत छलैक। संगहि अपन दुनू भाँइक बाहर रहने आ स्वयं पटना रहिने बाबूजी सेहो एसगर भक् जेताह, ई सभ सोचि ओ अपन पटना रहबाक प्रोग्रामपर फेरसँ सोचए लागल। तथापि पटना नहि रहत, तँ कतए रहत ? ई प्रश्न् एखन धरि अनुत्तरित छल।

एही ऊहापोहमे अप्रैलक महीना लगिचा गेलैक। मईक अंत धरि पटना जएबाक छैक रामाकँ आ मधुबनीमे शुरूआत करक छैक। ऑनर्सक दौरान मधुबनीमे रहि चुकल छल तँ सभटा देखल सुनल छलैक। बस समस्या छलैक जे शुरूआतमे कमसँ कम एकोटा ट्यूशन भेटि जाईत तँ नीक रहैत। बादमे आसे ट्यूशन भेटि जयबाक संभावना रहैत छैक। ट्यूशन मात्र अपन गुजर-बसर जोग करए चाहैत छल। मेसमे खयबाक पक्षमे छल ताकि भानस भात बनेबाक समए बचि जाए। ट्यूशन करैत अध्ययन जारी रखनाई कने कठिनाइ अवस्सन छलैक तथापि दोसर कोनो उपाईयो तँ नहि छलैक।

एही सभ उधेर-बुनमे एक दिन दलानपर बैसल छल कि तखने मंगनूकँ अबैत देखलक। मंगनू ओकरे गामक एकटा छात्र छल आ एखन मधुबनीमे बी.एस.सी.मे पढ़ि रहल छल। मंगनू रामासँ तीन-चारि साल जूनियर छलैक आ मैट्रिक परीक्षाक समएमे रामा ओकरा पर्याप्तढ़ मददि कएने छलैक। से मंगनू

रामाकेँ दलानपर खाली बैसल देखि ओतए आयल। कुशल मंगल भेलैक आ फेर शुरू भऽ गेलैक पढ़ाई-लिखाईक मुद्दा। रामा सविस्तार मंगनूकेँ अपन गप्प बतेलक। पटना जएबाक संबंधमे मसिऔत भाएक विचार सेहो बतेलक आ अपन प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारीक शुरूआत मधुबनी या दरभंगासँ करक अपन मंशा प्रकट केलक।

मंगनू मैट्रिकक समयमे रामा द्वारा कएल गेल मददिकेँ बिसरल नहि छल। ओ प्रकटत: बाजल- "हम बी.एस.सी.मे पढ़ैत मधुबनीमे ट्यूशन करैत छी आ एतबा आमदनी भऽ जाईत अछि जे बाबूजीसँ हरदम नहि माँगय पड़ैत अछि। अहाँ तँ हमरा पढ़ेने-लिखने छी। जँ हम ट्यूशनसँ अर्जितकेँ सकैत छी तँ अहाँ किएक ने कऽ सकैत छी। अहाँ शीघ्रे मधुबनी आऊ आ अपन शुरूआत करू। हम करब अहाँक लेल ट्यूशनक जोगार"।

असमंजसक स्थितिसँ दू-तीन महीनासँ गुजरवला रामाकेँ जेना एकाएक अपन बाट भेटि गेलैक। ओ तुरंत अपन सहमति देलक। लगेमे रामाक बाबू बैसल छलथिन। दुनू गोटाक गप्प सूनि ओ बजलाह, "जहन तों स्वायं ट्यूशनसँ आगूक पढ़ाई जारी राखए चाहैत छह तँ जा धरि तोँ पूरा ट्यूशन नहि पकड़बह, हम तोरा मददि करबह"।

बाबूजीक एहि बातसँ रामाकेँ आर सम्बरल भेटलैक। ओ शीघ्रे मधुबनी गेल, डेरा डंटाक भाँज-पता लगेलक आ सभ सामान लऽ कऽ मधुबनी पहुँचि गेल। मंगनू ओकरा तुरंत ट्यूशन तँ नहि दे सकलैक, तथापि कहलकै जे अहाँ पहिने एकटा पब्लिक स्कूओल पकडू। ट्यूशन अनेरे भेटि जाएत। रामा एक-दू दिनक भीतर एकटा पब्लिक स्कूल पकड़लक। शीघ्रे ट्यूशनो भेटि गेलैक। शुरूआत नीके जना भऽ गेलैक।

ता कर्मचारी चयन आयोगक लिपिकीय परीक्षाक लिखित भागमे पहिले चांसमे सफलता भेटि गेलैक। ओकर खुशीक ठिकाना नहि रहलैक। सभटा खबरि ओ गाम आ भैया सभकेँ कएलक। ओकर बड़का भैया पहिने चांसमे भेटल ओकर सफलतासँ प्रभावित भेलाह आ पाई-कौड़ीक मदति देब शुरू केलनि। फेर की छल रामाक आगू बाट अनायासे खूजैत चलि गेल।

अग्रसोची

आई महेश बाबू अपन तीनू बेटा अजय, विजय आ दुर्जयक संग कोनो विशेष मुद्दापर गप्प कऽ रहल छथि। गप्प कखनो फुसुर-फुसुर होईत अछि तँ कखनो तेज भऽ जाईत अछि।

ओना महेज बाबू पकिया गृहस्थ । अपन गृहस्थीजक बलपर तीनू बेटाकेँ पढ़ेलनि लिखेलनि आ तीनू बेटीक विआहो केलनि। सदिखन गाम घरसँ जूडल रहएबला महेश बाबू पहिले बेर दिल्ली अएलाह अछि, तीनू बेटा दिल्लीएमे छनि। अपने दुनू प्राणि गाममे छथि। तीनू बेटी सासुर बसैत छनि। खेत पथार बटाईपर

छनि, तथापि ततेक भऽ जाईत छनि जे कोनो बेटासँ कहियो मंगबाक पयोजन नहि पड़ैत छनि। गाममे सभ कहैत अछि जे महेश बेस सुखितगर आदमी अछि, एकर परिवार बेस नीक छैक, सभ अपन पाएरपर ठाढ़ छैक------आदि।

आ तैँ महेशबाबू गाममे निश्चित छलाह। कहिया दिल्लीा बेटा सभसँ भेंट करक लेल या धीया पुता सभकेँ देखबाक लेल ओ नहि अएलाह सालमे एक-आध बेर बेटे सभ गाम जाईत छलनि। तथापि एहिबेर मुद्दासे फँसि गेलनि जे दुर्गापूजाक बाद ओ अपन एकटा गौँआक संग दिल्लीा अएलाह। सामने दियावाती या छठि रहबाक बावजूदो ओ एलाह।

यद्यपि तीनू बेटामे थोड़-बहुत मतांतर रहैत छल, परन्तुस ओ प्राय: प्रकट नहि होईत छल। मुदा एहि बेर फागुनमे अजयक जेठकी बेटीक कनेदानमे से नहि भेल। गप्प-शप्पक क्रममे नहि जानि कोन गप्पफपर मझिली पुतोहु आत्मादाहक प्रयास केलकनि। यद्यपि दिनक समए छल आ कनेदान-दुरागमन रहबाक कारणे बेटियो सभ छलनि तैँ बात आगू नहि बढ़लैक आ मामिला थमि गेलैक। गाममे ई बात जंगलक आगि जेकां पसरि गेल आ देखैत-देखैत पूरा गामक लोक जमा भऽ गेल। महेश बाबूक सभटा संचित प्रतिष्ठा आ सुख-चेन जेना छनहिमे देखार भऽ गेलनि।

कनिये दिनक बाद बेटा सभ सपरिवार वापस चलि गेलनि आ तीनू बेटियो अपन-अपन सासुर निचेनसँ आब महेश-बाबू पूरा प्रकरनपर विचार करए लगलाह जे एना भेल किएक। गाम-घरमे सेहो लोक सभसँ विचार-विमर्श केलनि ई बुझवामे भांगठ नहि रहलनि जे सभक जड़ि छैक पाई। मास्टलर साहेब तैँ प्रकटत: कहियो देलखिन जे अहाँ अपन जीबैत पाईबला झंझटि किएक ने फरिया दैत छियैक?

वस्तु त: ६-७ साल पहदनि महेश बाबू पाही पट्टीक एकटा एक बिघवा खेत बेचलनि। अपनासँ आब ओकर रखवाली कएल पार नहि लगैत छलनि, तैँ ओकरा बेच देलनि। किछु पाई तैँ जमीनमे फँसैलाह, किछु जमाए सभ लऽ गेलखिन आ बाँकी ४०,००० फिक्सर कऽ देलाह। ओही साल अजयक बेटाक मूडन जमा भेल। अजय येन-केन प्रकारेण दुनू छोट भाएकेँ बुझा देलथि जे बैंकमे पाई राखलासँ की फायदा होएत। ई पाई हमरा दऽ दिअ। हम शेयर बजारमे एकरा लगाएब आ गामक बाँकी सभ काज हमरा जिम्माहमे रहत। हम एक्क हि सालमे एकरा दोबर-तेबर कऽ लेब आदि।

परंतु से भेल नहि। कारण जे हो। दू-तीन साल बीतलाक बाद अजय राम कहानी शुरू केलनि जे हमरा शेयरमे घाटा लागि गेल। तथापि सभ सब्र केने रहल जे की पता शेयरक दाम बढ़ि जाई। परंतु ई की? एक दिन गप्प-शप्पक क्रममे जेठकी दियादनी मझिली दियादनीकेँ कहलथिन्ह- जे अहाँ सभ आब ओई पाईकेँ बिसरि जाईयौ। अहाँक भैंसुर घरक लेल ई केलथि ओ केलथि.....।

आ एही मुद्दापर कनेदान आ दुरागमन संपन्नह होईतहि उक्ते घटना-घटल। महेश बाबू शीघ्रातिशीघ्र एकर समाधान करए चाहैत छलाह। तथापि आषाढ़-

सोनमे गामसँ बहरेताह कोना, तँ दुर्गापूजाक बाद दिल्ली अयलाह, खास कऽ कऽ एहि मामिलाक पंचैती करक लेल।

पहिने पहुँचलाह अजयक डेरापर, ओहिठाम हाँज-भाँज लेलनि ,परंतु ई नहि कहलनि जे एहि काजक लेल आयल छी। विजयक डेरा लगे छल। ओतहु गेला आ समटा बात बुझलनि। भरदुतिया दिन पहुँचलाह दुर्जयक डेरा। अजय आ विजय सेहो रहनि संगमे। फरिछौढ भऽ सकैत छल ओही दिन परंतु दुर्जयक बिनु हाँज-भाँज लेने ओ गप्प कहब उचित नहि बुझलाह। दुर्जयकँ स्पओष्ट त: कहलनि जे हम एहि काजक लेल आएल छी आ एकर समाधानक रस्ताल देखौलेन से तोँ ओई ४०,०००मे हिस्साह नहि लहक। हम कहि सुनिकेँ विजयकेँ किछु दिया दैत छियैक आ एहि तरहेँ हमर इज्जुति प्रतिष्ठा बचा दय। चूंकि गप्प इज्जमत प्रतिष्ठाक छल, दुर्जेय मानि गेल आ रवि दिन सभ भाईक बजाहटि भेल एहि लेल।

पहिने तँ अजयक सामनेमे प्रस्ताएव भेल जे तोँ ४०,०००×२ = ८०,००० केँ तीनू भाईमे बाँटि देहक। परंतु अजय तर्क रखलक जे हम एहि बीच गाममे अलान-फलान खर्च केलहुँ आ तँ हम पाई नहि देब। संगहि ई परिवारक पहिल कनेदान छलैक, एहिमे हिनको सभकेँ शेयर देबए पड़तनि आ ई सभ शेयर नहि देलाह, तँ हिनका सभक हिस्सास कटि गेल। तर्क सूनि सभ अकक् रहि गेल। दुर्जेय स्वायं कनेदानमे प्रस्ताव रखने छल जे अहाँक की पोजीशन अछि से कहू तँ हमहूँ किछु इंतजाम करैत छी। अजय मना कऽ देने छलाह। परंतु हुनका की बूझल छलनि से ओहि सझीवा पाईमे सँ हुनक हिस्सा कटि गेलनि। तहन अजयकेँ कहल गेल जे ई ठीक नहि केलह तँ ओ दोसर प्रस्ताकव रखलनि जे अहाँ गाम जाउ आ खेत बेचिकेँ दुनू भाँइकेँ ४० ४० दऽ दियनु। ई प्रस्तावव तँ किन्नमहु नै मानल जा सकैत छल। पर्याप्ति कहा-सुनीक बाद अंतत: अजय २०,००० देबपर सहमत भेलाह आ ई फैसला भेल जे ओ २०,००० विजयकेँ दऽ देथिन। एवं प्रकारेण महेश बाबू एहि मुद्दासँ जान छोड़ेलनि।

एहि सभ घटना क्रममे अग्रसोचीक बुद्धिक तारीफ करए पड़त। कनेदानसँ ६-७ साल पहिने योजना बद्ध ढंगसँ समटा सझेवा पाई अपन कब्जाफमे करब आ कनेदानक बाद हिस्सा क नामपर काटब, वस्तु तः- हुनक धूर्तता आ चालाकीक उत्कृसष्ट उदाहरण छल। अग्रसोची सुखी रहलाह। बिनु कोनो हुज्जँतिकेँ पहिल कनेदान निकलि गेलनि। सभसँ घाटामे रहल दुर्जय। ओकरा हाथ किछु नै एलैक। लेकिन ओ पर्याप्त खुश छल जे सभटा पहिने देखार भऽ गेलैक। अन्यथथा भाँइमे सभसँ छोट रहने ओ सभ दिन सभक मददि करैत रहितय आ अपना बेरमे कियो नै आबि तैक मददि करए आ तटबक पछतेलासँ की लाभ होईतैक?



सुभाष चन्द्र यादव

पति-पत्नी सम्वाद

(एहि कथामे पहिल सम्वाद पति आ दोसर पत्नीक अछि।)
(एहि नाटकमे पहिल पात्र पति आ दोसर पात्र पत्नी अछि।)

यै, सुनै छिऐ?
हमरा कान छै जे सुनबै?

कखैनसँ हाक दाइत रही!
की छिऐ?

चाह बना रहल छी?
बैठल लोगकेँ एहिना चाह सुझै छै!

करै की छी?
सुतल छिऐ!

तमसाएल छी की ?
नै, हम किए तमसाएब!

तखन एना किए बजै छी?
अहाँ बहीर छी की?

से किए?
आबाज नै जाइए?

कोन आबाज?
सिल्ला के?

अरे अहाँ किछु पीस रहल छी?
तब ने बैठल-बैठल गीरब?

की पीस रहल छी?
मसल्ला, अओर की पीसब? अपन कप्पार!

धुर, अहूँ कथी-कथीमे लागल रहै छी। चाह बनाएब से नै?
अहीं कोन उनटन करै छी! हरदम कहब; चाह बनबै छी? चाह बनबै छी? हम एहिसँ अकच्छ भऽ गेल छी।

तखन छोड़ू।
छोड़ू किए? बना दै छी। लेकिन पीसल होएत तब ने!
बेस, जे अहाँक इच्छा!



मानेश्वर मनुज

जीत

लोक गाममे रहए वा शहरमे सूर्य आ चन्द्रपमा ओहिना उगैत छैक आ डुबैत छैक। सूर्योदय होइत छैक आ सूर्यास्तम होइत छैक। साँझ होइत छैक आ भोर होइत छैक। दुपहरिया रौद आ बसातमे कोनो अंतर नहि होइत छैक। मुदा सुविधामे अंतर होइत छैक। विजुरी आ महल देखि गामसँ शहर आएल लोक छगुन्तामे पड़ि जाइत अछि। छगुन्तामे रघुवीर पड़ल छल। छगुन्तामे कमल सेहो पड़ल छल। जहाजक ड्यूटी ओहीमे सूतब बैसब। अहीमे सभ नित्य क्रिया कर्म। मुदा स्त्रीक दर्शन दुर्लभ। कहियो काल केओ ककरो घुमबए फिरबए अबैत छल तँ सभ देखिते रहि जाइत छलैक। कैसेट चलैत रहैत छलैक। बीच बीचमे एनाउन्समेन्ट होइत छलैक। ककरो बजाएल जाइत छलैक तँ ककरो काजमे लगाएल जाइत छलैक। ड्यूटीकेँ बादो केओ कोनो काज करएसँ मना नहि कऽ सकैत छलैक। तँ जहाजसँ बाहर निकलि घुमबए फिरबए आवश्यरक छलैक।

कमल जहाजसँ निकलल आ मुम्बइयक महल, मुम्बिइयक सड़क आ मुम्बिइयक स्त्रीछ शरीरकेँ देखैत आगाँ बढ़ैत जा रहल छल। मस्तीममे चलि रहल छल। कखनो रिजर्व बैंकक सामने पार्कमे बैसैत छल तँ कखनो म्यूाजियमक सामने बस स्टेन्डरपर कृष्ण चन्दबरक कथाकेँ याद करैत छल तँ कखनो लव प्वाइन्टजपर बैसि लघु कथा पढ़ैत छल। एक नजरि लघु कथापर तँ दोसर नजरि अगल बगलमे बैसल युगल जोड़ीपर रहैत छलैक।

युगल जोड़ी पहिने समुद्र दिस पीठ कऽ कए बैसल छल आ जेना जेना सूर्य समुद्रमे समाएल जाइत छल युगल जोड़ी समुद्र दिस घुमल जाइत छल। सूर्य डुबल। युगल जोड़ी समुद्र दिस घुमल। आगाँ बढ़ि नमहर नमहर पाथरपर जा बैसल। जतए दस बीसटा प्रेमी प्रेमिका ओतै ओकर व्यगवसाय करएवाली सेहो। के कहैत अछि प्रेम न बारी उपजे प्रेम न हाट बिकाए। जकरा प्रेम करऽ नहि अबैत छैक सेहो प्रेम कीनि सकैत अछि।

कमल मंटोक कथा पढ़ि रहल छल। सभसँ प्यगर बच्चाछ ओ अछि जे

एखन धरि जमीनपर पैर रखलक नहि अछि। सभसँ प्रिय बात ओ अछि जे हमरा अहाँक कानमे एखन कहक अछि। जाहि हेतु हमर ठोर फुस फुसा रहल अछि; किन्तु एखन धरि अहाँसँ कहलहुँ नहि अछि।

बगलमे दूटा किशोरी बड़ स्वभाविक ढंगसँ गप्पह सप्पख कऽ रहलि छलि, जेना दूटा सुग्गाज वेदक चर्चा करैत होए जे: वेद स्वढयं प्रमाणित अछि कि एकरा प्रमाणित करक प्रयोजन छैक। किशोरी गप्पा कऽ रहलि छलि जे प्रेम करब नीक बात छैक कि अधलाह। एक ओकर जवाब स्पएष्टत शब्दामे जानऽ चाहैत छलि मुदा दोसर ओकरा सवालक जवाब किछु छिड़िआएल शब्दे् दैत छलि।

पहिने ओ बाजलि: प्रेम एक अधलाह काज छैक। फेर किछु प्रश्नि कएलाक बाद बाजलि: किछु सीमा धरि रहलासँ प्रेम एक नीक काज छैक। आ अंतमे एहि बातपर आएलि जे प्रेमसँ बढ़ि कऽ जीवनमे छैहे की। जी भरि कऽ प्रेम करू। अइमे कोनो पाइ खर्च होइत छैक। दुनियाकेँ अहाँ कने प्रेमक नजरिसँ देखियौक। दुनियोँ अहाँकेँ प्रेमक नजरिसँ देखत। प्रेम न बाड़ी उपजे, प्रेम न हाट बिकाय, राजा प्रजा जेहि रूपें बँटि बाँटिकेँ खाए।

पहिल पुछलकैक: देखला आ सुनलासँ प्रेम भऽ जाइत छैक; मुदा कि एतवासँ संतुष्टि भेटैत छैक आदमीकेँ? एना कऽ पहिल दोसरासँ एकपर एक सवाल करैत छलि आ चालाकीसँ दोसरक पेटक बात निकालि नोट कएने जा रहलि छलि। सभ बात ओ दोसराक पेटसँ निकाललाक बाद ठहक्का दऽ कऽ हँसऽ लागलि आ दोसर नम्बरक किशोरीसँ कहलक: तँ नीक जकाँ अइमे रमलो छाँह आ हमरासँ सभ बात छुपबैत रहलाँए हाँ। आब सत्त कह जे तोँ ककरासँ प्रेम करैत छाँह आ एखन तक तोँ कहाँ धरि पहुँचलाँ हाँ?''

कमल पाँछौ घुरि तकलक। सूर्य बाँस भरि पानिमे चलि गेल छलैक। कमल आ ओइ दुनू किशोरी छोड़ि सभ केओ अप्र्य मुँह समुद्रक अन्हामर दिस कऽ लेने छल आ युगल जोड़ी सभ एक दोसराकेँ कसि कऽ पकड़ि रहल छल। कमल दुनू किशोरीक बात सुनि रहल छल; मुदा जखन ओ दुनू बात करिते ओतँसँ उठि गेलि तँ ओहो उठि कऽ सड़कक कात पार्कमे जा बैँचपर एसगर बैसि गेल। सामनेक बैँच सभपर कतौ दू एकटा स्त्री आ दू तीनटा पुरूषक एक संग बातचित कऽ रहल छल। सामने एक ठाम एक पुरूषक संग दूटा स्त्री छलैक। दुनू स्त्रीछ पुरूषक दुनू कात एक संग घासपर बैसल छलैक।

कमलकेँ याद अएलैक गामक ओ गप्प । जखन ओ परिक केश पकड़ैत छल तँ शशि टीक पकड़ि लैत छलैक आ जखन परिकेँ छोड़ि शशिक केश पकड़ैत छलि तँ ओम्हरसँ परि बाँहि पकड़ि घिचैत छलैक। ताहिपर ओ खिसिया कऽ परिक गाल पकड़ैत छल। तखन शशि गरदनि पकड़ि लैत छलैक। एना कऽ दुनू ओकरा उछन्नरर दैत छलि ताहिपर ओ खिसिएबाक नाटक कऽ दुनूक अंग अंग संग खेलौड़ करैत छल। एक बेर परिक हाथ मचोड़ि जमीनपर खसाए देने छल आ हाथ दुनू पकड़ि लेलकैक। फेर परिकेँ छोड़ि शशिकेँ जमीनपर

ओघरा टाँग पकड़ि घिसियाबए लागल छल। खेल खतम हेवाक नाम नहि लऽ रहल छलै। गाल बाँहि कि आब ओ एका एकी दुनूक छाती तक चलि जाइत छल। परि हारब नहि सिखने छलि। मुदा शशि बीच बीचमे तंग आबि परिसँ मदैत मँगैत छलि आ परि शशिकेँ छोड़बए जाइत छलि, मुदा स्वायं ओकरा हाथमे आबि जाइत छलि। परिकेँ पीठ भरे जमीनपर लेटाए दुनू हाथ पकड़ि कि दुनू पएर पकड़ि घिचलासँ ओकरा साइत क्रँलिंग करऽमे नीके लगैत छलैक। पकड़ि कऽ घिचलाक बादो ओ हारि मानए वाली नहि छलि आ तीनू लगातार हँस्सीऽक आ आनन्दक चरम उत्कार्ष तक बढ़ल जा रहल छल।

शशि आ ओ पूर्ण परिचित छल। ओकरा दुनुक बीच एहि तरहक कोनो लज्जसयाक बात नहि छलैक। ओ शशिकेँ संग औपचारिकता करैत छल आ चाहैत छल जे परि हारि मानि ओकर चोराएल चप्पकल दऽ दियाए। एहि बेर ओ परिक देहपर पड़ि ककुड़ा बना शक्तिविहीन कऽ देलक।

शशि चिचिया उठलि: अहिरे दैवा। बीच अङनामे। जुलुम भऽ गेलै। मुदा नहि। परि साड़ीकेँ धोती बना अपना शरीरकेँ पूर्ण सुरक्षित रखने छलि आ एना जाँघमे केँच लगाए देलाक बादो ओ जीतऽ नहि देलकैक आ अंतमे वैह हारि मानि पाएरक चप्पएल ओतै छोड़ि चलि देलक। दूनू जीतऽ नहिए ने देलकैक। ओकर जिद्द चकनाचूर भऽ गेलैक।

रातिमे जखन दुनुक मिलन अपना घरमे भेलैक तँ शशि पुछलकैक: अपना घरमे भेलैक तँ शशि पुछलकैक: आइ बीच अङनामे अहाँ परिकेँ किछु बाँकी नहि रखलियैक''।

पार्कमे तहिना एक पुरूष आ दूटा स्त्री प्रेमालाप कऽ रहल छल। पुरूष जखन एककेँ पकड़ैत छल तँ दोसर छोड़बैत छलैक आ जखन दोसरकेँ पकड़ैत छलैक तँ पहिल छोड़बैत छलैक। एहि क्रममे पुरुष दुनुक अंग अंग तक जाइत छल आ तहिना दुनू स्त्रीख सेहो।

कमलकेँ ओइ तीनूक खेल देखैत देखैत आकच्छं लागि रहल छलैक मुदा ओकर सभक खेल समाप्त नहि भऽ रहल छलैक। प्रति पल उमंग उत्साखह आ उत्तेजना नव अनुभूतिक हेतु आगाँ बढ़ले जा रहल छलैक। एक बेर एक दिस मुड़ल फेर दोसर दिस। एक स्त्री छोड़बक बहन्नेह अपना दिस घिचैत छलि आ जखन देह स्पेर्शक आनन्दक चरम उत्कर्ष दिस जाइत देखाइ दैत छलैक तँ दोसर ईर्श्या वश ओकरासँ पुरूषकेँ हेट करैत छलि आ अपना दिस घीचि लबैत छलि। ई क्रिया त्वरित गतिसँ लगातार दोहराएल जा रहल छल, मुदा समाप्ति नहि भऽ रहल छल। कमल सोचि रहल छल जे ई सभ एतँसँ कतए जाएत से देखी। कोनो घर दिस जाएत कि होटल दिस जाएत कि गाड़ीमे बैस चलि जाएत। मुदा समए जखन बहुत आँगा बढ़ि गेल छलैक आ ओ सभ ओतँसँ उठि नहि रहल छल तँ स्वतयं सभ प्रश्नँ ओतै छोड़ि अपना जहाजक लेल रस्तास नपलक। काल्हि सेलिंग छलैक। दू मास तक मुम्बनइयक सड़क, मुम्बजइयक महल आ अत्यासधनिक फैशनसँ रंगल ढ़ंगल युगल जोड़ीकेँ नहि देख सकत।

मुदा नहि जहाजक सेलिंगक प्रोग्राम करीब पन्द्रह बीस दिनक हेतु स्थिगित भऽ गेलैक। आनदिन ओ कोनो साहित्यिक पत्रिका हाथमे लेने एसगर घुमैत छल। कतौ कोनो गाछ तर बैसैत छल कि लगातार दूर दूर चरि चलिते रहैत छल। आइ रघुवीर आ ओकर संगी इरफान कमलकैँ संग कऽ लेलक, ओतँ हेतु जतँ ओ दुनू बरमहल जाइत छल आ एक बस मात्र ओकरा दुनूकेँ सही जगहपर उतारि दैत छलैक।

कोठापर सोफा लगाएल छलैक। तीनू बससँ उतरि सीढ़ी चढ़ल आ सोफापर जा बैस गेल। देह श्रमिक सजि धजि कऽ देह सुन्दरी बनलि छलि। एक एकटा रघुवीर आ इरफानक बगलमे बैस गेलि। ओ सभ पूर्व परिचित छल। अपना प्रोग्रामक अनुसार एक एकटाकेँ हाथ पकड़ि दबौलक। यानी आइ तोरा चुनि लेलियौक। आ इशारा केलकैक आँगा बढ़क हेतु।

नम्हर हाँलमे नेवार मढ़ल लोहाक खाट लगाएल छलैक। थोड़ेक काल ओ दुनू गप्प सप्प केलक आ नर्स जकाँ मरीजकेँ देखक हेतु खाटकेँ चारू दिससँ डंटा ठाढ़ कऽ परदा लगौलक रघुवीर एक खाटक गद्दापर जा बैस गेल। इरफान सेहो दोसर खाटक गद्दापर जा बैस गेल। दुनू देह सुन्द्री रति क्रियाक हेतु खाटपर चलि गेलि। थोड़ेक काल गप्प कएलक आ फेर गद्दापर पड़ि रहल। रघुवीर ओकरा देहक संग खेलब शुरू कऽ देलक। इरफान सेहो दोसरक संग आइ नव अन्दाज आ उमंगसँ खेलब शुरू कऽ देलक। दुनू दिलक मरीज बराबर ओतँ थोड़ेक शांतिक एहसास लैत छल। इरफान अपना उद्वेगक संग आतुर छल मुदा ओ, सीमा अप्पन मूड़ी परदासँ बाहर निकालि सिगरेट पीबए लागलि। ओकर गरदनि सेहो खाटसँ बाहर लटकि रहल छलैक। कमल ओम्हनरे बैसल छल। ओ पूछि बैसलैक: भऽ गेलैक? ''तँ जवाब देलकैक नहि।''

कमल ओतँसँ उठि सीढ़ी दिस बढ़ल जे निच्चाँ उतरि आब बसे स्टेन्डनपर इन्तवजार कएल जाए। ताबे एक देह श्रमिक निच्चासँ उप्पनर आबि रहल छलैक। छोट गोर नार मुदा कठगरि। तनल छाती देखि कमल अप्पन हाथ लपका जकाँ बढ़ा देलक आ आधा सीढ़ीसँ निच्चाँ उतरऽ लागल कि ओ ओकरा माथपर उपरेसँ हाथ मारलक। ताबे ऊपरसँ दुनू मालती आ सीमा आबि गेलैक आ पुछलकैक: की भेलौक गई? ''तँ कहलकैक सीढ़ीपर पटसँ लपकि लेलकाए। पइसा बचा कऽ राखत आ मगनीमे मजा लेत''।

इरफान आ रघुवीर ताबे बाथरूममे साफ ----------सफाई कऽ रहल छल।

सीमा कहलकैक: हँम तँ एही लाए एकरा निच्चाँसँ ऊपर बजौलियैक। हम सभ तँ अही सभक छी ने। एतँ किछु करू अपराध नहि मानल जाएत। बाहरमे ई सभ अपराध छैक। कतौ ताकि झाँकि देबैक से अपराध। धक्का देबैक तँ अपराध आ एना लपकबैक झपटबैक तँ से अपराध मानत। मुदा एतँ पाइ खर्च करू आ आनन्दँ लिअऽ। एतँ अहाँ बलात्कौरी नहि कहाएब। लोक कमाइ खटाइए कथी लाए? ई पसंद अइ तँ ई अहीकेँ अइ। लऽ जाऽ एकरा आ

करेजापर चढ़ि मड़मड़ा दिअऽ। एतँ केओ शर्माएत नहि। केओ लजाएत नहि। ओहो सीढ़ीसँ ऊपर चढ़ऽ वाली कहलकैक : हाँ तँ। ठीके तँ कहैत अइ। ताबे रघुबीर आ इरफान आबि गेल। दुनू पुछलकैक ओकरा सँ ; की भेलैक? कमल कहलकैक: चल, आगाँ कहबौक।'' आ तीनू ओतँसँ विदा भऽ गेल। आ अपना अपना स्थाकनपर गेल।

एक दिन इन्सटीच्यूटक टेरसपर कमल मदनक संग दूग्ला समेरम भरि पहुँचल। मदन कमलकेँ अपना राधाक विषए घंटा घंटा किछु सुनबैत छलैक। जिनगीक अनेक पक्षपर ओ ओकरा कहैत रहैत छलैक, मुदा कमल घोटँ भरैत छल कथा जगतक अथाह सागरमे डुबकी लगबए लए। ओ मदनकेँ कथा तत्वद आ किछु उत्कृकष्का कथाक विषए कहए लगलैक। मुदा मदन ओकरा मुँहपर हाथ धऽ राधाक विषए कहए लागल। ओकर ओ कथा सत्यज कथा छलैक। पहिल बेर जखन राघा भेँट भेल छलैक तँ ओ ओकर हाथ दिस तकलक हाथ सुन्न लगैत छलैक। बाजल: ''एक दोकानमे एतेक सुन्दर चूड़ी सभ देखलिए जे मोन ललचा गेलाए। ओ चूड़ी तोराँ हाथमे खुलतौक''।

ताहिपर राधा कहलकैक: ''हमरा कतँसँ पाइ आएत''? ताहिपर मदन चट्टसँ जेबीसँ बीस रूपैया निकालि कऽ देलकैक आ कहलकैक, ''जो, ओइ दोकानमे चूड़ी पहिरले गऽ''।

राधा खुशीसँ रूपैया लऽ लेने छलैक आ चूड़ी पहिरि आएलि छलि। आ मदनक एहि उपकारसँ ओ बहुत खुश छलि। कतौ मदन जाइत अबैत छल तँ राधा दौड़ि जाइत छलि। ओ ओकरापर आकर्षित भऽ गेलि छलि। दुनूक बीच चारि पाँच साल प्रेम रहलैक मुदा बादमे राधा ओकरा संग प्रेम तोड़ि लेने छलि; एकरे तड़प छलैक मदनक मोनमे। मदन तँ कहि रहल छलैक जे आजुक जीवन अनिश्चितासँ भरल अछि।

चारू दिस पाथर जकाँ सिर्फ धोखे धोखा पड़ल अछि। सदिखन ठेस लगबाकसँ भावना अछि। प्रेमोमे धोखा छिपल रहैत छैक। आजुक जीवन सिर्फ सत्तपर आश्रित नहि अछि। जीवनमे छल आ संदेहक अहं भूमिका छैक। चिड़ै कखन केमहर घूमि जाएत, हवा अप्पमन रूखि कखन बदलि लेत, माल जाल कखन बमकि जाएत आदमी नहि जनैत छैक।

मदनकेँ भावुक भेल जाइत देखि कमल फेर कथा जगतक बात उठौलक। ताहिपर मदन कहलकैक: हमरा कोन काज अछि कथा जगतसँ; हमरा कोनो लेखक बनक अछि। हम तँ अपन जिनगी जिबैत छी। हमरा कोन काज अछि कल्पनासँ। हमरा कोन काज अइ सभसँ।

मदन ओकरा बातकेँ काटि दैत छलैक तँ ओ लगातार 'घूँट' लैते गेल छल आ तहिना मदन राधाक गममे डुबल जाइत छल।

दुनू तरमराइत ओतँसँ उठल आ बाहर निकलल आ चलैत-चलैत सोझे सिनेमा हॉलक सामने जा कऽ ठाढ़ भऽ गेल। थोड़ेक काल दुनू पोस्टर

देखलक। मदन कहलकैक: हम तँ सिनेमा देखब।''

कमल कहलकैक, ''हमरासँ सिनेमा हॉलमे तीन घंटा बैसल पार नहि लागत''। ई सिनेमा हॉल नहि जेल अछि। हम एहिमे बन्द नहि होएब। बाँकी दुनियाँ कतेक सुन्दिर छैक! कतेक फलल फूलल छैक! कतेक हरियर-हरियर छैक! हम एहि फुजल दुनियाँमे रहब। केम्हरोसँ हवा चलैत छैक, तँ केम्हरोसँ विजुरी चमकैत छैक। केम्हरोसँ मेघ उठैत छैक तँ केम्हरोसँ वर्षा शुरू भऽ जाइत छैक। एकरा कहैत छैक फुजल दुनियाँ। पक्षी सन स्वतन्त्रह दुनियाँ। आकाशमे जतँ तक जेवाक होए चलि जाऊ। जल आ जमीनसँ खेल करब।

ओ हँलसँ बाहर निकलल तँ बदबदा कऽ वर्षा शुरू भऽ गेलैक। कमल देखलक सड़कपर पाँनि लागि गेल छलैक, मुदा ओ सोचलक जे ई पानि अप्पलन प्रोग्राम नहि बदलि रहल अछि तँ हम अप्पन प्रोग्राम केएक बदलू। वर्षा होइत रहत आ हम चलैत रहब।

चम्पा रघुवीरकँ बॉहिमे पजिया रूममे लऽ जाइत छलैक। जॉघपर बैसि गरदनि पकड़ि धरि रूममे रहैत छलि ओकरा संग। बाहर एलाक बादो ओकरा बगलमे सटि कऽ सोफापर बैसैत छलि। बिदा हेबाक काल फेरसँ पाँच मिनटक लेल अढ़मे लऽ जाइत छलि आ ओकर दुनू हाथ पकड़ि अपना करेजापर रखैत छलि आ ओकरा विदा कऽ खिड़कीसँ बहुत-बहुत काल धरि ओम्हर निहारैत रहैत छलि। कमलकँ दोस्ति सभ अप्पन पर्स आइडेन्टीकार्ड आ अउठीकँ सम्हाहरि कऽ राखक हेतु लऽ जाइत छल। कमल रिसिप्सनमे चुपचाप बैसल छल। ओतुक्का स्टनन्डर्ड किछु अधिक छलैक। फ्रिज, टी.वी., वाथरूम, एयर कूलर आ ए.सी. रूम सभक व्यवस्थाा छलैक। एक गोटे एकटा छौड़ाक संग एलैक आ किछु पीबाक आर्डर दैत अन्दर घुसि गेल आ कहलकैक ओकरा सभक हेड कऽ–संगमे एवाक हेतु। ओ सभ चीज लऽ भीतर गेलैक आ वापस हँसैत अएलैक आ बाजलि: ''आइए छड़वेक दिन खराप छन्हि।''

कमलक बगलमे परी सन एक देह श्रमिक सुन्दरी आबि कऽ बैसि गेलैक आ ओकर हाथ पकड़ि लेलकैक आ ओकरा हाथक आँगुरमे अप्पन आँगुर सन्हिया देलकैक। कमल ओकरासँ ओकर नाम, ठेकान, पता, इत्यादि पुछए लगलैक। ओ बुझौएल जकाँ छ-छी च-ची लगा कऽ एक अजीब सन भाषामे ओकरासँ पूछि रहल छलैक आ ओ ओही भाषामे हँसि हँसि कऽ जवाब दऽ रहल छलैक।

कमल कुर्सीपर बैसल छल। ओ ओकरा जाँघपर आबि बैस गेलैक आ दोसरो हाथक आँगुरमे आँगुर सन्हिया देलकैक। कमल निजीर्व जकाँ अपना शरीरकँ स्थिर रखने छल आ ओकरा शरीरमे उत्तजेना भरए चाहैत छलि।

ओ कहैत छलैक जे ओ सभ गरीब अए। बाप मास्टरक काज करैत छैक। दीदी नम्हर शहर देखबए लाऽ अनलकैक आ कहलकैक किछु दिन छोट छिन काजो कऽ ले घर भाड़ाक। मुदा ओकरा आदमीकँ प्रसन्नह करक काज लगा देलकैक। आदमीकँ प्रसन्नी करैत ओकरा सुख भेट रहल छलैक आ ओ बजैत छलि जे ओ ओतँ बड़ड खुश अछि। दीदी मानैत छैक। कथुक दुःख नहि

छैक। अप्पन मानैत छैक। कहियो काल बाहरो जाइत अछि। केओ अप्पने घर लऽ जाइत छैक तँ केओ होटल। जहाजमे सेहो जाइत अछि। तीन दिन ओहीमे रहल अछि। बहुत पाइ कमौनी छलि। आब कतौ अबैत जाइत डर नहि होइत छैक। कहियो काल सजि-धजि कऽ सिनेमा सेहो जाइत अछि।

ओ कमलक जाँघपर मोटर साइकिल जकाँ पैर फैला कऽ बैसलि छलि। ओ कमलकेँ कसि कऽ पजिया कऽ पकड़लक आ छातीकेँ-छातीसँ मिलौलक। कमलक शरीरमे कोनो तरहक उत्तेजना नहि अएलैक। ओकर दुनू हाथ पकड़ि कपड़ाक तरसँ अपना छाती धरि लऽ गेलि आ ओकर तरहत्थीकक ऊपर अप्पन तरहत्थी रखने रहल। कमल ने तँ ओकरा किछु करएसँ प्रतिवाद करैत छलैक आ ने कोनो तरहक उन्मानद देखबैत छल। ओ पाँछा दिससँ हुक छोड़ा लेलक। कमल हाथ हटबक कोशिश केलक तँ चट्टसँ ओकर हाथ पकड़ि लेलक आ ओकर हाथ अपना छातीपर लऽ गेलि। आब ओकरा लगलैक जे कमल हाथ हटबक कोशिश नहि कऽ रहल अछि। हाथ छोड़ि देलौं पर हाथ ओतैं रखने अछि। ओ अपन हाथ कमलक दुनू जाँघक बीच सन्हिया देलक। एहि क्रियासँ कमलक आँगुर नहूँ-नहूँ गतिमे आबए लगलैक। ओ प्रायः कमलक हाथ अपना शरीरक सभ क्षेत्र तक लऽ गेलि छलि तहिना ओ बहुत देरी तक अप्पन हाथ ओकरा सम्पूर्ण शरीरकेँ टटोलैत उत्तेजित करैत असफल देखल जाइत छलि। ओकर दीदी ओकरा अपस्याँत देखि धूप दीपक संग कामदेवकेँ प्रसन्न करबाक हेतु नाचए गाबए लागलि। ताबे इरफान आ रघुवीर रूमसँ निकलि गेल छल। आ ओ निराश भऽ मुँह विधुआ कऽ अलग बैस गेलि छलि।

हारि कऽ दोस्तग सभकेँ कहलक: एकरा कहकने चलक हेतु।'' ताहिपर रघुवीर डाँटि देलकैक: फाल्तू परेशान किएक करैत छही। ई अहिना हमरा संग आएल छल।''

जाइ काल ओकर दीदी गारि देलकैक: हिजरा नहि तन।'' ताहिपर ओ जवाब देलकैक: नइ गइ! से बात नहि छैक। ताहिमे तँ धाकर अछि मुदा की जानि एना किएक भेलैक।''

एना किएक कऽ रहल छैक से रधुवीर नीक जकाँ जनैत छल। मेडिकल कॉलेजक जिमना जियमक बगलक घटनासँ कमल बहुत दुःखी छल आ ओ ओहने गलती फेरसँ दोहराबए नहि चाहैत छल जिमना-जियमक बगलमे रेल लाइनसँ सटल एक साधारण साड़ीमे ठाढ़ि एक सम वयस्काबकेँ देखलक तँ बुझेलैक जेना ओ ओकरे गामक पनि भरनी होइक। ओ पुछलापर सैह कहलकैक जे मालिक गामसँ लऽ अनने छथि घरक काज करक हेतु। मोन एसगरि नीक नहि लगैत अछि तँ एम्हर आबि जाइत छी। ओ जगह लवप्वांट इन्टनक लगेमे छलैक। कमलक मोनमे सेहो लवक बात आबि गेलैक मुदा झाँझ उन्हावरि भऽ गेल छलैक। ओकरा ओ जामुन बिछैत मालती लगलैक। ओ गाछीमे मालतीक पेटक चमड़ी पकड़ि दवा देने छलैक आ अपने हाथसँ जामुन नहि बीछि ओकरा खोइछा मेसँ जामुन मंगैत छलैक आ जामुन लेबक बहन्नो

ओकर नाभि स्पकर्श करैत छल। मालती एसगरि छलि तैँ डेरा कऽ भागि गेलि छलि। मुदा ओकर हाथ पकड़लाक बादो ओ डेराएल नहि छलि, मुदा पुलिसकेँ देखि कमल ओतँसँ चलि देने छल। ओ रोकैत रहि गेल छलैक। कहैत रहि गेलि छलैक जे हवलदारसँ नहि डेराइ। ओकर बोल कमलपर नशाँक काज कएने छलैक आ दोसरो दिन ओ कनेक्शन देरीसँ ओतँ चलि गेल छल। ओ कमलकेँ भांङ आ भाटिक बीच अढ़मे लऽ गेल छलैक। कमल किछु नहि बुझि रहल छल जे ओ ओकरा कतए लऽ जा रहल छलैक। ओ ओकरा जेबीसँ पर्श निकाललक। दू एकटा फोटो छलैक, किछु कार्ड आ किछु रूपैया। ओ सभ रूपैया गनए लागलि आ गनि कऽ ओकरा वापस कऽ देलकैक आ कहलकैक: एहिमेसँ हमरा चालीस रूपैया दिअऽ? "

ओ पुछलकैक, "किएक?"

"नहि, अबलाकेँ किछु देबक चाही। हम सभ अबला छी। पाइ देलासँ पाप कटित होइत छैक ने तँ श्राप पड़ैत छैक। ई सभ हमर मजूरी अइ।"

"ओ कहलकैक देब ने, एखन तँ बैसवे कएलहुँ अछि।"

ओ बाबू, बौआ कहि तेना ने परतारि चुचकारि कऽ कहलकैक जे ओकरा भेलैक जे अपन करेजो काटि कऽ दऽ दियैक। ओ पाइ निकालि कऽ दऽ देलकैक।

ओ अप्पन ब्लाजक बटन खोलि ओकरा जाँघपर मूडी धऽ सूति रहलि छलि। ओकरा भेल छलैक: लवकेँ लिए कुछ भी करेगा। ओकरा ओ बिनु बियाहलि काँच कुम्मरि लागल छलैक जे ओकरापर तन मनसँ न्योछावर छलैक।

रघुवीर कहने छलैक: तोँ सभसँ स्नेह रखैत छही ताहीपर तोरापर द्रवित भऽ जाइत छैक। जो जाहुकेँ सत्यम स्नेहु, प्रभु कृपा मिलहुँ न कछु सन्देवहु। हम पाँचे बजेसँ ओकरा ताकि रहल छिऐक मुदा हमरा ओ नहि भेटल आ तोरा भेट गेलौक। मुदा ओकरा बादमे पता चललैक जे एम्हर-आम्हर जे ठाढ़ रहैत अछि गन्दलगीक कारण बीमारीसँ ग्रसित रहैत अछि। एकरा सभकेँ गामक गोरी नहि बुझियैक,

कमल वर्षामे भिजैत-तितैत खतराक बिना पर्वाह कएने एस्गर ओकरासँ मिलए चाहैत छल जे ओकरा उत्तेजित करक ओतेक प्रयास कएने छलि आ विफल भऽ गेलि छलि। ओकर दीदी ओकरा हिजरा कहने छलै तँ वैह ओकरा दिससँ ओकरा लेल बाजलि छलि जे ई तँ धाकर पुरूष अछि, मुदा नहि जानि एना किएक भऽ रहल छैक।

आइ ओ अपना आपकेँ ओकरा समर्पित कऽ देबए चाहैत छल। मुदा लाख कोशिशक बादो ओतँ नहि पहुँच सकल। ओ तँ रघुवीर छल जे एक बेर ओतँ ओकरा ई गली ओ गली घुमवैत फिरबैत लऽ गेल छलैक। ओकरा कोनो रोड आ गलीक ध्यान नहि छलैक। वर्षा नाली आ अन्हैर-विहारिक चिन्ता तँ ओ नहि कएने छल।

लौट कऽ एक बजे रातिमे सुराक्षित अपना घर यानी जहाजमे आएल।

भिजल-तितल पेन्ट लऽ शर्ट आ जुत्ता निकालै लगलैक जे: वाह! आइयो हम जीत गेलहुँ। नशाँमे केहन खोंट बात मोनमे आबि गेल छल आ केहन खतरनाक प्रतीज्ञा लऽ लेने छलहुँ जे पानि, विहाडि आ अन्हतरसँ की हम हारि जाएब आ एकरा डरे सिनेमा हॉलक बन्द वातावरणमे अपना आपकेँ तीन घंटाक हेतु कैद कऽ देब।'' ओकरा कहाँ बुझल छलैक जे एतए पूराक पूरा बस ट्रक आ कार पानिमे कहियो डूबि गेल छलैक। ओकरा कहाँ बुझल छलैक जे एतए पानि बहक हेतु सड़कक निच्चा केहन केहन नाला छैक। आइ तक कतेक की घटना आ दुर्घटना एतए भेल छैक ओकरा थोड़े बुझल छलैक। तथापि ओ अपना बेडपर गेल तँ लगलैक: वाह हम योद्धा छी'' गलत राहपर पएर राखियो देलाक बाद ओकर आत्मो ओकरा गलत काज नहि करए देतैक। भोरमे सूर्य उगलैक तँ ओकरा नव संसार देखाइ देलकैक। वाह! गॉड ऑफ विग थिन्गकस।

एक सालक बाद ओही जगहपर अपनाकेँ आया कहए वालीसँ ओ पुछलकैक: अहाँ हमरा चिन्हैत छी? '' तँ चट्टसँ जवाब देलकैक, ''अहाँकेँ एक्के सालक बाद बिसरि जाएब।'' ओकरा आश्चर्य लगलैक। ओतेक ओतेक लोकसँ ओकरा सभकेँ मुलाकात होइत छैक मुदा एखन धरि कमलकेँ याद रखने अछि।

पचीस-छबीस वर्षक बाद समुद्रक कात ओ अपना स्मृतिकेँ ताजा करक हेतु बैसल छल तँ सभ बात माथमे नाचए लगलैक आ ओकर माथ दर्दसँ फाटए लगलैक। ओ ओहिना सड़कपर दूटा किशोरीकेँ जाइत देखलक। एक मोटकी आ एक पतरकी। सोचलक: ई सभ ओकर सभक बेटी भऽ सकैत अछि।

ओ गाम गेल। ओकरा होइत छलैक जे एतेक दिनुका बाद परिओ सभ बात विसरि गेल हेतैक। एक दिन ओ पुछलकैक: याद अइ की बिसरि गेलहुँ: हमर सभक खेल।

परि चट्टसँ जवाब देलकैक: हाँ, देखलहुँ जीतए नइ ने देलहुँ। आ ओकर करेजा तनि गेल छैलैक।



परमेश्वर कापड़ि

धनुषा, नेपाल।

धुमगिज्जर

नामी-गरामी वंशक कहबैका बड़ैता लोक छथि डागडर साहेब । मैथिली विभागक पहुँचल प्रोफेसर। ई आओर बात जे जतेक छथि नइँ ततेक देखबए लेल अफसियाँत रहैत छथि। बपौती धनक बले घाँटी बजबएमे कोनो चुक-कोताही नहि करैत छथि। ताहूमे एमरी शहरक तीन कठबा ओ खुआखानि घराड़ी बिकाएल छन्हि। धन दंरभंगा की दोहरी अड्डा रहबे करतनि ।

से एहि शुद्धि लागनमे हिनकर छोटकी दुलरी ननकिरबीक कन्या दान छन्हि। एहि बेर अगते नियार भेलै जे बरियातीकेँ भोजन बास्ते अपना हाथक, अपन आँखिक देखल शुद्ध नीक माँउस खातीर किछु पूर्वे खस्सी किनलनि। तँ से कैला तँ असल भितरिया बात रहै जे हिनकर पड़ोसिया पैकारक खस्सी रहै आ गप्प-सप्प दऽ कऽ नफगरे माल बेचए लाथे उन्टौ-सुन्टा पढ़ा आँखिपर झोल मारि देलकन्हि। दू ढौआक खस्सी तीनमे किना अपन सुरखुरु भऽ गेल फेरहा। तहूमे कि तँ रहनि खगता दू गोट खस्सीक तँ घटी बेसी लेल तीनटा बेसहि लेलाह। नइँ कहू बरियातीकेँ कनिको कमि गेलै तँ नाहँसी आ सोहरा भऽ जाएत तैला जैं चालीस तैं घपचालिसो रहओ ।

तिरपित नेहाल डागडरनी खस्सीकेँ आबए बला बरियातीयोसँ बेसीए ध्यानि देबए लगलखिन्ह । कोनो उपेक्षा कोताही नइँ हुअ पाबए ।

आबएले तँ अएलै हेंड़े किनि कए आब भऽ गेलए गराक घेघ, एकरा चराएत बझाएत के? कनिके कालमे ततेक ने झौहरा अंकाल कएलक जे डागडर साहेबकँ टेन्शन बढ़ए लगलनि । टहलनी कहलकै मर, अपन दूध उठओनाबाली हएबे करै । चराओन पोसान ओकरे दऽ दियौन । उहे चरा बझाकऽ पोसतै ।

बड़ बेस बड़ बढियाँ, शुभ शुभ कऽ नीक जेकाँ पक्काह पक्कीक गछा खरियारि कऽ ओकर जिम्मा लगाओल गेल।

गम्हओरियाबाली दूधबालीक सैंझली ढ़िलही बेटी गछने छलै, ओकरा बास्ते

सेहो किटुआ पोसान छुटिया देल गेलै।

खँसी पिच्छो दू चारि मुट्ठी चाउर, बदाम भुजा बास्ते अलगसँ सेहो । भुजा भूजैले आमक ढेङ जरना लेल भेटलै । ढिलही माए आबले बलैया नितराए लगली गे माइ, अगबे चाउर दालि देने तँ पेटमे चलि जएतै। जौले रिहन्तै नइँ तौले खएते केना? मर तेकरो ला भनसिया चाही । ओहि भनसियाकँ पेटपर लात हिनका आउरके मारल जएतनि ?

हे लिअ भेल दू पसेरी चाउर अहूँकँ। गुड़िया बियाहमे अहुँ जै सँ प्रसन्न रही। गम्हरियाबाली सतखेलिया रहए, असली घैंहरि खेलाड़ि । खँसीकँ बूझऽ लागलि गोनू बाबूक बिलाड़ि ।

दिन दशो नइँ बीतल हएतै कि दौड़ल आएल हबेलीमे । गुड़िया माए हपसले बहरेली महखरसँ, यै गम्हरियाबाली। खँसीकए समाङ नीके ना अइ ने।

दुर कि नीक रहतै। पहिलका बान्हल खुटेसल खँसीकँ पेट बैठल रहै । तैला खाएले अहगरेसँ छौड़िया सभ लपेलप भुजाभरी देलकै, से आब पेट मुँह चलै हए।

से सूनिते हहाएले गेलीह डागडरनी गोसाइ घर, हे भगवती! केहन भाग करम भऽ गेलै एहि छौड़ियाक से नइँ जानि। ओइ दिन गहुम पिसबए गेलै तँ आँटे दोखरा रहि गेलै। दहीक खोर पौड़बला जेकरासँ साइ गछा कऽ अएलै तेकर महिसे दू दिन रहि कऽ बिका गेलै। केहुनाकऽ खँसी बचा कऽ भरमा इज्जति बचा दाए हो देवता-पितर। जिउके बदलामे झाँप आ सभटा नीकेना सिद्ध भऽ जएतै तँ पातरि सेहो देबऽ हे गोसैंयाँ।

मर अइमे देवता पितर की करतै गम्हरीयाबाली एहन समधानल चोट ठोकि देलकनि जे छिलमिला गेलीह गुड़िया माए, जे करत सै बैदा ने करतै। सुइया दवाइ दिअएबै तै सँ ने ठीक होतै। नइँ तँ झाँप पातरि पड़ले रहि जाएत आ खँसी जाएत टिङ।

हे देवता पितर नामे एखन एहन कुभाख नै बाजू।

हे आब दबे दारुसँ मालो जाल ठीक होइ छै । गेठरी खोलू हम चलब ।

फिस आ दबाइमे सवा सात सए खरच भऽ गेलनि । डागडर साहेब उसास फेरलनि मर बहि, ढौओ लागि कऽ केहुना खँसीक बलाय तँ टरल ।

चिकबा लुचैया नदाफक सलाहे खँसीकँ एक आध चम्मच घीउ उठौना शुरु भेल। एहिसँ खँसी एबरसँ दोब्बर भिसिण्डु लगले भऽ गेल ।

दिनकँ बितैत देरी नइँ लगलै। धराएल शुभ दिनमा भल अएबे कएलै। उँजबड़ेड़ा आ भीड़ भरक्कासँ बरनेमा नइँ।

सख सोहर लेनदेनक लेखा जोखा नइँ । पाल पण्डालक कोन खेरहा । मुज्जोफरपुरके ऊ नामी हलुवाइ मिठाइ बनबऽ बला, जनकपुरके बढ़का स्टार होटलके "कूक" खाना बनबऽ बला आ काठमाण्डू मीट हाउसक भनसीया स्पेशली माछ माँउसक परिकार बनबऽ लेल मंगाओल गेल रहै। एम्हर तरुआ-बघरुआ, तिलौरी, दनौरी, बड़ी कढ़ी बास्तै गाम गमैतक बूढ़ पुरैनियाँ सभ रहबे करथिन्ह।

ठाम ठाम भिडियो कैमरा चालू रहै । एकदम सिनेमा माफिक। जेकरा नहियो काम रहै सेहो अफसियाँत, कैला तँ भिडियो सिडीमे देखार होएब।

रातिमे मन माफिक रंग विरंगक मधुर मिष्ठान संगे माछक व्यबस्था रहै। माछ रहे से देख पड़ोसनी जैर मरऽ बला। बीस बीस किलोके । बनबऽ कालमे दू दू पट्ठा जुआनके सम्हार नइँ धरै । ओकर बनौनाइ देखबऽ लए भिडियो कैमरा एकदम रेडी। धन कही सुखरा मलहबाक पहलमनमा बेटा सोंसियाके जे माछ काटि बना देलकै। दैव रे दैव, माछ रहौ कि बनेल से नइँ जानि, सोसिया मलाहके कएल खेती गमल बात रहै तँए बना सकलै नइँ तँ नइँ बैनतै। मुड़ा निकलै पँच पँच किलोके आ कुटिया याह-याह टाके।

खाइतकाल एक छोड़ि दोसर कुटिया कोनो बरियतिया नै गछनि। सौंसे मुरा एक्केह गोटा लेलनि। तिनको सौंसे नइँ अघरलनि ।

बिहान भने भतखइ मे माँउस एकदम अलेल। डब्बुके लऽ कऽ परसल गेल। घरबैयाकेँ होइ जेना माँउस से तोइप कऽ तऽर कऽ दी। खनाइसँ इज्जती बढ़ै छै। जेहन भोज तेहन मान प्रतिष्ठा। बराइ आ प्रशंसासँ डागडरो साहेबक बराती निहाल कऽ देलकनि। आब गच्छि अघाएल बरियाती ढेकार संग मुँह प्रशंसा करऽ लगलथि ।

नै विलक्षण। गच्छ अघाएल बराती अछिनरे रहलै।

हँ तँ काल्हियो आ आइयो मधुर मिष्ठारनसँ थैहर-थैहर कऽ देलथिन। माछ माउस अनपूछे रहलै।

जहिना परसऽ मे उपरौंझ तहिना बड़ाइ प्रशंसामे रहलै।

अघएला उत्तर मूल्याङ्कन किछु गोटे खोदवेदक रुपमे शुरु कएलनि। नइँ नइँ बड़ बेस, बड़ बढियाँ रहलनि। खाली माछ बेसी जुआएल छलनि । व्यग्र डागडर साहेबकेँ पछताबा हुअ लगलनि केहन हम रजिनराक बात नइँ मानि सेरिए-असेरी माछ किनने रहितहुँ तँ आइ ई खिधान्स नइँ होइत।

ततबे, कुटिया कने छोट-छोट रहितनि ।

कने तरल झूर छलनि ।

घरबैयाकेँ होइक, सभ बूरल आ से भनसिया कारणे। सरबेके बोइने काटि लेबनि ।

इह । माउस कने बेसिए सीझल रहनि ।

एकगोटे व्यंगसँ बजलाह- से नइँ बूझल गेलै। स्पेशल भनसिया भेने एहिना होइ छै।

खाएला तँ हमहुँ खएबे कएलिऐ। पाइ लागल रहै, धरि एते तँ अबश्ये कहब जे खसी बेसी तेलाह रहैक से कोनो खास स्वाद नइँ रहैक।

जतेक मुँह ततेक छेद ।

डागडर साहेब झाम घुरैत मथा-हाथ दैत, सभ कएल धएल अकारथ गेल। ओहिमे एकगोटे एहन बरियाती रहथि जे वरपक्षक नइँ रहथि। खाली अइ दुआरे मार्कण्डेय झाजी केँ लाएल गेल रहनि जे हुनकर कामे रहनि बहुते खाएब।

चूड़ा दही भेल तँ अढ़ैया चूड़ा, खोरभरि दही, बिन ढेकारेक देख देताह। खाएल पियलपरसँ साठि सत्तरि रसगुल्ला देखि देताह। आम महिना चालीस पचास आम उठितो उठितो गीँर जएता। से पुरुष अहू बरियातीमे खएनाइए देखऽ वास्ते मङाओल गेल छलाह। ओ देखहि जोग खएने छलाह । ई दिगर बात जे भोजमे हुनकर मन नइँ भरलनि । खौंझाएल मार्कण्डेय खिन्ने होइत बजला, हँ कहऽ तँ पड़लै जे नीके खएनाइ रहनि। मुदा मन पछताइए जे कएक ठामसँ बरियातीमे खाए चल लए बजाहटि आएल रहए। ओम्हपर गेल रहितहुँ तँ पछताए नहि पड़ल रहितए ।

एहि बीचमे एकगोटे जे खाइत काल हुनकर बहुत रास फोटो खिचने रहथि से देखा देलकनि- देखियौ तँ फोटोमे अपने केना केना कते कते खएने छिऐ।

अएना जेकाँ आब फोटबो बजै छै साँच, से देखि भड़कि गेला मार्कण्डेय- रौ साऽऽर, ऐमे हमरा बजनियाँ के बना देलक?

लोको उत्सुकतासँ फोटो देखऽ लागल तँ देखलक जे ई दुनू हाथे कोकाकोलाक जे बोतल पिबैत छथि, से फोटोमे बुझाइक सहनाइ बजबै छथि। चौल करैत एकगोटे बजला- होउ आब इएह फोटो देखा-देखा साइयो बान्हब।

आऽरौ बहिं, से ओतबे, के ने के यैह टा के बेढब मूड़ा हमरा पातपर राखि देलक।

होउ तँ एहन मूड़ा आनठाम कतौ देखनहुँ ने हएब तकर प्रमाण भेल। माने कि जे से, कि जे से सेहे रहितै तँ नीक। ओइमे तँ हमरा मरपर लुधकल सनके बुझाइए ।

छीया छीया। आरे बाप रे बा, अन्हेर कएलक ई सभ मार्कण्डेय जी ! अहाँकेँ तँ गया गांग लागल । होउ धोती जनउ जल्दीसँ बदलू आ गंगाजली छीटि शुद्ध होउ।



ऋृषि वशिष्ठ

प्रकाशित कृति- जे हारय से नाक कटाबय (बाल साहित्य), कोढ़ियाघर स्वाहा (बाल साहित्य), झुठपकड़ा मशीन (बाल साहित्य), मैथिली धारावाहिकक कथा, पटकथा आ संवाद लेखन। एकर अतिरिक्त कथा आ व्यंग्य पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित। पता- तेजगंगाधाम, परिहारपुर, मधुबनी।

जुआनी जिन्दाबाद

सगरो टोलमे एक्कहि बातक चर्च-बर्च छलैक। बुढ़-बुढ़ानुस सभ साँझक चारि बजबाक बाट तकैत छलाह। सबहक मूँहे एक्के बात- “लाख छै तँ कि, देखहक काली-बाबुक बेटाकेँ। एखनुको समएमे सरबन पूत होइ छै की !” कियो-कियो इहो कहैत छलै जे- “बाबू, काली बाबू बड़ड कष्टेँ बेटाकेँ इंजीनियर बनौने छथि।”

-“से तँ ठीके, मुदा आइ काल्हि ई कष्ट ककरो-ककरो सार्थक होइ छै ! आ से काली बाबूकेँ भेलनि।”

यैह गर्मीक समए छिऐ। परुकाँ साल कालीबाबूकेँ दू-बेर मासे दिनपर हार्ट एटैक भऽ गेल छलनि। सगरो गामक लोक कहैत छलै जे आब हिनकर बाँचब मोस्किल छनि। आ स्थिति छलनिहों तेहने। दोसर बेरक हार्ट एटैकक खबरि जखने कालीबाबुक बेटा नबोनाथकेँ लगलनि तँ ओ तुरत अमेरिकासँ अपना गाम आपस आबि गेलाह। गाम आबि ओ कालीबाबुक हालत देखलनि। ओ अपना संग कालीबाबूकेँ अमेरिका लऽ जेबाक तैयारी कएलनि। पहिने तँ कालीबाबू तैयारे नहि होइत छलाह मुदा बुझा-सुझाकए नबो तैयार केलनि। नबो तँ चाहैत छलाह जे माइयो संग चलए। ओ मुदा एक्कहि ठाम कहि देलखिन जे- “हमरा लऽ जेबाक जिद्द करबह तँ हम माहुर खा लेब। हम बिलैंत जा कऽ एको दिन जीबि नहि सकै छी।”

सभ कागज-पत्तर तैयार कऽ नबो अपन पिताक संग अमेरिका जेबाक तैयारीपर छलाह। टोल-पड़ोसक लोकक कहब छलै जे- ”आब बेकारे बुढ़ाकेँ लऽ जेबहुन। आब अबस्थो भेलनि। साठि टपि गेलनि तँ आब की !”

कालीबाबुक छोट भाए तँ रुष्ट भऽ कऽ एतेक तक कहि देने छलखिन

जे- "अमेरिकासँ हमर भाए-साहेब घुमि कऽ औताह से उमेद त्यागिये कऽ लथु।"

इंजीनियर नबोनाथ सभकेँ बुझेबाक प्रयास करैत छलाह। माइ पर्यन्त सदिखन कनैत रहैत छलीह। कालीबाबू चुप्पचाप सभटा तमाशा देखैत छलाह। नबोनाथक माइ ई कखनो नहि कहैत छलखिन जे बाबूकेँ नै लऽ जाहून। हुनका एहि बातक विश्वास छलनि जे कालीबाबू अमेरिका जा कऽ ठीक भऽ जेताह।

जेना-तेना इंजीनियर साहेब कालीबाबूकेँ लऽ कऽ अमेरिका चल गेलाह। साल भरि बीत गेल अछि। एहि बीचमे रंग-बिरंगक समाचार आएल गेल। आइ वर्ष दिनपर कालीबाबू आपस आबि रहल छथि। कालीबाबूकेँ नबका हार्ट लगाओल गेलनिहेँ, से सभकेँ बुझल छैक। सबहक मोनमे विभिन्न तरहक जिज्ञासा छैक। कियो कहै जे- "अमेरिका जए कऽ की भेलनि ! रोगीक रोगिये रहि गेलाह ! कहाँदन दोसराक हार्ट लगाओल गेलनिहेँ।"

"आब तँ आर अपस्थक भऽ गेल हेताह। अनेरे बुढ़ारीमे गंजन। कहू तँ बेकारे ने चीड़-फाड़ करौलनि।"

समए बितैत कतेक देरी। चारि बाजि गेल। बारह बजे पटनामे हवाइ जहाज अएबाक समए छलै। पटनासँ अएबामे बेसीसँ बेसी चारि घंटा। आब जइ घड़ी जे क्षण ने अएलाह। सड़कपर अबैत सभ गाड़ीकेँ सभ ठिकियबैत छल।

"यैह आबिये गेलाह।"

....मुदा ओ गाड़ी सुर्र...र्र.............दऽ आगाँ बढ़ि गेल।

कालीबाबुक दलानसँ कनिके दूर चौराहा छलै। चौराहापर विशाल पिपरक गाछ आ सड़कक काते-कात चाह-पानक दोकान। गाछक छाँहमे बैसल बच्चा किशोर आ बुढ़-बुढ़ानुस तँ सहजहिँ। खास कऽ सभकेँ कालीबाबुक प्रति बेसिये जिज्ञासा छलनि।

"केहेन भेल हेताह? साफे बदलि गेल हेताह कि ओहने हेताह! ककरो चिन्हबो करताह कि नै?"

"जे जत्तहि सुनलक आगवानीमे पहुँचि गेल। कालीबाबुक दरवज्जापर एखनो भम्ह पड़ैत छनि मुदा एतए भीड़ जूटल अछि। पुरुष-पातकेँ गामपर नै रहने यैह दशा होइत छैक। भरि ठेहुन कऽ घास जनमि गेल छनि। सभ अही बातक चर्च करैत छल। मोन मुदा सबहक टाँगल छलै पच्छिम भरसँ आबएबला चारिपहिया वाहनपर। कालीबाबु प्राथमिक विद्यालयमे शिक्षक पदसँ रिटायर भेल छलाह। ठेंठ देहाती लोक। कोनो आधुनिकताक हवा नहि लागल छलनि। ओ वर्ष दिन अमेरिकामे कोना रहल हेताह। सभ यैह बात सोचैत छल। नबोक माइ कोनटा परसँ हुल्की मारि जाइत छलीह।

......यैह, लालरंगक चारिपहिया वाहन आबि कऽ रुकल। पीपर तरक भीड़ कालीबाबुक दरवज्जापर पहुँचल। कियो दौड़ैत, कियो झटकैत आ कियो घिसियाइत। गाड़ीक आगाँक गेट खुजल। इंजीनियर नबोनाथ उतरलाह। आँखि परक करिया चश्माकेँ माथपर चढ़बैत हाथ जोड़ि सभकेँ प्रणाम केलनि आ पछिला गेट खोललनि। भीड़मे जूटल वृद्ध सभकेँ जेना साँस रुकि गेल छलनि। गेट

खूजल.....। ....अचरज! भारी अचरज!! कालीबाबू सूट-बूट पहिरने छलाह। करिया जिन्स आ लाल रंगक फोटो बनल टी शर्ट। आँखिपर करिया चश्मा। बेस चिक्कन-चाक्कन मूँह-कान। खूब निरोग। हाथमे गिटार लेने उतरलाह। बुढ़ सभ देखि कऽ अचरजमे पड़ि गेलाह।

"देखहक हौ, ई की छनि कालीबाबूकेँ?"

"सारंगी लेलनिहैँ।"

"गुदरिया भऽ गेलाह-ए की?"

"वाह रे वाह! यैह भेलै बुढ़ारीमे घी ढारी।"

इंजीनियर साहेब टिका-टिप्पणी सुनलनि। ओ हँसैत बजलाह- "बाबू जीकेँ अस्पतालमे पड़ल-पड़ल अकच्छ लगैत छलनि। असलमे डॉक्टर हिना पुछलखिन जे आहाँकेँ सभसँ बेसी रुचि कथीमे आछि? संगीत पढ़ाइमे आकि आन कोनो काजमे! बाबूजी कहलखिन- "रंगीतमे। सेहो संगीत गाबए आ बजाबएमे। गाएब तँ मना छनि मुदा बजेबाक लेल गिटार डॉक्टर देबाक अनुमति देलनि।"

एतबा कालमे तँ कालीबाबू एक हाथमे गिटार लेने आ दोसर हाथ माथमे सटबैत नमस्कार केलनि। किछु बुढ़ हँसि कऽ मूँह घुमा लेलनि आ हँसैत नजरिसँ नजरि मिलबैत रहलाह। कालीबाबू डेगाडेगी दैत नाचए लगलाह आ गिटारपर बेसुरा टुम टाम करए लगलाह।

राजधर बुढ़ाकेँ नै रहल गेलनि। ओ व्यंग्य करैत बजलाह- "ई तँ कीदन भऽ गेलाह हौ इंजीनियर। चौबे चलला छब्बे बनए आ दुब्बे बनल अएलाह। अँइ हौ, ई तँ काली बताह भऽ गेलह-ए?"

इंजीनियर साहेब सहज भऽ बजलाह- "असलमे बाबा, ओतुक्का तँ एहने माहौल छै किने।"

"हैइ, किछु रहौ। ई तँ साफे पगलेठ जकाँ करै छै। जीवन भरि एतए रहलै तँ किछु नै आ एक बर्खमे ओतुक्का सबार भऽ जेतै?"

गाड़ीबला सामान सभ उतारि कऽ विदा भऽ गेल। गाड़ी कनेक आगाँ बढ़ल। कालीबाबू मूँहकेँ गोल करैत सीटी बजबैत ड्राइवरकेँ बॉइ.....बॉइ केलनि। कोनटापर ठाढ़ भेल अपन पत्नीकेँ जखने देखलनि कि फेर मूँह चुकरियबैत सीटी बजौलनि.......'हू......हूँ.......उ..... " 'ओ बेचारी लजाइत कोनटापर सँ पड़ेलीह। लोक सभ तमाशा देखि अपना घर दिस कऽ विदा होबए लागल। कालीबाबू फेर ओहिना सीटी बजबैत हाथ हिलबैत रहलाह।

भीड़ तँ उसरि गेल मुदा लोकक मोनमे चैन नहि भेलै। एतए ओतए सगरो कालियेबाबुक चर्च। कियो बताह कहए तँ कियो घताह। एक्के बरखमे लोक एना कऽ बदलतै। ओहिठाम तँ हुनकर बेटो छनि। ओ तँ दसो सालसँ अमेरिकामे रहए छै। कहाँ कोनो चालि-ढालि बदललैए ! राजधर बुढ़ा अपना मंडलमे घोषणा करैत बजलाह- "नबो इंजीनियरकेँ नीकक काज होइ तँ बापकेँ कोनो माथाबला डॉक्टरसँ देखबौक।"

रंग-विरंगक टिका-टिप्पणी होइत रहल। देखलाहा दृश्य राति भरि लोकक

सोझाँ ओहिना नचैत रहलै। कथीलए ककरो निन्नो हेतइ।

कालीबाबुक रातिक निन्न तँ अमेरिकेमे छुटि गेलनि। ओ राति भरि कछमछ करैत आ गिटारकेँ टुनटुनबैत रहि गेलाह।

भोरे-भोरे कालीबाबुक दलानक सोझाँमे फेर भीड़ जुटि गेल। एहन अनर्गल काज काली बाबुक नै होइतनि जँ माथ ठीक रहितनि। ओ अपना कहलमे नै रहलाह। सबहक निष्कर्ष एक्केहिटा।

गर्मीक समए छलै। कालीबाबू भोरे-भोरे गंजी आ ठेहुन धरिक पैंट पहिरने, डाँड़ झुकलाहा सन अवस्थामे, माथक केश मेहदीसँ राँगल। ओ चौकीपर ठाढ़ गिटार बजेबामे अपसियाँत छलाह। मूँहक आकृति रंग-विरंगक भऽ रहल छलनि। गिटारक अवाज साफे बेसुरा। एहन उन्मत्त भऽ बजेनाइ नहि देखल-ए। देखलासँ कोनो प्रवीण गिटारवादक लगैत छलाह मुदा सुनलापर साफे अनारी। राजधर बुढ़ाकेँ कालीबाबुक बेस चिन्ता छलनि। ओ चिन्तित सन मुद्रामे बजलाह- "एहेन कोन पागलपन भेलै? कहह तँ जे काली कहियो नचारियो नहि गौलक तकरा ई बजेबाक कोन भूत सवार भऽ गेलइ।"

नबोनाथ जेम्हरे निकलथि सभ बाबूक हालचाल पुछनि।

"केहन छथि? आब नीक जकाँ रहए छथि कि ओहिना सारंगी लऽ कऽ नचै छथि?"

कतेक कऽ की जबाब देथिन। सबहक कहब आ अपनो तँ देखिये रहल छलाह। नबो कालीबाबूकेँ मानसिक रोग विशेषज्ञसँ इलाज प्रारंभ केलनि। डॉक्टर समूचा जाँच-पड़तालसँ मानसिक रोगक लक्षण नहि पौलनि। आब तँ मामला आरो ओझराएल जा रहल छल। इंजीनियर साहेब कऽ टपाक दऽ कहा गेलनि जे- "असलमे एहन सभ चालि-चलन आ व्यवहार हृदय प्रत्यारोपनक बाद भेलनिहेँ।"

डॉक्टर साहेब गंभीर अनुसंधानमे लगलाह। कालीबाबूकेँ जखन-तखन डॉक्टर ओहिठाम बजाहटि होबए लागल।

समए बितैत गेल। साँझक समए रहए। डॉक्टर नर्सिंग होममे मानसिक रोगी सभ भरल छलइ। रंग-विरंगक उटपटाँग हरकैत सभ भऽ रहल छलै। डॉक्टर साहेब गंभीर भेल कुर्सीपर बैसल छलाह आ टेबुलपर राखल कागज सभकेँ उनटबैत छलाह। सामनेक कुर्सीपर कालीबाबू उत्सुक सन मुद्रामे बैसल छलाह। आ बामा कात इंजीनियर नबोनाथ चौंकल सन मुद्रामे छलाह। डॉक्टर की कहथिन की नइ!

डॉक्टर साहेब सभ कागजकेँ पसारैत अपन लैप-टापकेँ आसस्तेसँ दबाबए लगलाह- "इंजीनियर साहेब, हम एहि केसक गंभीर अनुसंधान केलहुँ अछि संगहि सभटा सबूत जमा केलहुँ अछि।"

इंजीनियर साहेब चौचंग भेलाह।

"अहाँक पिताजीकेँ जे हृदय प्रत्यारोपित कैल गेल ओ वस्तुतः एकटा एक्कैस वर्षक मशहुर पॉप गायकक हृदय छैक। ओ बेचारा एकटा दुर्घटनामे मारल गेल आ ओकर दान कएल हृदय आइ अहाँक पिताकेँ जीवन देने छनि।"

“मुदा”- इंजीनियर साहेब उत्साहमे बजलाह।

- “हँ, इंजीनियर साहेब। कोशिकामे स्वभावक याददाश्त रहैत छैक।...... आ यैह कारण अछि जे ई रहि-रहि कऽ संगीतक पाछाँ बेहाल भऽ उठै छथि। एहि तथ्यकेँ युनिवर्सिटी ऑफ एरिजोना सेहो सिद्ध करैत अछि। ई युनिवर्सिटी अंग प्रत्यारोपनक कतेको मामिलापर शोध कऽ चुकल अछि।”

डॉक्टर साहेब आँगुरसँ लैपटॉपक स्क्रीन दिस इशारा करैत बजलाह- “हे, देखियौ ने ! आब कोनो काज कठिन छैक? अहीठाम बैसले-बैसले सभटा शोधक जानकारी लऽ लिअ।”

इंजीनियर साहेब झुकि कऽ लैपटॉप दिशि तकैत बजलाह- “एकर मतलब आब बाबूजी अहिना रहि जेता?”

डॉक्टर हँमे मूडी डोलबैत बजलाह- “हूँ! कलाकारक जुआनी अवस्था छलैक ने! ओ तँ औनाहटि उचिते छैक।”

कालीबाबू पीठपर टाँगल गिटार उतारलनि। खोलसँ बहार केलनि आ थैया-थैया...... दिग् दिग थैयाा करैत गिटार बजेबामे लीन भऽ गेलाह।



शिवशंकर श्रीनिवास

जन्म स्थान लोहना मधुबनी, बिहार । चर्चित कथाकार ओ आलोचक । गीत ओ कविता सेहो कहियो काल लिखैत छथि । प्रकाशित कृति : त्रिकोण, अदहन, गाछ-पात, गामक लोक (कथा संग्रह)।

(मिथिलाक लोक-कथापर आधारित बाल कथा)

पण्डित ओ हुनक पुत्र

नैनापुर गाममे एकटा पण्डित रहथि। नाम रहनि- बौआ चौधरी। नैनापुर टोलक विद्यालयक ओ प्रधान गुरुजी रहथि। सभ हुनका बड़का गुरुजी कहनि। बड़का गुरुजीक पण्डिताइक सोरहा ओहि समयमे देश-विदेशमे छल। ओहि समएक प्रसिद्ध युवा विद्वान् मे बेसी गोटे हुनके शिष्य रहथि। देश-विदेशक लोक हुनका लग शास्त्रक गप्प बूझऽ अबैत छलाह। किन्तु बड़का गुरुजी रहथि बड़ क्रोधी, से सभ जनैत छल। क्रोध छोड़ि हुनकामे सभ टा गुणे रहनि। किन्तु हुनक क्रोधक चर्चा सभ करए।

बड़का गुरुजीक एक मात्र संतानमे बेटा, नाम रहै धनंजय।

धनंजय बड़ तेजस्वी रहय। लोक कहै धनंजय अयाची मिश्रक बेटा शंकरक दोसर अवतार छी। धनंजय बारहे-तेरह वर्षक उम्रमे बड़का विद्वान् भऽ गेल। इलाकाक लोक कहऽ लगलै- जेहने गुणमन्त बाप तेहने बेटा। किन्तु धनंजय उदास रहैत छल कारण जे बाप कहिओ नीक भाखा नहि कहथिन। ई कोनो विषयमे कतबो अंक आनय, परीक्षामे प्रथम घोषित होअए, कठिनसँ कठिन शास्त्रार्थ जीति कऽ आबय आ सोचय जे एहि बेर बाबू अवश्य प्रसन्न भऽ किछु कहता, किन्तु बाबू ओहिना धीर-गंभीर, किछु नहि कहलथिन। धनंजय अपन पिताक मुखसँ नीक गप्प सुनबाक लेल वा कोनो वाहवाहीक शब्द सुनबाक लेल ओहिना तरसय जेना उपासल पानि लेल तरसैत अछि। ओना बड़का-बड़का विद्वान् प्रशंसा करथिन, कतेको प्रसिद्ध विद्वान् हृदएसँ लगबथिन किन्तु पिताक मुँहसँ प्रशंसा सुनबाक हेतु मन रकटले रहै।

अठारह वर्षक उम्रमे धनंजय न्याय शास्त्रक एहन पोथी लिखलक जे सर्वत्र

चर्चामे आबि गेल।

धनंजय अपन पोथी पढ़बाक लेल पिताकेँ देलक, किन्तु ओ पढ़ि घुमा देलथिन, किन्तु किछु कहलथिन नहि।

एक दिन धनंजय साहस कऽ कैँ पिताकेँ पुछलक- ''बाबू, पोथी पढ़ि अहाँ किछु सम्मति नहि देलहुँ।''

''थोड़े आर परिश्रम करू।'' कहि पिता गंभीर भऽ गेलथिन।

धनंजयकेँ पिताक गप्प बहुत अधलाह लगलै, ततबे नहि, मनमे घोर प्रतिक्रिया भेलै। सोचलक- ''ई हमर शत्रु छथि, जावत जीता तावत हमर यश-प्रतिष्ठासँ जरैत रहताह, कहिओ प्रशंसा नहि करताह।'' से सोचैत-सोचैत बुझू बताह भऽ गेल। मनेमन निर्णय कएलक जे आइ रातिमे जखन ओ भोजन कऽ आङनसँ बहरेता तँ खर्गसँ गरदनि काटि पड़ा जाएब। अन्हरिया छैके केओ ने देखत।

दिन बीतल, साँझ भेलै आ तकर बाद राति। बड़का गुरुजी भोजन कऽ रहल छलाह, आगूमे पत्नी अंजनी बैसलि छलथिन। आ इम्हर धनंजय खर्ग लऽ कऽ ठाढ़ छल जे भोजन कऽ कोनटा लग औताह कि काटि कऽ पड़ा जाएब।

अंजनी कहलथिन- ''धनंजयक पोथीक सुनै छी बड़ चर्चा छै।''

''हूँ''- पत्नीक गप्पपर बड़का गुरुजी बजलाह।

''एकटा बात कहू, तमसायब तँ नहि।'' अंजनी अपन क्रोधी पति बड़का गुरुजीकेँ पुछलनि।

''कहू ने''- गुरुजी पुछलथिन।

''पहिने कहू जे तामस नहि करब।''

''अच्छा नहि करब, पूछू।''

''अहाँ धनंजयपर तमसाय किएक रहै छियनि? ''

''तमसाय किएक रहबनि? ''

''अहाँ आइ तक हुनकर प्रशंसा कयलियनि? '' पत्नी गप्पपर बड़का गुरुजी बहुत हँसलाह आ कहलथिन- ''अहाँ नहि बुझै छिऐ।''

''हम बुझै छिऐ, ओ अहाँकेँ नहि सोहाइ छथि।''

''के एहन अभागल होएत जकरा बेटा नहि सोहेतै? बेटे एकटा एहन होइ छै, जकरा लोक अपनासँ पैघ देखऽ चाहैए।''- गुरुजी बजलाह।

ताहिपर पत्नी पुछलथिन- ''कहू तँ अहाँक बेटा केहन पण्डित छथि? ''

''बहुत पैघ पण्डित छथि। हमरासँ बहुत आगू बढ़ि गेलाह।'' गुरुजी बहुत आनन्दमे अंजनीकेँ कहलनि।

ओहिना आनन्दसँ आनन्द लैत अंजनी पुछलथिन- ''ओ पोथी जे लिखलनि से केहन छै? ''

''बहुत उत्तम, हम कएटा बात ओहि पोथीसँ जनलहुँ अछि, बूझू गदगद छी। धनंजय पुत्रे नहि, पुत्र रत्न थिकाह।''

''तखन हुनकर प्रशंसा किएक ने करै छियनि?''

पुनः पत्नीक गप्पपर भभा कऽ हँसैत गुरुजी कहलथिन- ''बुझलहुँ, हम हुनकर बाप छियनि, प्रशंसा करबनि तँ घमण्ड भऽ जयतनि आ तखन विकास रुकि जयतनि।''

''सुनू, हम अहाँक स्त्री छी। अहाँ जहिया हमर काजक प्रशंसा करै छी तहिया हम आरो नीकसँ काज करै छी। आ जहिया कोनोपर बिगड़ै छी तकर बाद आरो काज गड़बड़ा जाइए, ताहिपर अहाँ ध्यान देलिऐ? ''

''हूँ...।'' कहि पत्नीक गप्पपर गुरुजी गंभीर होइत पुछलनि- ''अहाँ आइ ई सभ किए पुछैत छी? ''

''अहाँ धनंजयकें पोथी दैत कहलियनि जे आर परिश्रम करू, से हुनका नीक नहि लगलनि।

''अहाँ कोना बुझलहुँ? ''

''हम माय छिऐ, हम ओतबो नहि बुझबै। तखनसँ हुनक माथ ठीक नहि बुझाइए।''

''ओ ज्ञानी छथि, हुनका हमर बातक कतहु क्रोध होइन? ''

''तखन अहाँकेँ क्रोध किए होइए? अहूँ तँ ज्ञानी छी।''

''हँ, से...।'' पत्नी गप्पकेँ स्वीकारैत गुरुजी सोचैत भोजन करऽ लगलाह। मने-मन सोचलनि अंजनी ठीक कहैत छथिन।

ओम्हर कोनटाक अन्हारमे ठाढ़ गप्प सुनैत धनंजयक हालत विचित्र भऽ गेलै- ''ओ एहन महान पिताक हत्याक लेल ठाढ़ अछि? ओ वस्तुतः पण्डित नहि मूर्ख अछि।'' सोचैत धनंजय कानऽ लागल।

भोजन समाप्त कऽ गुरुजी ओसारापर सँ उतरि अङना अएलाह आकि धनंजय पएरपर खसि कनैत कहलक- बाबू हम बिना विचार कएने अहाँक हत्या कऽ दैतहुँ। हम बताह छी। हम मूर्ख छी। पातकी छी।''

''नहि धनंजय, अहाँ हमर हत्या करऽ लेल छलहुँ से बात नुका सकै छलहुँ, किन्तु अहाँ सत्यकेँ नुकेलहुँ नहि। अहाँ सत्यकेँ समक्ष अनबामे डरेलहुँ नहि। अहाँ वस्तुतः पण्डित छी।''

''नहि बाबू। हम क्रोधमे रही। अहाँक हत्या करब सोचलहुँ, तकर प्रायश्चित? ''

''प्रायश्चित् भऽ गेल।''

''से कोना? ''

''सत्यक खुलासासँ। आँखिक नोरसँ।''

''किन्तु बाबू? ''

''बेटा धनंजय, आइ अहाँक प्रसङसँ हमहूँ किछु सिखलहुँ।''

''बाबू!''

''जावत क्रोध रहत तावत ज्ञान हँटल रहत। हम सभ दिन विद्या सिखलहुँ आ सिखौलहुँ किन्तु हमरामे क्रोधक स्वभाव रहबे कएल आ...। ''

''आ की बाबू? ''

''सभकेँ, जे काज करए ओकरा प्रोत्साहन दीऐ। आ कोनो बात केओ कहए वा नहि कहए, दुनू स्थितिमे सोची, से नहि कएने अहाँ सन ज्ञानी बापकेँ मारब सोचैत अछि। ''



श्यामल सुमन

अर्थात लोकतंत्रीय मुक्ति

तीन दिन पूर्व अपन निकटतम मित्र घनश्याम बाबू केर दुर्घटनामे मृत्यु भेलाक पश्चात आइ गजानन बाबू चौपालमे बैसल उदास रहथि। योग्य रहलाक बादो एक प्राइवेट स्कूल मेकम वेतनपर नौकरी करब घनश्याम बाबूक विवशता छल कियैक तँ घरमे वृद्ध माता, पत्नी, विआहक योग्य पुत्रीक अतिरिक्त शिक्षारत पुत्रक भरण पोषणक भार हुनके कमायपर। आइ पूरा परिवारे बेसहारा भऽ गेल। एहेन घटना तँ ककरो वास्ते दुखद होइते छैक लेकिन गजानन बाबूक दुख ताहिसँ बेसी बुझना जाइत अछि। जखन चौपालक लोक सभ आग्रह करैत खोदि खोदि पुछलखिन्ह, तकर बाद पता चलल हुनक दुखक असली कारण।

दुर्घटनाक बाद घाइल घनश्याम बाबूकेँ अस्पताल आनल गेल आ डाक्टर देखतहि मृतघोषित कऽ देलक। पुत्रक बाहर रहबाक कारणेँ अंतिम संस्कार तत्काल सम्भव नहि छल। गजानन बाबू आर लोक सभसँ विचार कऽ लाशकेँ शीत गृहमे रखबाक प्रबंध करयलगलाह। लेकिन सरकारी अस्पताल सीधा-सीधी बिना घूस कऽ एको डेग चलब मुश्किल। शीत-गृहक कर्मचारी बाजल - "जगह नहीं है"। गजानन बाबू स्थितिसँ उत्पन्न सम्वेदना देखबैत, अपन सभ ज्ञान, अनुभव लगाकए थाकि गेलाह किन्तु शीत-गृह कर्मी अपन राग बजबैत रहल जे - "जगह नहीं है"। गजानन बाबू परेशन छलाह। ताबत सरकारी तंत्र कमौन संकेत बुझनिहार एक नवयुवक आबि कर्मचारीक हाथमे एकटा नमरी थमबैत कहलखिन्ह - "अब तो जगह है न"? तत्काले जगह भेट गेल। लाश राखल गेल। काजभेलाक पश्चातो गजानन बाबू दुखी छलाह।

अगिला दिन पुत्रक आगमनक बाद पोस्टमार्टमक तैयारी होमए लागल। अस्पताल मेएम्बुलेन्सक सुविधा सेहो छल। जहिना आजुक समएमे सरकारी गाड़ीसँ सरकारक काज छोड़ि शेष सभ काज होइत अछि तहिना अस्पतालक प्रबंधककेँ घरमे प्रबंध करवाक हेतुएम्बुलेन्सक सार्थक उपयोग भऽ रहल छल। प्रबंधकक नामपर अपन घरक प्रबंध करवा मे ड्राइवर साहेब सेहो संकोच नहि

करथि। एम्बुलेन्सक कारणे देरी होमए लाग। एम्बुलेन्स आएल आओर ड्राइवर साहेब आबतहि बजलाह - " अभी हम तुरत आये हैं, एक घण्टे के बाद दूसरे शिफ्ट का आदमी जायगा"। एतबा सुनतहि फेर शीत-गृहमे काज आयल वोयोग्य आधुनिक युवक अपन चमत्कार देखौलन्हि। पचास टाकाक एकटा नोट ड्राइवर साहेबकैँ दैत बजलाह -"अब चलिए"। ड्राइवर तत्काल तैयार भऽ गेल।

गजानन बाबू मित्रक विछोह, मित्रक परिवारक भबिष्यक चिन्तासँ तँ चिन्तिते छलाह, ऊपरसँ ई सभ देख भीतरे भीतर छटपटावैत रहलाह जे नैतिकता, ईमानदारी कतए चलिगेल। पोस्टमार्टम हाऊसमे सेहो भीड़ छल। बेसी आत्महत्या आओर बेसी दुर्घटना हमरा लोकतंत्रक बिशिष्ट बिशेषता अछि। किनारा जाऽ कऽ जखन सरकारी करमचारी सँजानकारी लेबाक कोशिश भेल तँ वो असंवेदनशील प्राणी बाजल - "ये भीड़ तो आप देखही रहे हैं। सब इसी काम के लिए आया है। कोई राशन या वोट की लाइन तो है नहीं। औरमेरे दो ही हाथ हैं। आपका नम्बर जब आयगा तब देखेंगे"। लोक सभ अनुमान करए लगलाह तँ चारि घण्टासँ कम केर मामला नहि छल। ताबत धरि तँ राति भऽ जाएत।सभकैँ चिन्तित देख पुनः वो योग्य युवकक योग्यताक काज उपस्थित भेल।येन-केन-प्रकारेण पाँचटा नमरीपर बात फरियाइल आओर मरलाक बादो लाइन तोड़ि कऽ घनश्याम बाबूक लाशकैँ पोस्टमार्टम हाऊससँ मुक्त कराओल गेल। गजानन बाबूक नैतिकशिक्षा, ज्ञान, अनुभव सभटा राखले रहि गेल। ककरा चिन्ता अछि जे मृतकक परिवार परकतेक संकट आएल अछि। अपन वेतनक अतिरिक्त बेसीसँ बेसी आमदनी करब सरकारी सेवकक युगधर्म अछि। एहि युगधर्मक पालन सरकारी सेवकगण अबाध गतिसँ सम्पूर्णदेशमे कऽ रहल छथि। एहि क्रममे पुलिसकैँ सेहो यथायोग्य दक्षिणा देबय पड़ल।

थाकल हारल मृतकक स्वजन परिजन समेत गजानन बाबू श्मशान घाट एलाह। सभ जगहसँ बेसी भयावह दृश्य छल। ओहनहियो श्मशान तँ भयावह होइते छैक। किन्तु जे भयावहता लोक सभकैँ देखए पड़लन्हि वो आओर भयावह छल। जगहक वास्ते, लकड़ी कवास्तें, अस्थि कलश रखबाक हेतु एतए तक कि मृतकक मृत्यु प्रमाण पत्रक वास्ते सेहो, सब जगह नियुक्त कर्मचारीक नियमित काजक बदलामे अनियमित रूपसँ यथायोग्य टाका खर्च करए पड़लन्हि। एवम प्रकारे घनश्याम बाबू वर्तमान लोकतंत्रीय पद्धतिक जालसँ मुक्त भऽ स्वर्गारोहण केलाह। गजानन बाबू सोचि सोचि भावुक एवं चिन्तित छलाह संगहि एक यक्ष प्रश्न सेहो ठाढ़ छल जे घनश्याम बाबू तँ कहुना लोकतंत्रीय मुक्ति पाबिस्वर्गारोहण केलाह किन्तु हमर मुक्तिक कोन रास्ता निकलत? हमर स्वर्गारोहण भऽ सकत कीनहि?

गामक चौपालसँ



मनोज झा मुक्ति

इज्जतिक खातिर

एहि लोकप्रिय कार्यक्रम 'मैथिली गुञ्जनमे' बहुतोलोकेक जिवनक घटना सुनैत-सुनैत आई हम अपना जीवनमे वितल या कि कहु विति रहल घटना लिखि कऽ, पठावि रहल छी ई आशा लक जे अवश्य प्रशारण कऽ, देब। अपन मोनक बोझ कम करब आ मैथिल समाजमे व्याप्त एहि चलन प्रति सम्पूर्ण समाजक लेल हमर ई प्रश्न अछि।

हमर नाम सुची अहि। हमर घर सागरमाया अञ्चलमे पड़ैत अछि। हम (3) तीन भाए-बहिन छी। (2) टा भाए आ हम बहीन मे एसगरे छे। बाबुजी हमर एकटा सरकारी कर्मचारी छथि आ माए गृहिणी। हमर जन्म 2030 साल, आइसँ 33 वर्ष पहिने भेल। बाबुजी सरकारी नोकरिहारा आ एसगर बहिन होएबाक नाते घर-परिवारक सभ क्यो बड़ मानैत छलीह हमरा। बाल्य काल बहुत दुःखमय रहल हमर। हम सभ अर्थात माए, दुनू भाए आ हम अपना गामेमे रहैत छलहुँ आ बाबुजी ओतही जतए-जतए हुनकर पोस्टिंग होइत। हमरा गामेमे हाइस्कूल होएबाक कारणे हमारा सभ भाए-बहिन स्कूल संगे जाइत-अवैत छलहुँ। मैट्रिक हम बहुत नीक जका पास कयलहुँ। मैट्रिकक बाद गामसँ तीने किलोमीटरपर रहल एकटा काँलेजमे हमर एडमिशन भेल।

काँलेजमे लड़कीक संख्या ओते बेसी नै तँ कमो नै छलै। हम I.A. First year क परिक्षा

देलहुँ आ कनी दिनक बाद रिजल्ट सेहो आएल, बहुत नीक नम्बर आएल छल हमरा।

हमर बाबुजी पढल-लिखल आकी कहु बुझनिहार होएबाक कारणे हमरा स्वतंत्र जकाँ छूट

भेटल छल कोनौ अंकुश नहि। एहि तरहे हमारा I.A. फर्स्ट डिविजनसँ पास कयलहुँ 2043 सालमे। आब B.A.मे पढबाक लेल हमरा विराटनगरक महेन्द्र मोरंग केंपसमे

एडमिशन भेल। ओना विराटनगरमे तँ हमरा अपन परिवारक केओ व्यक्ति नइ छल हँ,

हमर मामा-मामी ओतइ रहैत छलीह। मामा एकटा फैक्ट्रीमे मैनेजर छलाह। हम हूनेकँ सभ संगे रहेत छलहुँ। कॉलेजक हमरा क्लासमे हमरा अलावा एकटा आर मैथिल लड़की छली- पुनम। ओना लड़का सभ तँ बहुत छल मूदा एकटा लड़का अरुण यादव बहुत सभ्य

आ पढाइयोमे निक छल। ओना हमरा ककरोसँ ओते मतलब नइ रहैत छल। मतलब रहैत छल तँ मात्र अपन पढाइसँ। हँ साहित्यमे हमर रुची होएबाक कारणे कवि सम्मेलन

सभमे हमर जाएब मामाकँ कनिको नीक नइ लगैत छलनि। एहि तरहे हम फस्ट इयर

नीक नम्बरसँ पास कएलहुँ कहियो शाम चलि आएल बेरमे वा आवश्यक नोट सभ हमरा अरुण सहयोग कऽ दैत छलाह। अरुण हमर बहुत नीक मित्र भऽ गेला। हमरा दुनू गोटाक बीच आर कोनो तरहक सम्बन्ध नइ छल, मुदा सम्बन्ध तँ मात्र एकटा असल मित्रक। अरुण कहियो काल हमरा डेरापर अबैत छल। जे हमरा मामा और मामीकँ

कनिको निक नइ लगैत छलनि। मामी आब एकटा कोनो छोटो बातमे अरुण लगाक उलहनक रुपमे बात कहि दैत छलीह। एकदिन भोरे हमर बाबुजी विराटनगर पहुँचलाह आ हमरा पढाइ-लिखाइ आर सभ बात-व्यवस्था सम्बन्धमे पुछलनि। हम-सभ बहुत नीक कहलियैन। बाबुजी तइ कऽ बाद हमरा अरुणक सम्बन्धमे पुछलनि- के छीयै ई अरुण यादव। ओकरासँ केहन सम्बन्ध छो तोरा? बाबुजीकँ बहुत सरल रूपमे हम कहलिनि- अरूण यादव हमरे क्लासक एकटा सभ्य आ लगनशील विद्धार्थी छियै, आ हमर बहुत नीक

मित्र। बाबुजी अइस बेसी हमरा नइ पुछलनि आ- "निक जेकाँ पढब, सभ विचार करैत." कहिक ओहि दिन चलि गेलथि। बाबुजी तँ चलि गेलाथि मुदा हमरा मोनमे एकटा मामा-मामी आ बाबुजी प्रति कनि केनादोन सोचाए। लागल। हम अरूणक मात्र एकटा मित्र

मानैत छियै आ ई सभ एहन शंका किएक कऽ रहल छथि। फेर हम अपनाकँ सामान्य बनएबाक प्रयाश करए लगलहुँ। पहिने जेकाँ कॉलेज जएबाक हमर दिनचर्या शुरु भेल। हमारा आब अरुणसँ बहुत कमे बजैत छलहुँ। पहिने तँ ओना हमारा कहयो हम नइ सोचैत

छलहुँ, मुदा आब हमरा कखन कॉलेज जाइ आ अरुणकँ देखैत रही जकाँ होइत

छल। अहिना शुरु-शुरुमे अरुण प्रति कोनो भावना नइ आएल हमरा मोनमे मामा-मामी

जबरदस्ती कहिक अरुण प्रति हमरा सोचबाक लेल विवश कऽ देलनि। B.A. सेकेण्ड इयर अर्थात फाइनलक परीक्षा होबमे मात्र चारिमास बाँकि छल

मुदा आब हमरा पढ़मे कनिको मोन नइ लगैत छल। आखिर एक दिन हम अपना-आपकेँ नइ रोक सकलहुँ आ अरुणकेँ कहि देलियै जे- हम आहाँसँ प्रेम करैछी। अरुण एकदम चूप-चाप छल। हम

पुछलियै- कि हम अहाँकेँ पसन्द नइ छी? अरुणक बोल फुटल- नइ-नइ से बात नइ छियै। आहाँ सभ तरहेँ बहुत नीक छी, हम अहाँक एही प्रस्तावकेँ हृदयसँ स्वागत करैत छी। मुदा डर अछि हमरा अइ बातक जे हम यादव छी, आहाँ ब्राम्हण छी, की हमरा आहाँक विआह संभव छीयै? अरुणक एही प्रश्नक कोनो उत्तर हम नइ देलियैक। हमरा मोनमे ई पूरा विश्वास छल जे अखन आब एहि जमानामे जाति-पाति कोनो बड़का कारण

नइ छियै, हम अपना बाबुजीकेँ कहुना मना लेबै। परीक्षा नजदिक भेलोपर हम दुनु गोटे

ओते नइ पढि रहल छलहुँ जतेक पढबाक चाही। प्रेम छुपाओल नइ जा सकै छै, सैह

हमरो सभ संगे भेल। मामा-मामी बाबुजीकेँ खबर केलाखिन्ह, बाबुजी विराटनगर आबिक

हमरसँ समान लइत , हमरा नेने गाम चलि एलथि। हम बाबुजीकेँ कहए चाहलियनि जे आब मात्र 2 मासक बाद हमर B.A. फाइनल परीक्षा अए। मुदा बाबुजी कोनोबाते हमर सुनबाक फेरीमे नइ रहथि। बस दस दिनक भितर इण्डियाक एकटा गाममे हमर विआह ठिक कऽ देल गेल। हमरा नइ चाहितो हमर विआह करादेल गेल। हमर आ अरुण दुनू गोटेक सभ सपना चकनाचुर भऽ गेल। चाहियो कऽ किछु नइ करए सकलहुँ। हम तँ आब

भाग्यमे विआह लिखल सोची कहुना अपन नव जीवनक स्वीकारबाक लेल बाध्य भऽ

गेलहुँ। विआहक पाँचे दिनपर द्विरागमन भऽ गेल। अपना सासुर गेलहुँ। सासुरमे आएल

जे उमंग एकटा नव विवाहितामे होइत छै वा अपन नइहर छोड़ए कालमे जे दुःख होइत छै से कनिको हमरा नइ बुझाएल, किएक तँ हम अपना आपकेँ मात्र एकटा कठपुतली

बुझैत छलौं मात्र कठपुतली। विआहक छः दिन भेलाक बादो हमरा हमर पति नइ टोकलथि, हमरा लग हमर पति एलथि। आइये हम ओइ मनुष्यकेँ निक जेकाँ देखि रहल छि जकरा संग हमर जिवनक प्रत्येक साँस बन्हागेल अछि। बर पलंगपर बैसलथि। ओहो चुप आ हमहुँ चुप। दुनु गोटे चुपे-चुप बैसल ओ राति बिति गेल। प्रातः भने रातिमे फेर एलथि, ओइ दिन ओ दारु पिबिक आएल रहथि। दारुसँ हमरा एकदम घृणा लगैत छल मुदा हम एकहुँ रति हुनका मना नइ कऽ सकलिएनि। बेगर किछु बजने हम सभ

संगही सुतलहुँ। प्रातःभने पाँच बजे हमर बर उठि कऽ दिल्ली चलि गेलथि। दिल्लीमे ओ कम्प्यूटर इंजिनियरिंग कऽ रहल छलथि। द्विरागमनक तीन

मासक बाद हमर बाबुजीक अएलाक बाद पता चललनि जे ओ नाना बनएबला छथि। समए अपना समएसँ विति रहल छल। हम एकटा बच्चाक माए बनलहुँ। सासुरमे सउस, ससुर सभ गोटे बड़ड मानैत छलीह हमरा। बच्चा भेलाक एकहि मासमे हमर बाबुजी अपन गाम लऽ ऎलथि। हमर आठ मास रहलाक बाद ससुर विदागरी करा कऽ हमरा सासुर लऽ गेलथि। तीन वर्ष विति गेल छल हमरा बरकेँ दिल्ली गेना। एक दिन हमर ससुर इमरजेंसी तार पठा कऽ हमरा वरकेँ गाम बजौलखिन्ह। गाम एलाक बाद रातिमे हमरा दुनु गोटेमे परिचए-पात्र भेल। एतेक दिन धरि ने कियो सभ किछु कहलथि आ ने हम ककरो बतेलियै, हम तँ मात्र

एकटा हड्डी आ माउसक बनल मुर्ति आ की कहुँ रोबोट जका छलहुँ। ओइ रातिमे हमर पति सभ किछु हमरा बतौलनि। ओ कहलनि-देखु हमारा आहाँसँ विआह करबाक पक्षमे

नइ छलहुँ, हमर तँ दिल्लीएमे एकटा लड़की संगे प्रेम करित छलौं जे हमरा बाबु-माएकेँ बुझल रहए। मुदा सभ किछु बुझितो ओ जातिक कनियाँ आ दहेजक लेल जबरदस्ती हमर विवाह आहाँसँ कए देलनि। आहाँसँ भेल विआह हम मात्र अपन बाबुक इज्जति बचाबए लेल केने छलहुँ। विआहक बाद हम दिल्ली जाक ओही लड़कीसँ विआह कऽ लेलहुँ, जकरा हमारा प्रेम करैत छलियै, हम चाहितो आहाँसँ प्रेम नइ कऽ सकेछी हँ मात्र आहाँ हमर कनियाँ छी आ आहाँक बच्चाक बाबु हमहीं छी सैहटा हमारा कहि सकेछी।" हम हुनका किछु नइ कहलियैन आ ओहिना बच्चाक संग कहियो नैहर-कहियो सासुर करैत हमर जीवन वितैत छल। अखन दू वर्षसँ एकटा वोर्डिङ स्कूलमे हम पढाबि रहल छी आ शेष अपन जीनगी गुजारि रहल छी।

एहि तरहे जहिया अरुणसँ हम प्रेम बड़ करैत छलहुँ जबरदस्ती ताना मारि-मारि कऽ हमरा अरुण संग प्रेम करबाकलेल विवश कऽ देलक। जाति आ समाजक खातिर हमर जीवनक डोरी ओइ खुट्टामे बान्हि देल गेल जे लड़का पहिनहीसँ एकटा दोसर लडकी संग प्रेम करैत छल आ लड़काकेँ नइ चाहितो जाति आ समाजक डरसँ चरि लाख दहेज लक हमरासँ विआह कए देल गेलै। अइमे घाटा कोन समाजकेँ भेलै वा फायदा कोन समाजकेँ भेलै। घाटा आ फायदा तँ जकरा जे होऊ मुदा हमर जीवन अभिशप्त बना देल गेल हमरा बाबुजी आ हमरा साउस- ससुर द्वारा। नइ अपने प्रेम करए बला मनुख्ख सँग जिवन विताव सकलहुँ आ नइ अपना पतिक जिवनेमे समाहित भऽ सकलौं। ई दोष ककरा देल जाए, हमर प्रश्न सभ समाजसँ अछि। उतरो चेहे जे अबए मुदा हमर जीनगी-----, हमर जीनगी तँ-------।



जगदीश प्रसाद मंडल

बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा

(1) उत्थान-पतन

एकटा शिष्य गुरुसँ पुछल- 'मनुष्य शक्तिक भंडार छी, फेरि ओ किऐक डूबैत-गिरैत अछि?'

शिष्यक प्रश्न सुनि गुरु कने काल सोचि अपन कमंडल पानिमे फेकि देलखिन। कमंडल तैरए (हेलए) लगल। कने कालक बाद कमंडल निकालि पेन (पेंदी) मे भूर कऽ देलखिन। भूर केला बाद फेरि कमंडल कऽ पानिमे फेकलखिन। कमंडल डुबि गेल। डूबल कमंडल कऽ देखबैत गुरु कहलखिन- 'जहिना छेद भेलि कमंडल पानिमे डूबि गेल मुदा बिनु छेद भेलि कमंडल नहि डूबल, तहिना मनुक्खोक अछि। जहि मनुष्यमे संयम छैक ओ एहि संसाररुपी पोखरिमे नहि डूबैत अछि मुदा जे असंयमी अछि, ओ ओहि छेद भेलि कमंडल जेंका, डूबि जाएत अछि। गाए कऽ अगर चालनिमे दुहल जाए तँ दूध धरतीपर गिरत मुदा जँ सौँस बर्तनमे दुहल जाएत तँ वरतनमे रहत। तहिना इन्द्रिय शक्ति जँ मानसिक शक्ति कऽ कुमार्ग दिशि लऽ जाएत तँ ओ ओही चालनि जेंका भऽ जाएत। मुदा जँ सुमार्ग (सही रास्ता) दिस बढ़त तँ ओ जरुर शक्तिशाली मनुष्य बनत।'

(2) प्रतिभा

डॉक्टर राममनोहर लोहिया जेहने विद्वान तेहने देशभक्त रहथि। देशप्रेमक विचार पितासँ विरासतमे भेटल रहनि। ततबे नहि ओहने मस्त-मौला सेहो रहथि। सदिखन चिन्तन आ आनन्दमे जिनगी वितवथि रहथि। विदेशसँ अबै काल मद्रास बन्दरगाहपर जहाजसँ उतड़िलथि। कलकत्ता जेबाक छलनि। मुदा संगमे टिकटोक पाइ नहि। बिना भाड़ा देने कोना जइतथि। बंदरगाहसँ उतरि सोझे 'हिन्दू' अखबारक कार्यालयमे जा सम्पादककेँ कहलखिन- अहाँक पत्रिकाक लेल हम दूटा लेख देव।'

सम्पादक पूछलखिन- 'लाऊ कहाँ अछि।'

'लिख कऽ दऽ दइ छी'

लेख तँ लिखल छलनि नहि, कहलखिन- 'कागज-कलम दिअ, अखने लिखि कऽ दइ छी।'

लोहिया जीक जबाव सुनि सम्पादक बकर-बकर मुँह देखए लगलनि। तखन डॉक्टर लोहिया अपन वास्तविक कारण बता देलखिन। कारण बुझलाक बाद सम्पादक जी बैसबोक आ लिखबोक ओरियान कऽ देलखिन। किछु घंटाक उपरान्त दुनू लेख तैयार कऽ लोहिया जी दऽ देलखिन।

दुनू लेख पढ़ि सम्पादक गुम्म भऽ मने-मन हुनक प्रतिभाक प्रशंसा करए लगलखिन। ज्ञानक महत्ता सर्वोपरि अछि। ई बुझि एक्को क्षण व्यर्थ गमेबाक चेष्टा नहि करक चाही। सदिखन अपनाकेँ नीक काजमे लगौने रहक चाही।

(3) मर्म

एकटा स्कूल। जहिमे हेलब सिखाओल जाइत। नव-नव विद्यार्थी प्रवेश लइत आ हेलैक कला सीखि-सिखि वाहर निकलैक। स्कूलेक आगूमे खूब नमगर चैड़गर पोखरि। जेकरा कातमे तँ कम पानि मुदा बीचमे अगम पानि।

शिक्षक घाटपर ठाढ़ भऽ देखए लगलथि। विद्यार्थी सभ पानिमे धँसल। विद्यार्थी सभकेँ आगू मुँहे (अगम पानि दिशि) बढ़ल जाइत देखि शिक्षक कहए लगलखिन- 'बाउ, अखन अहाँ सभ अनजान छी। हेलब नइ जनैत छी। तँ अखन अधिक गहीर दिस नै जाउ। नइ तँ डूबि जाएब। जखन हेलब सीखि लेब तखन पाइनिक उपरमे रहैक ढ़ंग भऽ जाएत। जखन पाइनिक उपरमे रहैक ढ़ंग (कला) सीखि लेब, तखन ओकर लाभ अपनो हएत (होयत) आ दोसरो कऽ डूबैसँ बचा सकब। एहिना संसारमे वैभवोक अछि। अनाड़ी ओहिमे डूबि जाइत अछि, जबकि विवेकवान ओहिपर शासन करैत अछि। जहिसँ अपनो आ दोसरोक भलाई होइत छैक।'

वैभवक स्थितिमे व्यक्ति अपने कुसंस्कारसँ गहीर खाइ खुनि स्वयं डूबि जाइत अछि।

(4) अधखड्डुआ

दूटा चेलाक संग गुरु घूमले विदा भेला। गामसँ निकलि पाँतरमे प्रवेश करितहि बाध दिशि नजरि पड़लनि। सगरे बाध खेत सभमे माटिक ढ़िमका देखलखिन। तीनू गोटे रस्तेपर सँ हियासि-हियासि देखए लगलथि, जे ऐना किऐक छै? किछु काल गुनधुन कऽ दुनू चेला गुरुकेँ कहलकनि- 'अपने एतै छाहरिमे बैसियौक, हम दुनू भाँइ देखने अबै छी।'

'बड़बढ़िया' कहि गुरु बैसि रहलथि। दुनू चेला विदा भेल। कातेक खेतसँ ढ़िमका देखैत दुनू गोटे साँसे बाधक ढ़िमका देखि, घुरि गेल। सभ ढ़िमकाक बगलमे कूप खुनल छलैक। मुदा कोनो कूपमे पानि नहि छलैक। सिर्फ एक्केटा

कूपमे पानिओ छलैक आ ढ़ेकुलो गारल छलैक। ओना तँ सौंसे बाधे खीराक खेती भेलि छल मुदा सभ खेतक लत्ती पाइनिक दुआरे जरि गेल छलै। सिर्फ एक्केटा खेतमे झमटगर लत्तिओ छल आ सोहरी लागल फड़लो छल।

गुरु लग आबि चेला बाजल- 'सभ ढ़िमकाक बगलमे कूप खुनल छैक मुदा पानि नहि छैक, सिर्फ एक्केटाटा कूपमे पानियो छैक, ढ़ेकुलो गारल छैक आ खेतमे सोहरी लागल खीरो फड़ल छैक।'

चेलाक बात ध्यानसँ सुनि गुरु पूछलखिन- 'ऐना किऐक छै?'

दुनू चेला चुप्पे रहल। चेलाकेँ चुप देखि गुरु कहए लगलखिन- 'ऐहन लोक गामो सभमे ढ़ेरिआइल अछि जे चट मंगनी पट विआह करए चाहैत आछि। जते उथ्थर कूप छैक, जहिमे पानि नहि छैक, ओ खुननिहारो सभ ओहने उथ्थर अछि। कोनो काज-चाहे आर्थिक होए वा बौद्धिक वा सामाजिक- अगर ढ़ंगसँ नहि कएल जयतैक तँ ओहने हेतैक। बीचमे जे एकटा कूप देखलिऐक, ओ खुननिहार किसान मेहनती अछि। अपन धैर्य आ श्रमसँ माटिक तरक पानि निकालि खीरा उपजौने अछि। तेँ ओकरा मेहनतक फल भेटिलैक। बाकी सभ कामचोर अछि तेँ आशापर पानि फेरा गेलैक।'

(5) समयक बरबादी

एकटा व्यवसायी किस्सा सुनलक जे राजा परीक्षित एक्के सप्ताह भागवत सुनि ज्ञानवान भऽ गेल छलाह। तेँ हमहू किऐक ने भऽ सकै छी। ओ कथावाचक भजिअबए लगल। कथावाचक भेटलैक। दुनू गोटे (कथोवाचक आ व्यवसायियो) अपन-अपन लाभक फेरिमे। कथावाचक सोचैत जे मालदार सुनिनिहार भेटल आ व्यवसायी सोचैत जे जिनगी भरि बईमानी कऽ बहुत धन अरजलौं आबो मरै बेरि किछु ज्ञान अरजि ली, जहिसँ मुक्ति हएत।

कथा शुरु भेल। सप्ताह भरि कथा चलल। सप्ताह बीतलापर व्यवसायी व्यास जी (कथावाचक) कऽ कहलकनि- 'अहाँ नीक-नहाँति कथा नहि सुनेलहुँ, हमरा ज्ञान कहाँ भेल?' दछिना नहि देव।'

व्यवसायीक बात सुनि व्यासजी कहलखिन- 'अहाँक ध्यान सदिखन पाइ कमाइ दिस रहैए ते ज्ञान कोना हेत?'

दुनू एक-दोसरकेँ दोख लगबए लगल। केयो अपन गल्ती मानैले तैयारे नहि। दुनूक बीच पकड़ा-पकड़ी होइत-होइत पटका-पटकी हुअए लगल। ओहि समए एकटा विचारवान व्यक्ति रास्तासँ गुजरैत रहथि। ओ देखलखिन। लगमे जा दुनू गोटेकेँ झगड़ा छोड़बति पूछलखिन। दुनू गोटे अपन-अपन बात ओहि व्यक्ति कऽ कहलक। दुनूक बात सुनि ओ व्यक्ति दुनूक हाथ-पाएर बान्हि कहलखिन- 'आब अहाँ दुनू गोटे एक-दोसरक बान्ह खोलू।'

बान्हल हाथसँ कोना खुजैत? बंधन नहि खुजल। तखन ओ निर्णए दैत कहलखिन- 'दुनू गोटेक मन कतौ आओर छल तेँ सफल नहि भेलहुँ। सप्ताह

भरिक समए दुनूक गेल तँ अपन-अपन घाटा उठा घर जाउ। एकात्म भेने बिना आध्यात्मिक उद्देश्यक पूर्ति नहि होइत छैक।'

(6) पहिने तप तखन ढ़लिहेँ।

एक दिन एकटा कुम्हार माटिक ढ़ेरी लग बैसि, माटिसँ लऽ कऽ पकाओल बरतन धरिक विचार मने-मन करैत छल। कुम्हार कऽ चिन्तामग्न देखि माटि कहलकै- 'भाय! तोँ हमर ऐहन बरतन बनावह जहिमे शीतल पानि भरि कऽ राखी आ प्रियतमक हृदय जुरा सकी।'

माटिक सवाल सुनि, कने काल गुम्म भऽ कुम्हार माटिकेँ कहलक- 'तोहर बिचार तखने संभव भऽ सकै_छउ, जखन तोरा कोदारिक चोट, गधापर चढ़ैक, मुंगरीक मारि खाइक, पाएरसँ गंजन सहैक आ आगिमे पकैक साहस हेतउ। एहिसँ कम गंजन भेने पवित्र पात्र नहि बनि सकै छैँ।'



डा. सुरेन्द्र लाभ

(नाटक)

माई गे ! भूख लागल हए

दृश्य १

(मंचपर अन्हार पसरल अछि । नायक युवकक‍ँ बृद्ध माता पिता निन्नामे भेर अछि। विघ विचरो मंचपर हरियर मद्धिम प्रकाश फैल जाइत अछि। दर्शकक‍ँ मात्र नायक युवक आ' माताक विचमे चलैत सम्वाइद सुनबामे अवैत छैक।)

युवक माई गे माई । हमरा बचाले । हमरा बचाले माई ।

माता वौआ कोन्नी छँै ?

युवक एननी छियौ माई, एन्नीा ।

माता रे केम्हौर छे बेटा ? की भेलउ ?

युवक करेजमे गोली मारि देलक ।

माता हमर करेजके टुकडाके कोन जोइनढाहा गोली मारलक ?

बेटा रे बेटा कान लगैछ)

युवक एन्नी आ' ना माई । देखही नै कते खून बहै है ।

माता बेटा हमर आँखिमे तँ' अन्हहरजाली लागल हउ ।

युवक माई कनी अपना हाथे पानी पिया दे । बड पियास लागल हए ।

माता अनै छियो बोआ । कतौ जइहा नै ।

युवक माई! हम तँ जाइछियो । आइ दुनिया से जाइ छियौ ।

माता बौआ रे बौआ ! नै जो रे बौआ ! नै जो, नै जो रे बौआ ।

(मंचपर अन्हाइर नीक जकाँ पसरि जाइत छैक)

दृश्य २

(अन्हार मंचपर प्रकाशक एकटा टुकडी सूतल माता पितापर जाइत छै। माता निन्नवमे बडबडा रहल छै 'नै जो रे बौआ ! नै जो।' पिता हडबडाक, उठैत अछि। मंचपर प्रकाश पसरि जाइत छैक।)

पिता ___ (माताके उठवैट) एना कथी बडबडाई है ? की भेलै ?
माता ___ (नीन्मे) बौआ बौआ! बौआ! ।
पिता ___ हे उठौ नै । भोर भेलै आब । सपना देखै है कि ?
माता ___ (हडबडाक' उठैत) बौआ कोनो कोरामे के बच्चा ल है जे एना चिन्ता करै है ।
माता ___ (हडबडक उठैत) बौआ! कत है हमर करेज ?
पिता ___ केना करै है । बौआ कोनो कोरामे के बच्चाक है जे एना चिन्ताच करै है ।
माता ___ हमर बेटाके कुच्छो भ' गेल । हम बड खराप सपना देखलिए ।
पिता ___ सपना तँ सपने होइ है ।
माता ___ आई कत्ते दिन देखला भ' गेल बौआ के । पतिक पएरपर खसैत) केहन पाथर करेज है । जाउक नै कत्तौसँ हमर बेटाकेँ खोजिक' ले ल' अवौक ।
(फककि फफकि क' कान लगैछ)
पिता ___ (कान लगैछ) गे हम कत से आनि दियो। हमरा कोनो बुझल हए जे उ कत्त है ।
माता ___ (कौत) बौआ रे बौआ ।
पिता ___ कोन खेबने उ बौआइत होतै से त' भगबाने जनथिन्हझ ।
माता ___ हे दिनकर दिनानाथ रछा करिहा हमर बेटा के ।
पिता ___ करेज मजगूत कर गे रमलगरावाली । जो हाथ मूँह धो ग' ।
माता ___ जावत हमर बेटा नै आओतै । हम मूँहमे पानियो नै देबै । कहि दै दियो ।
पिता ___ जे हमरा करेजमे दरद नै होइहए ?
माता ___ तोरा की हएतो ?
पिता ___ जकर जवान बेटा भूखल पियासल एना गामे गाम भागल फिरतै त' ओकर बूढ बापके की हाल होइत होतै ?
माता ___ ई की जान गेलै मतारी के ममता ।
पिता ___ जवान बेटाके देखक' बापके हौसला केहन बुलन्द होइ है से तोँ की जान' गेलही ? लेकिन आइ ? (कान लगैछ)
माता ___ तोँ कुच्छौ कह' । हमरा मोन नै थीर, होइए । हमर बेटा के कुच्छोह भ' गेल ।
पिता ___ चप्पक अलच्छीह । उ मरद के बेटा है मरदकेँ । कुच्छोह नै होतौ।
(मंचपर अन्हार पसैर जाइछ)

दृश्य ३

(मंचपर अन्हार पसरल छै । चारिटा आदमी नायक युवककेँ आँखिपर पट्टी एवं हाथमेँ रस्सी बन्हमने ठाढ़ अछि । सभक हाथमे बन्दुाक छै)

पहिल आदमी (युवकसँ) जोभाग, जतेक जोरसँ तोँ भागि सकैत छेँ भाग ।
(मंचपर धीरे धीरे इजोत पसरैत अछि)

दोसर आदमी धमह। पहिने ई सभ हटा दै छियै। बेचाराके भागमे सुविधा हएतै। कहैत आगू बढि दुनू हाथक रस्सी एवं आँखिक पट्टी खोलि दैत छैक)

तेसर आदमी भागने आब ढाढ कीया छेँ ?

युवक (तेसर आदमीकेँ पएर पकडैत) नै हमरा एना भगाउ नै । हम गोर लगै छी ।
(सब आदमी ढहाका लगबैछ)

चारिम आदमी रे तोरा हमसब मुक्त क' रहल छियौ। तखन तोँ भगैत कीयाक ने छेँ ?

युवक हमरा बुझल अछि अहाँसब हमरा केहन मुक्ति देब। हम नै भागब। हमरा माफ क' दिय।

पहिल आदमी (ढहाका लगवैछ) अरे एकरा त' सब पलान बुझल छै सब पुन : ढहाका लगवैछ आ' एक लात ओहि युवककेँ मारैत अछि)
(ततपइचात सभ आदमी अट्टहास करैत अपन लातसँ। युवकपर प्रहार करैत अछि आ' पुन : मंचपर अन्हातर पसैर जाइछ)

दृश्य ४

अन्हारसँ इजोत होइत छैक मंचपर। एकटा फरकीपर आशकेँ चारिगोटे अपन कनहापर लदने जा' रहल अछि। पाछू पाछू तीन चारि गोटे रहल छैक। एकगौटे आगू आगू कोहा आदि ल' क' चलि रहल अछि। सभ चिचीया रहल अछि 'राम नाम सत्त है, सबका यही गत है'। पुन : तेसर। शव यात्रामे पाछू पाछू चलनिहार लोढ नारा लगा रहल अछि 'राम नाम सत्त है, सबका यही गत है' ।

मंचपर अन्हार पसैर जाइछ ।

दृश्य ५

(मंचपर अन्हारसँ इजोत होइत छैक । लाल मुखौटाधारी तीन व्यक्ति नायक युवककेँ घेरने ढाढ अछि । युवक डरे थरथरा रहल अछि । एकटा मुखौटा धारीक हाथमे कता छै, दोसरके हाथमे लाठी आ' तेसरके हाथमे पेस्तौहल छैक)

पहिल मुखौटा धारी : (युवककेँ हाथ उपर उठा ओहिपर कता रखैछ) एहि हाथकेँ छपटि लियौ गद्धार ।

दोसर मुखौटा धारी : नै छोड , एकर टाडे तोडि दै छी कहैत लाठी युवकके टाडपर बजारैत अछि)

युवक : इस्सै । हाथ जोडैत अछि) छोड दीए, छोडि दीए हमरा ।

तेसर मुखौटा धारी : (पेस्तौवल देखवेत) अखन गीडगौडाइत अछि । गोरगीट नहितन ।

युवक : हमरा माफक दीए भाईसब

तेसर मुखौटाधारी : हमसब माफ नै करै छियै , सक्सगन करै छियै, एक्स) न । तोरो माफ नै करबौ ।

युवक : तखन की करब ?

तेसर मुखौटा धारी : पहिने दुनू हाथ पएरपर गोली मारि क' लोथ बनएवै आ'तखन धीरे धीरे परान लेबौ ।

युवक (डराइत) नै भाइजी नै

तेसर मुखौटाधारी : (ठहाका लगवैछ) हा..........हा.............. हा...........

युवक : ई सन हमरा नै चिन्हैकत छैथ । मुदा अहाँ त' नीक जकाँ चिन्है त' छी ।

पहिल सुखौटाधारी : (अट्टहास करैत) हमरा सभक दुनियाँमे ककरो केयो ने होइत छैक ।

युवक : हमर पराने लेबाक अछि त' सीधा हमर करेजपर गोली मारु भाइजी सीधा! हे लीय अपन सर्टक बटन खोली करेज देखवैछ)

दोसर मुखौटाधारी (कडकिक') नै से नै हएतौ । हमसब विसरी कटा कटा क' जान लेबौ ।

युवक (कनैत) प्लीकज भाइजी! प्लीहज । सीधा करेजपर गालि मारु । प्लीलज कहेते पेस्तौुलवला मुखौटाधारीक पएरपर खसैत अछि । मंचपर अन्हार पसैर जाइछ)

दृश्यौ ६

(मंचपर इजोत होइत छैक । किछु युवक युवती (१० १२ गोट) अपन अपना माटरी चोटरी परदेश जा' रहल अछि । किछु वुढवा वुढिया लाठीक सहारापर ढाढ युवा युवतीकेँ हाथ हिला हिला क' विदा क' रहल अछि । युवा युवती सभ सेहो हाथ हिलवैत आगू बढि हिलवैत आगू बढि रहल अछि । बिच बिचमे कोनो युवा युवती बुढवा बुदियाकेँ चरण स्पलर्श करैत अशिर्वाद लैत आगू बढि रहल अछि ।)

एकटा युवा (बृद्ध पिताकेँ चरण स्प र्श करैत) जाइ छियो बाउ ।

(अपन ओखिक नोर पोछैत अछि ।)

बुढवा हँ जल्दी से जा' बौआ । परदेशमे कमसे कम जानकेँ रछा तँ

होतो । जा हमरा सूनके चिन्ता नै करिहा कान लगैछ।

(युवक आगू बढि जाइछ । बाँकी युवा युवतीसँ मंच खाली भऽ जाइत अछि । मात्र रहि जाइछ किछु जोडी बुढवा बुढिया । ओ लोकनि देखैत रहि जायछ बाटकँ जहिबाटे ओकर बेटा वेटी परदेश गतैक।)

मंचपर अन्हाखर पसरि जाइछ)

दृश्य ७

(अन्हार मंचपर प्रकाश होइछ । पिता आंगनमे वैसि डोरी बना रहल छैक। माता जाँतामे गहूम सिसि रहल अछि एंव संगहि छठि भगवानक गीत गावि रहल अछि

उगू हे सूरुज नाथ..........

नेपथ्यछसँ युवककें आवाज अवैछ माई ! माईगे ।)

(गीत चलिए रहल छै)

पिता कनिका चुप्पं भ' जा' त' ।

माता (चुप्पल होइत) कथिला ?

पिता बौआके आवाज जेका बुझाई है ।

पुनः युवककँ आवाज अवैछ माई ! गे माई ।

माता हँ ई तँ, हमरे बेटा हए । बौआ ? आबह नै, आबह।

(युवक प्रवेश करैछ अस्तौ व्यस्तन अवस्थाआ छै । माता पिता पकडिकऽ कान'लगैछ वौआ रे वौआ)

पिता (आँखि पोछैत) एहन हालतमे कथिला घरे अएला बौआ ?



श्री लल्लन प्रसाद ठाकुर

श्रीमती सुभद्रा देवी आ श्री हीरानंद ठाकुरक द्वितीय बालक श्री लल्लन प्रसाद ठाकुरक जन्म ५ फरबरी १९५१, नरकनिवारण चतुर्दशी कऽ मुंगेरमे भेल छलैन्ह। हिनक ग्राम- समौल, जिला-मधुबनी, आ कर्म स्थली जमशेदपुर छैन्ह। स्कूल-वॉट्सन हायर सेकेंडरी स्कूल ,कॉलेज-एम.आई.टी मुजफ्फरपुर। स्कूली शिक्षा मधुबनिक वॉट्सन स्कूलसँ केलाक बाद मुजफ्फरपुर इंजीनियरिग कॉलेजसँ सिविल इंजीनियरिंग केलाह। नेन पनिसँ हिनक अभिरुचि कला आ साहित्यक प्रति रहलैंह आ अनेको कार्यक्रम मेभाग लैत रहलाह। अपनहि लिखल नाटकक मंचन ओ अपन स्कूलेसँ करैत रहलाह। कॉलेजकँ पहिले बरखमे अपन कॉलेजक सांस्कृतिक कार्यक्रमक भार हिनका दS देल गेलैंह। कॉलेजक द्वितीय बरख सS लS कS अन्तिम बरख तक अपन कॉलेजक छात्र संघक जेनेरल सेक्रेटरी रहलाह। कॉलेजक पढ़ाई पूर्ण भेलापर टाटा स्टील मे कार्यरत भेलाह। ऑफिसक व्यस्तताक बावजूद ओ अपन साहित्यिक गतिविधि कS आगू बढ़ाबति रहलाह। ओ सदिखन अपने लिखल नाटकक मंचन करैत छलाह आ ओहि मेहुनक मुख्यभूमिका रहैत छलैन्ह। प्रकाश झा कS फ़िल्म "कथा माधोपुर की "मेमुख्य भुमिका सेहो केने छथि। हुनक लिखल सभ नाटक मिथांचलमे अखैनो खेलाएल जाइत छैक। हुनक लिखल किछु प्रसिद्ध मैथिलि नाटक छैन्हः१ - बड़का साहेब २ - मिस्टर निलो काका ३ - लोंगिया मिरचाई ४ - बकलेल ५ - आदि वा अंत ललन ठाकुर जीक किछु रचना पाठक लोकनिक समकक्ष प्रस्तुत अछि। सम्पादक।

साढ़ूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी)

कैएक साल सौराठ सभा गेलाक बाद बरक विवाह भS जाइत छैन्ह, आ ओकर बाद होलीमे हुनक साढ़ू सभ सेहो पहुँचति छथि। होलीमे सभ साढ़ूक जुटान होइत छैक। विवाहक बादक साढ़ूक व्यथा :

सासुर थिक कैलाशे ....दूर हो कि पासे ,
सारि सारक गप्प कोन सास ससुर दासम दासे।
तऽ अहीं कियाक अघुताएल छी यौ साढू ,
एखैन्ह तऽ भेल एके मासे।

बहुत जतनसँ होइत छैक विवाह मनुखकेँ,
सुखक आरम्भ आ अंत दुःखकेँ।
आ...भक्तक लेल जेना मन्दिर -मस्जिद गुरुद्वारा,
मैथिलक लेल मोहिनी मुरतियासँ सुशोभित ससुर द्वारा।

तँ प्रेमक व्यापार करू,
छप्पन तरहक व्यंजन मुफ्तहिं उदरस्थ करू।
लगैत नहि छैक कोहबर घरक कोनो भाड़ा,
संठी सन जे अबैत छथि, मोटा कऽ मोटा कऽ भऽ जाइत छथि पाड़ा।
तँ अहीं कियैक अघुताएल छी ....एके मासे।

नइ गाम परहक झंझट, नइ बाबूकेँ फटकार ,
बाबू खुश भेला लय हजारक हजार। 2
जिन्दगीमे आएल बहारे बहार,
चान सनक सारि आ फूल सनक सार।

स्वर्णिम अक्षरसँ लिखाएत ऑ चातुर्थिक राति,
जखन नॉत देल भोजनपर सोन सन मुखराक दर्शन भेल छल।
मोन मे ई झंकार भेल छल आ ह्रदयमे ई गर्जन भेल छल।
की गर्जन भेल छल ?

हमरा तँ लूटि लिया मिलके हुस्न वालों ने,
गोरे गोरे गालों ने, काले काले बालों ने।

हम छोरि चलल छी सासुरकेँ, हमरा कथि लेल रोकए छी।
मुश्किलसँ कतेक जतरा कयलहुँ, पाछूसँ कथि लेल टोकइ छी।

नइ चान सनक सारि, नइ सार गुलाबक फूल,
विवाह जे कऽ लेलहुँ, से भेल भारी भूल।
नय छप्पन तरहक भोजन, ससुरकेँ लाचारी,
यौ डेढ़ आँखि वाली सासु गाबथी नचारी।
यौ कठ्खोधी सन मुँह वाली हमर घरवाली,
सड़कपर जोँ चलती तँ कहतैन मदारी। बच्चों बजाओ ताली २
नय चतुर्थिक राति नइ होली नइ बरसाति,
यौ कर्मक लिखल कहल गेल छय सुआति।
जिन्दगीसँ साढ़ू हम मानि गेलौं हारी,
गेलौं नेपाल सँग गेलय कपार ।

पहिनेसँ अधिक दुखी छी हम,
छूरा कथि लेल भोंकइ छी।
हम छोरि चलल छी सासुरकेँ ....पाछूसँ कथि लेल टोके छी........ ।

गीतकार : *ललन प्रसाद ठाकुर*
संगीतकार : *ललन प्रसाद ठाकुर*

उमेश मंडल

लघुकथा

परहेज

साहु जी मैनेजर सहाएब आइ भोरमे मरि गेलाह। कोना नै मरितथि। तीन मास पहिनहि दिल्लीक स्कोर्ट अस्पतालमे बाइपास सर्जरी करबौने छलाह। सफल सर्जरीक बाद मैनेजर सहाएब डाक्टरसँ पुछने रहथिन- ''डाक्टर सहाएब, परहेज की कोना करबै?''

''नोन-चीनीक परहेज तँ पहिनहि जेकाँ करब मुदा आब ध्यान राखब जे चिन्ताजनक बातचीतसँ दूर रहि, झर-झमेलसँ कात रहब।''

परहेज सुनि मैनेजर सहाएब तेना सकदम भऽ गेला जेना अखनेसँ परहेज करए लागल होथि।

गाम अबिते नौकरी ज्वाइन केलनि। बैंक जाए-आबए लगलाह। समएपर सुइया-दवाइ चलिते रहनि। साते दिनपर डाक्टरसँ रक्तचापक जाँच करबैत रहथि। निकेना रहए लगलाह। चिन्ताक नामपर दिल्लीक अस्पतालमे भेल खर्च टा नचैत रहनि। आखिर ढाइ लाखक खर्च रहनि। मुदा मैनेजर सहाएबक लेल पनरहसँ मास दिनक आमदनी मात्र छन्हि। पुरबैक लेल भरपूर प्रयासमे लागि गेलाह। आब मैनेजर सहाएब ग्राहककेँ बेसी तंग नहि करै छथिन। सभक काज मिलानियेसँ करए लगलाह। गहिकियो सभ मैनेजर सहाएबकेँ खुश कऽ कए अपन काज तेजीसँ निकालि रहल अछि।

किछुए दिनमे समए तेना बदलि गेल जेना कोनो पथिक अपन पथ भ्रमित भऽ गेने औनाए लगैत अछि, तहिना। आ एहि लेल सस्पेन्ड कऽ देल गेलाह। आब मैनेजर सहाएब अपन परहेज आ जिनगीक उपर सोचए लगलाह। ग्राहको सभ डेरेपर आबि-आबि तगेदा दिअए लगलनि। क्यो कहनि जे- ''हमर रुपैया आपस कऽ दिअ।'' तँ कियो कहनि- ''काज करेबा लेल जे रुपैआ नेने छी से काज करु, नइ तँ हमर बेटीक विआह भडठि जाएत। समएपर काज जँ नहि करब तँ बहुत अधला फल होएत।''

इम्हर डीस बलाक तगेदा, बिजली बिल, जनरेटर बलाक आग्रह, दूध बलाक खुशामद, स्कूलक फीस माथपर रहबे करनि। मैनेजर सहाएबक आदत सप्पत रुपमे व्याप्त रहनि जे ई सभ खर्च धेलहा रुपैआसँ आइ धरि नै केने रहथि तँ आब कोना करितथि। जेना-जेना ई सभ झमेल बढ़ैत गेलनि तेना-तेना रक्तचाप सेहो बढ़ैत गेलनि। कनियेँ कालक बाद डाक्टर बजौल गेला। डाक्टर सहाएब जाँचि कऽ बजलाह- ''नै छथि।''



कमला चौधरी-१९५३

कृति- मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली, प्रकाशनाधीन: बाटे बिलायल पानि (कथा संग्रह), पिया मधुमास (कविता संग्रह), आशापूर्णा देवीक बंगला लघु उपन्यास मन मंजूषाक मैथिली अनुवाद। मुजफ्फरपुरसँ प्रकाशित मैथिली साहित्यिक पत्रिका स्वातीक सम्पादन (१९८४-८५)।

कथा-गुणनफल

मीरा माइक प्रसन्नताक कोनो सीमा नहि। आइ भोरेसँ छोट मोट मोटरी बन्हबामे लागलि छथि। आखिर नव गृहस्थी बसतैक। कतेक छोट छिन वस्तुक खगता होइत छैक।

ताबत ध्यानमे अएलनि जे थोड़ेक कोबीक सुखौंत आ चिक्कस सेहो बान्हि देबाक थिक। नहि तँ जाइते बजारक मुँह देखए पड़तैक। ई सभ करैत करैत आँखि नोरा गेलनि। मीरा फूल सन कोमल आ सादा कागत सन स्वच्छ। आँखिक आगाँ चमकि गेलनि विवाहक ओ दिन।

परिछन करैत काल दाइ माइ सभकेँ मीराक भाग्यपर ईर्ष्या भेल रहनि। केओ टिपैत कहने छलीह- गे दाइ, ई तँ सत्ते मीरा आ कृष्णक जोड़ी हेतै।

वर जहिना कुर्ता आ गंजी खोललनि आकि सभक नजरि हुनक उन्नत आ पुष्ट छातीपर रूकि गेलनि। मीराक माए जल्दीसँ जमाएकेँ डोपटा ओढ़ाए, काजर लगाए देलथिन्ह आ गोसाऊनि घर लऽ कऽ चलि गेलीह। आङ्गन घर *शुभे हे शुभे*सँ मुखीत भऽ गेल रहए।

सिनुरदान नीक जकाँ सम्पन्न भऽ गेलैक। मीरा माए निश्चिंत नहि रहि सकलीह। चारि दिनुक बादे ओझाक नाकर नुकुर कानमे पड़ए लगलनि।

ओझा माने सुनील बाबू, खबासक संग स्नान करए जएबाकाल आङनेमे ठाढ़ि सासुकेँ सुनबैत कहलनि- हमरा तँ सूनल छल जे मीरा मैट्रिकक परीक्षार्थी छथि। मुदा हिनका तँ मिडिल मात्रक योग्यता छनि। हम शहरमे रहनिहार लोक छी। पढ़ल लिखल लोक सभक संग उठब बैसब अछि। ओहिमे मीरा कोना एडजस्ट करतीह?

मीरा माए कमलपुरवाली अति विनम्र शब्देँ ओझाकेँ बुझबैत कहने छलीह-

मीरा एखन मात्र चौदह वर्षक अछि। ओकरा जेना जे पढ़बए चाहथिन से पढ़ि लेतनि। हम एकसरि अपना भरि मीराकेँ सुयोग्य स्त्री बनबाक शिक्षा देने छिऐक। आब आगाँ हिनकर थिकन्हि। जेहन बनाबथि। जेना राखथि।

सप्ताह दिन मात्र सासुरमे रहि ओझा बिदा भऽ चल गेल छलाह। सासुक बहुत आग्रह पर फगुआमे अएबाक भरोस देलथिन।

मुदा तीन फगुआ बीति गेल। ओझाक कोनो पता नहि। शिवरात्रिक मेलामे ओझाक कोनो गौआँ बौआ ककाकेँ कहने रहथि जे हुनकर जोगर कनिञा नहि भेलनि। तेँ आन-जान छोड़ने छथि।

ई बात बुझिते कमलपुरवाली कबुला पातीक आमार लगा देलनि। बेटीक मुँह देखिते ह्रदए टुकड़ी-टुकड़ी होबए लगनि। मुदा साध्य की ! तीन वर्ष तीन युग सन बीतल छल।

ओझाकेँ नहा कऽ घर जाइत देखि कमलपुरवालीक ध्यान टुटलनि। मोटरी बान्हब छोड़ि दौगलथि भानस घर। जैधीकेँ चूल्हि लग बैसा आएल रहथि। कटोरी सभमे तीमन तरकारी सजबए लगलीह। ओझाकेँ भोजन पठा कऽ फेर पेटी सरिआबए लागल रहथि। जेठकी दियादिनीकेँ सोर पाड़ि, मीराकेँ नूआ बदलि केश खोपा कऽ देबए कहलनि।

सभ ओरिओन होइत बेर खसि पड़लैक। ओझाक सम्बाद आएल जे पटना पहुँचैत राति भऽ जाएत, तेँ जल्दी बिदा होएब जरूरी। आङनमे आइ माइ जुमि गेल छलीह।

कमलपुरवाली मीराकेँ भरि पाँज पकड़ि घर लऽ गेलीह। हृदएमे हाहाकार भऽ रहल छलनि। किछु फूटि कऽ बाहर होमए चाहैत छल मुदा अपनाकेँ नियंत्रित कैने छलीह। ईहो दिन भेल जे तीन बरखक बाद ओझा मीराकेँ लेबए अएलाह अछि। दुनू हाथेँ बेटीक गाल पकड़ि बुझबैत कहलनि- दाइ, आइसँ सभ किछु वएह छथुन। जेना रखथुन तहिना रहिहेँ। बिनु पुरूषक स्त्री पाथर होइए। बिसरि जइहेँ सभ किछु। बस कहियो काल पोस्टकार्डपर कुशल मंगल खसा दिहेँ। आर किछु नहि।

माए, काकी, काका सभकेँ गोर लागि बिदा भऽ गेल छलीह मीरा।

बसमे चुपचाप बैसलि मीराक आँखिक आगाँ झुलैत रहलनि सभ दृश्य- पोखरि, इनार, कलम, सरिसोक साग आ संगी बहिनिया जोड़ी, फूल, लौंग....। माएक बात मोन पड़ि गेलनि। ई सभ तँ बिसरि जएबाक थिक। मन रखबा लेल छथि, बस इएह टा!

पटना पहुँचि अपन गृहस्थी बसएबामे मीरा लागि गेलीह। बहुत किछु तँ माए संग कऽ देने रहथिन। बाँकी आवश्यक वस्तु सुनील जुटाए देलथिन्ह। मीरा अपन गृहस्थीमे लीन भऽ गेलीह।

मास दिन तँ पाँखि लगा उड़ि गेल। मुदा एहि बात दिस मीराकेँ आइ ध्यान गेलनि। ऑफिस जएबाक तऽ एकटा कोनो निश्चित समए होइत छैक। सुनीलकेँ बाहर जएबाक तँ कोनो निश्चित समए नहि छन्हि। ओ ई बात आब

सुनीलकेँ पूछबे करतीह।

एक दिन उदास स्वरमे सुनील कहने रहथिन्ह मीरा, हम बहुत दुविधामे जीबि रहल छी। अहाँसँ नुकाएब ठीक नहि। वस्तुतः हमर नोकरी छूटि गेल अछि। इम्हर ओम्हरसँ पैंच उधार लऽ घरक खर्च चला रहल छी। आब दोस्तो महीम संग छोड़ि देलनि अछि। एहन समएमे अहीं हमर मददि कऽ सकैत छी।

मीरा हतप्रभ भऽ गेलीह। ओ कोना मददि कऽ सकैत छथि ? ओ तँ अधिक पढ़लो लिखल नहि छथि।

हुनक मनोभाव पढ़ि सुनील बुझओने रहथिन- यएह कातहिमे सौंदर्य केन्द्र छैक। ओहिमे तीन मासक प्रशिक्षण लऽ लिअ आ फेर ओतहि काज करब शुरू कऽ दिअ। दू तीन हजार मास कमायब साधारण बात अछि।

ओहिना ठाढ़ि रहली मीरा। हुनका बुझबामे किछु नहि अएलनि। सौंदर्य केन्द्र ? प्रशिक्षण ? रूपैया ? तीनू शब्द मनमे बेर बेर हौड़ए लगलनि। ओ तँ स्त्रीक काज घर सम्हारब बुझैत छलीह। ई हुनकासँ की करबए चाहैत छथि?

सुनील मीराक हाथ पकड़ि चौकीपर बैसा लेने रहथिन- मीरा, हम सभ बुझा देब। बस, जेना हम कहैत छी से करैत चलू। अहाँ सुंदरि छी। कने स्मार्ट भऽ जाउ। फेर देखू ने, हमर सभक दरिद्रा कोना भागि जाएत।

ई सभ किछु सुनबामे मीराकेँ नीक नहि लागल रहनि मुदा माइक कहल- जहिना रखथुन, तहिना रहिहेँ- मन पड़ि गेलनि। ठीके तँ छैक, जहिना रखताह तहिना रहब।

ओहि दिन साँझमे सुनील नव 'डिजाइन'क साड़ी, रेडिमेड ब्लाउज, हिल चप्पल एवं अन्य फैशनक वस्तु मीराक आगाँ पसारि देलनि।

-ई सभ पहिरिकेँ तँ अहाँ परी जकाँ लागब मीरा। मुदा हमरा बिचारेँ अहाँक नाम बदलिकेँ जँ 'रूबी' रहितए तँ बेसी नीक होइत। मीरा ! बहुत 'ओल्ड' फैशनक नाम थिक। आइसँ हम अहाँकेँ रूबी कहल करब।

सभ किछु स्वीकार करबाक अतिरिक्त ओ कए की सकैत छलीह ? प्रातःकाल सुनीलक संग हुनका सौंदर्य केन्द्र जएबाक छलनि। सुनीलक बिचार छनि जे प्रशिक्षणसँ पूर्व हुनकर अपन सौंदर्यमे निखार आबि जएबाक चाही। तखनहि ओ ठीक ढँगसँ प्रशिक्षण लऽ सकैत छथि।

आज्ञाकारी नेना जेना अभिभावकक संग पाठशाला जाइत अछि, तहिना दोसर दिन सुनीलक पाछाँ पाछाँ मीरा बिदा भेलीह। सौंदर्य केन्द्रक व्यवस्थापिका मिस डेजीसँ मीराक परिचय दैत सुनील कहने रहथिन, ई हमर पत्नी रूबी छथि। हिनका कने अहाँ स्मार्ट बना दियनु जाहिसँ इहो अहाँक 'एसिसटेंट' बनि सकथि। बेस, तँ जावत हिनका निखारबामे समए लागत, ताबत हम एकटा मित्रसँ भेंट कऽ अबैत छी।

सुनील तँ चलि गेल छलाह मुदा मीरा बलिक छागर जकाँ भएभीत दृष्टिसँ मिस डेजी दिस तकिते रहलीह।

तकिते तँ रहि जइतथि मुदा मिस डेजी मीराकेँ केन्द्रक भीतर लऽ कऽ

चल गेलीह। ओतए मोट मोट स्त्रीकेँ कुर्सीपर ओंघरल आ मुँहपर लेप लगौने देखि मीराक मन भिनकि गेलनि। ओतुका बात व्यवस्था बड़ अजगुत बुझना जाइनि। ई कोन दुनियाँ थिक ? एहि दुनियाँक खिस्सा तँ कतहु नहि सुनने छी। किछु काल मीराक सुधि बुधि जेना हेरा गेलनि।

ध्यान तखन भंग भेलनि जखन मिस डेजीक कैंची हुनक केशपर चलब शुरू भेल। मीरा, 'नहि नहि' कहैत उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलीह।

-देखू, अहाँक पति जे निर्देश देलनि अछि, सएह हम कऽ रहल छी। हमर समए बर्बाद नहि करू। भौं चढ़बैत मिस डेजी बजलीह। ठीके तँ ओ सुनीलक निर्देशक अनुसार सभ किछु करैत छथि। तखन विरोध कथीक ? मीरा धब्ब दऽ कुर्सीपर बैसि गेलीह।

किछु कालक बाद हुनक केश आ भौंहुक आकार प्रकार बदलि चुकल छल। कुर्सीक नीचाँ काटल केशकेँ देखि भीतरे भीतर कुहरि गेलीह मीरा। केश बन्हैत काल माइक मुँहसँ झहरैत गीत मन पड़ि गेलनि। केशक पोरे पोरे तेल लगा केहन सीटिकेँ केश बन्हैत रहथिन। आब से सम्भव नहि भऽ सकत। नोरक प्रबल वेगकेँ बलात नियंत्रित कएने रहलीह।

केन्द्रक दाइ सुनील बाबूक अएबाक सूचना दऽ गेल रहनि। मीराक संग मिस डेजी सेहो बाहर अएलीह। मिस डेजी आ सुनीलमे किछु गप्प सप्प भेलनि आ निश्चित भेल जे काल्हिसँ दस बजे ओ अपन पत्नीकेँ ओतए पहुँचाए देल करताह।

रिक्शापर सुनील मीराकेँ चुटकी लैत कहने रहथि- वाह, हमर रूबी ! आइ तँ अहाँ कमाल लागि रहल छी। चलू एही बातपर एकटा सिनेमा देखल जाए। रिक्शा सिनेमा हॉल दिस बढ़ि गेल छल।

सिनेमा हॉलमे आँखिक आगाँ अबैत जाइत चित्र मीराकेँ कनेको नीक नहि लागि रहल छलनि। चित्रमे एकटा खूब अधिक आधुनिकाकेँ देखबैत सुनील कहलनि–रूबी ! छौ मासमे अहाँ एहने स्मार्ट भऽ जाएब। तखन तँ अहाँकेँ गामक सखी बहिनिया चिन्हबो नहि करतीह।- आ सुनील मीराक हाथ अपना हाथमे लेबए चाहलनि।

मीराकेँ किछु नीक नहि लागि रहल छलनि। ओ ओहिन चुपचाप निर्जीव सन बैसल रहलीह। हुनकर चुप्पीकेँ सुनील लक्ष्य कऽ रहल छलाह। घर अएलापर ओ विशेष तमसाए गेल रहथि- अहाँ अपन देहाती चालि ढ़ालि छोड़ब आकि नहि ? पति जँ पत्नीसँ हँसी मजाक करए चाहैत अछि तँ ओकर काज थिक ओहिमे संग देब। अहाँ एना पाथर सन किए बनल रहैत छी ? गामसँ की अहाँकेँ हम पूजा करए अनलहुँ अछि ? हम कर्ज लऽ कए अहाँपर खर्च कऽ रहल छी, एकर बदलामे अहाँसँ किछु चाहैत छी तँ से अहूँकेँ नीक नहि लगैए। मीरा, समदाउन आ सोहरक आब समए नहि अछि! प्रैक्टिकल बनू प्रैक्टिकल। जतएसँ आएल छी से बिसरि जाउ। जतए आइ छी बस ओकरे टा ध्यानमे राखू। नहि तँ बाजू, काल्हिए माए लग पहुँचा आबी ?

दुनू हाथेँ कान बन्द कऽ लेने छलीह मीरा। नहि, नहि ओ माए लग नहि जएतीह। तीन वर्ष धरि माइक अंतःपीड़ाकेँ ओ भोगने छलीह। फेरसँ हुनका वएह दुःख देबए नहि जएतीह। मीरा ओछाओनपर कछमछाइत रहलीह। सुनील नीन पड़ि गेल छलाह। काल्हिसँ ओ नव दुनियाँमे प्रवेश करए जा रहल छथि। नहि जे नीक लगैत, ओहिमे मन लगेबाक छनि। माइक कहब पुनः मन पड़ि गेलनि। जहिना रखथुन, तहिना....'।

भिनसरे मीरा सुनीलक उठबासँ पहिनहि घरक काज धन्धासँ निश्चिंत भऽ स्नान कऽ रहल छलीह। सुनील हुनक फुर्ती देखि अचंभित छलाह।

देखू, हम तैयार छी। अपने विलम्ब करब तँ हमर दोष नहि।- स्नान घरसँ बहराइत मीरा बजलीह। सुनील सेहो तैयार भऽ मीराकेँ प्रशिक्षण केन्द्र धरि दए अएलाह।

लऽ जएबाक ओ लऽ अनबाक ई क्रम सप्ताह भरि चललाक बाद मीरा सुनीलकेँ एहि भारसँ मुक्त कऽ देलनि। आब हुनकामे आत्मविश्वास आबि गेल छल। नियत समएपर जाएब आएब हुनक जीवनक अभिन्न अंग बनि गेल छल आ एकर संगहि दिन प्रतिदिन मिस डेजीक कुशलता अपन आङ्कुरमे समेटने जाथि।

तीन मास बितैत बितैत श्रृंगार-कलामे मीरा निपुण भऽ गेलीह। कटिंग, फेशियल, ब्लीचिंग, वैक्सिंग, मैनीक्योर, पैडीक्योर आदि, सौंदर्यक सभ विद्यापर हुनका दक्षता भऽ गेल छलनि।

ओना तँ केन्द्रमे आर प्रशिक्षिता सभ रहथि मुदा मिस डेजीक बाद दोसर नाम रूबी सएह छल। मिस डेजी सेहो अपन ग्राहकक सोझाँ रूबीक नाम गर्वसँ लैत छलीह। कोनो आकस्मिक काजक दिन केन्द्रक चाभी रूबीक ओतए दऽ अबैत रहथि। रूबीकेँ आमदनी सेहो नीक होमए लगलनि।

पहिल आमदनी लऽ जहिया सुनीलक हाथमे देलनि तँ ओ आनन्दसँ मीराकेँ कोरामे उठा लेने रहथि। ओना मीराक भीतर किछु भिनकि गेलनि मुदा बाहरसँ प्रसन्न होएबाक नाटक कैने छलीह- अच्छा कहू, आब हम अहाँ जोगर 'स्मार्ट' आ 'प्रैक्टिकल' छी आकि नहि? आब तँ ने हमरा गाम दए आएब ?

-सेन्ट परसेन्ट! रूबी आब अहाँ 'फर्स्ट क्लास' भऽ गेल छी। अहाँकेँ भला हम गाम छोड़ि आएब ? कथमपि नहि। जनैत छी रूबी, अहाँक ई रूप गढ़बामे हमर मित्र प्रकाशक बड़ पैघ हाथ अछि। ओ अहाँक फोटो देखि हमरा बिचार देने छल, तोहर पत्नी तँ सुन्दरि छथुन्ह। हुनका पटना आनि ले आ प्रशिक्षित कऽ काजमे लगा दहुन। फेर तँ ओ 'सोनाक अंडा' देनिहारि मुर्गी भऽ जएथुन।

भभा कऽ हँसि देने छलाह सुनील। -सोना अंडा देनिहारि मुर्गी ?- मीराक मनमे चोट लगलनि। मुदा आब तँ ओ ओहि चोटक अभ्यस्त भऽ गेल छथि। जल्दीसँ कपड़ा बदलि जलखै बनबए चल गेलीह। मुदा मुर्गी शब्द माथमे नचैत रहलनि। मीराक मूल्य बस यएह अछि। हृदए हाहाकार करए लगलनि। एहन समएमे माएक स्मृति मनकेँ शांति दैत छलनि। मुदा एहि सभ पीड़ासँ माएकेँ

अनचिन्हार रखने छलीह। ओ बरोबरि अपन माएकेँ अपन सुख आ खुशीक मिथ्या वर्णन पत्र द्वारा दैत रहैत छथि। मीराक माए ओ पत्र टोल परोसमे लोकसँ पढ़ा कऽ कतेक आनन्दित होइत होएतीह से मीरा खूब जनैत छथि। बस, यएहटा खुशी तँ ओ अपन माएकेँ दऽ सकलीह अछि। मुदा माए हुनका अनबा लेल ककरो किएक नहि पठबैत छथि ? मीराक आँखि भरि गेलनि। ओ जनैत छथि माइक आशंकाकेँ -जे अनलासँ फेर कतहुँ ओझा छोड़ि ने देथि। माइक बिचारे बिना पुरूषक स्त्री देवाल बराबरि थिक। स्मृतिक झंझावातकेँ बसात रोकि मीरा सुनीलक आगाँ जलखै दऽ अएलीह।

आब मीराक बेसी समए केन्द्रमे बितैत अछि। ओहिसँ आमदनी सेहो बढ़ि गेलनि। तँ सुनीलकेँ कोनो विरोध नहि।

हँ घरक टहल टिकोरा लेल एकटा बीरू नामक टेल्हकेँ राखि लेल गेल अछि। मीरा संध्यामे घर आबथि। सुनीलकेँ मित्र मण्डली संग ताश खेलाइत देखथि। बीरू चाह जलखैक ओरिआओनमे लागल। मीराकेँ मोन होइनि जे जखन ओ थाकि कऽ अबैत छथि तँ सुनील हुनका लग आबथि। हाल चाल पूछथि। मुदा सुनील तँ -आबि गेलहुँ- पूछिकेँ अपन खेलमे लागि जाइत छथि।

एम्हर मीराक मन किछु दिनसँ खराप लागि रहल छनि। एक दिन केन्द्रपर जोरसँ कै भऽ गेलनि। मिस डेजी बुझाकेँ कहने रहथिन, अहाँ डॉक्टरसँ देखाऊ, अहाकेँ आरामक जरूरी अछि।

घर आबि सुनीलकेँ मीरा अपन स्थिति कहने रहथि। सुनील एहि बातसँ बहुत चिंतित आ व्यग्र भऽ गेलाह। रूबी, ई ठीक नहि भेल। एखन अहाँ कुशलताक चोटीपर छी। यएह समए तँ अछि कमएबाक। एहिमे बाल बच्चाक समस्या बड़ बाधक होएत। एहि लेल तँ एखन पूरा जीवने पड़ल अछि। हमर बात मानू। डॉक्टरक ओतए चलू। एकरा खतम कए आबी।

मीराकेँ सुनीलक मुँह दिसि ताकि नहि भेलनि। लगलनि जेना हजारक हजार संख्यामे पिल्लू सुनीलक चेहरापर ससरि रहल अछि। घृणासँ मन भरि गेलनि। एहने पुरूष बिना स्त्री देवाल थिक ?

-मीरा ओछाओनमे मुँह गाड़ने कनैत रहलीह। मनक विषाद दूर करबाक हुनका लग आर दोसर कोनो रास्ता नहि छलनि। जँ कनेक काल लेल हुनका उड़बाक शक्ति भेटि जाए तँ माएकेँ जा कहि अबितथि। एहुना तँ ओ देवाले बराबर छथि; जकरा मकान मालिक अपन मनोनुकुल रंगमे समए समएपर रङैत रहैत अछि। मुदा माइक भ्रम तोड़िकेँ ओ शांत रहि सकतीह ?

सुनीलक इच्छा आगाँ झुकि गेल छलीह मीरा। सप्ताहक भीतरे डॉक्टरक ओतए सुनील हुनका लऽ गेल छलाह। आ मीरा खाली मन आ खाली हाथेँ घर फिरल छलीह। मुदा ओकर बाद मीरा कखनो सहज नहि रहि पाबथि। घरक आगाँ दए कोरामे नेनाकेँ नेने जाइत कोनो स्त्रीकेँ देखि भीतरसँ जेना ओ कुहरए लागथि। दोकानपर धीया पूता लेल टाङल छोट छोट वस्त्र दिस टकटकी लागि जाइनि।

एक दिन केन्द्रसँ फिरैत काल पता नहि कतेक काल एकटा दोकानक आगाँ ठाढ़ि रहि गेलीह। दोकानमे किनबा लए आएल स्त्री लोकनिक नेना आ किनल जाइत वस्तुकेँ अपलक देखैत रहलीह। संयोगे कात दऽ जाइत केन्द्रक सहायिका नीलू टोकि देने रहथिन। परिस्थितिक आभास होइतहि सङ्कित भऽ गेल छलीह। आ घर दिस झटकल डेगे बिदा भऽ गेल रहथि।

घर पहुँचि देखलनि जे सुनील ज्वरमे पड़ल छथि। समीपेक डॉक्टरकेँ बजा अनने छलीह। दवाइ चलए लागल। सौंदर्य केन्द्रसँ थाकल आबि फेर सुनीलक सेवामे लागि जाथि। केन्द्रसँ फिरबाकाल सुनीलक हेतु फल, दूध, अंडा आ दवाइ लऽ आबथि।

सुनीलकेँ पूर्ण स्वस्थ्य होएबामे करीब मास दिन लागि गेल रहनि। डॉक्टर पूर्ण आरामक बिचार देने रहथिन। मीरा अपन कर्त्तव्यमे रत्ती भरि कमी नहि आबए देने छलीह। मुदा कखनो कऽ जीवन भार सदृश लगनि। पटरीपर निर्विकार भावेँ दौगैत निर्जीव ट्रेन सन अपन जीवन बुझाइनि। ओ आगाँ बढ़बा लेल विवश छथि।

ओहि दिन मीरा केन्द्र जएबाक लेल तैयार भऽ रहल छलीह। बीरूक शिकायत करैत सुनील कहने रहथि बीरू दुपहरियामे सूति रहैत अछि। लाख बजौलासँ नहि उठैए। दुपहरियाक दवाइ आ जूस लेबामे देरी भऽ जाइए। नहि हो, तँ किछु दिनक छुट्टी लऽ लिअ। एखन हमरा विशेष सेवा चाही। से तँ अहीं कऽ सकैत छी।

मीराकेँ कंघीक दाँत जेना माथमे गड़ि गेलनि। भीतरसँ छटपटा उठलीह। एतेक दिनमे ओ बहुत सहनशील भऽ गेल रहथि। मुदा आजुक बात कानमे पघिलल शीशा सन बुझएलनि। शरीरमे एक संचार जेना बहुत तीव्र भऽ गेल रहनि। कनपट्टीक नस तनि कऽ टुटबा लेल तैयार भऽ गेल छल। आइ कतबो चाहलनि मुदा चुप नहि रहि सकलीह!

-बस करू आब ! सहन करबाक सेहो एकटा सीमा होइत छैक। चाही....चाही....अहाँकेँ बस चाहबे टा करी। कहियो किछु देबए तँ नहि जनलहुँ। हमर शरीर हमर कमाइ, हमर मातृत्व सभ तँ अहाँ लऽ चुकल छी। हमरा लग आब देबा लेल किछु अछि नहि। मन पाडू....। हम मीरा नहि....रूबी छी। सौंदर्य केन्द्रक शीर्षस्थ प्रशिक्षिका। अहाँक शब्दमे सोनाक अंडा देनिहारि मुर्गी। से तँ अहाँक हाथमे सोना दैते छी। मुदा आब हमरो किछु चाही....। हमरो आब अपन किछु व्यक्तित्व अछि....। दस लोकक बीच उठब बैठब अछि। कतेको 'कस्टमर' रूबीक प्रतीक्षा कऽ रहल होएतीह। हमर जाएब जरूरी अछि। अहाँ लग सेवा लेल बीरू तँ अछिए। धैर्य राखू। अहींक निर्देशनमे हम प्रैक्टीकल बनब सिखलहुँ अछि....।

पर्स कान्हपर लटकबैत, परदाकेँ तेज हाथेँ उठा मीरा बाहर निकलि गेल छलीह। सुनील बाबू परदाक डोलब बहुत काल धरि देखैत रहल छलाह।

बेचन ठाकुर
चनौरा गंज, मधुबनी, बिहार।

'छीनरदेवी'

पात्र परिचय-

पुरुष पात्र १. सुभाष ठाकुर- एक साधारण शिक्षित व्यक्ति।
२. ललन ठाकुर- सुभाष ठाकुरक इकलौता पुत्र।
३. पवन- सुभाष ठाकुर भातिज।
४. मटुक- सुभाष ठाकुरक पड़ोसी।
५. राजू- सुभाष ठाकुरक बुजुर्ग भागिन।
६. संजय- सुभाष ठाकुरक भागिन।
७. सुखल कियोट- एकटा साधारण भगत।
८. यदुलाल ठाकुर- सुभाष ठाकुरक छोट भाए।
९. सोमन ठाकुर- यदुलाल ठाकुरक इकलौता बेटा।
१०. परबतिया कोइर- एकटा प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक।
११. घटकराज ठाकुर- सुभाष ठाकुरक पीसा।
१२. बलदेव महतो- एकटा साधारण किसान।
१३. विनोद झा- काली मंदिरक पुजारी।

स्त्री पात्र-
१. मीरा देवी- सुभाष ठाकुरक पत्नी।
२. सुकनी देवी -यदुलाल ठाकुरक पत्नी।
३. मालती देवी- बलदेव महतोक पत्नी।
४. अनु अंजना- बलदेव महतोक इकलौती बेटी।

पहिल दृश्य-

(स्थान- सुभाष ठाकुरक घर। मीरा देवी सुभाष ठाकुरक पत्नी छथिन्ह। ललन ठाकुर हिनक इकलौता बेटा छथिन्ह। ललन बताह अवस्थामे अपन दरवाजापर अंट-संट करैत छथि। हिनक उपद्रवकेँ देखि सुभाष ओ मीरा मनहुस अवस्थामे)

मीरा- स्वामी, ई छौंरा हमरो बताह बनए देत।

सुभाष- सएह तँ हमहुँ कहैबला रही। हमर मुँहक बात छीनि लेलहुँ। हमरा किछु नहि फुराइत अछि। की करी की नहि। ककरासँ देखाबी, ककरासँ नहि। यै ललन माए, मोन होइत अछि जे एकरा राँची वा दरिभंगा लऽ जाइ। की विचार अहाँक ?

मीरा- हमर विचार इएह अछि जे राँची दरिभंगा लऽ जाइसँ पूर्व एकरा कतउ एम्हर-ओम्हर देखाए दियौ। नजरि-गुजरि सेहो भए सकैत अछि।

सुभाष- तहन ककरासँ देखाए दियन्हि ?

मीरा- यौ ललन बाप, सुनैत छी सुखलाहा कियोट एहि सभमे बड़ पहुँचल अछि। हुनकहिसँ देखाए दियौन्ह।

सुभाष- हुनक नाम तँ हमहुँ बड़ सुनैत छी।

(ललन धरामसँ खसि पड़ैत छथि आ मुँह रगड़ए लगैत छथि। दुआरिपर ललन ओंघराए रहल छथि।)

मीरा (अफसियाँत भऽ) बौआ रओ बौआ। की भए गेलौक रओ बौआ?

ललन- (माथ पटकैत) हम तोरे संग जएबौक। हम आब नहि जीबौक। हम तोरो लऽ जेबौक अपनहि संग। हम तोरो खएबौक। हम कोनो भात-दालि खाइत छी। हमरा चाही पियोर खून। हमरा बगिया देने रहौक। बगिएमे सभ टा कारामात छल। (सौंसे दुआरि ललन ओंघरए रहल अछि। कपड़ा-लत्ता फारि लैत अछि। पवन, मटुक, राजू आ संजयक प्रवेश। ललनक दृश्य देखि रहल छथि सभ कियो। सुभाषकेँ अक-बक किछु नहि फुराइत छन्हि।)

मटुक- यौ सुभाष, बौक जेकाँ ठाढ़ रहने काज नहि चलत। अहाँ सुखल कियोट लग जाउ। हुनका जल्दी बजौने आउ।

(सुभाष, सुखल कियोटक ओहिठाम गेलाह। किछुए खनक बाद सुभाषक संग सुखलक प्रवेश।)

सुखल- अहाँ सभ कने कात भऽ जाउ।

(सभ कियो कात भऽ जाइत छथि। सुखलकेँ देखि कऽ ललन आओर माथ पटकए लगैत अछि।)

सुभाष- कने जल्दी देखियौक सरकार।

सुखल- अहाँ सभ हरबराउ नहि। हम बैसल नहि छी, सभ देखि रहल छी। (अपन जेबीसँ किछु निकालि कऽ ललनपर फेंकैत छथि। ललन बिल्कुल शांत भऽ जाइत अछि।)

ललन- आब नहि हओ। आब कहियो नहि अएबह।

सुखल- तों, के छिअएँ?

ललन- हम नहि कहबह। हम नहि कहबह। हम नहि कहबह। हम नहि कहबह। हम नहि कहबह। नहि हओ। तों हमर के छह, जे तोरा हम कहबह।

सुखल- हम तोहर बाप छियौक।

ललन- हमहुँ तोहर बाप छियह। (सुखल ललनकेँ एक चाट गालपर मारि दैत छथि।) आब नहि अएबह।

सुखल- नाम कऽह।

ललन- हमर नाम छी देवकी कुमारी।

सुखल- के रखने छौक?

ललन- छोटकी काकी।

सुखल- कत्तए रखने छौक?

ललन- से नहि कहबह- से नहि कहबह- से नहि कहबह।

(फेर सुखल एक चाट छऽ कऽ माथा हाथ दैत छथि।)

सुखल- आब कहबें।

ललन- हँ हओ। आब कहबह।

सुखल- तहन कह। जल्दी बाज। नहि तँ बुझि ले।

ललन- मारह नहि, कहि दैत छियह। कोहामे। पैखाना घरमे।

सुखल- किएक अएलें ?

ललन- ललनकेँ लऽ जेबाक लेल। एकसरे हमरा मोन नहि लगैत अछि। हम ललनकेँ नहिए छोड़बै। (सुखल ललनकेँ कसिकए माथा हाथ दैत छथि। भूत भागि जाइत अछि। ललन चंगा भऽ जाइत अछि। देह-हाथ झारि कऽ कुर्सीपर बैस जाइत छथि।) बाबूजी, एतेक भीड़ किएक अछि?

सुभाष- नहि कोनो खास बात। हिनका सभकेँ हमरासँ किछु विशेष गप्प छलन्हि। ललन, तों जाह बौआ।(ललनक प्रस्थान) सुखल गोसांइ, हमर बेटा कोना ठीक होएत ? एकरा अछि की ?

सुखल- एकरा केलहा अछि ? एकरा केनिहारि अहाँकेँ अपनहि परिवारमे अछि।

सुभाष- गोसांइ, एकर इलाज अहींकेँ करए पड़त।

सुखल- सुभाष बाबू, एकर इलाज हमरासँ असंभव अछि, हम आब ई काज छोड़ि देलहुँ। हाथ जोड़ैत छी, दोसर जुगार कए लिअ।

(प्रस्थान) (पटाक्षेप)

दृश्य दोसर

(स्थान- सुभाष ठाकुरक घर। दलानपर सुभाष ओ मीरा चिन्तित मुद्रामे बैसल छथि। पवन, मटुक, जाजू ओ संजयक प्रवेश।)

मटुक- सुभाष भाए, अहाँक बेटा भरि-भरि राति बौआइते रहैत अछि।

पवन- हँ सुभाष कका, हमहूँ देखलिऐक, आठ बजे रातिमे गाछी दिशि जाइत। आ कहलियन्हि तँ कहलनि तूँ हमर बाप छें।

राजू- हमहुँ देखलियन्हि, बारह बजे रातिमे मुसहरी दिशि निछोहे भागल जाइत। तखन हम राम एकबाल ओहिठामसँ भोज खा कऽ अबैत रही।

संजय- सुभाष मामा, काल्हि साँझमे हमरो एहिठाम गेल रहए। हमरा कहलक- हमहुँ पढ़बै आ बड़का हाकिम बनबै। शर्ट उनटा पहिरने छल आ एकहि पएरमे जूता छलै।

सुभाष- अपने सभ विचार दिअ जे हम की करी?

(ललनक प्रवेश। पूर्ण बताह अवस्थामे छथि। अबितहि शर्ट निकालि फेकि दैत अछि। गंजी फारैत-चिरैत अछि। बाप रओ बाप, माए गै माए करैत ओंधरा रहल अछि। माथ पकड़ि बैसि कऽ झुलि रहल अछि।)

ललन- आब हम चारिए दिन जीबौक। हम तोरे लै लए आएल छी। हमरा एतऽ नीक नहि लागि रहल अछि। छोटकी काकी देबकी दीदीकेँ खा कऽ सिखलकैक। हमहुँ देबकी दीदी लग रहब। ओ हमरा बड़ मानैतए। देबकी दीदी हमरे खून पीबि ओहि पैखाना घरमे कोहामे रहैत अछि। पाँच दिनक अन्दरमे हम निपत्ता भऽ जेबौक।

(फेर ओंघराए रहल अछि। कुकुर जेकाँ माटि भोमहरि कऽ खाए रहल अछि। दलानपर दर्शक अपार भीड़ अछि।)

सुभाष- यौ श्रोत्रा-समाज लोकनि। अपने सभ एकर बकनाइ सुनि रहलहुँ अछि। हम की करी, हमरा अहाँ सभ बिचार दिअ।

मटुक- सुभाष भाए, अहाँ किछु नहि करु अहाँ एक्के गोट काज करु।

सुभाष- की करु। अहीं बाजू।

मटुक- एकरा उठा-पुठा कऽ छोटकी अंगनामे राखि दियौक आओर ओकरा कहियौ जे तूँ एकरा हौँसैत दहिन। जदि ओ एकरा हौँसैथ देतैक तखनहि ई ठीक भए जाएत आन कोनो उपाए नहि।

ललन- जाधरि छोटकी काकी हमरा नहि छुतैक ताधरि हम बताहे रहब, चारि दिनमे मरि जाएब।

मटुक- कहलौं ने सुभाष भाए। एकरा जल्दी लऽ चलू। नहि तँ ई नहि बाँचत।

पवन- कका, अहाँ डरैत किएक छी ? हमरा लोकनि छी ने पीठपर। यौ कका, ओ कथीमे फरिएतैक ? मारिमे-गारिमे, भालामे-लाठीमे आङमे-समांगमे, घनमे-संपत्तिमे, केशमे फौदारीमे। हम सभ किछुमे सक्षमे छी अहाँ डरु नइ कका। आ नहि तँ अहाँ अपन जानू। बेटा हाथसँ चलि जाएत।

(सुभाष आ मीरा ललनकेँ उठा-पुठा कऽ सुकनी लग लऽ जा रहल अछि। सुकनी यदुलाल ठाकुरक घरवाली आ सोमन ठाकुरक माए छथीन। सुकनी रोटी पकबैत अछि आ सोमन कुट्टी काटि रहल अछि। सुभाष आ मीरा ललनक संग प्रवेश होइत। ओ सभ ललनकेँ सुकनीक अंगनामे पटकि दैत अछि। ललन पहिनहि जेकाँ कऽ रहल अछि।)

मीरा- भैडाही, एकरा हसौथ, नइ तँ बापसँ भेट करेबौ। सैंखौकी-बेटखौकी एकरा एखन ठीक कर नहि तऽ भकसी झोंकेबौक।

सुकनी- ओइ हाथमे लकबा धरतौक। सैंडाही मङजरौनी लुल्ही पकड़तौक।

(आंगनमे हो-हल्ला भऽ रहल अछि। हल्ला सुनि यदूलाल आ सोमनक प्रवेश।)

सोमन- माए तों शान्त रह। कका, अहाँ नीक काज नहि कएलहुँ एहिसँ कोन फेदा ? कोन इज्जत कोन प्रतिष्ठा, हमरा सबहक प्रतिष्ठा अहाँ माटिमे मिला देलहुँ। आबहुँ चेत जाउ नहि तँ एकर परिणाम बड खराप हएत।

सुभाष- परिणाम जे हेबाक हएत से हएत मुदा गै मौगिया एखन तों एकरा एक्को बेरि छुबि दहिन नै तँ आइ तोहीं नइ आकि हमहीं नै।

सोमन- गै माए तों एक्को बेर नै बाज आ ने एक्को बेर एतएसँ उठ। ऐ कुत्ताकेँ एहिना भुकए दही।

सुभाष- चौट्टा तूँ हमरा कुत्ता कहमे। एखने मारैत-मारैत सोझ कऽ देबो, नइ कहीन ऐ मौगियाकेँ जे ललनमाकेँ चुप-चाप हासौंथि देतौ।

सोमन- चौट्टा, अन्हरा कहीं कऽ सभ खचरै निकलि जाएत।

(राजूक प्रवेश)

राजू- हौ सोमन सुनह, हल्ला-गुल्ला नइ करह, एक बेर माएकेँ कहक जे एकरा हसौथि देतै, एकरो संतोष भऽ जेतै आ हल्लो-गुल्ला शान्त भऽ जेतै। तोरा नीक लगै छह एहन अशान्ति?

सोमन- अहाँ पढ़ल-लिखल लोक भऽ एहन भासल गप्प कए रहल छी ? ई गप्प हमरा बड अप्रिय लागल। ऐँ यौ राजू बाबू एइ छौँड़ाक माथा खराप भऽ गेलैक। तँ सुकनीसँ छुआ दहीन ठीक भऽ जेतइ। ककरो बोखार लागल तँ सुकनीसँ छुआ दहीन, ककरो ललबा मारि देलक तँ सुकनीसँ छुआ दहीन। सभसँ बुरबक दीनेनाथ होइ छै की ने ? ठीके कहबी छै मुँह-दुबरा बौह सभक भौजइ।

राजू- सोमन, हम अपन बात आपस लेलौं, हमरासँ गलती भेल। तौं सभ अपसेमे फरिया लएह। वा जे मन हो से करह। हम जाइ छी।

(राजूक प्रस्थान)

मट्टुक- सोमन, अहाँ माएकँ कहियौन ललनमाकँ छुबै लए नै तँ बुझि लिअ।

सोमन- हमर माए कोनहुँ हालेत मे नहि छुबि सकैत अछि अइ लेल अहाँ सभकँ जे करबाक हुअए से करु।

मट्टुक- हरामी नहितन, डाइनकँ प्रश्रय दैत अछि। एहन माएकँ भरल सभामे जिनदै जरा दैततहुँ।

सोमन- निकाल सार, बजा कोन धाइमकँ बजाबै छँ। जदि हमर माए डाइन साबीत भेल तखन धाइमक टोटल खर्च हमर आओर माएकँ भरल सभामे मोटीया तेल ढारि कऽ आगि लगा देब।

मट्टुक- एक महिनाक भीतरे हम तोरा माएकँ डाइन निकालि कऽ देखा दै छियौ। सार हम तोरा माएकँ एक महिना कऽ भीतरे भकसी नइ झोंका देलहुँ तँ हम पाजी।

सोमन- सार, तोहूँ सुनि ले, डाइन साबित भेलापर हमहुँ अपन माएकँ जिनदे नहि जरा देलौं तँ हम पाजी।

पवन- कका, चलू अपन आंगन। लऽ चलू ललनमाकँ। ई खच्चरी नइ छुअत एकरा। एकटा चिक्कन धामिकँ लाउ आ पहिने एकरा डाइन साबित करु तखन एकरा सभकँ बापक बिआह आ पितियाक सगाइ देखाएब। रुपैआक बड़ गरमी भऽ गेलैए सोमनाकँ। चलू कक्का। लऽ चलू सोमनाकँ।

(कहैत सबहक प्रस्थान) -पटाक्षेप-

क्रमशः



डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

जन्म (८ फरबरी १९६७-) दिल्ली विश्वविद्यालयसँ एम.एस.सी., एम.फिल., "मैथिली फॉकलोर स्ट्रक्चर एण्ड कौग्निशन ऑफ द फॉकसांग्स ऑफ मिथिला: एन एनेलिटिकल स्टडी ऑफ एन्थ्रोपोलोजी ऑफ म्युजिक" पर पी.एच.डी.। मानव अधिकार मे स्नातकोत्तर, ४०० सँ बेशी प्रबन्ध -अंग्रेजी-हिन्दी आ मैथिली भाषामे- फॉकलोर, एन्थ्रोपोलोजी, कला-इतिहास, यात्रावृत्तांत आ साहित्य विषयपर जर्नल, पत्रिका, समाचारपत्र आ सम्पादित-ग्रन्थ सभमे प्रकाशित। भारतक लगभग सभ सांस्कृतिक क्षेत्रमे भ्रमण, एखन उत्तर-पूर्वमे मौखिक आ लोक संस्कृतिक सर्वांगीन पक्षपर गहन रूपसँ कार्यरत। यूनिवर्सिटी ऑफ नेब्रास्का, यू.एस.ए. केर "फॉकलोर ऑफ इण्डिया" विषयक रेफ़ेरी। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालयक पुरस्कारक रेफरी सेहो। सय सँ ऊपर सेमीनार आ वर्कशॉपक संचालन, बहु-विषयक राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठीमे सहभागिता। एम.फिल. आ पी. एच.डी. छात्रकेँ दिशा-निर्देशक संग कैलाशजी विजिटिंग फैकल्टीक रूपमे विश्वविद्यालय आ उच्च-प्रशस्ति प्राप्त संस्थानमे अध्यापन सेहो करैत छथि। मैथिलीक लोक गीत, मैथिलीक डहकन, विद्यापति-गीत, मधुपजीक गीत सभक अंग्रेजीमे अनुवाद।

सखी कुन्ती

हम करीब तेरह वर्षक भऽ गेल रही। रही बड़ड खुरलुच्ची आ अगाध बदमास। कहियो एहेन नहि होइत छल जहिया ककरोसँ झंझट नहि होइत हो। हम्मर माए लोकक उपरागसँ तंग आबि गेल छलीह। सभ उपाए केलन्हि; डांटब, बुझाएब, मारब। मुदा बेकार हम अपन खुर्लुच्ची स्वभावकेँ नहि त्यागलहुँ।

एहनो बात नहि छल जे हमरा अपना मोनमे अपन कर्मक प्रति घमण्ड हो। प्रति दिन सुतबा काल ई निर्णय लैत रही जे आब लोक सभसँ झगड़ा फसाद

नहि करब। खूब मोन लगा कऽ पढ़ब। लोक आब माए लग ई कहए अएतन्हि जे अहाँक बेटा अपन कक्षाक सभसँ नीक विद्यार्थी अछि। लोक सभसँ आपसी प्रेम बना कऽ रखैत अछि, आदि आदि। मुदा ई सभ किछु क्षणक निर्णए होइत छल। भोर होइतहि हम अपन बदमासीक प्रवृत्तिमे पुनः संलग्न भऽ जाइत रही।

माए सोचलन्हि; “आब ई बर्बाद भऽ जाएत”। तामससँ घोर होइत बाढ़नि उठा एक दिन कतेको बेर मारलन्हि। बीचमे हफैत रहली वा कहैत रहलन्हि “राघव ! तोरासँ नीक कुकुर! कमसँ कम अपन पोसनिहारक बात तँ मनैत अछि”। माएक हाथ चलैत रहलन्हि आ हम मारि खाइत रहलहुँ। फेर ओ बजलीह; तूँ तँ बतहा कुकुर छैं। मारैत मारैत माए थाकि कऽ चूर भऽ गेलीह।

ओना तँ कतेको दिन माएसँ मारि खाइत छलहुँ मुदा ओहि दिनक बात जीवन पर्यंत याद रहत। शरीर बेदनासँ कराहए लागल। माएकेँ सेहो बुझेलन्हि जे आइ ओ किछु बेशी मारि देलन्हि। हम बिना किछु कहने मण्डिलक पाछाँ जाए कानए लगलहुँ।

आधा घंटाक बाद माए मालीमे करूक तेल लेने अएलीह। पाछाँसँ हमर झोटकेँ सहलाबए लगलीह। हमरा भेल फेर मारतीह। मुदा जखन हुनका दिस ध्यान गेल तँ देखलहुँ, आँखिसँ नोर चुबैत छलन्हि। कहए लगलीह- “चारिटा बाल बच्चा भगवान देलन्हि। तीनटा सँ कहियो कोनो शिकाइत नहि भेल। सबहक कसरि तोँ पूरा कऽ देलह राघव। माए कहैत रहलीह आ माथा सहलाबैत रहलीह। आब हमहुँ कानए लगलहुँ। कहलियन्हि- “माए! आब हम बदमासी नहि करब ! हमरा आइ अहाँ बड़ड मारलहुँ। सम्पूर्ण शरीर गूड जकाँ दर्द करैत अछि”। ई कहि हम माएकेँ पकड़ि हुनकर गरसँ लागि बड़ड जोरसँ कानए लगलहुँ। पूरा शरीरमे बाढ़निक ओदरा परि गेल छल। माए ओकरा देखैत हमरे जकाँ जोरसँ कानए लगलीह। फेर तेल लगौलन्हि। स्नान केलहुँ आ भोजन केलहुँ। माए दिन भरि कनैत रहलीह। दिन भरि अन्न नहि खेलन्हि। लोक सभ आग्रह केलकन्हि तँ कहलखिन्ह जे हम्मर प्रायश्चित यएह थीक जे हम चौबीस घंटा अन्न जल ग्रहण नहि करी।

जखन हमरा पता लागल हम दीदीक हाथसँ चाह लए माए लग गेलहुँ। हमरा बुझल छल जे माए अन्न बेतरे तँ रहि सकैत छथि मुदा चाहक बिना नहि। हम कहलियन्हि- माए ! अहाँ चाह पी लिअ। आब हम कहियो गलती नहि करब। लोक कहत ‘राघव केहेन नीक लड़का छैक’। माए हमरा दिस देखलन्हि आ बजलीह; चुपचाप चाह लऽ कऽ घर चलि जो। आइ हम किछु नहि खएब ! रातियोमे माए नहि खेलन्हि। भोरे भइया दरभंगासँ अएलाह। आबिते मातर माए हुनका कहलथिन्ह; “पवनजी, राघब हमर जीनाइ दुर्लभ कऽ देने अछि। लोकक उपरागसँ तंग आबि गेल छी। काल्हि जानवर जकाँ मारिलिऐक। कचोट बादमे बड़ड भेल। ई महामुर्ख निकलि गेल। तँ एकरा पिताजी लग सिमडेगा पठा दहक। रामनगरवाली बहिन कहैत छलीह जे रोहित चारि पाँच दिनक भीतर राँची जाए बला छथि। हुनके संगे पठा दहक। बाबूजीकेँ एकटा चिट्ठी लिखि दहुन”।

हम्मर घरमे माएक राज चलैत छलन्हि। भैया हुनकर आज्ञाकेँ स्वीकार केलन्हि। साँझमे भैया रोहित भाइकेँ लऽ कऽ अएलाह। रोहित भाइ माएकेँ कहलथिन्ह- कोनो बात नहि कनिया काकी, हम राघबकेँ सिमडेगा बला बसपर बैसा देबैक। सिमडेगामे बसे स्टेंड लग खादी भण्डार छैक। बसक कण्डक्टर राघबकेँ ककाजी लग पहुँचा देतैक।

माए हमर जएबाक तैयारी करए लगलीह। हमरा गामसँ सिमडेगा गेनाइ नीक नहि लागि रहल छल। जे एकबेर जे कोनो बात माए मोनमे ठानि लेलन्हि तकरा दुनियाक कोनो तागति नहि टारि सकैत अछि। तँए बिना कोनो प्रतिकार केने हमहुँ सिमडेगा जेबाक तैयारीमे लागि गेलहुँ। अपन तीन चारिटा लंगौटिया यार सभकेँ कहि देलिऐक- ''हम आब सिमडेगा चललीयौक। तूँ सभ रह एतएक राजा''।

चारि दिनक बाद हम रोहित भाइ संग सिमडेगा लेल प्रस्थान केलहुँ। आबए काल माए बड़ड कनलीह। बड़ हृदएसँ लगौलन्हि। पहिल बेर पता चलल जे माए हमरा कतेक मानैत छलीह। कहलन्हि- ''बाबूजी लग मनुक्ख जकाँ रहबाक प्रयत्न करिहेँ राघब। तंग नहि करिहन्हु। माए एकटा चिट्ठी सेहो बाबूजीकेँ लिखलथिन्ह। चिट्ठीक अंतिम भागमे लिखल रहैक;

''राघब बड़ड बदमास अछि। प्रतिदिन लोकक उपरागसँ मोन आजिज भऽ गेल अछि। ताहिसँ एकरा अहाँ लग पठा रहल छी। साइत अहाँक डरसँ बदमासी कम करत। हम जनैत छी, ई हमर कोरपछुआ अछि। तइयो एकर उत्तम भविष्यक लेल अपन छातीपर पाथर राखि अहाँ लग दूर देशमे पठा रहल छी। एकरा डांट फटकार अवश्य करबैक, मुदा अहाँकेँ हम्मर आ चारू धीया पुताक सप्पत अछि, एकरा मारबै नहि''।

माएक चिट्ठी हम सिमडेगा अएलाक आठ दिनक बाद पढ़लहुँ। माएक यादमे चुपचाप बड़ड कनलहुँ। लागल केहेन महान चीजक नाम छैक 'माए'। स्वयं तँ मारैत छलीह, मुदा जखन बाबूजी लग भेजलन्हि अछि तँ बाबूजीकेँ सभ तरहे बुझा रहल छथिन्ह जे राघबपर हाथ नहि उठेबैक। बाह रे माएक ममता !

बाबूजी माएकेँ बड़ड मनैत छलथिन्ह। ओ हमरा बुझबैत छलाह- ''राघब, अहाँ खूब मोनसँ पढ़ु। अहाँकेँ जे कोनो चीज चाही से लिअ आ पढ़ू। लोक सभसँ झगड़ा दान नहि करू''।

अगल बगलक चारि पाँच लड़का-लड़की सभसँ बाबूजी हमर परिचए करा देलन्हि। हम अपनामे आश्चर्यजनक परिवर्त्तन अनलहुँ आ लोक सभसँ झगड़ा-झाँटी त्यागि देलहुँ। बाबूजी प्रसन्न छलाह, जे चलू राघबमे एहेन परिवर्त्तन अएलन्हि।

हमरा लोकनिक घरक बगलमे एकटा तमाकुल बेचएबला बनिया छल। ओकर नाम रहैक सोहन साहु। सोहन साहुक बेटी शीला छलैक। हलांकि शीला हमरासँ एक कक्षा जुनीयर छलि। शीलाक नाक-नक्श बड़ सुन्दर, रंग कारी मुदा सोहनगर। शीला जवान भऽ रहलि छलि, से शरीरक अंगसँ स्पष्ट परिलक्षित होइत छलैक। पातर ठोर, डोका सनहक आँखि, मध्यम कद। कपड़ा लत्ता सेहो

ठीक पहिरैत छलि। शीलाक माए हमरा बड़ड मानैत छलीह। कहैत छलथिन्ह; ''बेचारा राघब ! बिना माएक सिमडेगामे रहैत अछि''। शीला सेहो हमरा बड़ड मानैत छलि।

पिताजी हमर नाम सिमडेगाक सरकारी स्कूलमे लिखा देलन्हि। हमर स्कूलक ठीक पाछाँ शीला कन्या विद्यालयमे पढ़ैत छलि। ओना तँ शीला बरसमे हमरासँ डेढ़ वर्षक पैघ छलि, परंतु कक्षामे हमरासँ एक कक्षा पाछाँ। स्कूलक समए दूनू स्कूल एक्के रहैक। हम सभदिन स्कूल शीलेक संग जाइत रही। शीलाक संग शीलाक एक सहछात्रा सेहो हमरा लोकनिक संग विद्यालय जाइत छलि। ओहि छात्राक नाम रहैक कुंती। कुंती मध्यम कदकाठीक करीब पन्द्रह वर्षक स्वस्थ आ गोर लड़की छलि। नमहर कारी कारी केश, सुन्दर नाक, कान। कनीक बएससँ बेशी बुझना जाइत छलि कुंती। शनैः शनैः कुंतीसँ हमर नीक बातचीत होमए लागल।

पता नहि किएक कुंती हमरा शीलासँ बेशी नीक लगैत छलि। निश्छल, सहज आ सुन्दरि। ओकर आँखि दिस जखन कखनो ध्यान जाइत छल तँ एना बुझाइत छल जेना ओ सहज भावसँ मोनक कोनो गप हमरासँ बाँटए चाहैत अछि। बातक क्रममे पता चलल जे कुंती मैथिल ब्राह्मणी थीकि। पूरा नाम रहैक कुंती झा। चुंकि हमरा लोकनि सभवयस्क आ संगीक रूपमे रहैत रही आ उपर कुंती हमर सखी शीलाक अभिन्न संगी रहैक ताहिसँ हम सभ ओकरासँ तूँ कहि कऽ बात करिऐक। ओना तँ एक दिन शीलाक माए हमरा कहलन्हि- राघव, अहाँ सभ कुंतीकेँ तूँ नहि कहियौक !

हम पुछलियन्हि, ''किएक काकीजी ? कुंती आ शीला दूनू हमर संगी जकाँ थीकि। हम शीलोकेँ तूँ कहि कऽ बजबैत छिऐक मुदा अहाँ कहियो मना नहि केलहुँ, परंतु कुंतीक लेल ई बात किएक कहि रहल छी''?

शीलाक माए हमर प्रश्नक जवाब देमए लगलीह। अही बीचमे शीला आ शीलाक पिताजी हुनका रोकि देलथिन्ह। शीलाक पिताजी शीलाक माएसँ कहलथिन्ह; ''अहाँ बच्चा सभक बीचमे किएक टांग अरबै छी ? जखन कुंतीकेँ कोनो समस्या नहि छैक, तँ अहाँकेँ की समस्या अछि ? राघबकेँ अनेरे अहाँ शिक्षा नहि दियौक''। शीला सेहो अपन माएकेँ भाषण देमए लागलि- ''गे माए, ई तोहर बड़का समस्या छौक। अपना जे करक छौक से कर। जकरा जेना बजबै चाहैत छैँ, बजा। हमरा सबहक बीचमे नहि बाज। हम कुंती आ राघब ओहिना रहब जेना रहि रहल छी। हमरा सभकेँ व्यर्थमे नैतिकताक शिक्षा नहि दे माए''।

हमरा बूझऽ मे नहि आएल जे एकाएक बाप बेटी मिल कऽ बेचारी शुद्ध महिलाकेँ किएक बजबासँ रोकि देलकैक। ओना शीलाक माएक बातपर हमरा किछु विस्मय जकाँ सेहो लगैत छल। शीला हमरा दिस देखैत बाजलि; ''राघब,! तोँ जेना चाहैत छैँ तहिना कुंतीकेँ सम्बोधित कऽ सकैत छैँ। ओहिना जेना हमरा कहैत छैँ, तहिना कह''- कुंती कहैत रहलि। समए चलैत रहल। हम अपन माएक देल वचनपर थोड़ेक प्रतिबद्ध रहलहुँ। खूब मोनसँ पढ़ी। लोक सभसँ

झगड़ा फसाद लगभग छोड़ि देलहुँ। स्कूलक शिक्षक सभ सेहो हमर व्यवहार आ कोनो चीज अथवा ज्ञानकेँ सीखबाक उत्कंठा वा जिज्ञासासँ प्रसन्न छलाह। बाबूजी हमर प्रशंसा सुनि गद् गद् भऽ गेलाह। झट दनि माएकेँ चिट्ठी लिखि देलथिन्ह। चिट्ठीक मजमून ई रहैक-

राघबमे आश्चर्यजनक परिवर्त्तन भेलैक अछि। गामसँ एकरा सिमडेगा ऐनाइ करीब सात मास भऽ गेलैक मुदा आइ धरि राघबक खिलाफ ककरो कोनो शिकाइत नहि भेटल अछि। शिक्षक सभसँ राघबक सम्बन्धमे हमेशा जानकारी लैत रहैत छी। सभ कियो मुक्त कंठसँ राघवक प्रशंसा करैत रहैत छथि। हमरा राघव कोनो तरहेँ परेशान नहि करैत अछि। राघब एतेक नीक भऽ जाएत तकर तँ हम कल्पनो नहि केने रही।

पिताजीक पत्र पढ़ि माँ बड़ड प्रसन्न भेलीह। तुरत निर्णय लऽ लेलन्हि जे कमसँ कम दुइयो मासक लेल सिमडेगा अएतीह आ हमरा सभक संगे रहतीह। माँ पिताजीकेँ पत्र द्वारा सूचना देलथिन्ह जे धनकटनीक पश्चात् ओ सिमडेगा आबि रहल छथि।

किछु दिनक बाद माए सिमडेगा आबि गेलीह। हम बड़ड प्रसन्न रही। माएक स्नेह, माएक हाथक भोजन भेटि रहल छल। बाबूजी सेहो प्रसन्न छलाह। लगभग हमर झंझटसँ स्वतंत्र किछु दिन लेल भऽ गेल छलाह। माए अपन मिलनसार स्वभावक कारणे सिमडेगाक नीचे बजार मुहल्लामे प्रशंसाक पात्र भऽ गेलीह। स्त्रीगण सभ अपन सभ टा नीक काजमे हुनका बजबए लगलन्हि।

हमरा सिमडेगा अएना आब लगभग एक वर्ष भऽ गेल छल। एहि बीचमे किछु अप्रत्याशित घटना घटित भेलैक। कुंती लगातार चारि पाँच दिनसँ नहि आबि रहलि छलि। शीलासँ ज्ञात भेल जे कुंतीक घरमे किछु झंझटि चलि रहल छैक, ताहि कारणे ओ नहि तँ स्कूले आबि रहल छलि आ ने हमरा सभ लग।

लगभग दस दिनक बाद कुंती शीलाक घर आयलि। हम शीलेक घरमे रही। हमर माए सेहो ओतए छलीह। कुंतीक चेहरा उतरल रहैक। मुँह कारी स्याह। आँखिक उपर नीचा फूलल। अहिसँ पहिने की हम किछु ओकरासँ पुछितिऐक, हमर माए आ शीलाक माए कुंतीकेँ आबितहि ओकरा भाषण देमए लगलन्हि। माए हमर बाजए लगलीह- ''देखू कुंती ! अहाँक ब्राह्मण कुलक स्त्रीमे जन्म भेल अछि। पति नीक, अधलाह जेहेन होइत छैक, स्त्रीगण हेतु भगवान होइत छैक। अहाँक भोलाझा पति छथि। अहाँकेँ हुनकर आज्ञाकेँ अवश्य मानक चाही। बिना हुनकर आज्ञाक कोनो काज केनाइ या कतहुँ जेनाइ उचित नहि। अहाँ अप्पन गलतीकेँ स्वीकार करू आ जीवनकेँ आनन्दपूर्वक जीबू''।

हम माएक बातकेँ सुनलहुँ तँ आश्चर्यमे पड़ि गेलहुँ। पहिल बेर ई ज्ञात भेल जे कुंती कुमारि नहि अपितु ब्याहित महिला थिक। आब बुझना गेल जे शीलाक माए हमरा किएक कहैत छलीह जे कुंतीकेँ तूँ कहि कऽ नहि बजेबाक हेतु ! चिंताक अथाह सागरमे डुमि गेलहुँ। कतए सतरह वर्षक कुंती आ कतए बाबन वर्षीय भोला झा। केहेन अनमेल विवाह!!! हे भगवान, ई केहेन जोड़ी बना

देलिऐक! लोहामे सोना सटि गेल। भरल दुपहरियामे अन्हार!! एक क्षण लेल एना बुझना गेल जे कुंतीक आत्मा हमर शरीरमे प्रवेश कऽ गेल! हम अपनाकेँ कुंती बुझि मोनहि मोन कानए लगलहुँ, काँपए लगलहुँ। अपन पितयौत बहिनक विवाहक कालक स्त्रीगण सभ द्वारा गाओल गीतक एक पाँति बेर-बेर मोनमे हुमरय लागल;

"लोहामे जड़ि गेल हम्मर सोना।
हम जीबै कौना"!!

मुदा कुंती पाथरक मूर्त्ति बनलि हम्मर माएक आ शीलाक माएक अनर्गल भाषण सुनैत रहलि। बिना कोनो उचाबच केने। कुंतीक माथ जमीन दिस रहैक। किछु कालक बाद देखलिऐक जे धरतीपर नोरक बुन्द मारिते पड़ल छैक। मुदा ओ सभ ठोप बेकार भऽ गेलैक। दकियानूशक परिवेशमे हमर माए ततेक रमलि छलीह जे हुनका कुंतीक नोर नहि देखेलन्हि। किछु कालक बाद कुंती मुँह ऊपर उठा अपन गालपर हाथक लाल निशान देखेलन्हि, ई भोला झा चमेटाक निशान छलैक। माए अपन हाथसँ कुंतीक गालकेँ सहलाबए लगलथिन्ह। माएक ममत्वकेँ देखि कुंतीक हृदए फाटि गेलैक। कुहेस फारि कानए लागलि। हम्मर माए अपन छातीसँ लगा लेलथिन्ह। कहलथिन्ह- "अहाँ आब नीकसँ रहूँ। भोला झा गलत कार्य केलन्हि अछि। हम मैनेजर साहेब -हम्मर पिताजी- कहबन्हि जे हुनका बुझेथिन्ह। अहाँक जेठ बहिनसँ हुनकर छोट भाएक बियाह भेल छन्हि आ अहाँक जेठकी भगिनी अहाँसँ एक्के वर्षक छोट अछि। मुदा आगू नीकसँ रहूँ। केवल स्कूल जाइकाल स्कर्ट आदि पहिरू। स्कूलसँ आपस अएलाक बाद सारी पहिरू, नीक जकाँ रहूँ। जतए ततए नहि बौआऊ। छौरा सभसँ हँसी ठट्ठा नहि करू"।

आ लाचार कुंती हम्मर माएक बातकेँ सुनैत रहलि। एना बुझना जाइत छल जेना ई सभ माए बेटी हो। अही बीचमे शीलाक माए चूराक भूजा आ कचरी बनाए सभकेँ खाए लेल देलथिन्ह। कुंती नहि लैत छलि मुदा हम्मर माए एवं शीला ओकरा बड्ड आग्रह केलथिन्ह तँ कुंती खाए लागलि। नोर मुदा एखनहुँ खसि रहल छलैक।

ओहि दिन साँझमे शीला हमरा कुंतीक सम्बन्धमे तमाम जानकारी देलक। भेलैक ई जे कुंतीक जेठ बहिनक बियाह भोला झाक छोट भाएसँ भेल रहैक। कुंतीक बहिनकेँ दूइ लड़की आ दूइ लड़का छलैक। भोला झा समस्तीपुरक कोनो गामसँ कम्मे बएसमे सिमडेगा आबि गेल छलाह। एतए आबि गुजर बसर करबाक लेल मुख्य सड़कक कातमे एक लाइन होटल खोलि लेलन्हि। होटलक बगलमे सिमडेगाक नामी पेट्रोल पंप रहैक। पेट्रोल पंपक अगल बगलमे गाड़ी घोड़ा ठीक करबाक मारिते दुकान आ मेकेनिक सबहक भरमार। एहि सभ कारणे पाँच दस बस ट्रक आ अन्य गाड़ी सदरिकाल ओतए लागल रहैत छलैक। आ गाड़ीक ड्राईवर, सहायक इत्यादि भोला झाक लाइन होटलमे सामान्यतया खाटपर बैसि भोजन करैत छलैक। लाइन होटलक भोजन होइत छलैक अति स्वादिष्ट

आ चहटगर। कहियो काल कऽ हम्मर पिताजी ओहि होटलसँ तरकारी इत्यादि मंगबैत छलाह। तँ भेलैक ई जे भोला झा अपन परिवारकेँ ठीक करएमे लागल रहलाह। तीन कुमारि बहिनक विवाह, माए बापक संस्कार, क्रिया कर्म, दूटा छोट भाएक रोजगारक तलाश आ बियाह दान करैत करैत कहियो अपना विषएमे सोचबे नहि केलन्हि। अही बीच जखन कुंती करीब चौदह वर्षक छलि तँ अपन जेठ बहिन लग सिमडेगा आयलि। ओहि समएमे भोला झा ईकावन वर्षक छलाह। कुंतीक शरीर भरल रहैक। आ देखबामे अठारह-उन्नैस वर्षक लगैत छलि। भोला झाकेँ अचानक वियाह करबाक इच्छा भेलन्हि। अपन छोट भाए अर्थात् कुंतीक जेठ बहिनोइकेँ कहलथिन्ह जे ओ कुंतीसँ बियाह करए चाहैत छथि। तावत धरि कुंतीक पिताक स्वर्गवास भऽ गेल छलन्हि। विधवा माए ओहि जमानामे चारि हजार टकाक लोभसँ कुन्तीक बियाह भोला झासँ करा देलकैक। पहिने तँ कुंती नहि बुझि सकलि अहि सभ चीजक परिणाम। मुदा स्थिति स्पष्ट होमए लगलैक। हालहिमे भोला झा कुंतीकेँ रातिमे हवशक शिकार बनबए चाहैत छलथिन्ह, जकर ओ प्रतिकार केलकन्हि तँ झोटा नोचि गालपर बड़ड मारलखिन्ह। शीला ईहो कहलक जे भोला झा दिन भरि गाजा पीबैत रहैत छथि, राक्षस जकाँ मोछ रखैत छथि, मुँहसँ गंध अबैत रहैत छन्हि, ताहि सभ कारणे कुंती हुनका लग जाएसँ बचए चाहैत अछि।

खएर ! अहि घटनाक बाद आ कुंतीक अतीत जनबाक कारणे हम्मर व्यवहार ओकर प्रति बदलि गेल। कुंती आन ठाम गेनाइ बन्द कऽ देलक परंतु शीला आ हमरा लग एनाइ नहि रूकलैक। हम आब ओकरा किछु सम्मानसँ बजबए लगलिऐक तँ बाजि उठलि; ‘‘नहि राघब, ई ठीक बात नहि। तौँ हमर परम मित्र छँह ! हमरा पूर्वे जकाँ कुंती कहि सम्बोधन कर, तँ नीक लागत। हम एकबेर पुनः कुंतीक संग वएह पुरनका व्यवहार करए लगलहुँ।

समएक चक्र चलैत रहलैक। एहि बीच हमरा लोकनि दसम कक्षामे पहुँचि गेलहुँ। हम्मर उम्र करीब सोलह भऽ गेल। कुंतीक लगभग अठारह वर्षक। एकाएक कुंतीक शरीरमे आश्चर्यजनक परिवर्तन आबए लगलैक। ओकर वक्ष एकाएक बड़ड भारी भऽ गेलैक, गाल मोट भऽ गेलैक। शरीरक वजन बढ़ि गेलैक। आँखि छोट भऽ गेलैक। ओना तँ एहि सभ परिवर्त्तनक बादो कुंतीक सौन्दर्यमे कोनो कमी नहि भेलैक। एखनो हमरा कुंती अजीब सुन्दरि लगैत छलि। करीब आठ मास पहिने एकबेर पता नहि किएक कुंती हमरा भरि पांज पकड़ि अपन हृदएसँ सटा लेलक आ हम्मर माथा चूमि लेलक। हम सन्न रहि गेलहुँ। लाजे किछु नहि कहलिऐक। मुदा तहियासँ सदरिकाल मोनमे यएह सपना आबए लागल, जे किनसाइत कुंती हमर जीवन संगिनी बनि जाइत। ओना हमरा ई नीक जकाँ बुझल छल जे ई संभव नहि अछि। एक दिन हम कौतुहलमे पुछलिऐक, ‘‘कुंती तोरामे अतेक परिवर्त्तन किएक भऽ रहल छौक। तौँ किएक अचानक मोट भऽ रहल छँ ’’?

हम्मर कौतुहल सुनि कुंती हँसए लागलि। कहलक; ‘‘राघव, तौँ नहि

बुझमैं !!" से कहि कुंती चलि गेल।

एहि घटनाक लगभग एक मास बाद कुंती स्कूलो गेनाइ बन्द कऽ देलक। कुंती हमरा ई किएक कहलक जे "राघव, तोँ नहि बुझमैं "!! हमरा किछु नहि फुराइत छल। अंततः एक दिन जखन स्कूलसँ डेरा आबैत रही तँ बाटमे जेल लग शीला भेट भऽ गेल। शीलासँ कुंतीक विषएमे जानकारी लेमए लगलहुँ तँ पता चलल जे कुंती गर्भवती अछि। आब बूझऽ मे आएल जे कुंती किएक हँसलि आ कहलक जे तोँ नहि बुझमैं"!!! हम शीलाकेँ पुछलिऐक- "आब कुंतीक पढ़ाइक की हेतैक"? शीला कहलक- "किछु नहि, भोला झा कहलकैक अछि पढ़ाइ छोड़ि देबाक हेतु। आब डेढ़ मासमे कुंती अपन बच्चाकेँ जन्म देत आ बच्चाक लालन पालनमे लागत। पढ़ाइक अंत भऽ गेलैक। खएर, छोड़ राघब ! हमरो पिताजी आब हमरा लेल लड़का ताकि रहल छथि। हमरा माए लग तीन लडकाक फोटो छैक। हम तोरा देखा देबौक"।

मुदा हमरा कोनो लड़काक फोटोसँ कोन मतलब! खएर ! करीब डेढ़ मासक बाद एक दिन शीलासँ ज्ञात भेल जे कुंती सरकारी अस्पतालमे एक लड़काकेँ जन्म देलकैक अछि। दोसरे दिन भोला झा दू किलो मिठाइ लऽ कऽ हमर पिताजीकेँ दऽ गेलथिन्ह। भोला झा खुशीसँ गद् गद् छलाह।

एहि घटनाक किछु दिनक बाद पिताजीक स्थानांतरण सिमडेगासँ गिरिडीह भऽ गेलन्हि। पिताजी संग हमहुँ गिरिडीह आबि गेलहुँ। करीब चारि वर्षक बाद सिमडेगा गेलहुँ तँ शीला नहि भेटलि। शीलाक माए कहलन्हि जे शीलाक बियाह राऊरकेला भऽ गेलैक। लड़का चाऊरक व्यवसायी छैक। शीलाकेँ एक सालक एकटा लड़की छैक। शीला अपन पति आ बच्चा संगे बड़ड प्रसन्न अछि। कुंतीसँ भेट नहि भऽ सकल मुदा शीलाक माए बतौलन्हि जे कुंतीकेँ एकटा लड़की सेहो छैक। आब ओकर पति भोला झा अपन माएसँ भिन्न भऽ गेल छथि। कुंती पूर्णरूपेण एक सफल गृहणी, पत्नी आ माए बनि गेल अछि। सदरिकाल अपन परिवार, बेटा, बेटी आ पतिक सेवामे लागलि रहैत अछि। शीला नहि छलि तँ हमरा कुंतीसँ के मिला सकैत छल। इच्छा रहितहुँ हम कुंतीसँ नहि भेंट कऽ सकलहुँ।

इमहर करीब बीस वर्षक बाद कोनो प्रयोजने सिमडेगा गेल रही। राँचीसँ जखन सिमडेगा लेल बस पकड़लहुँ तँ कोनो विशेष परिवर्त्तन ओहि क्षेत्रमे नहि बुझना गेल। किछु मकान इत्यादि अवश्य बनि गेल रहैक। सिमडेगामे कोनो विकास नहि बुझना गेल। पिताजीक मित्र श्री देवचन्द्र मिश्रजीक ओतए हम ठहरलहुँ। पाँच दिन सिमडेगामे रहलहुँ। बहुत पुरान लोक सभसँ भेँट भेल। शीलाक छोट बहिनक विवाह सेहो भऽ गेल रहैक। ओकर माए एखनो ओहिना नीक स्वभावक स्वामिनी छलि। शीलाक छोटका भाइ दीपू बड़ पैघ पीबाक भऽ गेल रहैक। हम्मर घरमे कार्य करए बला दाइ असहाय जीवन जीबि रहल छलि। पति मरि गेलैक आ बेटा नालाएक। चन्दन मिश्र वकील साहेबकेँ नक्शली सभ् बेटा संगे कुट्टी कुट्टी काटि देलकन्हि।

आ अंततः जखन कुंतीक सम्बन्धमे जनबाक प्रयत्न केलहुँ तँ पता चलल जे जाहि छोट भाए लेल भोला झा एतेक त्याग केलन्हि, अपन जवानी बर्बाद केलन्हि, बुढ़ापामे ब्याह केलन्हि, सएह छोट भाइ हुनका संगे बेइमानी केलकन्हि। लाइन होटलसँ बेदखल कऽ देलकन्हि। भोला झाकेँ दम्मा भऽ गेलन्हि। पैसाक तंगीमे ठीकसँ इलाज नहि भऽ सकलन्हि। कुंती आब सिलाइक कार्य कऽ रहल अछि। आ अपन बच्चा सबहक पोषण कऽ रहल अछि। बच्चा सभ की, तँ बेटी दसमामे पढ़ैत छैक आ बेटा एक नम्बरक नालायक। देवचन्द्र मिश्रक पत्नी कहलन्हि- ‘‘राघव, अगर अहाँ चाही तँ साँझमे हम सभ कुंतीक दोकान जाएब’’। मुदा हम मना कऽ देलियन्हि। हम ओहि कुंतीकेँ नहि देखए चाहैत छी जकर चेहरापर वैधव्य होइक, श्रीहीन हो, कष्टसँ कनैत हो। हम जीर्ण-शीर्ण कुंतीकेँ नहि देखि सकैत छलहुँ। तैं हम पुरनके कुंतीक यादमे जीबए चाहैत छलहुँ।



गजेन्द्र ठाकुर

उपन्यास

सहस्त्र शीर्षा

हजार माथ, हजार मुँह, हजार तरहक गप-खिस्सा, सत्य आ ...।

(सहस्त्रशीर्षा पुरुष: सहस्त्राक्ष:सहस्त्रपात्। सभूमिग्वंसर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्॥...)

... पद्भ्यांशूद्रो अजायत|| ..पद्भ्यां भूमिर्दिशः ...||

चारू कात गाछ-बृच्छ, पोखरि। गाममे एक..दू..तीन आ एकटा आर, चारि टा पोखरि।

ओना तँ तीन टा आर पोखरि अछि। एकटा उत्तरबरिया पोखरिक उत्तरभर बड़का डकही पोखरि। लोक बजै छथि जे कोनो डकैत एक्के रातिमे खुनने रहए ई पोखरि। मुदा तकर प्रमाण पुछने यैह पता लागत जे आन तँ कोनो प्रमाण नहि मुदा खुनैत-खुनैत भोर भऽ गेल रहए आ ताहि कारणसँ ओ डकैत पोखरिमे जाठि नहि गारि सकल रहए। हड़बड़ीमे ओहि डकैतक, डकैत की राक्षस कहू, एक पएरक पनही सेहो छुटि गेलै पोखरिक कातमे। बड़ड दिन धरि पोखरिक कातेमे रहए मुदा फेर बाढ़िमे ओहो बहि गेल। से जे एकटा प्रमाण रहए सेहो नहि बचल। गामसँ दूर अछि से छठिक पाबनिसँ कोनो सम्बन्ध आइ धरि एहि पोखरिक नहि स्थापित भऽ सकल अछि। हँ उपनयन बिध-बाधमे धरि एकर उपयोग होइतहि अछि। किसिम-किसिमक माँछ रहै छै एहि पोखरिमे। माँछक कोनो कमी नहि। कहियो डकही पोखरिमे जीरा देबाक खगताक अनुभव नहि कएल गेल। सालमे एक बेर मछहरि-पन्द्रह दिनसँ मास दिन धरि मलाह एहिमे महाजाल खसबैत छथि। मलाहक टोल जुमि अबैए। पोखरिक कातमे मास दिन लेल मलाहक गाम बसि जाइत अछि। पहिने तँ मास भरिसँ ऊपर ई सालाना मछहरि चलैत रहए मुदा आब घीच तीर कऽ बीस दिन। फेर मलाहक सरदार घोषणा करैत छथि- जे आब माँछ शेष भऽ गेल। आब जे मारब तँ महाजालमे तँ एको टा बड़का माँछ नहि आओत। भौरी जालसँ मारब तँ सभटा छोटका माँछ

मरि जएत आ अगिला साल तखन जीरा देमए पड़त। ओहि पन्द्रह-बीस दिनमे गाममे उत्सवक वातावरण रहैत अछि। अही बहन्ने पोखरिक साफ-सफाई सेहो भऽ जाइत अछि। भोरे चारि बजे सँ दुपहरिया धरि माँछ मारल जाइत अछि आ फेर बेरू पहर धरि सभ टोलक लोककँ-दछिनबाइ टोलकँ छोड़ि कऽ- अपन-अपन टोलक हिस्सा दऽ देल जाइत छै। सभ अपन-अपन हिस्सा लऽ गामपर अबैत छथि। ओतए टोलक सभ परिवार अपन-अपन हिस्सा बाँटि लैत छथि। टोलक माँछक कतेक कूड़ी लागत, एहि विषयपर कहियो काल विवाद सेहो भऽ जाइत अछि। जिबैत भने मसोमात काकीसँ टोका-बज्जी नहि होइन्हि। मरबा काल बेटीकँ हिस्सामे सँ किछु देबाक मसोमातक इच्छाकँ कंठ मचोड़ि देने होथि। आ बेचारी मसोमातक मुइल शरीरक औँठा स्टाम्प पेपरपर लगबेने होथि। हुनकर स्मरण आन काल भने नहि अबैत होइन्हि मुदा डकही पोखरिक हिस्सा लेबा काल सभकँ अपन-अपन मसोमात काकी मोन पड़िये जाइत छन्हि। एहिपर विरोध व्यक्त सेहो होइत अछि आ पहलमान जिनका सभ प्रेमसँ खलिफ्फा सेहो कहैत छन्हि, कँ छोड़ि किनको एहि प्रकारक हिस्सा नहि भेटैत छन्हि- भने खलिफ्फाक अँगनाक ओ मसोमात बीस बर्ख पहिनहिये मरि गेल होथि। डकही पोखरिक एकटा आर विशेषता अछि। एहिमे माँछ, काछु सभ स्वयम बढ़ैत अछि। पोखरिक कातमे मलकोका सभ अनेरुआ, मारते रास लीढ़ केचुलीलीक प्रकार। कातमे भेंट-कन्द महिसबार बच्चा सभक भोजन। पोखरिक सटल गड़खै सभ, थलथल करैत दलदली भूमि सेहो। ओहिमे बिसाँढ़ कोरि-कोरि कऽ मुसहर सभ खाइत छथि। १९६७ ई.क अकालमे जखन सभटा पोखरि, गड़खै सुखा गेल ई डकही पोखरि मुदा नहि सुखाएल। प्रधानमंत्री आएल रहथि तँ हुनका देखेने रहन्हि सभ जे कोना एतएसँ बिसाँढ़ कोड़ि कऽ मुसहर सभ खाइत छथि।

दछिनबरिया पोखरिक दक्षिणमे अछि बुचिया पोखरि।

गामसँ दुरगर अछि मुदा जाठि छै बीचोबीच। काठक एहि जाठिकँ गारबा काल पीअर बच्चाक, आइक जमीन्दार, अति वृद्ध प्रपितामह एकटा बड़ड पैघ आयोजन कएने छलाह। बस्तीसँ दुरगर आ खेतक बीचमे रहबाक कारणसँ एतहु लोक सभ स्नानक लेल कम्मे-सम अबैत छथि। मछहरि सेहो होइत अछि मुदा से मात्र एहि दछिनबरिया टोलक लेल। एहि पोखरिक एकटा आर विशेषता अछि। जखन दुर्गापूजाक दिनमे दुर्गाजी फेरसँ नैहरसँ सासुर दसम दिन जकरा जतरा सेहो कहल जाइत अछि, बिदा होइत छथि तँ हुनकर मूर्तिक भसान अही पोखरिमे होइत अछि। पुरुखपात्र तँ नहि, हँ महिला लोकनि दुर्गाजीक भसानपर हबोढ़कार भऽ कनैत छथि। दुर्गाजी एहि टोलकँ के पूछए, एहि गामेमे नहि बनै छथि। ओ बनै छथि पड़ोसक गढ़ टोलीमे। एहि गामक लोक तँ अगत्ती सभ। खष्ठी दिन धरि दुर्गाजीकँ झाँपि कऽ राखल जाइत अछि, मात्र मूर्तिकार हुनका उघारि कऽ देखि सकैए, कारण ओ नहि देखत तँ फेर दुर्गाजी बनतीह कोना। आन कियो देखत तँ आन्हर भऽ जएत। हँ, खष्ठी दिन बेलनोतीक बाद मूर्तिक अनावरण बाद हुनकर दर्शन लोक कऽ सकैए। आ ओही दिनसँ मेला सेहो लगैत

अछि। एहि गाममे दुर्गा बनतीह तँ कतेक लोक खष्ठीक पहिनहिये आन्हर भऽ जएत। आ पड़ोसक गाम कम अगत्ती अछि। मुदा पूजाक नामपर देखू सभ सञ्च-मञ्च भऽ जाइत अछि। नाममे टोल लागल छैक- गढ़ टोल मुदा अछि गाम। अही गाम जेकाँ महीसबार ब्राह्मणक गाम। अगतपनामे हम आगू आकि हम- एकर तँ बुझु प्रतियोगिता होइत रहैत छैक दुनू गामक मध्य। गढ़ टोलाक गाम दऽ कऽ जाऊ तँ ओहि गामक बान्हक क्लातक दलानपर बैसल छौड़ा सभ किछु ने किछु सुनेबे टा करत। मुदा एहि गामक फसादी प्रकृतिक छौड़ा सभ अरबधि कऽ ओहि गाम बाटे जएबे टा करत। हँ, सध-बध सभ अही बुचिया पोखरिक बाटे गेनाइ श्रेयस्कर बुझैत अछि, भने कनी हटि कऽ रस्ता छै। तँ की।

गाममे एकटा आर पोखरि होइत छल। मुदा गामक पूबमे कमला आ बलान एहि दुनू धारकेँ नियन्त्रित करबा लेल दू टा बान्ह बान्हल गेल। गामसँ सटल पूब दिस उत्तर-दक्षिण दिशामे एकटा छहर, फेर छथि कमला महरानी, फेर कमला महारानीक भाइ बलान धार आ तखन जा कऽ फेर ओहिसँ पूब उत्तर-दक्षिण दिशामे दोसर छहर। अही दुनू बान्हक बीचमे दोसर छहर अछि बल्ली पोखरि। एहि विशाल पोखरिक सटले रहए एकटा फुटबॉल क्रीडाक्षेत्र- विशाल रमना। किछु तँ बालू जमा भेने आ किछु जमीन्दारक करतब सँ ई पोखरि आ रमना पीअर बाबूक चकबन्दी बला खेतमे चलि गेल। सरकार सेहो ओहि बीचमे नहि जानि कोन कारणसँ चकबन्दीपर जोर देने रहए। सुरुजू भाइक गोबरसँ सीटल खेत सेहो चकबन्दीमे पीअर बच्चाक खेतमे मिलि गेल छल। दुनू छहरक बीच महिसबार सभक मालक लेल बौआचौड़ी अछि। महिसबार एतए अबैत छथि, खेलाइत छथि आ कमलामे हेलैत छथि। कखनो अपना-अपनीकेँ कमलाक धारमे बिना प्रतिरोधक ओ सभ बहए दैत छथि तँ कखनो धारक प्रवाहक उनटा हेलैत छथि। दुनू बान्हक बीच गुअरटोली। पहिने ई गामक टोल छल मुदा आब एतुक्का मतदाता सूची झंझारपुर बजारमे चलि गेल छै। गामक स्कूलपर वोटक बूथ रहने पहिने, बहुत पहिने, एकरा सभकेँ वोट नहि देमए दैत रहए। आब तकर उल्टा छै।

बौआ चौरीक ई स्नातक सभ- आब कियो दिल्ली-बम्मै मे तँ कियो सउदियामे छथि। कियो सेक्युरिटी गार्ड छथि तँ कियो सेक्युरिटी गार्डक कम्पनी खोलि लेने छथि।

गामक आमक गाछी सभ, कैक टा। बड़का कलम। खढ़ोरिक नवगछली। भोरहा कातक कलम। पोखरिक महार सभपर गाछी। खढ़ोरिमे खेत रहए। मुदा एक गोटे जे नवगछली लगेलन्हि से छाह भेने दोसर खेतमे धानक खेती दबि गेल। से ओहो कने चौक-चौराहापर अनट-बनट बजैत आमक गाछी लगा देलन्हि।

एक टा जमबोनी सेहो अछि। नमगर-नमगर गाछ सभ। पीपरक गाछ सभ

डिहबारक स्थानसँ लऽ कऽ स्कूलक प्रांगण धरि एत्तऽ ओत्तऽ पसरल अछि। पीपर गाछक जड़ि एत्तऽ आ शिरा सभ दहोदिस।

बान्ह सभक कातमे बोनसुपारीक गाछ, साहर दातमनिक झोंझ, बँसबिट्टी आ मारिते रास फूल आ काँट सभ। लजबिज्जी तँ सभ कलममे। चाकर आमक गाछपर रखबार सभ ओछैन कऽ सुति रहैत छथि। वरक गाछ मुदा एक्केटा, पीचक कातमे मीआँटोली लग।

खेत पथार सेहो कैक तरहक। दुनू बान्हक बीचक खेतकेँ आब सभ ओइ पार बला खेत कहए जाइत छथि। बलुआही खेत। परोर, तारबूज, फुइट, अल्हुआक खेती, सभसँ सस्त खेत जे किनबाक हुअए तँ एतए आऊ। मुदा बाढ़िक बाद खेतक आरिक मूह-कान बदलल भेटत। कोनो साल बाढ़िक बाद खेतक रकबा घटि जाए तँ अराड़ि नहि ठाढ़ कऽ लेब। अगिला बाढ़िमे भऽ सकैए कमला महारानी ओकर रखबा बढ़ा सकै छथि। खेती ओना तँ धानोक होइत छै। मुदा से सुतारपर छै। कोनो बर्ख तीन बेर रोपलोपर बेर-बेर बाढ़िमे दहा जएत तँ कोनो साल कमला महारानी खेतमे ततेक पाँक भरि देतीह जे जतेक मोनक कट्ठा मोनमे सोचब ताहिसँ बेशी उपजत।

कनेक महग खेत किनबाक हुअए तँ मोड़ बला आ गम्हारिक गाछ लग बला खेत कीनू। एतए लोक खेतीसँ बेशी बसोबास लेल जमीन कीनि रहल छथि।

डकही पोखरि बला खेतकेँ बढ़मोतर कहल जाइत अछि। पहिने ब्रह्मोत्तर रूपमे किनको मँगनीमे राजा द्वारा भेटल होएतन्हि। पहिने सुनैए छियै नीक खेती रहए मुदा आइ काल्हि पानि भरल रहै छै। इलाकामे जे छिटुआ धानक खेती होइत अछि से अही बाधमे।

बड़का कोला, धूरपर, भोरहा आ पुर्णाहा बाधक अतिरिक्त आइ काल्हि किछु गोटे छहरक ढलानपर सेहो खेती-बारी शुरु कऽ देने छथि, सीढ़ी बना कऽ खेती केनिहारक संख्या भूगोलक पोथीमे भने पहाड़पर मात्र देखौने होथि। महीसक मरलापर कन्नारोहटक स्वर आ जादूटोना, ककरो दरबज्जापर पूजल फूल रातिमे फेकब। आब लोको मुदा बूझि गेल अछि जे ई कोनो छौड़ाक किरदानी अछि।

गाम अछि महिसबार ब्राह्मणक गाम। कृष्णाष्टमीक लगाति हूड़ा-हूडीक खेल जे एहि महिसबाड़ ब्राह्मण सभक देखब तँ पोलोक खेलमे कोनो रुचि नहि रहत। समियाक डोमसँ कीनल सुग्गरकेँ भाँग पीबि मातल महीस द्वारा हूड़ा लेब। चरबाह जे महीसक पहुलाठ पकड़ि कलाकारीसँ बैसल रहैत छथि सेहो अद्भुते। गाममे आनो जाति अछि। दुनू बन्हक बीचमे उचका भीरपर गुअरटोली तँ अछिये। बाढ़ियो मे ओ टोल नहि डुमैत अछि। नाहसँ आबाजाही होइए। कमलाक नाह खेबाह मलाह नहि राउतजी छथि। गामक लोकसँ तकर बदलामे अन्न लैत छथि। अनगौँआसँ हँ धार पार करेबाक बदला पाइ लैत छथि।

पीचपरक मिआँटोली बगलक गामक वोटर लिस्टमे अपन नाम अंकित करा लेने अछि। ओतहि डोमक चारिटा घर सेहो अछि। बगलक गामक वोटर लिस्टमे नाम अंकित करा लेबाक कारण कारण वैह जाहि कारणसँ गुअरटोली आब एहि गामक वोटरलिस्टमे नहि अछि। मुदा वोटरलिस्ट सँ गाम थोड़बेक बनै छै। ईहो दुनू टोल अही गामक सीमानमे अबैत अछि। डोमक काज पाबनि-तिहारमे तँ होइते अछि। पेटार बनेबासँ सूप, बीअनि सभ किछु बनेबामे डोमक काज आ पाहुन परख लेल आ बरियाती लेल जे खस्सी काटल जएत ताहि लेल मिआँटोलीक काज। खस्सीक मूड़ा दुर्गापूजाक बलिमे कमिटी लऽ लैत अछि। मिआँ जे खस्सी काटैत अछि से हलाल कऽ कऽ। गरदनि अदहा लटकले रहैत छै, मुदा बना सोना कऽ गरदनि लऽ जाइये आ खलरा सेहो। तखन महिसबार ब्राह्मणमे सँ जे हनुमानजी मन्दिरपर भजन आ अष्टजाम करैत छथि से ओही खलरासँ बनल ढोलक किनैत छथि।

फेर धनुख टोली। पहिने यैह लोकनि भार उघैत रहथि मुदा पछाति दुसधटोलीक लोक सेहो भार उघए लागल छथि। खेती करब धनुकटोली आ दुसधटोलीक पुरान पेशा अछि। हँ पहिने ई सभ मात्र बोनिपर काज करैत रहथि आब बटाइपर करैत छथि। कोनो झगड़ा-झाँटी भेलापर महिसबार ब्राह्मणक चानि कारी खापड़िसँ तोड़ैत एहि दुनु टोलक महिलाकेँ अहाँ सालक कोनो एहन मास नहि अछि जाहिमे नहि देखि सकै छी। बकरी पोसब आ दुर्गापूजामे छागर बलिक लेल बेचब एहि दुनू टोलक पशुपालनमे अहाँ गानि सकै छी। एक-एकटा बरद सेहो कियो राखए लागल छथि आ पार लगा कऽ तकर उपयोग जोड़ा बरदसँ खेती करबामे करैत छथि।

तीन टा घरक रहलोपर धोबियाटोली एकटा टोल बनि गेल अछि। झंझारपुर धरिक मारवाड़ीक कपड़ा एतए साफ कएल जाइत अछि। महिसबार ब्राह्मण सभ जे बरियातीमे बेलबटम झाड़ि कऽ सीटि-साटिकऽ निकलैत छथि से कोनो अपन कपड़ा पहिरि कऽ। वैह मँगनिया कपड़ा, महगौआ मारवाड़ी सभक। मारवाड़ी सभक ई कपड़ा रजक भाइ दू दिन लेल भाड़ापर हिनका सभकेँ दैत छथिन्ह।

नौआटोली सेहो तीन घरक। बड़ बजन्ता सभ। कमाइलक लिस्ट लऽ कऽ तगेदा करैत छथि। दुर्गापूजामे जे बाहरी लोक अबैत छथि से कमाइल बिना देने घुरि नहि पबैत छथि। पहिने हप्तामे एक बेर दलाने-दलाने केश कटबा लऽ जाइत रहथि मुदा आब जिनका केश कटेबाक छन्हि से आबथु हमर दुअरा। हँ बर-बरियाती जएबाक होएत तँ से सालमे अकाध बेर टोल सभक दलानपर चलि जेताह। मुदा सेहो एके ठाम। जिनका कटेबाक हेतन्हि पंक्तिबद्ध भऽ बैसथु। ई नहि जे क्यो अखन आबि रहल छी तँ क्यो तखन आबि रहल छी। आब सभ घरसँ एक-एक गोटे झंझारपुरमे सेहो सैलून खोलि लेने छथि। सैलून कोन एकटा प्लास्टिक पटरी कातमे ठाढ़ कऽ देने जाइ छै? नहरनीक प्रयोग तँ बन्ने भऽ गेल अछि। नह अपना-अपनीकऽ काटै जाऊ। छुतकामे बौआसीनक आँगुर कनियाँ

आबि कऽ काटि देत, बस। आ पिजेलहा अस्तूरासँ दाढ़ी काटब। खून खसि रहल अछि से कोनो हम छह मारि देने छी। फाँसरी रहए। नञि बाबू, टोपाजबला अस्तूरा झंझारपुरक सैलून लेल छै।

फेर एकटा आर टोल अछि। पहिने गामसँ बाहर रहए, बसबिट्टीक बाद। मुदा आब तँ सभ बाँस काटि कऽ खतम कऽ देने अछि आ लोकक बसोबास बढ़ैत-बढ़ैत एहि चर्मकारक टोल धरि आबि गेल अछि घरहट आ ईँटा पजेबा सभ अगल-बगलमे खसिते रहैत अछि। ढोलहो देबासँ लऽ कऽ धोल-पिपही बजेबा धरिमे हिनकर सभक सहयोग अपेक्षित। माल मरलाक बाद जाधरि ई सभ उठाकऽ नहि लऽ जाइत छथि लोकक घरमे छुतका लागले रहैत अछि।

कृषि-मत्स्य-पशुपालन आधारित महिसबार ब्राह्मण बहुल एहि गामक चारूकात पढ़ल लिखल (मुदा एकटा चोरक टोल सेहो अछि ओतए), ततेक नहि पढ़ल लिखल आ मुहदुब्बर गाम सभ अछि। पड़ोसक चोर सभक हिम्मत नहि छन्हि जे एहि गाममे कोनो जातिक घरमे चोरि कऽ लेथि। एहि गाममे जे बियाह भऽ गेल तँ सभटा फसादी जमीनक निपटार भऽ जाइत अछि, लोक समंगर भऽ जाइत अछि। एतएसँ हसेरी दूर-दूर धरि जाइत अछि। कुटुमक जमीनक झगड़ाक निपटारासँ लऽ कऽ वोट लुटबा धरि हसेरी बहराइत अछि। जमीन एहि गाममे पचीस हजारक कट्ठा अछि, वैह जमीन पड़ोसक गाममे दस हजार रुपैये कट्ठा। उँचगर जमीन गाममे सस्त कारण बर्खाक पानिसँ पटौनी नहि भऽ सकैए उत्थर जमीनक। मुदा बान्ह बनलाक बाद बनराहा गाम सभक जमीन सभ सेहो महग भऽ गेल अछि। पहिने घटक अबैत रहए तँ एहि गामक लड़कापर जे दस कट्ठा आ बनराहा गमक लड़कापर एक बीघा हिस्सा देखै छल तैयो अही गाममे कुटमैती करैत छल। कारण बनराहा गाममे दसो बीघा खेत हिस्सा रहने गुजर कठिन छलै। मुदा आब ओकर सभक भाग्य खुजि गेल छै। जखन बाढ़ि अबै छै तँ ओकर सभक खेतक पटौनी भऽ जाइ छै। बनराहा.. बुझलहुँ नहि, ओहि गाम सभक गाछीमे बानर सभ भरल छै आ लोको सभ बानरे सन पीअर कपीश। कपीश ! आ मास्टरी पहिने कियो करै नहि से सभटा बनराहा सभ मास्टर भऽ गेलै। आ आब मास्टरक दरमाहा देखू। सभटा बनराहा धोआ धोती पहिरि जे निकलैए तँ देहे जरि जाइ छै एहि गाँआक।

धरि दुर्गापूजा एहि गाममे नहि शुरू भेल। मुहदुबरा गाममे सेहो शुरू भऽ गेल मुदा एत्तऽ। चाहबै तँ किएक नहि होयत। रामलीला एक महिना केलहुँ हम सभ आकि नहि। धू, बान्ह लगहीसँ घिना गेल। भने नहि होइए दुर्गा पूजा। एक तँ धी बेटीकेँ लियाउन करेबाक झमेला रहत आ जे मेलपँचसँ रहै जाइ छी सेहो पार्टी-पोलिटिक्स खतम कऽ देत।

....

किशनगढ़ गाम। दिल्लीक पौश एरिया वसन्तकुँजक बगलमे। पाइबला सभ सेक्टरमे रहै छथि आ गरीब सभ किशनगढ़ आ मसूदपुरमे। सेक्टरमे ओतुक्का

लोक सभ कम्युनिटी हॉलमे खैराती हॉस्पीटल खोलने छथि। सेक्टरक पता देलापर फीस देमए पड़ैत अछि। गामक पतापर फीस तँ नहिए देमए पड़ै छै, दबाइयो मँगनीमे भेटै छै।

बगलमे मॉल अछि। दू तरहक। एकटा सामान्य लोक लेल। आ दोसर डी.एल.एफ.क इम्पोरिया, वसन्तकुँजक नेल्सन मंडेला मार्गपर। असमानताक आ अपार्थेइडक विरुद्ध संघर्ष करएबला नेल्सन मंडेला। मुदा हुनकर नामपर बनल एहि मार्गपर बनल एहि इम्पोरिया मॉलमे लाख रुपैयासँ कममे कोनो समान भेटब असंभव। सभसँ सस्त अछि लाख रुपैयाक लेडीज पर्स। बंगलोरक कस्तूरबा गाँधी मार्गपर शराबक फैक्ट्री आ महात्मा गाँधी मार्गपर बीयर बार सभ। गाइड लोक सभकेँ कहैत अछि- वर शराब बनबैत अछि आ कनिया बेचैत अछि कारण महात्मा गाँधी मर्ग स्थित ओहि बीयर बार सभमे शराबक बिक्री होइत अछि। तेहने सन कथा अछि नेल्सन मंडेला रोडक। मुदा समाजवाद अछि एतए। से पाइ अछि तँ सेक्टरमे रहू आ नहि अछि तँ गाममे, दुनु सटले-सटल। जमीनक दलाल एतुक्का सभसँ पाइबला लोक अछि। अपन बिजनेस कार्ड छपबैए ई सभ- रिअल एस्टेट एजेन्ट कऽ कऽ। बगलमे मेहरौली गाम सेहो अछि। माछ मुदा किशनगढ़ आ मेहरौली दुनू ठाम भेटत। दिल्लीक लोक माँछ कम खाइत अछि। अपने दिसुका लोक एकरा सभकेँ माँछ खेनाइ सिखेने छै।

(आबैबला उपन्याससँ)

विद्यानन्द झा

किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा

नैतिक योग

कोनो गाममे एकटा नापित छल ओ अपन कार्यमे तँ निपुण छलैहे, जाहिसँ गामक लोक ओकरापर प्रसन्न रहैत छल, ओकर दोसर गुण छलैक जे छोट मोट घाव घोंसकेँ चीर फाड़ि कऽ के जड़ी बूटी दऽ ओकर इलाज कऽ दैत छल। लोक नीकेना भऽ जाइत छल। गामक लोक सभ प्रशंसा करैत छल। ओकर ई चिकित्सा सम्बन्धी कार्य खूब चलैत छलै। पाइयो नीके कमाइत छल, बड़ड दिन धरि ओकर कार्य चलैत रहल। किछु दिनक बाद ओहि गाममे एकटा डाक्टर साहेब अएलाह। ओ नीक सर्जन छलाह, बड़ड पैघ पैघ डिग्री सेहो छलन्हि। ओहि गाममे ओ डाक्टर साहेब अपन क्लीनिक खोललन्हि। हुनका लग चीर फाड़िक सभटा यंत्र छलन्हि, नीक नीक औषधिक व्यवस्था सेहो कएलन्हि। पर्चा पोस्टर छपाए आस पासक गाममे सटबेलन्हि। ओकर बाद डाक्टर साहेब नियमित रूपसँ अपन क्लीनिकमे भरि दिन बैसथि। मुदा ई की ? रोगीक कोनो पता नहि, डाक्टर साहेब बैसि कऽ झख मारथि। डाक्टर साहेबकेँ किछु फुरैबे नहि करन्हि, की करी की नहि करी। डाक्टर साहेब कम्पाउण्डर सेहो रखने छलाह, तकरा घरेसँ वेतन दै छलाह। आमदनीक कोनो रस्ता नहि छलन्हि। क्लीनिकक खर्च सेहो अलगेसँ। बेचारा डाक्टर साहेब मन मसोसि बैसल रहथि। ओम्हर गामक लोक सभकेँ एहि पढ़ुआ डाक्टरसँ बेसी ओहि नापितक कएल चिकित्सापर विश्वास छलैक।

एक दिन डाक्टर साहेब ओहि गामक परम बृद्ध ओ नीतिज्ञ लोकक शरणागत भेलाह। डाक्टर साहेब हुनकासँ सविस्तार अपन हाल सुनाओलन्हि। ओहि नीतिज्ञ बृद्धक संग समस्त गामक लोक सभ हिनक समस्या सुनलन्हि। डाक्टर साहेब कहलखिन्ह जे हम एतेक दिन धरि पढ़ि लिखि चिकित्साक उचित वैज्ञानिक शिक्षा पाबि तखन एहि कार्यक लेल क्लीनिक खोललहुँ अछि। जाहिसँ गामक लोकक इलाज नीक ढ़ंगसँ होएत। ओकर बाबजूदो समाजक लोग सभ हमर क्लीनिक नहि आबि ओहि नापित देहातीसँ इलाज करबैत छथि।

नीतिज्ञ, बृद्ध लोकनि डाक्टर साहेबक समस्या सुनि किछु उपदेश देलखिन्ह आ कहलखिन्ह जे अहाँ ई तरीका अपनाउ शीघ्रे समस्या मुक्त भऽ जाएब।

डाक्टर साहेब हुनक आदेश शिरोधार्य कऽ वापस डेरापर अएलाह। अगिला दिन सुरूचिगर भोजनक ओरियाओन कऽ ओहि नापितकेँ अपना ओहिठाम भोजन करबा लेल आमंत्रित कएलन्हि। डाक्टर साहेब अपनेसँ जा कऽ ओहि नापितकेँ नोत देने छलखिन्ह। ओ नापित खुशीसँ ओत-प्रोत भए गेल, नचैत नचैत भरि गामक लोककेँ ई संवाद कहि आएल जे डाक्टर साहेब हमरा गुरू मानि लेलन्हि अछि। भोजनक बेरमे ओ नापित डाक्टर साहेबक ओहिठाम पहुँचल। डाक्टर साहेब ठाढ़ भए आह्लाद पूर्वक ओहि नापितकेँ बैसाओल। भरि पोख भोजन करौलन्हि, आदर देलन्हि आ कहलखिन्ह जे अपनेक चिकित्सा विद्यासँ हम प्रसन्न छी। हम डाक्टरी पढ़ियोकऽ जतेक नहि सिखलहुँ ताहिसँ बेसी अहाँ अपन अनुभवसँ कल्याण करैत छी। जँ एतेक करिते छी तँ कनेक आओर ध्यान देबैक तँ पैघसँ पैघ आपरेशन अपने कऽ सकैत छी, मात्र थोड़बे ध्यान राखए पड़त। ओ नापित परम प्रसन्न भेल डाक्टर साहेबक मुँहे अपन प्रशंसा सुनिकऽ डाक्टर साहेबसँ पुछलक जे कोन कोन बातक ध्यान राखए पड़त। डाक्टर साहेब ओकरा अपना दिश उन्मुख होइत देखि भीतरे भीतर प्रसन्न होइत बजलाह- जेना पएर परक घाव भेलापर किछु नश नाड़ीकेँ चीन्हि ओकरा कटबासँ बचा कऽ अहाँ पैर परहक घावकेँ चीर फाड़ि कए चिकित्सा कए सकैत छी। ओ पुछलक जे डाक्टर साहेब पएर परहक नश कटलासँ की होएतैक? डाक्टर साहेब बतौलखिन्ह जे ओ नश कटलासँ तीव्र रक्तस्त्राव होएत जे साधारण ढंगे नियंत्रणमे नहि आओत, तखन रोगीक रक्त शुन्यताक स्थितिमे प्राणांत भए सकैछ। तहिना धौना परहक नशकेँ देखबैत बतौलन्हि जे एहि ठामक घावक आपरेशन करए काल नश सभपर बेसी ध्यान राखऽ पड़त, से नहि कएलासँ नश कटबाक भए बनल रहत। एहिसँ रोगीकेँ लकबा मारबाक सम्भावना बढ़ि जाएत। जँ नश सभकेँ चिन्हि चिन्हि आपरेशन करब तँ सफल रहत।

ई सभ सुनि नापित घर दिश बिदा भेल, आब ओ अगिला दिनसँ नशक ज्ञान प्राप्त करबामे लागल। ओकर नैसर्गिक बुद्धि हेड़ाए गेल। जखन ओ चीर फाड़ दिश सोचलैक की नश कटबाक भए सतबए लगैक। ई नश कटत तँ ई रोग होएत, आ ओ नश कटत तँ ओ रोग होएत। परञ्च ओकरा लेल एहि समस्यासँ पार पाएब सम्भव नहि भेलैक आ अंततः ओ चिकित्सा कार्यसँ विरक्त भए गेल। आ ओम्हर डाक्टर साहेबक क्लीनिक ताबड़तोड़ चलए लगलन्हि।

दीप तर अन्हार

दूटा मित्र छल। दुनहुँक मध्य बड़ड प्रेम छल। जतए जाए संगहि, भोजन संगहि, खेलाइत संगहि, मुदा घरक कोनो काज ओ दुनू नहि करैत छल। सतत् काल दुनू योजना बनबैत छल। शेख चिल्ली जकाँ गप्प बघारब मुदा कोनो जोगरक नहि। घर परिवारक लोक सभ आजिज भए दुनूकेँ गामसँ भगा देलन्हि। दुनू मित्र वापस अपन गाम जाए किछु काज कए पाइ जमा कएलक आ आपसमे

दुनू विचार कएलक जे गामसँ बहुत दूर शहरमे जाए कोनो काज करब ताहिसँ खूब पाइ कमाएब आ तखन गाम वापस आएब। दुनू मित्र पाइसँ गामहिमे किछु बट खर्चाक ओरियाओन कएलक। ओ ओढ़ना, बिछौनाक मोटरी बनाए दुनू मित्र बिदा भेल। शहरसँ जखन बहुत दूर छल तँ संध्या भए गेलैक। कतहु कोनो गाम नजरि नहि अबैत छल। चलैत रहल चलैत रहल अन्हार गुज्ज साँझ भए गेलैक। चोर सभ सतबए लगलैक आब की करत? कतए जाएत? दुनू मित्रकँ किछु फुरएबे नहि करैक। इतस्ततः करैत करैत जंगलक बीच जा रहल छल। तखन एकटा बरगदक गाछ नजरि अएलैक। ओ दुनू मित्र थाकि गेल छल। ओहि गाछ तर राति बितएबाक बिचार कएलक। ओहि बरगदक गाछ तर मोटरी राखि धम्मसँ बैसि रहल। एक तँ बाटक थकान दोसर अन्हार गुज्ज राति। दुनू बिछौना बिछा कऽ पड़ि रहल। दुनू मित्र आपसमे निर्णय कएलक जे बेरा बेरी सुति कऽ राति बिताएब, एहिसँ चोर उचक्का सामान आ पाइ नहि चोराबै सकत। परंतु से सम्भव नहि भेलैक। दुनू ततेक बेसी थाकल छल जे कखन दुनूक आँखि लागि गेलैक से दुनू नहि बुझलक। खूब सूतल, भोरहरबामे जखन एकटाकेँ निन्न टुटलैक तँ ओ मोटरी नहि देखि चिचिआबै लागल, दोसरो उठल ओहो चिचियाबै लागल। दुनू एक दोसराकेँ चोरि करबाक आरोप लगबए लागल, बहुत काल धरि दुनू झगड़िते रहल। ओहिठाम तँ तेसर क्यो रहैक नहि जे ओकर दुनू लोकनिक झगड़ा छोड़बितैक। अपनहि थोड़ेक कालक बाद शांत भए निर्णय कएलक जे नजदीकक कोनो गाम जाए ओहि गामक पंचसँ निसाफ कराएब जे दोषी के ?

दुनू मित्र बिदा भेल। थोड़े दूर चलैत चलैत जखन जंगलसँ बाहर भेल तँ एकटा खेतमे हर जोतैत एकटा हरबाह नजरि अएलैक। दुनू मित्र ओहि हरबाह लग पहुँचल, एकटा मित्र बाजल जे भाए हो रातिमे हमर दुनू मित्रक सामान आ पाइ कौड़ी चोरि भऽ गेल, तेसर तँ क्यो छलै नहि तखन तोहीं कहऽ जे (दोसर मित्र दिश आंगुर देखबैत) एकरा छोड़ि दोसर के लेने होएत ? दोसर मित्र फेर बमकल। ओ पहिलकेँ गारि श्रापक तर कऽ देलक। ओ हरबाहा बेचारा स्वयं अपनाकेँ निसाफ देबामे असमर्थ पाबि कहलक जे एहि बातक गाममे एकटा नीक पंच छैक हरि चरण। तौँ सभ ओकरे ओहिठाम जा कऽ सभ वृतांत बता दहक, ओ निजगुत फैसला कऽ देतौक। दुनू मित्र आगाँ बढ़ल। अपरिचित गाम छलैक, बेर बेर चौक चौराहापर पंचक घरक मादे पुछऽ पड़ैक। तखने एकटा जोन बोनिहार भेटलैक। एक मित्र ओकरासँ पूछि बैसल जे हौ हरिचरण पंचक घरक पता बता देबह। ओ पुछलक जे अहाँकेँ ओहि पंचसँ कोन काज अछि। तखन दुनू मित्र बताबऽ लागल जे हमरा सभक बीच विवाद भेल अछि हुनकासँ निसाफ कराए। ओ बोनिहार बाजल- ओ की फैसला करताह ओ तँ बड बेइमान छथि। दुनू मित्र अचम्भित होइत आगाँ बढ़ल। किछु दूर आगाँ गेलाक बाद एकटा समर्थगरि कुमारि कन्या नजरि अओलैक। तखन दुनू हुनकासँ पंचक घरक

रास्ता देखा देबऽ लेल कहलकैक। ओहो कन्या हिनकासँ प्रयोजन पुछलकन्हि। दुनू मित्र रातुका सभटा खिस्सा कहलकैक। ओ कन्या बाजलि जे ओ की निसाफ करताह ओ तँ आन्हर छथि। दुनू मित्र घोर निराशामे पड़ि गेल। किछु नहि फुरए जे आब कतऽ जाए। लेकिन दुनू मित्रकँ हरबाहाक कहल गप्पपर बिश्वास छलैक ओ आगाँ बढ़। राहमे एकटा अधेड़ महिला पुछलकै। ओ सभ स्त्रीगण बाजलि जे जँ अहाँ सभ कोनो निसाफ लए जाइत छी तँ बेकार होएत। ओ दिन खाइ छथि तँ राति लेल झखै छथ। आब तँ दुनू मित्र भयंकर असमंजसमे पड़लाह जे आब हरिचरण पंचक ओहि ठाम जाइ आकि नहि। ई सोचिते बढ़ि रहल छलाह की पंचक घर आबि गेल। हरिचरण दलानेपर सुतरी कढ़ैत छलाह। दुनू मित्र हुनकर दलानपर जाए प्रणाम कएलन्हि। सरपंच हुनक लोकनिक समस्या सुनि युक्तिपूर्वक न्याय कऽ देलखिन्ह। दुनू मित्र प्रसन्न भेलाह। परञ्च मनमे ओ सभटा बात उमड़लन्हि जे पंच तँ बड़ निसाफी छथि तखन ओ लोकनि हिनकर मादे एना किएक कहलन्हि। नहि रहल गेलन्हि। एकटा मित्र पंचसँ रास्ताक सभटा वृतांत कहलखिन्ह। हरिचरण गम्भीर भए कहलखिन्ह जे हम एखन गरीबीमे छी। ओहि बोनिहारक किछु बोनि हमरा लग बाँकी छैक जावत दऽ नहि दैत छिऐक तावत् ओकरा लेल बेइमान थिकहुँ। ओ कुमारी कन्या हमर बेटी थिकीह। तों सभ देखने होएबह जे हमर बेटी वियाह करबाक जोगरि भऽ गेल अछि। हम ओकर विवाह नहि करा सकलिऐक अछि तँँ ओकरा हेतु हम आन्हर छी। अंतमे जे महिला भेटल छलीह ओ हमर दोसर पत्नी थिकीह। हम एक दिन बिता कऽ हुनका लग जाइ छी तँँ ओ कहलन्हि जे एक साँझ खाइ छथि दोसर साँझ उपासल रहैत छथि। तँँ ओ सभ अनर्गल तँ नहिए कहलन्हि।